श्री

मुद्राराक्षस नाटक

कविश्री **विशाखदत्त** विरचित संस्कृत मूळनुं

गुजराती भाषांतर

व्याख्यान, विवेचन, कविचरित, काव्यपरीक्षा

आदि समेत

रची प्रसिद्ध करनार

केशव हर्षद ध्रुव, बी. ए.

उपायरससंसिक्ता देशकालोपबृंहिता।
सेयं नीतिमहावल्ली किं नाम न फलेत् फलम् ॥

क. स. सा. ६. ७. ८५.

मुंबाई

निर्णयसागर मुद्रायंत्र.

वि. सं. १९४५. इ. स. १८८९.

प्रथमः फलपरिपाकः
प्रचितोऽयं यत्प्रसादरससेकात् ।
सुस्फीतोऽमोघाना-
मुच्चैः संस्कारबीजानाम् ॥ १ ॥
गुरुवर्येभ्यस्तेभ्यो
नैवान्नविधयायमर्प्यतेऽनघया ।
प्रश्रयपूर्वं परया
भक्त्या सद्भावनिर्भरया ॥ २ ॥

१ आग्रायणेष्टौ यवं व्रीहिं वा नूतनमयनानिष्पन्नमन्नं यज्जुह्वत्याहिताग्नयस्तन्नवान्नम् । तस्य विधया प्रकारेण ।

प्रस्तावना.

प्रारब्धमपरित्याज्यमेव । मु. रा. २ ।

आ समय अनुकरण कळानो छे. रीत रवेश, आचारसंचार, विचारविवेक, सर्वमां नकल करवानी वृत्ति प्रबळ वर्तती जोवामां आवे छे. ए वृत्तिनो उत्कर्ष दोषना परित्यागमां तथा गुणना ग्रहणमां रह्यो छे. देशकाळनी ए वर्तमान मर्यादा प्रमाणे आ पुस्तक पण एक अपूर्व अद्भुत नाटकनी नकलज छे, जेमां सर्व प्रकारे मूळना गुणनुं यथास्थित प्रतिबिंब आपवा दृढ प्रयत्न करवामां आव्यो छे.

अभ्यासक दशामां सहजज मूळ वांचवामां आव्ये तेनी असाधारण चमत्कृतिथी मोह पामी कार्यना महत्त्वनो विचार न करी पूर्वे आ भाषांतर आदर्युं, ने पछी ते एक प्रसिद्ध मासिकपत्रमां कडके कडके आपवा मांडयुं. जेम जेम भाषांतर आगळ वध्युं तेम तेम पाठना गोटाळा अर्थना लोचा अने संविधाननी गहनता नजरे आवतां केवुं भारे काम माथे लेई लीधुं छे ते जाणवामां आव्युं. परंतु प्रकृत नाटकना बीजा अंकना उपर आपेला वाक्यनी उच्च प्रेरणाथी परिश्रम अने अभियोगे फळभागी थवानो सुदिन आज आणी मेळव्यो छे.

अद्भुत सृष्टिदर्शननी लेहमां अलौकिक स्थळो शोधता रसिक प्रवासीने कोइ कोइ समये घट्ट जंगलमां पोतानो रस्तो कापवो पडे छे, दुर्लंघ्य डुंगरो ओळंगवा पडे छे, उंडी खोह अने अंधारां कोतर वटाववां पडे छे, नदीनाळां ऊतरवां पडे छे, आडी वाटे घोर अरण्यमां लेई जती पगथी तपासी तजवी पडे छे, अने भूलवणीमां पेठेला पुरुषनी पेठे पोतानो मार्ग गोती काढवो पडे छे, तेम आ भाषांतर करवामां पण थयुं छे. जेवी **चाणक्यनी** नीति स्वभावेज कुटिल छे, तेवुंज नाटकनुं संविधान पण अटपटुं छे. एनी साथे सरखावतां **कादंबरी**नी त्रण जन्मनी कथा पण कंइक सरळ अने स्वाहजिक लागे छे. तेमां वळी वस्तु कोइ प्रसिद्ध पुराण के कथाग्रंथमांथी लीधेलुं नथी. वृत्तांत जोके ऐति-

१ हाथ लीधुं तजी देवातुंज नथी. २ नकल करवानी कळा. ३ कृत्य तथा हालचाल. ४ **बुद्धिप्रकाश.** ५ कथानो उठाव. ६ चालु. ७ मंड्या रहेवुं ते. ८ फळ भोगवनार थवानो, फळ अनुभववानो. ९ मुश्केलीथी ओळंगाय एवा. १० सिद्धी. ११ कृत्रिम नहि ते. १२ मूळ वात (Plot.)

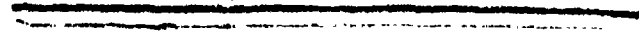
हासिक छे, तथापि ते अति प्राचीन काळमां बन्यो छे, एटले तेनो लेख पण यथास्थित अन्यत्र रह्यो नथी. अधूरामां पूरूं नाटक बहु प्रचलित न होतां ते उपर सारी टीका पण अद्यापि मळी नथी, जेमां योगायोग तपाशी पाठनो यथार्थ निर्णय कर्यो होय तथा अर्थनी योजना बराबर घटवी होय. तेम वळी तेनी आज पर्यंत कोइ सारी संशोधित विश्वासपात्र आवृत्ति प्रसिद्ध थई नथी के तेने सर्वथा अनुसराय. आथी करीने कोइ स्थळे अनेक पाठनी एकार्थता करवी, कोइ स्थळे भिन्न भिन्न पाठनी सारासारता तपासवी, कोइ स्थळे बहुसंमत पाठनी दुष्टता अने अल्पसंमत पाठनी ईष्टता बतावबी, कोइ स्थळे आंतर प्रमाणथी अर्थनी स्थिति घटाववी, कोइ स्थळे बाह्य प्रमाणथी तेनी योग्यता नक्की करवी, कोइ स्थळे प्राकृतनी छाया निर्धारवी, कोइ स्थळे पूर्वापार संबंध लक्षमां लेई विरुद्धता परिहरवी, बारीक तपासथी संबंध उपजाववो, घटित व्याख्यानथी संक्षिप्त अर्थ विस्तारवो, गूढ अर्थ विकसाववो, पारिभाषिक अर्थ खिलाववो, संदेह मिटाववो, काठिन्य तजाववुं, तेम वळी वाणीनी प्रौढि संतज राखवी, संविधाननो उठाव दीपाववो, अने विशेषे करीने चमत्कृति जे संदर्भमात्रनुं जीवन छे ते पूर्ण रीते भभकाववी,—तथापि पोताना तर्फथी अयोग्य रीते न ओपतां अनुवादनी शैली मूळने अनुगुणज अने भाषा शुद्ध ने सरळ राखवी, ए आदिक अनेक क्लेश सहवा पड्या छे; एटलाज उद्देशथी जे कविने इनसाफ मळे तेम सुज्ञ वाचक वर्ग प्रसंन थाय.

‘ गांधीना गांधी ने पोठीना पोठी ’ ए कहेवत प्रमाणे आ भाषांतर करतां संपादकनुं अने अनुवादकनुं दुपट काम एक हाथे करवुं पड्युं छे. आथीज करीने पाठ अने अर्थना निर्णयनुं विवेचन वधी पड्युं छे. परंतु तेना बचावमां आत्मसंतोषपूर्वक एटलुंज कहेवानुं छे जे कंइक काळथी अर्थनो अनर्थ थतो आवतो हतो ते कंहिक कंहिक सुधारायो छे. वस्तुस्थिति आम होता साहित्यविषयक टीकानो अवकाश न होवाथी, तेम **दशरूप** आदि लक्षणग्रंथ आ काळमां सुलभ होतां सविस्तर समजूतीनी अवश्यकता न जणायाथी, प्रस्तुत भाषांतरमां जरूरजोग टूंकी हकीकत कंहिक कंहिक आपी छे.

जेनुं धन ते जोनारनी प्रसंनता छे एवो कोइ नूतन चित्रकार जेम कोइ

१ प्रसार पामेलुं. २ सर्व प्रकारे, सर्व अंशे. ३ खोटापणुं. ४ सारापणुं. ५ संस्कृत तर्जुमो. ६ पुस्तक, ग्रंथ. ७ भाषांतर. ८ मळतां. ९ उद्धार-संशोधन करनार. १० भाषांतर करनार. ११ हकीकत. १२ साहित्यशास्त्रसंबंधी. १३ जेमां लक्षणो आप्यां छे ते.

अपूर्व दर्शन[1]नुं चित्र पूरूं करीने वळी वळी कलम हाथमां लेई अहिं आ अंग जीवाडी, अहिं आ रूपरेषा खिलावी, अहिं वळी छाया घेरी अने अहिं आछी करी, अहिं अंतर्भाव कंइ दीपावी, वारे वारे चित्रने समारे छे, सुद्दावे छे, ओपावे छे, अने छेवट बहु कालक्षेप पछी कळा अजमावी करी सचकित सोत्कंठ[2] चित्ते ते चित्रने सशंक[3] ध्रुजते हाथे सहृदय[4]ने निवेदन करे छे; तेम हुं पण आ लघु प्रयास विवेचक साक्षर वर्गना हाथमां समर्पु छुं, एवी आशाथी जे आ अनुवाद-मुद्रा[5] सर्वदा रसज्ञ वाचक वृंदनी अंगुलिप्रणयी[6] होय.



१ देखाव. २ उत्कंठित, उत्सुक. ३ शंकासहित. ४ रसिक. ५ मुद्रा=[1]छाप; [2]-महोरनी वींटो. ६ अंगुलिप्रणयी=[1]आंगळिये रहेतो; [2]-स्वीकार्य.

कवि अने काव्य.

कवि **विशाखदत्त** क्यां अने क्यारे थया ते अद्यापि बराबर नक्की थयुं नथी. **मुद्राराक्षस** नाटक शिवाय कविनुं बीजुं कोइ पण काव्य अत:पर्यंत प्रसिद्धिमां आव्युं नथी, के ते उपरथी विशेष माहिती मळी आवे. नाटकनी प्रस्तावनामां जे हकीकत आपी छे ते नहिज जेवी छे. ए उपरथी आपणे एटलुंज मात्र जाणिये छिये जे कविना पितामह **वटेश्वरदत्त** करीने हता. तेओ सामंत* कहावता. तेमना पुत्र **पृथु**. तेओ महाराजपदधारी हता. एओ आपणा कवि **विशाखदत्त**ना पिता थाय. आ उपरांत अंकोने छेडे तथा नाटकनी समाप्तिए रेख मारी छे तेथी पण कांइ विशेष पत्तो लागतो नथी.

अन्य प्राचीन ग्रंथकारनी पेठे कविना देशकाळ आ रीते अंधकार ग्रस्त छे, तथापि तेना उपर अंतर अने बाह्य प्रमाणने आधारे कल्पना अने अनुमानथी कंइक प्रकाश पडे छे. नाटकमां वर्णेली देशव्यवस्था **चंद्रगुप्त**ना काळनी होवी संभवती नथी, केमजे तेना निर्णयनां पूरतां साधन कविना समयमां हशे एम धरातुं नथी;† अर्थात् देशविभाग अने स्थानविशेषनुं सूचन जे आपणे जोइये छिये ते आ नाटक रचायुं ते समयने अनुसारज हशे. आम छतां, कविये प्रसंगवशात् ते ते देशनां अने लोकनां नाम आपतां **दक्षिणापथ**[1]नुं कोइ नाम भुसाडी दीधुं नथी, ए वात सहज लक्ष्यमां लेवा जेवी छे. छेक **बलख** सुधी कवि नजर दोडावे छे अने दक्षिण भणी दृष्टिए नथी करता, तेथी एम धराय छे जे तेओ **दक्षिणापथ**ना नहि होय.

आज वात उपरथी एम पण अटकळ थाय छे जे **उत्तरापथ**[2]ना प्रतापी राजा **हर्षवर्धन शिलादित्य**नुं पैरिपत्य[3] करनार **दक्षिणापथ**ना परमेश्वरपदधारी **सत्याश्रय पुलकेशि**नी पूर्वे आपणा कवि थया होवा जोइये; केमजे कविना समयमां **दक्षिणापथ**नुं कोइ राज्य **उत्तरापथ** पासीनुं लक्ष्य खेंचे एवी प्रसिद्धि-

* जुओ G. N. संज्ञक प्राच्य प्रतोनो तेमज A. P. M. R. संज्ञक दाक्षिणात्य पोथियोनो पाठ. मात्र B. E. संज्ञानी प्रतो ए पद तजी दे छे.

† जुओ संपादक **काशीनाथपंत**नी इंग्रजी भूमिका पृ. २१ पं. ३–९ अने ते उपरनी टीप.

१ दक्षिण हिंदुस्तान. २ उत्तर हिंदुस्तान. ३ पराजय.

मां आव्युं भासतुं नथी. अन्यथा तेनुं नाम नाटकमां दृष्टिगोचर थवा पामे.

कवि **उत्तरापक्ष**ना वासी हता तेना समर्थनमां बीजां पण कारण मळे छे. प्रकृत नाटकना द्वितीय अंकमां **वैरोचक**ना शणगारना वर्णनमां मोतीने हिमनी उपमा आपी छे* ते कोइ **दाक्षिणात्य** कविनी होय नहि, अर्थात् **विशाखदत्त** वर्णं करीने **दाक्षिणात्य** न हता, एम प्रोफेसर **विल्सन** साहेब ए प्रसंग उपर लखे छे. वळी पाटक **काशीनाथपंत** पण नाटकनी समाप्तिये आपेला भरतवाक्यमां वराहावतारना उल्लेख उपरथी एज तर्क तर्फे वलण बतावे छे; केमजे जनरल **कनिंगहाम**नी तपासथी वराहावतारना प्रस्तावनां देवमंदिर अने बीजां अभिज्ञानो **उत्तरापथ**मां बहु स्थळे मळी आवे छे.

अहिं एक बीजी वात पण लक्ष्यमां लेवा जेवी छे. विद्वान पाटक **काशीनाथपंते** संशोधन करी **ढुंढिराज**नी टीका सहित आ नाटक इंग्रजी व्याख्यान अने विवेचन साथे बहार पाड्युं छे, तेना विवेचन विभागमां तेओ उद्धार करवा आठ प्रतो एकठी करी जणावे छे.† एमांनी M. अने R. संज्ञानी पोथियो छेक दक्षिणनी छे. तेमना पाठ साथे A. अने P. संज्ञक पोथियोना पाठ मळता आवे छे. आथी ते विद्वान संपादक तेमने एक वर्गमां मूके छे, अने तेमना पाठने दाक्षिणात्य नाम आपे छे. तेवीज रीते E. N. अने G. संज्ञक पोथियोना पाठ **श्रीतारानाथ भट्टाचार्ये** स्वरचित टीका साथे छपावेली पूर्व तर्फनी B. संज्ञक प्रतना पाठ साथे मळता आवे छे. तेथी तेमने बीजा वर्गमां मूकी तेमना पाठने संपादक प्राच्य पाठ कहे छे.‡ सूक्ष्म रीते तपासतां आंतर प्रमाण अने उपपत्ति नजरमां लेतां संदिग्ध स्थळमां आ बे पाठोमांथी प्राच्य पाठ अमने घणुं खरुं विशेष रुचिकर अने सार्थक मालम पड्यार्थी एम कल्पना थाय छे जे कविनो पाठ ते बहुधा प्राच्य पाठज हशे. आथी कवि कोइ प्राच्य देशना हशे, **दाक्षिणात्य** नहि होय एवी अटकळ थाय छे.

---

* जुओ B. अने N. संज्ञक प्रतोनो प्राच्य पाठ. E. संज्ञानी पोथीनो पाठ पण एवोज कांक जणाय छे.

† नवमी K. संज्ञक पोथिमां मूळ प्रथमांक पर्यंतज छे, तेथी ते अहिं पाठनिर्णयसंबंधे लेखी नथी.

‡ संपादकनी प्राच्य पाठनी पोथियो शुद्ध न होवाथी केटलीक जगाए गोटाळा जेवुं जणाय छे. जो शुद्धज प्रतो मळी होत, तो पाठनिर्णय करवो ठीक पडते.

---

१ दक्षिण हिंदुस्ताननां. २ नटनी उक्ति. ३ नोंध, निर्देश. ४ प्रख्याति. ५ एंधाणी. ६ पूर्व हिंदुस्ताननो.

वळी नाटकनी प्रस्तावनामां श्रोताना समाजना वखाणमां जे अन्योक्ति सूत्रधार वापरे छे, तेमां शाळनो दृष्टांत छे. ए शाळनो कवि कहे छे तेवो सहजसिद्ध पाक तो प्राचीन काळथी **मगध** देशमां थतो वांचवामां आवे छे.* आ उपरथी कल्पना थाय छे जे कविनी स्वभूमि कदाच **मगध** के कोइ तेनी पासेनो देश हशे.

एक वजनदार प्रमाण नाटकने छेडे आपेला भरतवाक्यना अंतभागमांथी कंइक मळी आवे छे. ए प्रशस्तिना श्लोकना चतुर्थ चरणनी छेवटमां 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः' अने 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' तथा 'पार्थिवो रन्तिवर्मा' एवो पाटभेद दृष्टिये पडे छे. आ त्रण पाठ पैकी 'पार्थिवो रन्तिवर्मा' पाठ ते 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' पाठ उपरथीज लेखक दोषथी थयो होय एम भासे छे; केमजे लिखित पुस्तकमां 'र' अने 'व'नो भेद बहु रहेतो नथी. आ कारण सर ए पाठ गणनीमांथी कमी करतां बाकी रहेला बे पाठमांनो 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः' पाठ आपातरमणीय जणाय छे, तेमज वळी ते टीकाकार **तारानाथ** तथा **ढुंढिराज**ने अने **काशीनाथपंत**ने इष्ट छे, तथापि जो ते स्वीकारिये तो 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' पाठ शी रीते उत्पन्न थयो ए प्रश्न ऊभो रहे छे. **चंद्रगुप्त** अने **अवंतिवर्मा** ए बे नामोना वर्णना आकार के उच्चार एवा मळता नथी आवता जे दृष्टिदोषथी के मतिविभ्रमथी 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः' उपरथी 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' पाठ ऊपजी आव्यो संभवे. वळी **काश्मीर**ना **अवंतिवर्मा** शिवाय बीजो कोइ ए नामनो राजा बहु प्रसिद्धिमां आव्यो नथी के तेनुं नाम अहिं घुशी गयुं समजाय. त्यम वळी **चंद्रगुप्त** ए कथानायक छतां एनुं नाम कंइ अजाण्युं के नवतर नथीज जे ते काटी नांखी बीजुं नाम पाछळथी मूकवामां आवे. आथी करीने 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' एज मूळ पाठ हशे एम अनुमान थाय छे. जे बे पोथियो आ पाठने टेको आपे छे तेमांनी E. संज्ञक पोथी **गुजरात** तरफनी बसें अढीसें वर्ष उपर लखायली छे. बीजी N. संज्ञक प्रत पण सोएक वर्ष उपर **काशी**मां उतारायली होय एम कहेवामां आवे छे. देशकाळ विषे आवुं दूरांतर छतां बंने पोथी 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' पाठ तरफ वलण धरावे छे तेथी तेनी प्राचीन-

---

* जुओ आज नाटकना त्रीजा अंकना शरद वर्णनमांना शाळना पाकना संबंधे आपेली टीकामां बतावेला **गउडवहो**ना श्लोको.

---

१ उत्तम प्रकारनी डांगर. २ उपरथी जोतां सारो लागे एवो. ३ पसंद. ४ नजरचूक. ५ समजणफेर. ६ बहु तफावत.

ता जणाई आवे छे. प्रकरण[1] अने संगति[2] तपासतां पण आज वात दृढीभूत[3] थाय छे. प्रस्तुत श्लोक भरतवाक्य छे एटले तेने नाटकना प्रधान पात्र **चंद्रगुप्त** साथे ऐकांतिक[4] संबंध छे एम मानवाने कारण नथी. कार्य तो निर्वहण संधिना काव्य-संहार अंगमां वस्तुतः अवसान[5] पामी जतुं होवाथी नाट्यवस्तुना कोइ पण अंश-नुं सूचन एमां संभवतुं नथी.* ए तो नटज जेम नांदीथी काव्यनो प्रस्ताव शरु करे छे तेम अमुक भूमिकामां[6] नहि पण निजरूपे नटज आवा आशीर्वचनथी काव्यनी समाप्ति करे छे. आथी जेम **आर्यक्षेमीश्वरे चंडकौशिक**ना तथा **श्रीजगन्नाथे वसुमतीपरिणय**ना भरतवाक्यमां पोताने आश्रय आपनार राजा-आशीर्वादगर्भित प्रकट प्रशंसा करी छे तेम अहिं पण कविये **अवंतिवर्मा**नी स्तुति करी संभवे छे.† आ **अवंतिवर्मा**नुं नाम पाछळथी नाटक उपर कोइ जूनी टीका प्रचलित न होतां काळे करी लोक भूली जतां 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' ने ने ठेकाणे 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः' पाठ सहज ऊपजी आव्यो हशे एम धराय छे. वळी 'पार्थिवोवन्तिवर्मा' ए प्राच्य पाठ छे ए पण कंइक लक्ष्यमां लेवा योग्य छे. आम हरेक रीते E. अने N. संज्ञानी पोथियोनो पाठज निश्चित[7] थाय छे. ए पाठ उ-परथी कवि **अवंतिवर्मा**ना राज्यकाळमां थया एम सिद्ध थाय छे. तेओ ए राजा-ना दरबारमां शी पदवी सुहावता तेनो स्पष्ट निर्देश[8] नथी. तथापि ए राजकुळ साथे कविना कुळनो संबंध पेढी दरपेढीनो हशे एम अनुमान छे. कविना पि-तामह **वटेश्वरदत्त** ए राजवंशना सामंत कहावता अने एओना पितुश्री महारा-ज पदवी धरावता.‡ ए रीते ए राजवंशनी राज्यकळामां उत्तरोत्तर उत्कर्ष पामतां कुळमां प्रगटेला आपणा कवि पण **अवंतिवर्मा**ना दरबारमां सारी प्रतिष्ठा

---

* जुओ **अभिज्ञानशाकुंतल** उपरनी **राघवभट्ट** विरचित **अर्थद्योतनिका** टीकाना छेवट भागमां प्रशस्ति उपरनो लेखः—'भरतवाक्यं नटवाक्यम्। नाटकाभिनयसमाप्तौ सामाजिकेभ्यो नटेनाशासींयत इत्यर्थः । प्रस्तावनानन्तरं नटवाक्याभावादत्र भरतवाक्यमित्युक्तिः । '

† जुओ वळी **नारायण** विरचित **हितोपदेश**नो अने **अभिनंद** विरचित **रामचरित**ना सर्ग १५ तथा २२ नो छेवट भाग.

‡ सामंत अने महाराज पदना पारिभाषिक अर्थ सारुं जुओ **शुक्रनीति**नो कथा-सारना आरंभमां आपेलो उतारो.

---

१ प्रसंग. २ संबंध. ३ वधारे नक्की. ४ अत्यंत आवश्यक. ५ समाप्ति. ६ वेष, स्वांग. ७ नक्की. ८ सूचन, नोंध.

भोगवता एम तेओनुं '**विशाखदेव**' ए उज्ज्वळ नामांतर दर्शावी आपे छे.*

हवे आ **अवंतिवर्मा** कोण अने क्यारे थया ते विचारिये. जाणवामां आवेला प्राचीन लेखोमां ए नामना बे राजा थई गया मळी आवे छे. तेमांनो एक जे **काश्मीर** देशनो प्रसिद्ध राजा ते तो अहिं संभवतो नथी. बीजो **अवंतिवर्मा** ते **बाणभट्टने** आश्रय आपनार **हर्षवर्धन शिलादित्यना** बन्हेवी **मौखर ग्रहवर्मा**नो बाप थाय. ए **उत्तरापथना** प्रतापी राजा **हर्षवर्धने** इसवी सनना सातमा शतकना आरंभमां राजसत्ता धारण करी ते, तेनो मोटो भाइ **राज्यवर्धन, ग्रहवर्मा** मरायो तेनुं वेर वाळवा तथा पोतानी बहेन **राज्यश्रीने** बंधनथी छोडववा प्रतिपक्षी **मालवराज** साथे मचवेली लडाईमां तेनुं पारिपत्य[१] कर्या बाद, **गौडराजने** हाथे दगाथी मार्यो गयो, ते पछी. आ **राज्यवर्धने** अने तेना पिता **प्रभाकरवर्धन प्रतापशीळे भरतभूमि** उपर चडी आवता **हूण** नामे **म्लेच्छो** साथे अनेक वार महाभारत संग्राम मचाव्यो हतो.† आ विग्रहमां **मौखर** राजा **अवंतिवर्मा प्रभाकरवर्धन** आदि साथे सामेल थई ते **म्लेच्छोने** परास्त[२] करी भूमिने उद्धारवामां यशोभागी थया हशे. कविये भूभार हरवा वराहावतार धारण करनार **विष्णु** भगवान साथे जेनो अभेदारोप कर्यो छे ते **अवंतिवर्मा** उपर कह्या तेज होय तो कवि इसवी सनना छठ्ठा शतकना छेवटना भागमां थया एम कहेवाय.

देशव्यवस्था कविना समयनीज मानतां, नाटक रचायुं त्यारे **पाटलिपुत्र** हयात हतुं एम पण धारवुं अर्थापन्न[३] छे. हवे **हिंद** संबंधी **चिनाइ** वृत्तांतमां इ. स. ७५६ मां **गंगानी** तटभूमि घसडाई गयानुं लख्युं छे;‡ जेना उपरथी एक पाश्चात्य शोधक ते वर्षमां **पाटलिपुत्र** पायमाल थयानुं अनुमान करे छे. ए शहेर पांचमा शतकना **फह्यन** अने सातमा शतकना **ह्यूएनत्संग** नामे **चिनाइ** प्रवासीना समयमां हयात हतुं. **फह्यन** तेने आबाद वर्णवे छे अने आखा **मगध** दे-

---

* जुओ मूळनी प्रस्तावनामां E. B. अने N. संज्ञक प्राच्य प्रतोना पाठ प्रमाणे कविनो नाम निर्देश.

† जुओ **हर्षचरित** आश्वास ४ छेवट भाग. **प्रभाकरवर्धन** आदिनी असल राजधानी **स्थानेश्वर** हती, अने **मौखर अवंतिवर्मा** तथा **ग्रहवर्मा** पडोशमां राज्य करता, अने तेमनी सत्ता कदाच पश्चिम **मगध** पर्यंत प्रवर्त्तती.

‡ आ वात संशयग्रस्त छे; जुओ इंडियन एंटिक्वरी ११. १९.

१ बीजुं नाम. २ पराभव पामेला करी, हरावी. ३ सहज सिद्ध.

शनी राजधानी कहे छे. बीजो प्रवासी **त्संग** तेने पडी भागतुं लखे छे. ए समय पछीना **चिनाइ** प्रवासीना वृत्तांतमां आपणे **पाटलिपुत्र** जेवा **चिनाइ** वृत्तांतमां प्रसिद्ध शहेरनी नोंध जोता नथी. आ उपरथी एवी कल्पना थाय छे जे सातमुं शतक अधवार्या पछी ए शहेर अमुक अंतरे विनाश पाम्युं; पछी ए विनाश ते **मल्वनलिन**ना वृत्तांत उपरथी कल्पवामां आवे छे तेम इ. स. ७५६ मां थयो के आघो पाछो ते गमे तेम हो, आथी एम तो धरायज छे जे कवि आठमा शतकनी पूर्वे थया.*

आ नाटकमां **बुद्ध** विषे जे प्रशंसागर्भित वचन जोवामां आवे छे तेथी पण उपरना तर्कने कंइक पुष्टि मळे छे. बौद्ध धर्मनो स्तुतिवाद सातमा शतकना मध्यभागमां थयेला **नागानंद** नाटकमां वांचिये छिये. बोधिसत्वनी प्रशंसा तेज शतकना उत्तर भागमां रचायला **मालतीमाधव**मां जोवामां आवे छे. परतु आठमा अने नवमा शतकमां स्थिति बदलायली जणाय छे. **डेविड** साहेब लखे छे जे ते समयमां बौद्ध धर्म एवो तो पतित थई गयो हतो के तेने राज्याश्रय मळतो बंध पड्यो हतो तेमज लोकोनुं दिल तेना तर्फ खेंचातुं अटक्युं हतुं तथा ब्राह्मणोनी उत्तरोत्तर वधती सत्ता आगळ तेनुं पडी भाग्युं हतुं. आथी करीने जाते बौद्ध न छतां पण **बुद्ध**नी सहज स्वभावे प्रशंसा करनार कवि **विशाखदत्त** आठमा शतकनी पूर्वे थया समजवा घटे छे.†

बुद्धना चरित्रनी प्रशंसानी उपर नोंध लीधी ते उपरांत **यम**नी उपासना प्रसंगवशात् प्रथम अंकना आरंभमां सूचवी छे ते ध्यानमां लेवा जेवी छे. यमपटिकनुं[१] आबुंज वर्णन जोवुं होय तो **बाणभट्ट**ना **हर्षचरित**ना पांचमा आश्वासना आरंभमां छे.

कविना काळना निर्णयनी कल्पनाने ग्रंथांतरथी पण कंइक कंइक टेको मळे छे. अगियारमां शतकमां **सोमदेवभट्टे** रचेला **कथासरित्सागर**मां काहिं काहिं आ नाटकना वचननी आबेहुब छाया सरखी पंक्तियो जोवामां आवे छे. दशमां अगियारमा शतकना अरसामां थयेला **नारायणभट्ट**ना **हितोपदेश**मां तीक्ष्णदूतना[२] प्रयोगे **चाणक्ये नंद**नो घाट घड्यानी वात आपी छे. **आर्यक्षेमीश्वर**

---

* जुओ संपादकनी इंग्रेजी भूमिका पृ. २३.

† जुओ संपादकनी इंग्रेजी भूमिका पृ. २५.

---

१ यमयातना जेमां चितरी छे एवो चित्रपट लेई फरनार साधु. २ दूतरूपे शस्त्रथी घात करणार.

विरचित **चंडकौशिकनी** प्रस्तावनामां प्रकृत नाटकना इतिवृत्तनुं सुस्पष्ट सूचन नजरे पडे छे. **भोजदेवना सरस्वतीकंठभरणमां** आमांथी एक मभम उतारो छे. दशमां शतकना अरसामां थयेला **मुंजदेवना** समयना **दशरूपमां** नामवार अनेक स्थळे नोंध छे. त्यम वळी आठमा शतकना **दामोदरभट्टे** रचेला **कुट्टनीमत** काव्य पछी रचायला परंतु उपर कहेला **नारायणभट्टना हितोपदेशथी** बहु पूर्वे थयेला **पंचतंत्रमां** एक श्लोकमां अलंकारविक्रय[१] कपट-लेख आदि प्रयोगे **चाणक्ये राक्षसने** दूषित कर्यानो प्रकट लेख छे, जेना वगडी गयेला पाठ उपरथी ते श्लोक क्षेपक नथी पण जूनो छे एम दीसी आवे छे. आ बधाथी प्रकृत नाटकनी प्राचीनता सिद्ध थाय छे.*

जे देशव्यवस्था विषे उपर कहेवामां आव्युं ते हवे झटपट जोइ जइये. **नंद** अने **मौर्य** वंशनी राजधानी जे **पाटलिपुत्र** के **पुष्पपुर** अथवा **कुसुमपुर**, ते शहर पूर्वे **गंगा** अने **शोणना** संगम उपर पण ते बेउनी दक्षिण बाजुए आव्युं हतुं.† ए समये **आर्यावर्तनी** पश्चिम उत्तर सरहदनी आसपासना लोको भारे लडायक हता. **सिंधु** नदीने पेले तटे दरियाकिनारा पासे **शक** लोक वसता हता. तेमनी उत्तरे हालना **अफगानिस्तान** अने तेनी नजदीकना प्रदेशमां **यवन** लोकनी वस्ती हती. **नेपाळ** अने तेनी पश्चिमनो **हिमालयनो** डुंगराळ मुलक **किरात** नामे जंगली लोकोथी व्याप्त हतो. आघे **अफगानिस्ताननी** पश्चिमना वेगळा प्रदेशमां **कांबोज** अने **पारसीक** लोक जमाव करी रह्या हता. वळी **बंगाळना** पूर्वोत्तर कोणमां **खशिया** अने **गारो** डुंगरोमां **खश** नामे जंगली लोको रहेता, अने तेमनी पडोसमां **कुमायुन** पासेना प्रदेशमां तेमना जेवाज जंगली ‡**मगर** लोक रहेता; जेमना वंशजो अद्यापि ते प्रदेशोमां जोवामां आवे छे. त्यम हाल ज्यां **पेशावर** छे तेनी आसपासना मुलकमां **गांधार** लोको वसता, अने पूर्वे कहेला **यवन** अने **कांबोजनी** पडोशमां §**चीन** लोको रहेता. वळी **हूण** नामे लोको इसवी सननी शरुआतमां **चीन** देश तरफथी आवी **हिंदुस्ताननी** पश्चिमोत्तर सरहद उपर राज्य जमावी **रह्या** हता. त्यम वळी

* **चाणक्यना** अद्भुत चरित्रनी मभम प्रशंसा **गउडवहो** श्लोक ११८४मां पण छे.

† जुओ आ नाटकनां पृ. ४९ पं. ४–७ अने पृ. ७९ प. ७ तथा पृ. ८० पं. १४–१५.

‡ अमे मूळना '**मगध**' शब्दने बदले संपादके कल्पेलो '**मगर**' पाठ स्वीकार्यो छे.

§ जुओ **महाभारत** ६. ९. ३७३.

---

१ घरेणां वेचवाते.

उत्तर दिशा सउ *म्लेच्छथी आक्रांत हती. आ उपरांत **काश्मीर**, **कुलूत**, **मलय**भूमि, अने **सिंधु** देशना नाम पण वांचवामां आवे छे. आमानो पहेलो तथा छेल्लो देश सर्वविदित छे. हाल **स्थानेश्वर**नी उत्तरमां **कुलु**ने नामे जे प्रदेश ओळखाय छे त्यां पूर्वे **कुलूत** राज्य हतुं. †**मलय**भूमि ते **नेपाळ**मां **राप्ति** अने **गंडकी** नदी वच्चेनो डुंगरी प्रदेश; ज्यां हाल पण **मलेभूम** नामे शहेर छे. **कुलूत**, **मलय**भूमि अने **काश्मीर**ना राजाओ **मलयकेतु**नी भूमि तकावता कपटलेखमां वर्ण्या छे ते उपरथी सहज एम अनुमान थाय छे जे **कुलूत**नी उत्तरे, **मलय**भूमिनी पश्चिमे, अने **काश्मीर**नी पूर्वे आवेला **हिमालय**ना डुंगरी प्रदेश उपर एनुं राज्य हशे. आथी **मलयकेतु**ना पितानुं **पर्वतक** के **शैलेश्वर** ए नाम सार्थक थाय छे.

आ नाटक कविना ज्ञानना विस्तारनुं ठीक भान करावे छे. **कौटिल्य**नी कुटिल अने गहन नीति चितरवानुं माथे लेनारना अर्थशास्त्रना विज्ञाननुं शुं पूछवुं? प्रोफेसर **विल्सन** साहेब लखे छे जे एक टीकाकार तो कंइ कंइ गूढ अर्थ उपजावी आ नाटकने नरूं नीतिशास्त्रज बनावी दे छे. आ वात अमने इष्ट नथी. तथापि राजविद्यामां कविनी [1]व्युत्पत्ति असाधारण हशे ए निर्विवाद सिद्ध छे. [2]भरतशास्त्रमां पण कवि उत्तम रीते व्युत्पन्न होय एम सहज दीसी आवे छे. वळी एक श्लोकमां न्यायनो परम दुर्घट अनुमानखंड समाववानुं करे छे, ते उपरथी ए शास्त्रनुं एमने सारुं ज्ञान होय एम जणाय छे. चंद्रग्रहणना प्राप्तिनिषेधथी अने प्रस्थान मुहुर्तनी चर्चाथी ज्यौतिष शास्त्रे कविये जोयुं लागे छे. [4]योगचूर्णमिश्रित औषधनी परीक्षाना निरूपणे एओए विषविद्यानो परिचय दर्शाव्यो छे. आख्यानो अने कथाओ मूकी [5]अक्षुण्ण ऐतिहासिक वस्तु कविये पसंद कर्युं छे ते उपरथी कविने प्राचीन [6]इतिवृत्त विषे पण ठीक अभिरुचि हशे एम अनुमान थाय छे.

कवि **विशाखदत्त** विरचित अन्य कोइ ग्रंथ जोके हालमां मळी आवतो नथी तथापि **वल्लभदेव** संकलित **सुभाषितावलि**मां कविने नामे बे श्लोक जो-

* जुओ क. स. मा. पृ. ७० श्लो. ५८.

† घणी खरी हकीकत संपादकनी इंग्रेजी भूमिका अनुसार छे.

१ व्याप्त. २ ज्ञान. ३ नाट्यशास्त्र. ४ झेरवाळुं. ५ कोइये हाथमां न लोधेलुं. ६ तवारिख. ७ एकठी करेली, रचेलो.

वामां आवे छे.* एमांनो एके आ नाटकमां नथी. तेथी अनुमान थाय छे जे कविये आ शिवाय बीजुं कोइ काव्य रच्युं हशे.

[1]गिर्वाण वाणीना [2]साहित्यमां **मुद्राराक्षस** नाटक अनेक रीते जोतां अपूर्वज कल्पना छे. बहु करीने संस्कृत कवियो **महाभारत रामायण** के **पुराण** अथवा तो **बृहत्कथा**नी कोइ कथाने अवलंबी ते ते काव्यनाटको रचता आव्या छे. वळी तेओ [3]अनुराग के विग्रहना विविध रंग मूकी बीजामां भाग्येज कलम बोळता जोवामां आवे छे. तेमनां प्रधान पात्रो [4]मुग्ध प्रमदाओ ने [5]दक्ष विलासी जनो, अथवा तो [6]आयुधपिशाचिका जेमने वळगी छे एवा विजयरसिक वीरो ने विप्रवर्गने उवेखता प्रचंड साहसिको होय छे. नाटकना कार्यनुं स्थळ अनेक [7]रतिकथाकोविद दूतदूतीथी पूर्ण अंतःपुर के [8]शतसहस्रावधिजनसंमर्दथी [9]संकुल [10]उद्यान वा देवमंदिर, अथवा तो कदीक असंख्यात शस्त्रास्त्रना कटकटाट ने चमकाटथी भयंकर भासती रणभूमि जोइये छिये. प्रसंग पण तेमां [11]दाक्षिण्य, दया, औदार्य, शौर्य आदि [12]रमणीयोज्ज्वळ [13]सच्चरित्रचित्रणना नजरे पडे छे. परंतु प्रकृत नाटकमां तेम नथी. एनुं वस्तु कोइ प्रसिद्ध कथाग्रंथमांथी उतार्युं जणातुं नथी. **बृहत्कथा**ना प्रथम लंबकनी **नंद** कुळना [14]विप्लवनी कथाने आनी साथे कांइ संबंधज नथी. **विष्णुपुराण**नी भविष्य वाणीमां एवो कांइ जीवज नथी जे तेमांथी आवुं अद्भुत नाटक ऊपजी आवे. बौद्ध **महावंश**, **अर्थकथा** आदिकने **नंद** विध्वंसना पछीना विग्रहनुं भाने नथी के तेनी साथे आ सरखावाय. वळी प्रतिपक्षना प्रधान पात्र अमात्य **राक्षस**नुं नामज वैदिक आर्य अने बौद्ध ग्रंथकारोने '... ... [15]लोका अन्धेन तमसावृताः' जेवुं छे. आ अर्थ-

---

* जुओ मध्यवर्णनपद्धति

तत्त्रिविष्टपमाख्यातं तन्व्यङ्गया यद्वलित्रयम् ।
येनानिमिषदृष्टित्वं नृणामप्युपजायते ॥

अने वर्षावर्णनपद्धति

सेन्द्रचापैः श्रिता मेघैर्निपतन्निर्झरा नगाः ।
वर्णकम्बलसंवीता बभुर्मत्तद्विपा इव ॥

---

१ संस्कृत. २ काव्यसमूह. ३ प्रेम. ४ मनोहर. ५ रसिक. ६ लढाईनो चडस. ७ प्रेमनी वातोमां कुशळ. ८ हजारो मांणसनी भचडाभचडी. ९ व्याप्त, भराई गयेलुं. १० बाग. ११ दक्षपणुं. १२ रमणीय अने ऊजळुं. १३ सारा चारित्रनुं वर्णन. १४ राज्यनी उथलपाथल. १५ गाढ अंधकारमां घेरायला प्रदेशो.

प्रधान नाटकमां [1]प्रशांतमधुर रतितंत्र[2] अने भीषणोद्भट[3] रणरंग मूकी अटपटी राजखटपटनुं अद्भुत इंद्रजाळ[4] ओळेख्युं[5] छे. **पुष्पपुर**ना उपरोधनो[6] प्रसंग आवे छे, त्यां पण कवि केवळ अगाध नीतिबळे विग्रहनुं वावादळ विखेरी नांखे छे. आगमचथी **राक्षस**ना हथियार छोडावी **चंदनदास**ना विमोक्षनिमित्तमां[7] थवा संभवती खुनरेजी पूर्वेथीज ते अटकावे छे. अतिक्रांत[8] विग्रहनुं वर्णन उपकथारूपे आप्युं छे त्यां पण **राक्षस**नो वीररसनो ऊभरो कवि युक्तिये दबावी दे छे. त्यम वळी कौमुदीमहोत्सवना[9] प्रसंगमां श्रृंगारभा वहेणमां आव्या छतां ते तेना वमळथी वेगळा रहे छे. **चंदनदास**नी प्रकरीमां[10] पण तेवीज तटस्थता जोइये छिये. नाटकनो पात्रवर्ग दृढ-कठोर-क्रूर-एक—आग्रही वर्ण्यो छे, जे स्वामीना कार्यना चिंतनमां स्वार्थसुख सउ स्वप्ने संभारतोए नथी, कीर्ति अकीर्ति, स्नेहछेह, सत्य असत्य, पापपुण्य, कशुं जोवा रहेतोए नथी, तथा टाढ तडको, भग्न थाक, वाट वखो लेखतोए नथी. **सिद्धार्थक** ने **समिद्धार्थक** ब्राह्मण छतां **चंदनदास**ने शूळिये देवा चंडाळनो वेष ले छे, **भागुरायण** दोस्तीदावो राखता **मलयकेतु**ने दगो देतां मित्रद्रोहना पापथी खचातो नथी, **चंदनदास** सर्वस्व खोई बायडी छोकरां साथे केदमां पडे छे ने शूळिये चढवा तत्पर थाय छे, पण स्वार्थ सामी दृष्टि सरखी करतो नथी, अमात्य **राक्षस** पण स्वामीनुं वैर वाळवानी लेहमां अनेक कष्ट परंपरा गणतो नथी. पराक्रमी **चंद्रगुप्त** के खटपटी **चाणक्य** एके मिथ्या माणसना लोहीनो तरश्यो नथी जणातो. परान्त करेलां म्लेच्छ **मलयकेतुने** तेना बापनुं राज्य पाछुं आपी उलटो तेने ते उपकारथी मारे छे. काव्यना कार्यनी भूमि पण ज्यां प्रमदाना[11] पदारविंदना नूपुरनो रणकार सरखो ए श्रुतिमार्गने उल्लंघतो नथी एवुं एकांत मंत्रसाधनानुं स्थळ छे. घडीकमां **चाणक्यने** आपणे एनी जूनी दोदळी वळी गयेली भींतोवाळा दर्भना संचयथी लची रहेला छाजवाळी पर्णकुटीमां, घडीकमां **चंद्रगुप्त** साथे **सुगांग** महेलनी अगाशी उपर, अने घडीकमां वळी स्मशानमां छेक शूळीस्तंभ आगळ जोइये छिये, ज्यां प्रसंग मात्र विस्मयमां बुडावी देतो राजकाजनोज प्रवर्ततो होय छे. रणभूमिमां* पण **वेणीसंहार** के **वीरचरित**नो आयुधनो

* जुओ अंक ६ ना प्रवेशकमां आपेली **चाणक्ये मलयकेतु**ना लश्करने शरण आववानो फरज पाडयानी हकिकत वगेरे.

१ शांत छतां रमणीय. २ प्रेमनी कथा. ३ भयंकर अने विकट. ४ जादुइ देखाव. ५ चितर्युं, खडुं कर्युं छे. ६ घेरो. ७ छुटकारो करवामां. ८ वीती गयेलो. ९ कार्त्तिकी पूनमनो ओच्छव. १० नानी आडकथा. ११ मदभरी स्त्री.

खडखडाट आपणा कानने रोधतो नथी, कठोर क्रोधनां भाषण त्रास उपजावतां नथी, ने रौद्र वीरसंमर्द भयथी चित्तने डगावतो नथी. कार्यना ते ते प्रसंग पण कारमी राजभक्ति अने तेवीज वसमी मित्रप्रीतिना कर्कश ने उग्र निरूपण-नाज छे. विषयसुख विसारी देई, जाननी खुवारीथीए ना बिही, **नंद**नुं नि-कंदन जतांए स्वर्गगत स्वामीने संतोखवा अनुमरणनी वृत्ति दबावी अमात्य **राक्षस**नो जे वैर वाळवानो दृढ अभियोग ते ए अचळ स्वामिभक्तिनी परि-शुद्धि छे. वळी शूळिये चढतां भेटी मित्रकार्यनुं स्मरण करावता **चंदनदास**ने पेलो कुमळी वयनो बाळको 'बापा ए ए कहेवुं जोइये, ए तो आपणो कुळ-धर्म छे' एवो जे उत्तर वाळे छे ते कारमी प्रेमभक्तिनो प्रचंड प्रशांतगंभीर प्रतिघोष छे.

आ अपूर्व नाटकज कविनी उज्ज्वळ कल्पना शक्ति बतावी आपवा बस छे. नाटक प्रख्यात इतिवृत्तनो आधार लेई रचवुं जोइये*, ए नियम उल्लंघ्यो न ठरे एटलामाटे कहेवा मात्र प्राचीन इतिहासनो आधार कविये लीधो छे, बाकी वस्तुत: नीतिप्रपंच बहु अंशे कविकल्पित छे. कथानी रचना **दशकुमारच-रित** करतां वधारे संयुक्तिक, अने तेनुं संविधान **मालतीमाधव** करतां विशेष सुश्लिष्ट छे. आ नाटक आगळ **कादंबरी**नी अद्भुतोज्ज्वळ कथा पण रचन-चातुर्यमां कांइ झांखी जणाय छे. कथानो उठाव आवो चमत्कारी छतां तेमां कहिंए असंभाव्यपणानी छाया जोवामां आवती नथी. **उत्तरचरित** के **अ-नर्घराघव** जेवुं निर्वाहमां मांद्य न होतां कार्य **मृच्छकटिक**नी पेठे झडपथी आगळ वधे छे, अने तेनी घटना सर्वत्र नवनवा मायिक मनोहर रूपे विलसती जणाय छे. **मलयकेतु**थी **राक्षस** जे युक्तिप्रपंचथी छूटो पडाय छे तेनी परं-परा सुघटित छे.

नाटकना संविधाननी खुबी कार्यना ऐक्यमां छे. जे कांइ थाय छे ते सर्व **राक्ष-सना** संग्रहणार्थेज थाय छे. आरंभथी मांडीने ते फलागम पर्यंत ए वात घडी-भर पण दृष्टिथी दूर खसती नथी तेनी साथे ते औचित्य छांडी कदी पण दृष्टि-

---

* जुओ **भरतशास्त्र** १९–१.

इतिवृत्तं हि नाट्यस्य शरीरं परिकल्पितम् ।

---

१ कर्कश, आकरुं. २ स्वर्ग पामेला. ३ शांत छतां प्रौढ. ४ पडघो. ५. युक्तिवाळुं. ६ सुघटित, बराबर जोडायलुं. ७ जादुइ. ८ हार, सांकळ. ९ उचितपणुं.

शूळ उपजावती नथी. समस्त नाटकचक्र तपासतां कार्यना ऐक्यनुं आथी सारुं उदाहरण मळवुं मुश्केल छे.

कुटिल नीतिनो प्रयोग इष्ट छतां कविये प्रधान पात्रोनुं उच्चीकरण ठीक कर्युं छे. बहु करीने तेओनी वृत्तिप्रवृति सौ स्वार्थ वीसरी जई [1]परार्थभिमुखज वर्णी छे; जेथी आपणा मनमां सहज तेमना विषे पूज्यभावनी ऊर्मि उत्पन्न थाय छे. **चाणक्य**ने लायक पृथ्वीपति **मौर्य चंद्र** सिंहासने स्थिर करवो छे. ते कार्य सिद्ध थाय छे, एटले ते मानमर्तबो ने सत्ता सौ छोडी देई ब्रह्मकर्ममां पाछो प्रवृत्त थाय छे. **राक्षस** पण **चंद्रगुप्त**नी पूंठे रिपु थई लागी **नंद**नुंज वैर वाळवा चहाय छे, ने ते कार्यनी सिद्धि सारुं समस्त **नंद**राज्य **मलयकेतु**ने आपी देवा तत्पर थाय छे, पण जाते कांइ लाभ तकावतो नथी.

आ बे महामंत्रियोनी पात्रता पण कविये बहु सारी रीते उपजावी काढी छे. जोके ए बंने एकज [2]शाठ्यनीतिनां पूतळां छे तोपण कविनी चमत्कारी कलमे रूपरंग अपूर्व चातुर्य एवो तो पूर्यो छे जे चोक्खुं ' बीबुं एक ने भात जूजवी ' एना जेवुं थई रह्युं छे. **चाणक्य** आग्यनो भभुको छे; **राक्षस** शांत समुद्र सरखो छे. **चाणक्य** दोरी बळे पण वळ न टळे एवो अंटशियो छे; **राक्षस** कांइ [3]ऋजु प्रकृतिनो क्षमाशीळ छे. **चाणक्य** पोतानी जातनुं वैर वाळनार छे; **राक्षस** स्वामीनुं वैर शोधे छे. **चाणक्य** आकळो छतां खटपटमां बधी वाते पूरो छे; **राक्षस** स्वभावे स्थिर छतां प्रपंचकळामां अणघड कारीगर जणाय छे, अने ते मंत्र योजवा करतां शस्त्र वावरवामां वधारे कुशळ छे.

आवीज बारीकाईथी कविये वळी **चंद्रगुप्त** अने **मलयकेतु**नी पात्रताए खिलावी छे. **चंद्रगुप्त** पर्वत तुल्य प्रौढ छे; कुमार **मलयकेतु**मां कुमार[4]भावनी लघुता जोवामां आवे छे. **चंद्रगुप्त** दृढ अने विचारवंत छे; **मलयकेतु** अविचारी धडावगरनो ढोलो छे. **चंद्रगुप्त** **चाणक्य** प्रति पूज्यभावथी पेखे छे, अने निर्भ्रांत तेने विश्वासे वर्ते छे; **मलयकेतु** ज्यां जोइये त्यां जराये नहि ने ज्यां न जोइये त्यां आंखो मीचीने विश्वास राखनार ने वहेम खानार, काचा काननो ने काचा मननो मनुष्य छे.

मध्यम अने अधम पात्रमां दीपी आवतो गुण अचळ स्वामिभक्ति छे. जोके केटलांक पात्रो तेमने सोंपेला कामनी दुष्टता विमासी कमकमाटी खाय छे, तो

---

१ परार्थमां तत्पर. २ दावपेचवाळी राजनीति. ३ सरळ, सिद्धी. ४ बाळपणनी काची वय.

पण तेओ ते मूकी देवा मनथी स्वप्ने पण विचारता नथी, अने गडदापाटुं खाय छे तथा अपमान सहे छे तोये पोतानी धीरज छांडता नथी.

कार्यनुं पारमार्थिक[1] गौरव[2] जेवो नीतिप्रयोग गूढ छे तेवुंज कंइक गहन छे. स्थूळ दृष्टिये कदाच अहिं **चंद्रगुप्त**नो अभ्युदयज प्रतिपाद्य जणाशे, **चाणक्य**नो अद्भुत नीतिवैभवज[3] प्रस्तुत[4] लागशे, **राक्षस**ना पक्षनो पराभवज प्रकृत भासशे; पण तेमज केवळ नथी. अहिं अमुक पुरुषना लोभनी के कामनी तृप्ति इष्ट नथी; परंतु धन ने बळना मदमां अंध बनी गयेला राजाओने मूळमांथी उखेडी नांखी शून्य सिंहासने लायक नरनाथ स्थिर करी विश्वनो उद्धार करवो, ए निर्देश्य जणाय छे. जेम **चाणक्य**नी प्रतिज्ञा **नंदो**ना विध्वंसमा[5] निमित्त मात्र छे तेमज अहिं **चंद्रगुप्त**नो भाग्योदय विश्वना उद्धार कार्यमां छे. आ अलौकिक महत्वना कार्य उपरज दृष्टि राखीने साधननी इष्टता अने दुष्टतानो विचार करीशुं तो बहु बाध लेवा जेवुं नहिं जणाय. अहिं जे बे चार अंतरायभूत[6] मनुष्यनीज खुवारीथी लाखो करोडो मनुष्यना जान बचावाय छे अने कापाकापी वगरज असंख्य मनुष्यना सुखमां वृद्धि कराय छे, ते हरेक रीते हालना सुधरेला जमानामां राज्यलोभथी वैरनिबंधथी[7] के प्रगट अन्यायथी महीमंडळ[8] उपर घमसाण मचावी मूकता राजविग्रह करतां वधारे इष्ट छे. व्यवहारदृष्टिये जोईशुं तो जणाशे जे राजकाजनी खटपट एवीज चाले छे. वर्तमान काळमां पण जे जूठना पासा झाझा चाळवीने नांखे ते राजकाजमां झाझो कुशळ मनाय, ने राजद्वारी कागळो मुद्रांकित थाय ते अमुक भाग गाळी नांखीनेज जाहेरमां मूकाय. ए सौ राजकाजना गडबड गोटाज बतावे छे. तथापि अहिं वस्तु अने पात्र केटलेक अंशे ऐतिहासिक छतांए समयविरोध अने उपपत्तिविरोध परिहरी उदार आशयथी[9] अने निर्मळ स्वामिभक्तिथी तेमनुं जे उच्चीकरण कर्युं आपणे जोइये छिये ते कविनी उंची रसज्ञता प्रकाशे छे.

• पौराणिकोनुं ने बौधोनुं अतिशयोक्ति भरेलुं कथन परिहरी विश्वासपात्र तटस्थताथी कविये वृत्त[10] वर्णव्युं छे ते प्रशंसनीय[11] छे. **नंद** ते **बृहत्कथा**कार अने पौराणिको कहे छे तेम शूद्र न हता अथवा तो बौद्धो लखे छे तेम वाटपाडु चोर नहता पण उज्ज्वळ कुळना राजवंशी हता, वळी **चंद्रगुप्त** ते बौद्धकथा-

---

१ छेवटनुं, खरेखरुं. २ महत्त्व. ३ नीतिनो प्रभाव. ४ प्रतिपादन करवा धारेलो. ५ नाश. ६ अडचणरूप, हरकतकर्ता. ७ वैरनो वळ. ८ पृथ्वी. ९ मतलब. १० हकीकत. ११ वखाणवा योग्य.

कार कहे छे तेम कोइ कल्पित मयूरनगरना **शाक्य**वंशीय राजानो कुंवर नहतो परंतु **नंद**नोज अनौरस पुत्र हतो, ए अने बीजी हकीकत आमांथी मळी आवे छे, तेथी ते समयनो अंधकार कंइक दूर थाय छे. **पर्वतक**नुं नाम **पुराण** के **बृहत्कथा**मां नथी जोवामां आवतुं, तथापि बौद्ध वृत्तांतोमां मळी आवे छे. आ रीते आ नाटक केवळ साहित्यना अभ्यासकनेज नहि पण प्राचीन इतिवृत्तना शोधकने विनोद आपे एवुं छे.

कवि **विशादत्त**मां **कालिदास** के **भवभूति**नी कवित्वशक्ति नथी. तेमनी प्रतिभा ए महाकवियोना जेवी उच्च के तेजस्वी नथी. **शाकुंतल** के **उत्तरचरित**नुं माधुर्य ने लालित्य आ नाटकमां भाग्येज कहिंए जोवामां आवे छे. आ खोट ते पात्रना [1]सुरेख चित्रथी अने कर्कश पण [2]ओजस्वी ने कहिंक कहिंक भभकभरी शैलीथी पूरी पाडे छे. वळी मध्यकालीन अने अर्वाचीन संस्कृत कवियोनी पेठे लांबां लांबां सूर्यचंद्रना उदयअस्तनां के मध्याह्ननां के वसंत आदि ऋतुनां वर्णननां के एवी बीजी कोइ बाबतनां सामान्य [3]अप्रसक्त टायलांथी आ नाटक मुक्त होई तेनुं लखाण शुद्ध सरळ अने मुद्दासरज जोवामां आवे छे. आपणा कविनी वाणी झडझमक के उपमा ने अतिशयोक्तिनी मिथ्या धमकवाळी नथी, परंतु सादी पण शरदऋतुना **गंगा**ना प्रवाह सरखी प्रौढ अने प्रसंन छे.*

---

* आ हकीकत लखवामां Wilson's Hindu Theatre अने पाठक **काशीनाथपंत**ना शोधेला **मुद्राराक्षस नाटक**नी इंग्रेजी भूमिकानी मदद लीधी छे.

१ बराबर चितरेलुं. २ ओजोगुणवाळी; जुस्सादार. ३. नकामुं.

कथासार.

पश्चिम दिशामां **वितस्ता** नदीने तीरे आवेली **तक्षशिला** नामे नगरीमां पूर्वे वेदपरायण विप्रोनुं बहोळुं कुटुंब रहेतुं हतुं.* तेओ ऋषिधर्मथी वर्तता अने कोइनो प्रतिग्रह करता नहि. ए श्रोत्रियोना पवित्र कुळमां **विष्णुगुप्त** अथवा **चाणक्य** नामे विप्र प्रगट्यो. श्रुति सांगोपांग तेना जिव्हाग्रे आवी वशी हती. ते मंत्रविद्यामां परम कुशळ हतो, जेथी ते मूर्तिमान् आथर्वण अभिचार जेवो उग्र दीसतो. ए विश्वविख्यात विप्र ब्रह्मतेजे करीने घीनी अनंत आहुतिथी प्रजळी रहेला यज्ञकुंडना अग्नि सरखो प्रकाशतो. अर्थशास्त्रनुं मंथन करी नीतिशास्त्र रूपी नवनीत तारवी काढनार प्रचंड पंडित ते एज.† ए शाठ्यनीतिनो प्रचारक होई कुटिलपणाने लीधे **कौटिल्य**ने नामे ओळखायो. ए सिंह तुल्य उग्र त्यम पराक्रमी हतो. एनो निश्चय **मेरु** तुल्य अडग हतो; एनी बुद्धि सागर सरखी गंभीर अने अगाध हती. एनी अद्भुत अप्रतिहत **शक्तिधर**ना जेवी शक्ति आगळ विघ्नना डुंगरो सउ विशीर्ण थई जता, अने एना क्रोधनी वज्रशी विकराळ ज्वाळामां झडपाई शत्रु सउ स्वाहा थता. ए पुरुष एक समये फरतो फरतो **गंगा** अने **शोण**ना संगम उपर आवेला **पाटलिपुत्र** अथवा **पुष्पपुर**ने नामे ओळखाता विशाळ राजनगरमां आवी चढ्यो.‡

ते समये **पाटलिपुत्र**मां **नंद** राजा राज्य करतो हतो. एने राजकार्यधुरंधर **वक्रनास राक्षस** आदि अमात्य हता. ए उज्ज्वळ कुळनो राजवंशी हतो.§ एने बीजा आठ भाइ हता; ते पण **नंद**ने नामेज ओळखाता हता. एनी आण एकचक्रे **भरतखंड**मां सर्वत्र प्रवर्तती हती. ए सार्वभौम पृथ्वीपतिनी नवाणु करोड ऊ-

* जुओ **मेक्समूलर** कृत **पुरातनी आर्यविद्या.**

† जुओ **कामंदकीय नीतिसार**ना आरंभना श्लोक, अने ते उपरनी टीका.

‡ जुओ पु. आ. वि., का. नी. सा., अने आ नाटकमां आपेली हकीकत.

§ जुओ पु. आ. वि., तथा आ नाटक पृ. १०८ पं. १९ तथा पृ. ११० पं. १४.

१ दक्षिणा लेवी ते. २ वैदिक. ३ वेदविद्या. ४ अथर्ववेदनो. ५ मारण मंत्र प्रयोग. ६ मांखण. ७ दावपेच अने छळकपट भरेली राजनीति. ८ कार्त्तिकेय. ९ चूरेचूरा. १० राजकाज विषे महासमर्थ.

पज हती.* अनेक मोटामोटा राजाराणाओ तेना दरबारमां आवी निरंतर अदब उठावता.

नंद राजाने **चंद्रगुप्त** नामे एक अनौरस पुत्र हतो. बाल्यावस्थामांथीज ' आ कोइ प्रतापी नर नीपजशे ' एवुं तेना उज्ज्वळ लक्षणथी जणाई आवतुं हतुं. एनी कांति शरद ऋतुनी पूर्णिमाना चंद्र सरखी मनोहर हती, तेनी साथे तेनुं स्वरूप उदय पामता अनभ्र[1] सूर्य सरखुं भव्य हतुं. ते जेवो बुद्धिशाळी तेवोज विनयवान हतो. ते साहसिक छतां अविचारी के उतावळियो न हतो. तेना शरीरनो बांधो जेवो दृढ अने कसायलो हतो तेवोज तेनो संकल्प स्थिर अने सुघटित हतो. **नंद** राजानो प्रेम तेना उपर सारो हतो. ए जातिये मातृपक्षे **मौर्य** नामे शूद्र कुळथी जन्म्यो हतो तेथी ते **मौर्य**, **मौर्यपुत्र** ने **वृषल** पण कहेवायो. ते केवळ **चंद्र** के **चंद्रमा** ए नामे पण प्रसिद्ध थयो.†

नंद राजाना दरबारमां विराजता राजाराणामां जाणवाजोग पुरुष **पर्वतक**, **पर्वतेश्वर** के **शैलेश्वर** हतो. नाम प्रमाणे ते **हिमालय**ना विशाळ मध्य डुंगरी प्रदेशनो प्रतापी **म्लेच्छ** राजा हतो.‡

---

* जुओ **शुक्रनीति**ना प्रथम अध्यायना नीचे आपेला श्लोकः–

लक्षकर्षमितो भागो राजतो यस्य जायते ।
वत्सरे वत्सरे नित्यं प्रजानां त्वविपीडनैः ॥
सामन्तः स नृपः प्रोक्तो यावल्लक्षत्रयावधि ।
तदूर्ध्वं दशलक्षान्तो नृपो माण्डलिकः स्मृतः ॥
तदूर्ध्वं तु भवेद्राजा यावद्विंशतिलक्षकः ।
पञ्चाशल्लक्षपर्यन्तो महाराजः प्रकीर्तितः ॥
ततस्तु कोटिपर्यन्तः स्वराट् सम्राट् ततः परम् ।
दशकोटिमितो यावद्विराट् तु तदनन्तरम् ॥
पञ्चाशत्कोटिपर्यन्तः सार्वभौमस्ततः परम् ।
सप्तद्वीपा च पृथिवी यस्य वश्या भवेत् सदा ॥
सामन्तादिसमा ये तु भृत्या अधिकृता भुवि ।
ते सामन्तादिसंज्ञाः स्यूराजभागहराः क्रमात् ॥

† जुओ पु. आ. वि., आ नाटक पृ. ४६ पं. १४, पृ. ७० पं. २२, पृ. ७६ पं. २५, पृ. ८६ पं. १३, पृ. १०० पं २०, पृ. २७ पं. २०, पृ. १०८ पं. ९,१९-२०, पृ. १०९ पं. ५, पृ. १२२ पं. ८, पृ. १२६ पं. ३, **विष्णुपुराण**नी टीका, इ. इ. इ.

‡ जुओ **परिशिष्ट पर्व**, पु. आ. वि., इ. इ. इ. कविये म्लेच्छ शब्द यौगिक

---

१ वादळथी छवायलो नहि एवो.

नंद राजाए अखूट खजानो एकठो कर्यो हतो. ए खजानो ते सुपात्रने दान आपवामां बहोळे हाथे वापरतो. एनी उदारतानी वासना दशे दिशामां प्रसरी हती. एणे एक सत्र स्थाप्युं हतुं. त्यां चतुर्दशीश्राद्धना निमित्ते अनेक देशदेशांतरना विद्वान विप्रोनो दानमानादिकथी ते सत्कार करतो.

आवोज कोइ अवसर हतो ने **चाणक्य**नां **पुष्पपुर**मां पगलां थयां. चतुर्दशीश्राद्धना समाचार सांभळी तक साधी ते पण ते सत्रमां ब्राह्मणो भेगो गयो, अने ब्रह्मसभानुं जे मुख्य आसन ते उपर जइने बेठो. नियमित समये **नंद** राजा त्यां पधार्या, त्यारे अग्रासने[1] अवनवुं विलक्षण स्वरूप विराजतुं जोई तेनां कुळ शील विद्या विज्ञानथी अजाण होवाथी तेणे पूछयुं जे 'कोण छे ए?' तेना जवाबमां **चाणक्ये** प्रौढपणे कह्युं जे 'अमे छिये.' तेनुं आवुं धीटपणुं जोई चिडाई जई **नंदे** तिरस्कार पूर्वक सेवकोने सत्वर आज्ञा करी जे 'आ मूढ ब्रह्मबंधुने उठाडी मूको अग्रासनथी.' आ अपमानना शब्द काने पहोंचतां **चाणक्य**नो क्रोध प्रजळी ऊठ्यो. उत्कट आवेशमां **रुद्र**रूप बनी, पग पछाडी, हाथनी आंगळिये शिखाभार पींखी नांखी, वळी वळी कटका थई जतां भवांए, अग्नि झरतां नेत्रे, तरवरता ओठे, मेघगर्जनाथी भरी ब्रह्मसभामां सकळ राजपुरुष देखतां तेणे प्रतिज्ञा लीधी जे 'आ शिखा हुं बांधीश क्यारे के ज्यारे आ राज्यमदमां अंध थई गयेला मूढ **नंदो**नुं हुं निकंदन वाळीश.' एम कहीने चडप ते चाली नीकळ्यो. एटले **नंद** राजाए आज्ञा करी जे 'पकडो ए वाचाळ दुष्टने' पण कोइ तेने पकडे ते पहेलां तो ते क्यांए गेब थई गयो *

रोषना आवेशमा लीधी तो खरी पण ए भयंकर प्रतिज्ञा पार पाडी लोकसंरक्षणार्थ शून्य सिंहासने कोने स्थापवो तेनी **चाणक्य**ने विमासण पडी. **सहस्रार्जुन कार्तवीर्य**ना दुर्विनये प्रकोप पामेला परम माहेश्वर[2] **भृगुवर्य परशुरामे** एकवीस वार पृथ्वी नक्षत्री करीने छेवटे ते अन्यने आपी देई तप करवाने सिधाव्या. भूभारभृत[3] **रावण**कुळनुं निकंदन करी धुरंधर धर्मनिष्ठ **विभीषण**ने लंकानुं राज्य सोंपी देई **रघुवंशभूषण** भगवान **रामभद्र** पण स्वस्थान पाछा पधार्या. एज

अर्थमां वापर्यो होय एम जणाय छे; केमजे अंक ४ मां **मलयकेतु** तेना स्वर्गवासी पिता **पर्वतक**ने निवापांजलि आपवानी वात कहे छे. जुओ संपादकनी इंग्रेजी भूमिका पृ. १२. म्लेच्छ शब्द मूळे भ्रष्ट जंगली वर्णाचार करनारना अर्थनो छे.

* जुओ पु. आ. वि, अने क. स. सा.

---

१ मुख्य आसन. २ शिवभक्त. ३ पृथ्वीने भारे मारता.

न्याये परम श्रोत्रिय **चाणक्य** पण समृद्धि अने सत्ताए करीने उत्सिक्त[1] बनेला **नंदोने** निर्मूळ करी लायक नरने सिंहासने स्थापी ब्रह्मकर्ममांज पाछो काळक्षेप करवा चहातो हतो. आथी तेणे जयनी जेने लालसा होय एवा सुलक्षण साहसिकनी खोळ करवा मांडी. जोतां जोतां **चंद्रगुप्त** तेनी नजरमां उतर्यो. ए **नंद** रायथी जन्म पाम्यो हतो तोपण ते तेनो अनौरस पुत्र होई स्वतः भिन्न जातिनो हतो, तेथी 'आने आपणे समजावी पक्षमां लेई शकीशुं' एवुं सूक्ष्मदर्शी **चाणक्यना** मनमां आव्युं. वळी ए **नंद** रायनो अंगसंभव हतो तेथी '**नंदोने** उखेडी नांखी एने राजा कर्यो हशे तो **नंदकुळ** साथे सुदृढ प्रीति बंधाई छे एवा प्रकृतिमंडळने सहज मिळावी लेवाशे' एम पण ए दीर्घदर्शी विप्रे जोयु. आथी तेणे प्रसंग उपजावी मन मेळवी लेई **चंद्रगुप्तना** मनना राज्यलोभना छन्न[2] अंकुरो पेरे पेरे खिलाव्या, अने पछी राजविद्या अने पुरावृत्तनी वार्ताना संबंधे इतर दृष्टांतोनी साथे **नंदोएज** राज्य केवी रीते मेळव्युं हतुं ते युक्तिये कही बतावी तेने वळ चढावी वकारी तैयार कर्यो.

हवे 'कोइ समर्थ राजा मददमां जोइये' तेनी **चाणक्यना** मनमां चटपटी पेठी. ए राजविद्याना आचार्ये विचार्युं जे 'राजा **पर्वतक** जाते **म्लेच्छ** छे, माटे एने राज्यलोभ देखाडीशुं तो सहजमां फोडी शकाशे'* आथी तेणे एने अर्ध राज्यनी मिथ्या आशा आपी पक्षमां लीधो.†

ए रीते सहायसंपत्ति[3] सिद्ध कर्या पछी सैन्यसामग्री सज्ज करवा परिचित पश्चिमोत्तर सरहद भणी सिधाववा तेणे ठराव कर्यो. पण **पुष्पपुर** तजी नीकळता पहेलां, आगळ उपर ते ते जरूरी प्रसंगे काममां आवे एटला माटे, पोतानो सहाध्यायी मित्र विप्र **इन्दुशर्मा** करीने हतो तेने **चाणक्ये** जैन गोरजीनो वेष लेवराव्यो अने **जीवसिद्धि** नाम धारण करावी तेने **नंद** राजाना प्रकृतिमंडळनुं मन मेळवी लेवा योज्यो. ते बीजा करतां विश्वासी निर्मळ मनना अमात्य **राक्षसनी** प्रीति अने प्रतीति[4] संपादन करवामां ठीक फाव्यो. तेणे एने नितांत[5]

* जुओ का. नी स्व.

उपजापकृतास्त्रस्येद्भयादाभ्यां विशेषतः । परस्य वाप्युपजपेदुपजापाद्भवो जयः ॥ आभ्यामिति पदेनाटविकशत्रुबले ग्राह्ये ।

† जुओ प. प. अने आ नाटक पृ. ३८ पं. २२, पृ. ६१ पं. १६ पु. आ. जुओ वळी पु. आ. वि.

१ छकी गयेला. २ गुप्त. ३ मददगार तर्फनी अनुकूळता. ४ भरुसो. ५ अत्यंत, केवळ, तदन.

निस्पृह स्नेह अने सद्भावे एवो लटपट करी लीधो जे ए जीव एक ने देह जूजवा समजवा लाग्यो. वळी **सिद्धार्थक** नामे बीजो प्रणिधि हतो तेने विचक्षण **चाणक्ये** बीजे प्रसंगे अमात्य **राक्षसना** परममित्र कायस्थ **शकटदास** पूंठे मूक्यो; जेणे ते सरळ राजलेखक साथे पेरेपेरे गाढ मैत्री जोडी दीधी.*

आम उपजापनां बीज रोपी अने प्रणिधि नियमी, **पर्वतेश्वरने** पूर्वे विदाय करी, पाछळथी **चाणक्य** अने **चंद्रगुप्त** पोतानां अंगनां आदमी साथे गुप्त रीते **पाटलिपुत्र** छोडी नीकळ्या. तेओए नैर्ऋत कोणनो रस्तो लीधो. त्यां तेमणे **शक, यवन, किरात, कांबोज, पारसीक, बाल्हीक,** आदि सीमाडाना लडायक लुंटारु भाडुती सिपाइयोनुं गंजावर सैन्य सज्ज कर्युं. अहिं पूर्व संकेत प्रमाणे **पर्वतेश्वर** तेना लावलश्कर साथे तेमने आवी मळ्यो. बंने सैन्यना एकत्र बळथी लुंटफाटथी कोशसंपत्ति वधावता देश चांपता चांपता छेवटे तेओए आवी **पुष्पपुर** आगळ पडाव नांख्यो, अने शहेरने चारे तरफथी घेरी लीधुं. धसारो करी छापो मारी शहेर सर करवा **चंद्रगुप्त** अने **पर्वतेश्वर** घणा मथ्या, पण **नंद** राजाना युद्धचातुर्य आगळ अने **राक्षसनी** बहादुरी आगळ कंइक काळ सुधी तेओ फाव्या नहि. ए लांबा विग्रहमां बंने तर्फना सुभट तथा सरदारो कंइक बिचारा कपाइ गया. अने **नंद** राजाना भाइयो पण केटलाक खपी गया. आम युद्धनो मामलो मची रह्यो हतो, तेवामां बीजी तर्फ **चाणक्य** अभिचारमंत्रथी अनुष्ठान लेई बेठो हतो. ते पूरुं थतामां तो लडालडीनी मारामारी अने कापाकापीमां महाराजा **नंद** अने **सर्वार्थसिद्धि** शिवाय **नंदकुळना** सउ पार थई गया.†

हजारो सुभट अने सेंकडो सामंत कतल थई जतांए **पुष्पपुर** हाथ आववानी आशा तो खारापाटना झांझवाना जळनी पेठे वेगळी ने वेगळीज जती जणाई. घेरो लांबो चालशे तो आ बहुरंगी भाडुती लश्कर वेराई जशे, ए धास्तीथी **चाणक्ये नंद** राजानो कपटथी घाट घडवाना उद्देशथी एक साहसिकने गुप्त हथियार सजावी दूतना वेषे संधिना कहेणना मिषे एकांतमां मळवा **नंद** राजा पासे मोकल्यो. तेणे **नंदनी** मुलाकत थतां संधिनो संदेश कहेतां लाग साधी

* जुओ आ नाटक पृ. ८ पं. २३, पृ. १२ पं. २.

† जुओ **विल्सन कृत हिंदु थियेटरमां** आपेली **ग्रीक** तवारीख; जुओ वळी क. स. सा, का. नी. सा. अने आ नाटक पृ. ७५ पं १३, पृ. ३२ पं. ५–११, पृ. १०८ पं. २६–पृ. ८९ पं. २०-२४.

१ भेदु, बातमीदार. २ खजानो.

गुप्त राखेलां हथियारथी तेने पूरो करी दीधो,* अने पोते नसाय तेम नाठो; एटले महेलमां 'दगो थयो–दगो थयो' एवो गगनमंडळ गजावी मूकतो भयंकर पोकार ऊठ्यो ने ज्यां त्यां गभराट मची रह्यो.

चाणक्ये आशा राखी हती जे 'कदाच **नंद** राजाना मोतना समाचारथी गभराटमां नगररक्षक सेना ताबे थई जशे, अथवा दिङ्मूढ बनेला पुरवासियो दरवाजा खुल्ला मूकी देशे;' पण ते सउ अमात्य **राक्षसनी** समयसूचकताथी अने तेना बुद्धिवैभवथी निष्फळ थई. ए मंत्रिवर्ये **सर्वार्थसिद्धिने** आगळ करी सत्वर पट्टाभिषेक करी दानमानादिकथी सेना अने प्रजा बंनेमां पुनः शांतता प्रसारी.

पाछी शहेर हाथ आववानी आशा भूतना भडकानी पेठे देखा दई अदृश्य थई गई. परंतु जे अस्त्रशस्त्र करी न शक्यां ते कार्य हवे काळनी प्रबळ गतिथे थवा माड्युं हतुं. पुरवासियोनी दुर्दशा पराकाष्ठाए पहोची हती, पण तेना दिवस हवे भराई चूक्या हता. कोमळ दिलना **सर्वार्थसिद्धिथी** नगरवासीनुं दुःख देखी न खमायुं. 'आ राज्यथी तो तपोवन सारुं' एम करी, 'हुं नहि होउं तो घेरानो अने प्रजाना दुःखनो अंत आवशे' एवुं विचारी, **चाणक्य चंद्रगुप्तना** नसीबे जोर कर्ये दयाळु **सर्वार्थसिद्धि** त्रासी सुरंगमां थई नाशी तपोवनमां जई रह्यो.†

सर्वार्थसिद्धि जतां करी **राक्षसना** हाथ हेठा पड्या. लश्कर छेक निरुत्साह बनी ग्युं हतुं. नगरवासी पण युद्धनी यातनाथी त्रासीज गया हता. हवे मरीमथीनेए आमने आम खाली थोडाक वखत माटेज टकाव करवो ते व्यर्थ जोई **राक्षसे** शहेर शत्रुना हाथमां जवा दीधुं. पण पोते पुरनी प्रजाना मननुं वलण ऐकांततः केवुं छे ते जोवाने स्वजन साथे शहेरमांज रह्यो. आ प्रसंग तेने जलदी मळ्यो. शहेर हाथमां आव्या पछी **चाणक्ये** विजयनो पडो वजडावी **चंद्रगुप्तनी** दुवाई फेरवी. पुरवासियोना मनमां **नंद** वंशनी ऊजळी कीर्ति

* जुओ **हितोपदेश** पृ. १०६ ने मथाळे आपेलो नीचेनो श्लोक.

नन्दं जघान **चाणक्यस्**तीक्ष्णदूतप्रयोगतः ।
तद्दूरान्तरितं दूतं पश्येद्धीरसमन्वितः ॥

जुओ वळी आ नाटक पृ. १०८ पं. २६.

† जुओ आ नाटक पृ. ३२ पं. १५.

१ कष्ट. २ खरेखरी रीते.

हजी ताजीज हती. ए उदार कुळना आनंदकंद **नंदनो** अपकर्ष अने कुळहीन पितृघाती **चंद्रगुप्तनो** उत्कर्ष सांभळी सारुं शहेर खळभळी ऊठयुं. धांधल खुब जाम्युं ने जैयघोषणामां भारे भंगाण पडयुं.*

ए बनावथी **राक्षसनी** तेमज **चाणक्यनी** खातरी थई जे ' **पुष्पपुरनी** प्रजा बहु भागे **नंदकुलनेज** चहाय छे. ' आथी ' अंतःकोप ज्यारे उपजाववो हशे त्यारे ते सहेलथी उपजावी शकाशे ' एम विमांसी **राक्षसे** बौंह्यकोप मचाववा दृष्टि दोडावी. पण तेम करवा नगर छोडी जता पहेलां शत्रुपक्ष नबळो पाडवानी अने स्वपक्ष कोइ समर्थ मंडळेश्वर मेळवी लेई सबळ करवानी तेने जरूर जणाई. तपासतां तेणे जोयुं जे ' **पर्वतेश्वरने** फोडवाथी बंने अर्थ सहजमां सरशे. ' **पर्वतेश्वर** जेवा लोभी **म्लेच्छने** फोडवो ए कांइ मुश्केल वात न हती. **नंद** राजा जीवतां **राक्षसने** अने **पर्वतेश्वरने** सारुं पिछान हतुं. आथी तेने पोतानी इच्छा पार पाडवानुं सुगम थयुं. तेणे बहार कोइने खबर न पडे एवी रीते खटपट चलावी, अधिक लाभनी आशा आपी सामदानथी तेने गुप्त रीते पोताना पक्षमां लीधो. जूनो स्नेह संभारी अने नवो मित्राचार विचारी, भूमि अने ऋद्धिना लोभेज जेनुं मन पलळी रह्युं हतुं एवो ते **म्लेच्छ** राजा अमात्य **राक्षसनी** सघळी खटपटमां तन अने मनथी सामेल थयो. कुटिल दिलना स्वार्थपरायण **कौटिल्यनी** रीतभात साथे सरखावतां आ नवा निर्मळ मनना, निःस्वार्थ संगीथी तेनुं मन विशेष मान्युं. जेम जेम ते तेना उज्ज्वळ गुणो जोतो गयो तेम तेम **राक्षस** साथे तेनी गांठ दृढ थती गई; अने दिवस जतां **पर्वतेश्वर** आंखो मीची केवळ तेने भरुंसेज वर्तवा लाग्यो.†

आ रीते **पर्वतेश्वरने** गुप्त रीते मेळवी लेई करी, **चाणक्यनां** समूळां हथियार छोडावी देवा महाराजा **नंदना** आ महामंत्रिये हवे **चंद्रगुप्तने** दाढमां घाल्यो. तेणे तेनो घाट घडवा तथा शत्रुवर्गमां फाटफूट करावबा अने घडीघडीनी बातमी मेळववा धनना योगे अनेक मनुष्योने योज्या, अने तेओ तेमने भाळवेला काममां तत्पर रहे एटला सारुं पुष्कळ खजानो आपी कायस्थ **शकट**-

---

* जुओ आ नाटक पृ. ११ पं. १०, पृ. ७८ पं. १४, पृ. ३२ पं. १७, पृ. ६२ पं. १९.

† जुओ आ नाटक पृ. ८९ पं. ९–१०, पृ. १०० पं. १०, पृ. १०८ पं. २६.

---

१ विजयनो ढंढेरो. २ राज्यना मुख्यस्थानमां बखेडो. ३ राज्यना परगणाना अने आसपासना लोकोने उश्केरवा ते. ४ महाराजा.

दासने पुंठे **पुष्पपुर**मां राख्यो; अने पोते **सर्वार्थसिद्धि**ने फरी गादिये आणवाना प्रयत्नमां नगर छोडीने नीकळ्यो. पण स्वपक्षना **पुष्पपुर**वासिवर्गना मनमां अंदेशो न आवे अने तेओनो उद्यम शिथिल न थाय एटलामाटे ते पोताना घरनाने शेठ **चंदनदास** नामे झवेरी मित्रने घेर मूकतो गयो.*

चंद्रगुप्तनो घाट घडवा **राक्षसे** प्रपंच रच्यो हतो तेमां मोहजाळरूप **विषकन्या** हती. जेनुं शरीर थोडे थोडे विष खवरावी अमात्ये केवळ विषमय करी दीधुं हतुं एवी ते आछी काठीनी, खुबसुरत बांधानी, **रंभा रति** आदि देवांगनानुं मान मुकावती, भर जुवानीनी झळेमां झळकती, ललित लावण्यनी, सुकुमार सुंदरी समुद्रवासमां **हाळाहळ**ना संपर्कथी शके विषमय बनी होय तेवी **लक्ष्मी**रूपज हती. सकळ शरीरनुं विष नेत्रनी कीकीमां आवी ठर्युं होय तेम तेनी दृष्टि जेना उपर पडती ते जाणे अंगमां अग्नि प्रगट्यो होय तेम बळी बळ्यां थई रहेतो. आ कारमी शक्ति अमात्य **राक्षसे** तो **मौर्य**ना वध अर्थे कल्पी हती; परंतु बुद्धिमान **चाणक्ये वृषल**ना अर्ध राज्यना भागिया **पर्वतेश्वरने** तेना फंदमां फसवी अमात्यना शस्त्रे अमात्यनाज पक्षकारनो घाट घडवानुं कर्युं. ए पहाडी **म्लेच्छ** राजा **विषकन्या**नी अद्भुत कांति जोतांज दीपपतंगन्याये[1] झपटाई गयो; अने वारुणी[2] पी मत्त बन्यो होय तेम मदनना[3] उन्मादमां समागमसुख लेवा जतां एना शरीरना हळाहळ विषे शके नागणी डशी होय तेम सद्य देवशरण थयो.†

पर्वतेश्वर पड्यो पण तेथी अर्ध राज्यना भागियानुं साल टळ्युं नहि; केमजे ते **मलयकेतु** नामे एक पुत्र अने **वैरोचक** नामे भाइ मूकीने मरी गयो हतो. आनो पण वेत उतारवा तथा मरनार पहाडी राजाना वधनुं कलंक पोताने शिर आवतुं मटाडवा प्रपंचकुशळ **कौटिल्ये** लोकमां अपवाद[4] चलाव्यो जे '**पर्वतक** के **मौर्य** ए बेमांथी एकेनो घाट घडाय तो **चाणक्य**नुं सारुं कर्युं कहेवाय एम करी **राक्षसे** अमारा अत्यंत उपकारी मित्र **शैलेश्वरने विषकन्या**थी मारी नखाव्यो;' अने ए वात लोकोना मनमां उतरे अने भेगुं **वृषलने** शूळ मटे एटला सारुं **मलयकेतुने** पकडी न राखतां उलटो अंदरखाने 'तारा

* जुओ आ नाटक पृ. २७ पं. ९–१७, पृ. ८९ पं. २०, पृ. ५ पं. ७–८.

† जुओ प. प. तथा आ नाटक पृ. ८५ पं. ६–१२.

१ दीवानी ज्योतमां फुदुं झडपाय छे तेम. २ दारु. ३ कामदेव. ४ अफवा.

बापने **चाणक्ये** मारी नांख्यो ' एम कही फडकमां नांखी पोताना प्रणिधि **भागुरायण** द्वारा नसाडी मुकाव्यो.*

विजयनो पडो वजडाव्यो त्यारे जे धांधल मच्युं हतुं ते उपरथी तथा पाछळथी **विषकन्याने चंद्रने** मारवा योजवामां आवी हती ते उपरथी अगमनिगम जाणी जनार विप्र **विष्णुगुप्तने** हरघडी दगानी भारे धास्ती हती. आथी एवा प्रसंगमां **वैरोचक** हशे तो काममां आवी जशे एम विचारी **कौटिल्ये** तेने खसतो करवो दुरस्त धार्यो नहि. तेणे तेने पेरेपेरे समजावी विश्वास उपजावीने राख्यो. पछी योग्य समये **नंद** राजाना राजभवनमां **मौर्यना** प्रवेशनुं शुभ मुहूर्त बहार पाडी तेणे नगरना सउ सुतारोने एकठा कर्या, अने कह्युं जे ' आज मध्यरात्रनुं मुहूर्त छे तेथी सत्वर दरवाजाथी मांडीने बधो राजमहेल शणगारो: सुतारोए कह्युं जे ' आर्य ! आगलो दरवाजो तो आगमनथीज सुतार **दारुवर्मा**ए सोनेरी महेराव वगेरे टाटमाटथी शणगारी मूक्यो छे; हवे मात्र मांहिथी राजमहेल शणगारवानो छे ते आ अमे करी नांखिये लिये. ' वगरकह्ये **दारुवर्मा**ए आगलो दरवाजो शणगारी मूक्यो सांभळी ते पहोंचेला महामंत्रीने वहेम आव्यो. तेथी निर्धारेला शुभ लग्ने **वैरोचकने चंद्रगुप्त** साथे एक सिंहासने पट्टाभिषेक करी तेने अर्ध राज्यनो भागियो कर्यो कहेवरावी, **मौर्यने** ठेकाणे एनेज तेना लेबासमां लपेटी परिचितथी[1] पण ओळखाय नहि एवो शणगारी **चंद्रगुप्तनेज** चढवानी हाथणी **चंद्रलेखा** उपर बेसारी, तेनाज अनुयायी[2] राजवर्ग साथे बहार पाडेले मुहूर्ते राजभवनना प्रवेशमां आगळ कर्यो. ए सवारी राजमहेल आगळ आवी पहोंची एटले अनुयायियो वाहन रोकी बहार चोकमां ऊभा रह्या. अनुयायिवर्गथी छूटी पडेली **चंद्रलेखानो** महावत **बर्बरक राक्षसने** मळेलो हतो तेणे ए संधिमां, हाथणी उपर **मौर्यज** बेठो छे एम समजी, तेना वध अर्थे म्यानमांथी शस्त्र खेंच्युं; एटले हाथणी भडकीने बेकेद बनी शिघ्र गत्यंतर पामी. दरम्यान आगलो दरवाजो वगरकह्ये शणगारी राखनार सुतार **दारुवर्मा**, जे अमात्य **राक्षसनी** प्रेरणाए **चंद्रगुप्तनो** घाट घडवा दरवाजे चढीने बेठो हतो, तेणे पण **वैरोचकने मौर्य चंद्र** धारी हाथणीनी प्रथमनी गतिनी गणत्रीथी कमान वछोडी नांखी हती, ते तेनी चाल एकाएक बदलाया-

* जुओ आ नाटक पृ. ८ पं. ६–१२, पृ. ११ पं. २०, पृ. ३८ पं. २०–२२, पृ. ५९. पं. २०.

१ ओळखीतो. २ सवारीमां साथे चालनार.

थी निशान चूकी कडकडती शस्त्र खेंचवामां रोकायला बेफाम **बर्बरक** उपर आवीने प ; जेथी ते बिचारो बीजानो भोग लेता पहेलां पोतेज काळनो भोग थई पड्यो. ' हवे आमे मने जीवतो तो मूकनार नथी ' एम विमासी ते अवसरे सुतार **दारुवर्माए** दैवसंयोगे बची गयेला निर्भ्रांत निर्दोष बिचारा **वैरोचकने चंद्रगुप्त**नीज भ्रांतिथी कमाननी कळे साथणी उपरने उपर कूटी नांख्यो; एटले तेने पण **वैरोचकना** पुरःसर पाळाए पथरा अने रोडांए पूरो करी दीधो.*

आटलेथी **मौर्यना** संकटनो छेडो न हतो. राजवैद्य **अभयदत्त**ने पण अमात्य **राक्षसे** फोड्यो हतो, तेणे तेने स्वधाम पहोचाडवा तेने पीवाना औषधमां झेर मेळव्युं. पण चतुर **चाणक्य** कांइ एम थाप खाय एवो न हतो. सुवर्णपात्रमां नांखतां पारखी काढी तेण ते ओसड ते वैद्यने पाइ तेने तेना **दुष्ट** कृत्यनो जवाब आपवा जमपुरी भणी विदाय कीधो.†

आ बनावो बन्या पछी **चाणक्य** वधारे जागृत रहेवा लाग्यो. तपासतां तेने **प्रमोदक** नामे रंगमहेलनो हजुरी भारे टाटपो रहेतो मालम पड्यो; जे उपरथी तेना विषे तेना मनमां सहज शक आव्यो. आथी तेण तेने रुबरुमां बोलावी खुब दम दीधो. तेना तापनी आंच न खमाये ते यद्वातद्वा बोल्यो. तेना शक भरेला वचन अने आचरणने लीधे **कौटिल्ये** तेने भुंडे मोते मारी नखाव्यो. त्यार पछी **मौर्यने** अर्थे जे शय्यागृह नियम्युं हतुं, तेमां पण आवो कांइ दगो तो नथी ते जोवाने ते विप्र पंडे गयो. त्यां सहज चारे तर्फ नजर नाखतां एक ठेकाणे भींतमांथी भातना दाणा लेईने नीकळती कीडियोनी हार तेणे दीठी. ए उपरथी ' निश्चय भीतर माणसो छे ' एम कळी जई ते चतुरशिरोमणि विप्रे ते आवास बाळी मुकाव्यो. आथी करीने अमात्य **राक्षसे** जे **बीभत्सक** आदि माराओने सुरंगमार्गे महेलनी भीतर दाखल करी शयनगृहनी भींतना पडभींतियामां **वृषलना** ऊघतां कडका करी नांखवा राख्या हता ते सउ आग पसरतां धुमाडाने लीधे आंखो पुराई गये सुरंगथी नीकळवानो रस्तो न सूझ्याथी स्वदेहे कुंभीपाकनुं दारुण दुःख अनुभवता मांहि ने मांहि बळीने खाख थई गया.‡

---

* जुओ आ नाटक पृ. ३३–३५.

† जुओ आ नाटक पृ. ३६ पं. ७.

‡ जुओ आ नाटक पृ. ३६.

---

१ आगळ चालनार.

'**નંદ**કુળ પ્રતિની અનન્ય અચળ ભક્તિથી આ સઉ રહ્યો રહ્યો **રાક્ષસ**જ કરે છે' એવું વિચારી ગુણગ્રાહી **ચાણક્ય** બહુ વિસ્મિત થયો અને મન સાથે કહેવા લાગ્યો જે 'અહા! એ જો **વૃષલ**નો અમાત્ય હોય તો શું જોઇયે પછી? એને **નંદ**કુળ માટે મથતો શી રીતે બંધ પડાય, અને શી યુક્તિપરંપરાએ[1] એને પ્રતિકૂળચારી[2] મિટાવી અનુકૂળચારી[3] કરાય? જ્યાંસુધી **નંદ**કુળનું કોઇયે જીવતું હશે ત્યાંસુધી એ ક્યમે પગ વાળીને બેસનાર નથી. માટે એજ, એતો નિરાપકારી જાણી જતા કરેલા **સર્વાર્થસિદ્ધિ**ને પણ પૂરો કરવો.' એ સંકલ્પ ઉપજવાની સાથે તેણે તે બિચારા તપોવનમાં જઇ બસેલા નિર્દોષ નિર્લોભ રાગદ્વેષરહિત તપસ્વીનો ઘાટ ઘડી નાંખ્યો.*

સર્વાર્થસિદ્ધિ મરાયાની ખબર થતાં પોતાના મિત્ર **પર્વતેશ્વર**ના વધથી બળી રહેલા **રાક્ષસ**નો ક્રોધાગ્નિ એકદમ ભભુકી ઊઠ્યો. અગાધ મંત્રશક્તિથી કુટિલ **કૌટિલ્ય**ની કળા પાડી **મૌર્ય**ને મરડી નાંખી સ્વામીનું વેર વાળવા તે તલસવા લાગ્યો. ખુન્નસ અને તરસથી તેણે **કાશ્મીર, કુલૂત, મલય**ભૂમિ, **સિંધુ**દેશ, અને **પારસીક**રાજ્યના પ્રતાપી રાજાઓને પક્ષમાં લઇ **ગંગા** અને **સિંધુ**ના અંતરાલે[4] પ્રદેશમાં ગંજાવર લશ્કર જમાવ્યું. એ સંધિમાં પિતાના વધથી **કૌટિલ્ય**નાથી ત્રાસી નાશી આવેલા **મ્લેચ્છ મલયકેતુ**ને પણ સકળ **નંદ**રાજ્યના લાભના લોભે વિગ્રહની વિપુલ જાળમાં લપેટી લીધો. **પર્વતક**પુત્ર પણ અમાત્ય **રાક્ષસ**ને પિતાનો નિકટ મિત્ર સમજી નિર્ભ્રાંત ચિત્તે તેની ખટપટમાં સામેલ થયો.†

આ અગ્નિ અને પવનના સંયોગ સરખા **મલયકેતુ** અને **રાક્ષસ**ના ભયંકર સમાગમથી ચતુરશિરોમણિ **ચાણક્ય** પણ ઘડીભર ફિકરકોટમાં પડ્યો. સૈન્યસામગ્રી તેની પાસે કાંઇ કમી ન હતી. પણ 'બળ કરવા જતાં કદાપિ સાહસિક **રાક્ષસ** પ્રચંડ પૌરુષે આવેશમાં કંઇકનો ઘાણ વાળી નાંખે અને બહુ સંકડામણમાં છેવટ પોતાનો પિંડ પાડે પણ તાબે ન થાય જેથી તેને **મૌર્યચંદ્ર**નું પ્રધાનવટું લેવરાવવાની ધારણ તે સઉ ધૂળ મળે' એવી ધાસ્તીથી 'દંડનીતિ[5]નો આ અવસરજ નથી' એમ તેણે જોયું. કોઇ પણ ઉપાયે શત્રુ સર્વથા નરમ પડ્યો હોય તો પછી સામનો પ્રયોગ સફળ થાય છે; એ જોતાં તેનો પણ અહિં અવકાશ

---

* જુઓ આ નાટક પૃ. ૭ પં. ૮.

† જુઓ આ નાટક પૃ. ૭ પં. ૭-૮, પૃ. ૧૦૦ પં. ૧૦, પૃ. ૧૦૮ પં. ૨૭.

---

૧ કળ-કરામતના માંહોમાંહે સાંકળેલી યોજના. ૨ વિરુદ્ધતા દાખવતો. ૩ અનુકૂળતા રાખતો. ૪ વચલા. ૫ બળ વાપરવું તે.

न हतो. अमात्य **राक्षस** धननो लोभी न हतो के कंइ छांट्ये ठंडो थाय; आथी दाननो प्रसंग पण दूरज हतो. मात्र भेदज योजी जोवा जेवो हतो. पण तेना प्रयोगमांए बहु धास्ती हती. शत्रुनुं बळ तोडवा योजेला मनुष्यो चेतपणीं बणगां फुंके अथवा तो पर पक्षमांज मळी जाय तो अवळनुं च्चवळ थई जाय. एम नहि ने कदापि तेओ चुस्त राजभक्तज बनी रहे तोपण तेवा विश्वासपात्र सुभटो तेटली वार दूर थयाथी पोतानो पक्ष नबळो पडे, अने ए नबळाईमां नगरमांज परपक्षना बखेडो मचावे तो नाखतांए भोंय भारे पडे. आथी गण्यागांठ्या चुंटी काढेला **भद्रभट पुरुषदत्त, डिंगरात, बलगुप्त, राजसेन, लोहिताक्ष, विजयवर्मा, भागुरायण** आदि सुभटो जेओए **नंद**कुळ साथेना महाविग्रहमां शस्त्र अस्त्र वापरी अने स्वरक्त पण वहेवरावी जीतना डंका वजडाव्या हता, तेमने सत्तासमृद्धि अने मानमर्तबाथी संपूर्ण संतोखी तेणे कृतार्थ करी दीधा; जेथी तेओ स्वपक्षमां एवातो आसक्त बन्या के वखते माथुं आपतां पण पाछा न हटे. ए काचा सूत्रने तांतणे बंधायला विश्वासु सहोत्थायी वर्गने तेणे भेदतंत्रमां कामे लेवा नक्की कर्युं. ए योजना अमलमां लाववा तरतज तेणे तेओने एकांतमां बोलाव्या, अने अथथी ते इति पर्यंत भेदतंत्र भणावीने सज्ज करी मूक्या. पछी तेणे गजदळ अने हयदळ उपर ध्यान न आप्यानी कसुर काढी **भद्रभट** अने **पुरुषदत्त**ने जाहेर रीते तेमना अधिकारथीज दूर कर्या, एटले पूर्वसंकेत प्रमाणे तेओ ए मिषे **मलयकेतु**ने जई मळ्या. तेमने संमानपूर्वक गजाध्यक्ष अने अश्वाध्यक्षनी पदवी आपी तेणे पोतानी पासे राख्या. तेटले **डिंगरात** अने **बलगुप्त** पण पोताने जे कांइ मळ्युं हतुं तेथी असंतोष बतावी ' अहा **म्लेच्छ** छे तोये शी एने गुणनी बूझ छे ? ' एम करी ते पहाडी राजाने आश्रये आवीने रह्या. आथी **राजसेन** पण ' अरे आ तो कदापि आप्युंए छिनावी ले, एने सेव्ये शुं लहाण ! ' एम बरबडतो तेमना साथमां गयो, तेज क्षणे **लोहिताक्ष** अने **विजयवर्मा**ए पण ' आ अमारो योग्य सत्कार नथी करतो नें उलटो एना नवा मानीताने आगळ करे छे ' एम करी **चंद्रगुप्त**उपर चडभडता **राजसेन**नो पंथ लीधो.*

आम तेओ ते ते मिषे भागाभाग करता हता ते प्रसंगे **चाणक्य** नगर-

* जुओ आ नाटक पृ. ५९.

१ पोतानुं लोही. २ उदयना सहायक–सहभागी. ३ आगमचयो करेलो मसलत.

चर्चा जोवा यमपटिकने वेषे मोकलेला प्रणिधि **निपुणकनी** हकीकत एकांतमां सांभळतो बेठो हतो. पुरवासीनां मन जाणवानी उत्कंठाथी **कौटिल्ये** प्रणिधिने लागलोज प्रश्न कर्यो जे 'केम ! **चंद्रगुप्तने** प्रजा चहाय छे के?' **निपुणके** सविनय उत्तर वाळ्यो जे:—'आर्ये ते ते अणरागनां कारण दूर कर्याथी प्रजा देवश्रीने बहु चहाय छे. पण आ नगरमां अमात्य **राक्षसना** त्रण जना अंतरना मित्रो वसे छे तेओ महाराजानी प्रभुताना द्वेषी दीसे छे; जेमां प्रथम तो छे क्षपणक[१]—' क्षपणक शब्द सांभळी **चाणक्य** विमासणमां पड्यो. एटलामां प्रणिधिये तेनी अपूर्ण उक्तिना अनुसंधानमां कह्युं:— 'जीवसिद्धि, जेणे **राक्षसनी** प्रेरणाथी आपणा परम मित्र **पर्वतेश्वरने विषकन्याना** फंदमां फसवी मारी नांख्या.' ए हकीकत सांभळी पोते फेलावेली वात लोकोना मनमां ठसी छे एवुं जोई **चाणक्य** मनमां जरा हस्यो, पण बहारनुं गांभीर्य साचवी तेणे प्रणिधिने बीजा राजद्रोहीनुं नाम पूछयुं. तेणे जवाब दीधो:— 'कायस्थ **शकटदास**' ते सांभळी **चाणक्ये** अवज्ञा पूर्वक मन साथे कह्युं:— 'आह कायस्थ ! तेनी पुंठे तो **सिद्धार्थकने** मूकयोज छे.' वळी तेणे प्रणिधिने पूछयुं:—'वारुं, त्रीजो कोण?' 'शेठ **चंदनदास** झवेरी,'—प्रणिधि स्वामी प्रत्ये बोल्यो, 'जेने घेर अमात्य बायडीछोकरां मूकी गया छे'. 'ए तें केम जाण्युं?'—सांभळवानी अनिवार्य उत्कंठाथी एकाग्र थई रहेला **कौटिल्ये** पूछयुं. तेटले प्रणिधिये एक महोरनी वींटी, जेना उपर अमात्य **राक्षसना** नामाक्षर कोतर्या हता, ते **चाणक्यने** चरणे निवेदन करी कह्युं:—'सांभळीये आर्य आज वेषे हुं फरतो फरतो आज उपर कहेला शेट **चंदनदास** झवेरीना घर आगळ जई चढ्यो. त्यां हुं आ यमपट प्रसारी कीर्तन करवा लाग्यो, एटले कुतूहळथी नयन विकासी जोतो पांचेक वर्षनो बाळक एक ओरडामांथी नीकळी आव्यो. तेने रोकी राखवा एक बाइये हाथ लंबाव्यो, पण ते जेवी तेने झडपथी पकडवा गई तेवी पुरुषना हाथना परिमाणनी आ मुद्रा[२] तेनी नाजुक आंगळीथी सरकी पडी रगडती रगडती शब्द कर्या वगर मारा चरणे आवी खंभी. में तेना उपर अमात्यनुं नाम वांची उपाडी लेई आर्यने चरणे आवी निवेदन करी.'*

---

* जुओ आ नाटक पृ. ११–१३.

१ जैन गोरजी. २ रोकी न शकाय एवी.

हकीकत थई रही एटले प्रणिधिने विदाय करी मुद्राना प्रसंगे **चाणक्य** अमात्य **राक्षसना** संग्रहणार्थे उपायनी योजनाना चिंतनमां पड्यो. तेटलामां **मौर्य** तरफथी प्रतीहारिये आवी जयवंदना पूर्वक अरज करी जे:—'आर्य! देवश्री **चंद्रगुप्त** वीनवे छे के आर्यनी अनुज्ञा होय तो हुं महाराज **पर्वतेश्वरनी** उत्तरक्रिया करावुं अने तेमना अंगनां आभूषण ब्राह्मणोने आपी देउं.' **चाणक्ये** प्रसन्न वदने कह्युं:—'बहु सारी वात छे. पण ए आभूषण अमूल्य छे. तेथी हुं बहु गुण होय एवा उत्तम ब्राह्मण मोकलुं छुं तेने ते आपवां' प्रतीहारी विदाय थई के **कौटिल्ये** शिष्यद्वारा **विश्वावसु** आदि त्रण भाइयोने कहाव्युं जे 'तमारे जई **वृषल** पासेथी आभरणदान लेई वळतां अमने मळवुं.' ते आज्ञाने अनुसार ए त्रण विप्र बंधुओ आभूषणनुं दान लेई **चाणक्य** पासे आव्या एटले तेणे त्रण उत्तमोत्तम अलंकार तेमांथी जूदा काढी विप्रोने वणिकनो वेष लेवरावी आभूषण वेचवाने मिषे **राक्षस** हतो त्यां पढावी पाटव्या.*

आ अलंकारविक्रय ते अमात्य **राक्षसना** संग्रहणरूपी कार्यनी सिद्धि विषे एक प्रकरीरूपज हतो.† **कौटिल्यना** ए कुटिल संविधानना गहन कपटनाटकमां **चंद्रगुप्तनाथी** कलहनो भाव भजववो ते बीज हतुं; तथा अमात्य **राक्षसने** मंत्राधिकार समर्पवाना उपन्यास पूर्वक पोते पछी अमात्यपद तजी देवुं ते बिंदु हतुं.‡ अने **राक्षसना** आप्त मित्र **कुलूतपति चित्रवर्मा** आदि पांच **म्लेच्छ** राजाओनो **मलयकेतुने** हाथे घाट घडाववो ते पताकारूप हतुं.§ आ अद्भुत प्रपंचखेलना मंगळाचरणरूपे एक नामनिर्देश विनानो कपटलेख तेणे योजी काढ्यो, अने ते अमात्य **राक्षसना** मित्र **शकटदासना** हस्ताक्षरे लखावा तेणे पूर्वे कहेला प्रणिधि **सिद्धार्थक** पासे मोकल्यो. ते प्रेमनी भूलवणीमां भोळवायला सरळबुद्धिना कायस्थे लेखमां

*जुओ आ नाटक पृ.१३–१४, पृ.४३ पं.२०–२३, पृ.९९ पं.१६, पृ.१२५ पं.६.
†जुओ आ नाटक पृ.१४ पं.९, पृ.९१ पं.१८, पृ.९८ पं.२८, पृ. १२५ पं. ६.
‡जुओ आ नाटक पृ.४७ पं. २२–२४; पृ. ५१ पं.१८–१७; पृ.६४ पं.१७–२१,
§ जुओ आ नाटक पृ. १४ पं. ९–२४.

१ युक्तिथी ग्रहवा—पकडवा. २ 'जय जय' शब्द साथे वंदन करवुं ते. ३ दागीना. ४ नानी आडकथा. ५ महामंत्री—अमात्यनी पदवी. ६ कथन. ७ कथामां तूट पडवा सरखो अवसर आवतां संबंध सांकळी देनार प्रसंग. ८ मुख्य उपकथा.

पोताना मित्रनुंज वीहक तरीके नाम जोई बिनअंदेशे **सिद्धार्थक**ने ते लेख लखी आप्यो. ए लेई ते **चाणक्य** पासे आव्यो. **कौटिल्ये** तेना उपर **निपुणके** रजु करेली मुद्राथी एनी पासे महोरशिक्को करावी मुद्रा अने लेख तेने सोंपी कह्युं:– "भाइ! कंइक आप्त पुरुषने सोंपवानुं काम हुं तने भाळववा चाहुं छुं. हवणांज हुं आ **शकटदासने** शूळिये परोवी देवानी सजा फरमावुं छुं; जेथी माराओ तेने वध्यभूमिये लेई जशे. ते अवसर तारे त्यां उघाडे खांडे जवुं अने रोषथी लालचूम दीसती जमणी आंखे सहज अणसारो करवो. ते उपरथी तेओ सैभीत बनी आम तेम नासवानुं करे एटले तारे **शकटदास**ने लेईने त्यांथी भागवुं; अने ए कायस्थना संगमां राक्षस पासे जई रहेवुं. पोताना मित्रनो जान बचाव्याथी प्रसंन थई अमात्य **राक्षस** ते वखत तने कांइ आपशे; ते तारे लेवुं अने आ मुद्राथी महोरछाप करी राखवुं; अने पछी केटलोक काळ **राक्षस**नांज पासां सेववां. दरम्यान अमारी अने **वृषल**नी वच्चे कलह थवानुं अने अमे अधिकारथी दूर थवानुं पण तुं सांभळीश. ए अनुसंधानमां शत्रुओ **पुष्पपुर** उपर दडमजले धसी आवशे. त्यारे पछी तेओ छेक आ शहेरनी लगभग आवी पहोंचे, ते वखते आ लेख अने पेलुं जे कंइ तने **राक्षसे** प्रसंन थई आप्युं होय ते लेईने जाणे **राक्षस** तरफथी **वृषल** उपर कांइ छानो संदेशो लेई जतो होय तेवो डोळ करी संतातो संतातो पण **मलयकेतु**ना हाथमां सपडाय एम कटकमांथी नीकळी जवानुं करजे; एटले तने रक्षकवर्ग पकडी बांधीने ते पहाडी म्लेच्छ पासे लेई जशे. त्यां तारे कहेवुं जे मने तो **राक्षसे** महाराज **चंद्रगुप्त** पासे मोकल्यो हतो अने एवुं म्होडे कहाव्युं हतुं जे '**काश्मीर कुलूत** आदि देशना पांच समर्थ राजाओ जेओ मारा मित्र छे ते आप **चंद्र**-श्रीने बहु सहाय छे. तेमांना पहेला त्रणने पहाडी राजानी भोंय जोइये छे अने बीजा बेनुं एना हाथीघोडामां चित्त रमे छे. माटे जेम **चाणक्यने** दूर करी सत्वरंते अमने आनंद उपजाव्यो तेम आमने आपली आशा पण पूरी पाडवी घटे.' ए रीते ज्यारे तुं कहीश त्यारे **मलयकेतु राक्षसने** रुबरुमां तेडावी तपास करशे. ते वखते तारे डगवुं नहि. पण बेधडक आ पापनो पोटलो **राक्षसने** शिर युक्तिथी एवो ढोळी पाडवो के ते शिर उंचुंज करवा पामे नहि. पछी ते भरमायलो **म्लेच्छ** एने मित्रद्रोही महापातकी करी तिरस्कार अने अ-

१ लेख लेई जनार. २ तननुं माणस. ३ शूळिये देवानी जगा, स्मशान. ४ भयथी बावरा. ५ मित्रने छेह देनार. ६ भारे पापी.

वज्ञा साथे काढी मूके एटले तारे मुक्त थया समजवुं ने घेर आववुं." आ रीते बराबर भणावी करी **कौटिल्ये सिद्धार्थकने** अर्थ सिद्ध करवा विदाय कर्यो.*

ए प्रणिधिनी पुंठ वळी ने ते सहस्रचक्षु[1] महामंत्रिये कालपाशिक[2] तथा दंडपाशिकने[3] आज्ञा मोकली जे '**राक्षसनी** प्रेरणाथी **विषकन्या** वडे आपणा परममित्र **पर्वतेश्वरने** मारी नांख्या एटला माटे क्षपणक **जीवसिद्धिने** फजेती साथे देशपार करवो, अने कायस्थ **शकटदास** एना राजविरोधी मित्रनी शिखवणीथी अहोनिश अमारुं अनिष्ट चिंत्यां करे छे माटे तेने पण ए गुन्हासर शूळिये परोवी देवो अने एना घरनांने कारागृहमां घोची घालवां.'†

ए हुकम आप्या पछी तेणे अमात्य **राक्षसना** अंतरना मित्र शेठ **चंदनदास** झवेरीनी खबर लेवा मनउपर लीधुं, एवा विचारथी जे **जीवसिद्धिना** देशनिकालना अने **शकटदासना** वधना प्रसंगथी डरी जाय तो डरावी **राक्षसनां** बायडीछोकरां ते आपी दे एम करवुं. तुरत तेणे पोताना शिष्यने शेठ **चंदनदासने** तेडी लाववा आज्ञा करी. झवेरी हाजर थयो एटले तेणे एने खुब ताप दीधो. पण न तेना तापथी के न **जीवसिद्धिना** देशनिकालना अथवा **शकटदासना** वधना ढंढेराथी ते वाणियो रंचमात्र डग्या सरखो जणायो. पाश प्रसारी प्रचंड यमदंड वींझी रहेला मृत्युने तृण तुल्य लेखतो होय तेवी आकरी ओजोमय[4] दृष्टिथी पण प्रौढ प्रशांतगंभीर आकृतिथी जळभर्या मेघनी गर्जना सरखी वाणिये उलटुं तेणे म्हो फेरवी कह्युं:—'शुं मने भयबय बतावो छो? सरियाम अमात्यनुं कुटुंब मारे त्यां होय तोये शिरसट्टेए[5] न आपुं तो नथी तेनी वात शी?' आ अचळ मैत्री अने अपूर्व आत्मार्पणबुद्धिनो उज्ज्वळ चमत्कार जोई विस्मय पामता बुद्धिमान महामंत्रीना चंचळ मगजमां तत्क्षण विद्युतना चमकारानी पेठे नवोज उजास ऊमग्यो. ते तेजना उद्योतमां[6] तेणे जोयुं जे '**राक्षसने** माटे आ प्राण पण अर्पवा तत्पर छे तो बेशक आना वधना मिषे आपणे आकर्षणी सिद्धि सरखा अनिवार्य बळे एने अहिं **पुष्पपुरमां** आपणा पंझामां आणी वशवर्ती करी शकीशुं.' आ तरंग ऊठतानी साथे विकराळ रूप करी बकारेला केशरी पेठे

* जुओ आ नाटक पृ. १६ तथा अंक ५ मां वर्णलुं **सिद्धार्थकनुं** चरित्र.

† जुओ आ नाटक पृ. १६.

१ हजार आंख वाळो, बहुज जाग्रत. २ अपराधीना निग्रहनो निर्णय करनारो अधिकारी. ३ अपराधीने शासन करवा नियमेलो अधिकारी. ४ तेजस्वी. ५ बीजाने माटे पोते हानि–खुवारी खमवो. ६ प्रकाश.

तहुकी, 'ले चाख त्यारे आ राजकोपनो स्वाद' एम कही, शिष्यने बोलावी आज्ञा करी के 'दुर्गपालने अमारा नामथी कहेवुं के आ कमजात बकालनी मालमत्ता जप्त करी **वृषल** एने शूळीनी सजा फरमावे त्यांसुधी बायडीछोकरां साथे सख्त केदमां राखवो.' आज्ञाने अनुसार शिष्य शेटने लेई रस्ते पड्यो.*

एकलो पडेलो **चाणक्य** भविष्यपट उपर पाडेलां चित्र जोई जतो हतो, तेवामां **चंदनदासनी** साथे जेने मोकल्यो हतो ते **शिष्य** श्वासभर्यो गाभरो गाभरो आवी कहेवा लाग्यो के '**शकटदासने** तो पेलो **सिद्धार्थक** वध्यस्थानथी छोडावी नाशी गयो.' कार्यसिद्धिना गणेश मंडाया जोई अंतरमां प्रसन्न थना विप्रे कृत्रिम कोप करी कह्युं:— 'अरे! जा कहे **भागुरायणने**, ए दुष्टने पकडी लावे.'†

भागुरायण तो ए पकडापकडीमां जाणे विही गयो होय तेम **चाणक्यना** गुप्त आदेश प्रमाणे आगमनथीज नाशी **मलयकेतु** पासे हजुर अमात्यनी पदवि‍ये जई रह्यो हतो. आथी शिष्य फीके म्होए पाछा आवी कह्युं के '**भागुरायण** तो क्यारनोए भागी गयो छे.' ते सांभळी क्रोधथी रातातातां थता **कौटिल्ये** कह्युं:—'अरे! बोल जईने **भद्रभट पुरुषदत्त डिंगरात बलगुप्त राजसेन लोहिताक्ष** तथा **विजयवर्माने** के तेओ हवणांने हवणां ए दुष्ट **भागुरायणनी** खबर ले'. पण **भद्रभट** आदि होय तो तेमने शिष्य कहे कनी! पगना पनोती उतारी बिचारो शियाविया शोकातुर चहेरे वळी आवी कहेवा लाग्यो:— 'अरेरे! अफसोस, अफसोस! सघळुंए **कोकडुं** गुंचायुं छे. **भद्रभट** आदि सुभटो तो वहाणुं वहातांए पहेलां भागी गया छे.' **चाणक्ये** शिष्यने धारण देई कह्युं के 'फिकर नहि. ए गया तो ओछा एटला. मारी बुद्धि सावीत छे तो हुं एकलो ए सउने पूरो पडुं एवो छुं.'‡

आम स्वपक्ष दुनियांनी आंधळी दृष्टिये दुर्बळ दर्शावी शत्रुना प्रणिधिनी पांगळी बुद्धि उंडा मोहकूपमां ढोळी पाडवा **कौटिल्ये मौर्य.** साथे कपटकलहनो खेल रमवो आरंभ्यो. 'आर्यनी ते केटली बधी भूल के हाथमां आवेला **म्लेच्छ मलयकेतुने** छटकी जवा दीधो!!! राजकाजमां एवी भारे कसुरो केम चाले?' एम हरदम चडभड्यां करतो **चंद्रगुप्त** गुप्त शिखवणी प्रमाणे **चाणक्य** प्रत्ये

* जुओ आ नाटक पृ. १७-२२.
† जुओ आ नाटक पृ. ३२.
‡ जुओ आ नाटक पृ. ३३.

तेनुं मन जणाववा लाग्यो. **चाणक्य** पण 'ए ने वळी माराज उपर चडभडे ने बडबडे !' एम विजयना मदमां **मौर्यनो** ताप न सखायो होय तेम उलटो वधारे वधारे आडो पडी प्रगट आज्ञाभंगथी **चंद्रगुप्तने** दुभवतो गयो.*

चाणक्य–चंद्रगुप्ते आ राजकीय मायाथी आंधळी आलम तो शुं पण देखता दुश्मननी आंखमां पण धूळ नांखी; जेने लीधे तेओए आ सउ इंद्रजाळ वास्तविक मान्युं, एमांनो एक गारुडीवेषी **विराधगुप्त** नामे अमात्य **राक्षसनो** प्रणिधि हर्षभेर ए समाचार अमात्यने कहेवा दोड्यो. **राक्षसे नंद** राजाना मृत्युने लीधे शोकमां शरीरनी टठवठ सउ विसारी मूकी हती; ते शोक तजाववाने मिषे कुमार **मलयकेतुए** पोताना अंगनां आभूषण उतारी, अमात्यने पोताना तर्फथी ते सजाववा कंचुकीने मोकल्यो हतो; ते ए आभूषण सजावीने गयो ने तुरत **विराधगुप्त** त्यां आवी पहोंच्यो. जयवंदना करी बेठा पछी अमात्यनी आज्ञा अनुसार तेणे **पुष्पपुरना** घेरार्थी मांडीने सघळा समाचार वीनवीने कह्या, अने **जीवसिद्धिने** देशवटो देवानो, **शकटदासने** शूळिये परोववानो अने एना घरनांने केदमां नांखवानो, तथा **चंदनदासने** अमात्यनां बायडीछोकरां छुपावी राख्यां बाबत **चंद्रगुप्तने** मुखे वधनी सजा फरमावतांसुधी सकुटुंब कारागृहमां[1] पूरी राखवानो वृत्तांत पण सविस्तर कही बताव्यो. पोताना मित्रोनी दुर्दशाना दुःखद समाचारथी **राक्षसना** मन अने मुख उपर उदासीनी घेरी छाया पसरी गई. तेवामां परिचारके एकदम प्रवेश करी कह्युं के '**शकटदास** श्वासभर्या द्वारे ऊभा छे.' निमिषभरमां अनास्था, संशय, अने आशानिराशाना अनंत अवस्थांतर अनुभवता ते मित्रवत्सल मंत्रिये तेने अविलंब अंदर आणवानी आज्ञा करी एटले रस्तानी धूळथी मेलादाट बनी गयेला एकश्वासे आव्याथी थाकी लोथ थई रहेला बे जण आवीने अमात्यने जयवंदना करी बेठा. जेने क्षणभर ते कमोते मुओ समजी शोचतो हतो तेज **शकटदासना** प्रत्यक्ष निजरूपे दर्शननुं अद्भुत इंद्रजाळ जोई आनंदाश्चर्यमां बूडेला **राक्षसे** निश्चळ नेत्रे ने शरुआ श्रवणे तो शुं पण दृढालिंगने रोमेरोमे तेना साक्षात्कारनी[2] संपूर्ण प्रतीति थतां पूछयुं:— 'भाई ! दुरात्मा **कौटिल्यनां** सपाटामांथी तुं शी रीते बची आव्यो ?' तेना जवाबमां तेणे 'ए सउ आ परम मित्र **सिधार्थकनो** प्रताप' एम कही हकीकत वीनवी बतावी. **राक्षसे** आ-

* जुओ आ नाटक पृ. ४३ पं. ५–१२.

१ केदखानुं. २ जाणवापणुं.

नंदना ऊभरामां **मलयकेतुनो** कंचुकी जे अमूल्य आभूषण घडी पहेलां पहेरावी गयो हतो तेज तत्क्षण पोताना अंग उपरथी उतारी **सिद्धार्थकने** बक्षीश करी दीधां. तेणे ते स्वामीना आदेश प्रमाणे उपकार साथे लेई कंचुकीनो आणेलो खाली दाबडो पड्यो हतो तेमां मूक्यां, **चाणक्यनी** आपेली **निपुणकवाळी** मुद्राथी महोरछाप करी, ' मारुं अहिं कोइ छे नहि ' ए मिषे ' जोईशे त्यारे लेईश ' एम कही, ते दाबडो अमात्य **राक्षसनाज** भंडारमां राखवा **शकटदासना** हाथमां सोंप्यो. तेणे ते उपरनी मुद्रा अमात्यना नामनी जोई **राक्षसने** बतावी. निस्पृहपणाना डोळथी अमात्य तेनी पूछपाछ करतो हतो तेटले सरळ कायस्थे तेना कृत्रिम मित्रने कह्युः—' भाइ, आ तो अमात्यनी मुद्रा छे. ए एमने तुं आपीश तो एओ तने अधिक धन आपी राजी करशे. ' ते उपरथी **चाणक्यना** गूढ प्रणिधिये ते अमात्यना चरणे निवेदन करी. **राक्षसे** ते लेई **शकटदासने** आपी, एवुं कहीने जे ' राजकाजना कागळोमां तारे एथी काम चलाववुं. '*

पछी ' **सिद्धार्थक** थाक्यो पाक्यो छे माटे एने सत्वर उतारे लेई जाओ ' एम कही सरळ कायस्थ साथे तेने विदाय करी, बाकीनी हकीकत पूरी करवा **विराधगुप्तने** अमात्ये फरमाव्युं. ते उपरथी तेणे **चंद्रगुप्त** अने **चाणक्यना** विरोधनी वात कही. ए सांभळी अमात्ये तेने एना एज वेशे पाछा **पुष्पपुर** जई प्रथमथी पक्षमां लीधेला वैतालिक **स्तनकलशने** ते ते विरोधना प्रसंगे वळ चढावे एवी कविता गाई **चंद्रगुप्तने** उश्केरवानुं कहेवा मोकल्यो. तेने विदाय करतां अमात्ये कह्युं जे ' आ खटपटनो जे परिणाम आवे ते **करभक** नामे दूतने हुं मोकलुं छुं तेनी साथे कहाववो.' प्रणिधि पाछो सिधाव्यो अने **करभकने** तेनी पुंठे पाठव्यो ते अरसामां **विश्वावसु** आदि त्रण भाइयो **चाणक्यना** मोकल्या वणिकवेषे पेला दानमां लीधेला **पर्वतकना** अलंकार **राक्षसने** वळगाडवा आवी पहोच्या. तेमनुं कपट ऋजु प्रकृतिना अमात्यना के सरळ बुद्धिना कायस्थना कळयामां न आव्याथी तेओए ते दागीना तेमनुं मन मनावी लीधा.†

करभक पुष्पपुर पहोच्यो ते पहेलां वैतालिक **स्तनकलशने** प्रणिधी वि-

* जुओ आ नाटकना अंक २ नी हकीकत.

† जुओ आ नाटकना अंक २ ना छेवटमां आपेली हकीकत.

१ आज्ञा. २ पोताने कांइ लागतुं वळगतुं न होय तेवा बेपरवाईनी डोळथी. ३ सिद्धां.

राधगुप्ते अमात्यनो संदेश संभळाव्यो हतो, अने ते अमात्यनी सूचना अमलमां लाववानी तक शोधतो हतो, तेवामां शरद ऋतुनी कार्त्तिकी पूर्णिमा उपर **चंद्रगुप्ते** कौमुदीमहोत्सव मचाववानो ढंढेरो फेरव्यो. **कौटिल्ये** ते बारोबार सरजोरीथी बंध रखाव्यो. ते उपरथी **चंद्रगुप्ते** तेने एकदम हजुरमां तेडावी महोत्सव बंध पाड्यानुं कारण माग्युं. केटलीक कटाकटी थया पछी **चाणक्ये** कृत्रिम कयडाकीथी कह्युं:—'करिये छिये तो बधुं अमेज, नीपजे नहि ने तारे तेनी शी पंचात?' ए मर्मवेधक वचन सांभळतांज जाणे हृदय भेदायुं होय तेम **चंद्रगुप्ते** कोप पूर्वक मुख फेरव्युं. एटले **स्तनकलश** जे ते घडिये त्यां पासेज हतो तेणे बीजा वैतालिके क्लेशशांतिना श्लोक गाया ते भेगां **मौर्यने** चढावना कारमा भावनी कविता ललकारी. **कौटिल्य** तुरतज समजी गयो जे 'आ सउ **राक्षसनां** चरित्र छे.' आथी तेना प्रपंचपाशमां तेनेज उलटो सपडाववा, **चंद्रगुप्त** वैतालिकोने लाखलाख सोनामहोर आपवा जतो हतो, तेने तेणे आडा पडी एकाएक निष्ठुर शब्दे रोक्यो. हवे कपटकलहनो रंग जाम्यो. नवा राजा **मौर्ये** रोपथी राता थई कह्युं:—'आम बांध्यो ने बीडयो राखो ने कशी वाते अमारुं धार्युं थाय नहि, त्यारे पछी आ राज्य शानुं? केदखानुंज?' वाम भ्रूनां उत्क्षेप पूर्वक आकृत सहज संकुचित दक्षिण नेत्रे, विकसता तरवरता ओष्ठे विप्र मंत्रिये उत्तर वाळ्यो:— 'होय आय तो संभाळ तारुं तारे हाथे.' 'ठीक छे त्यारे, एमां शुं?' भ्रकुटि मरडी अग्नि झरती दृष्टिये **मौर्ये** कह्युं: '—आजथीज संभाळीशुं, तो कहो तमे आ महोत्सव शा माटे अटकाव्यो?' **चाणक्ये** जवाब दीधो: '**भद्रभट** आदि बेदिल सुभटो आपणा शत्रु **मलयकेतुने** जई मळ्या छे तेनी तने कांइ खबर छे?' भारे नाराजी दर्शावी **मौर्ये** प्रतिप्रश्न कर्यो:— 'जो तेओने बेदिल जाणता हता तो शा माटे तमे आगमचथी चांपता उपाय न लीधा?' **कौटिल्ये** तुरत उत्तर आप्यो:— अश्वाध्यक्ष अने गजाध्यक्ष जे **भद्रभट** अने **पुरुषदत्त** ते कुछंदे चढी गया हता अने स्वकार्यमां अत्यंत प्रमाद दर्शावता हता, ते उपरथी तेमने अधिकारथी दूर कर्या हता. तेमनुं मन माने क्यारे के ज्यारे खुंचावी लीधेलो अधिकार तेमने पाछो सोंपिये ने हयदळ गजदळ कोडीनुं करिये. **डांगरातने बलगुप्तना** लोभनो थोभ न हतो, एटले गमे तेटलुं आपतांए धराय एम न हतुं. **राजसेन** अने **भागुरायणना** मनमां 'अरे रखेने ए आपणुं ए छिनावी ले' एवी

---

१ चंदनीमां मोटो ओच्छव. २ क्लेश शमाववाना. ३ डाबो भंमर. ४ अतर्भाव प्रकाशता.

अणपतीज आवी गई हती, जे चहाय तेटलुं आप्ये मिथ्या थाय एम न हती. **लोहिताक्ष** अने **विजयवर्मा** अहंपदने लीधे बीजाने मळता मानथी दुभाता तेनुं क्यम थाय ? आ रीते अनुग्रहनो तो अवकाशज न हतो. कदी तेमने निग्रह करवा गया होत तो आपणने आपणा सहोत्थायी वर्गने शिक्षा करता जोई प्रकृतिमंडळनो आपणा उपर अटळ अविश्वास बेशी जात. आटला माटे तेमने जवा दीधा. एओने पक्षमां लेई पिताना वधथी ऊकळी रहेलो **म्लेच्छ मलयकेतु** अमात्य **राक्षस**नी सहायताए जबरदस्त लश्करथी आपणने उखेडी नांखवानुं करे छे त्यां ते उत्सव करवो होय के युद्धनी सामग्री सजवी घटे ? ' तेनो बोल पकडी लेई **चंद्रगुप्ते** फरी प्रश्न कर्यो:— ' **मलयकेतु** नेज त्यारे शाने तमे जवा दीधो ? **चाणक्य** बोल्यो:— ' जवा न हतो देवो तो शुं केद करवो हतो अने **पर्वतक** मार्यानुं कलंक राक्षसने शिर लगाव्युं छे ते आपणे शिरज रहेवा देवुं हतुं ? के शुं कबूलेलुं अर्ध राज्य आपवुं हतुं अने **पर्वतक**नो मिथ्या वध कर्या ख्याली कृतघ्नताना पापथीज अंकित थयुं हतुं ' **चंद्रगुप्ते** अधर डशी उथालावी फरी पूछयुं:— पण त्यारे आ सर्व अनर्थनुं मूळ **राक्षस** आ नगरमां हतो ने तेने केम वळे पकडी न लीधो ? **चाणक्ये** कह्युं:— ' ए जाते बुद्धिशाळी ने साहसिक हतो; वळी तेना उपर नगरवासीनो बहु प्रेम हतो; त्यम तेनी सहायसंपत्ति अपार हती ने खजानो अखूट हतो. माटे ए शहेरमां रह्यो तो अंत:कोप ऊपावी[१] भारे अनर्थ उपजावशे, ने बहार गयो हशे तो बाह्यकोप जगावशे तोये युक्तिये ते शमावाशे, एम जाणी एने जवा दीधो. वळे पकडवा गया होत तो ए आपणा लश्करमांना कंइक सुभटनो घाण काढत अने छवटे प्राण पाडत पण जीवतो आपणा हाथमां न आवत. ए बेउ अनर्थ आटकाववा अने पेरेपेरे एने सर्व प्रयत्नमां खष्ट करी युक्तिये संग्रहवा आ अपूर्व रस्तो अमारे लेवो पड्यो.' **मौर्य चंद्रे** म्हो बगाडी कह्युं:— नहि नहि, ए कांइ नहि, तमारा करतां तो अमात्य **राक्षस**ज वधारे स्तुतिपात्र दीसे छे; जेणे शहेर आपणा हाथमां छतां **पुष्पपुर**मांज रही, आपणे विजयनो पडो वजडाव्यो तेमां वळे भंगाण पाडी, शहेर छोडी नीकळीनेए गहन नीतिप्रपंचथी ते ते विश्वासु सेवक उपरथी आपणो भरुंसो डगावी, आपणने एकले पंडे आटली सोसना ने विटमणामां नांख्या, अने जे अद्यापि नांख्यो जाय छे. तमे करीने शुं कर्युं छे ? **नंदकुळनुं निकंदन वाळ्युं ते तो दैवे वाळ्युं.**' आ शब्दो सांभळतां रोम रोम व्यापी रहेलो दारुण रोष क्यमे दबावी, भूमिपर प्रहार क-

१ उत्पन्न करी, उभेळो, ऊभो करी.

रवा उपडेलो पग थंभावी, ओठे आवेली प्रतिज्ञा बळे रोकी राखी, प्रचंड अंतः-क्षोभना निरुद्ध[1] प्रतिध्वनिरूप[2] वडवानळना[3] निर्घोषे[4] सरीखा ज्वलंत वर्णोवाळे शस्त्र फेंकी देई मंत्रिपद छोडी चाली नीकळ्यो. **चंद्रगुप्ते** पण तुरत ढंढेरो फेरव्यो जे 'हवे सउ काम **चाणक्य** वगर अमे जातेज करीशु.'*

आ खबर पहोंचाडवा **करभक पाटलिपुत्रथी** एके श्वासे **राक्षस** भणी धस्यो. अमात्य मंत्रविचारणाना[5] उजागराथी माथुं दूखतुं होवाने लीधे शय्यामांज पड्यो हतो त्यां द्वारपाळे आवी खबर करी जे 'कोइ **करभक** नामे दूत द्वारे ऊभो छे ते अमात्यने मळवा इच्छे छे.' **राक्षसे** तेने अंदर आववा देवानुं कह्याथी ते आवी जयवंदना करी बेटो. तेणे समाचार कहेवाए न हता मांड्या एवामां अमात्यनुं शरीर अस्वस्थ सांभळी **मलयकेतु भागुरायण** साथे तेने जोवा आव्यो. मार्गमां **भागुरायणने** तेणे पूछयुंः—" मित्र **भद्रभट** आदि शत्रुपक्ष तजी आवनार सुभटोए एम अर्ज करी जे 'दुरात्मा **चाणक्यथी** त्रासी अमे **चंद्रगुप्तने** मूकी कुमारश्रीनी छाया नीचे सेनापति **शिखरसेन** द्वारा आवी वश्या छिये, **राक्षस** द्वारा नहिं, एनो मर्म शो?' **कौटिल्यना** गुप्त प्रणिधिये जवाब दीधोः— '**नंदकुळना** कट्टा शत्रु **चाणक्यने** कदापिने **चंद्रगुप्त** न वन्ये दूर करे तो **राक्षस** वखत छे ने कुमारने पडता मूकी **नंदनोज** पुत्र समजी तेनी साथे संधि करे त्यारे **राक्षसना** छांयडे रहेवाथी आपणा उपरथीए कुमारनो विश्वास ऊठी जाय, ए अंदेशाथी तेमणे एम कह्युं हशे.' **भागुरायणनी** आ उक्तिथी काचा दिलना **म्लेच्छना** मनमां वहेमनुं बीज रोपायुं. मनमां गडभांग करतो ते अमात्यना आवासे आवी पहोच्यो. त्यां तेणे **कुसुमपुरनो** वृत्तांत चालतो जोयो, एटले शी मसलत चाले छे ते छानामाना जाणवानी मतलबे ए खंचाईने ओथे **भागुरायण** साथे सांभळतो ऊभो. **करभकनी** हकीकतमां ज्यां **चंद्रगुप्ते राक्षसनी** तारीफ करी **चाणक्यने** अधिकारथी दूर कर्यानो प्रसंग आव्यो एटले पहाडी **म्लेच्छ** तेना मित्र प्रति बोल्यो जे 'अमात्यना गुणनी तारीफ कर्या उपरथी **मौर्यनुं** वलण सहज **राक्षस** तर्फ दीसे छे.' कपटी मित्रे तेनो वहेम दृढ करवा कह्युं जे 'हा बराबर, वळी एणे **चाणक्यने** दूर कर्या तेथी ए वधारे खुल्ली रीते जणाई आवे छे.' आम तेमनी

---

* जुओ आ नाटकना अंक ३ नी हकीकत.

---

१ पराणे रोको राखेली. २ पडघो. ३ पुराणोमां कहेलो समुद्रनो भीतर प्रजळतो अग्नि. ४ गर्जना. ५ राजकार्यनुं चिंतन.

गुपचुप वातचित चालती हती तेवे बीजी बाजुए **राक्षसे** दूतने पूछयुं जे 'ए पैदच्युत ब्रह्मबंधु क्यां छे हाल ?' दूते उत्तर वाळयो जे 'छे तो **पुष्पपुर**मांज, पण तपोवन जाय छे–जाय छे एम संभळाय छे.' अमात्यना मनमां ए वात उतरी नहि. तेणे साशंक चित्ते सहज माथुं धुणावी खुब दम लेई निश्वास मूकी जरा अधरोष्ट थडकावी कह्युं:—'नहि नहि, एणे पोतेज गादिये बेसाडेला **मौर्य**थी ए आवुं अपमान पामी तपोवने न जाय अथवा प्रतिज्ञाए न ले ए बने नहि—बने नहि.' ते वखते **शकटदास** पासे हतो ते बोल्यो:—'खाली कुतर्क जवा दो. एने पहेलानी प्रतिज्ञानो अनुभव हजु ताजो छे. माटे मिथ्या वहेमनुं कांइ कारण नथी.' 'एम हशे त्यारे' एवुं कही अमात्ये तेना कायस्थ मित्रने दूतना उताराना बंदोबस्त सारुं तेनीज साथे विदाय कीधो. पछी पोते **मलयकेतु**ने मळवा जवानो विचार करतो हतो तेटलामां लाग जोई ते प्रगट थयो. खबर अंतर पूछया पछी तेणे प्रश्न कर्यो:—'वारुं हवे आम शत्रुनां अपचिन्हनी शोधमां क्यांसुधी आपणुं बेशी रहेवुं थशे? अमात्ये उत्तर आप्यो:— **मौर्य चाणक्य**थी विखूटो पड्यो छे. माटे हवे ए फावशे नहि; केमजे ए केवळ सचिवतंत्री छे. नगरवासी तो आपणा पक्षमां छेज, तेनी साथे तम सरखा अग्रणी छो. तेथी सिद्धि हवे दूर नथी.' पहाडी राजाए कह्युं:—'ठीक तो हवे ऊपडिये. मारा हाथियो **शोण** नद पार करी देई **पुष्पपुर**ने घेरी लेशे.' एम कही ऊठी ते तेना हजुर अमात्य **भागुरायण** साथे स्वभवने सिधाव्यो; अने **राक्षसे** एटलामां गोरजी **जीवसिद्धि** हाजर हशे तेथी तेने बोलावी प्रयाणमुहूर्त पूर्णिमानुं नक्की कर्युं.*

कुचमुकाम करी सैन्य हवे **शोण** ओळंगी **पाटलिपुत्र** तर्फ धस्युं. शहेर थोडीज मजल दूर रह्युं एटले शत्रु पासे होवाथी व्यूह रचवा तथा बीजी गोठवण करवा लश्करे पडाव नांख्यो. शत्रु पासे कंइ पण बातमी जवा न पामे तेम तेमना भेदुओ आवी सैन्यमां फाटफूट करवा न पामे एटला सारुं अत:पर छाप लीधा वगर कोइने कटक बहार के अंदर जवा के आववा देवा नहि एम ठराव करी जूदे जूदे नाके जापता सारुं रक्षकवर्ग नियमवामां आव्या; तथा जरूर सर आववा जवा जे चहाता होय तेमने छाप करी आपवा **भागुरायण** मुकरर करवामां आव्यो. **म्लेच्छ** कुमार तेनी साथे एवो तो हळी गयो हतो जे तेने

---

* जुओ आ नाटक अंक ४ नो हकीकत.

---

१ अधिकारथी दूर करायलो. २ मुकाम उपाडी शत्रु उपर चढी जवानुं मुहूर्त.

पोतानाथी रंचे अळगो थवा देतो नहि. आथी आ प्रसंगे पण ते दरबारना मंडपमांज आसन नांखी बेठो हतो. त्यां तेने शोधतो कुमार **मलयकेतु** आवी चढ्यो. विनोदमां धीमे रही पाछळथी गुप्त रीते आवी ते तेनी आंखो दबाववा विचार करतो हतो, एटलामां छाप लेवा गोरजी **जीवसिद्धि** त्यां आव्यो. **भागुरायणे** तेने अमात्य **राक्षस**नो मित्र लेखी सहज अटकळथी कह्युं:—' महाराज ! कांइ **राक्षस**नाज कामे जाओ छो, नहिं वारुं ? ' जाणे अमात्य **राक्षस**ना नामथीज त्रास वछूट्यो होय तेम ते जैन गोरजिये उत्तर आप्यो:–' अरेरे! ए शुं दुष्ट वचन भाख्युं शिष्य! मारे तो ज्यां न राक्षसनुं के पिशाचनुं नाम संभळाय त्यां टळवुं छे.' त्यारे **भागुरायणे** सहज कुतूहळथी पूछ्युं:–' अरे! शुं **राक्षसे** महाराजने कंइ दूभव्या छे, के महाराज एमना उपर आटला कोपायमान जणाओ छो ? ' क्षपणके जवाब दीधो:— '**राक्षसे** मने दूभव्यो केम कहुं ? हुंज हीणभाग्य मारा पोताना कर्मथी लाजी मारे शिरज दोष देउं नहि ! ' आ वचनथी स्वाभाविक रीते जिज्ञासा तनखायाथी गोरजीने तेणे हकीकत वीनवीने कहेवा आग्रह कर्यो. प्रण ज्यारे तेणे आनाकानी करवा मांडी, त्यारे ते जरा हशीने गोरजी प्रति बोल्यो:– ' भले तो नहि कहो तो हुं छापे आपनार नथी. ' आटली रकझक थया पछी जाणे कहेतां कचवातो होय तेम छेवटे तेणे कह्युं:—' सांभळो त्यारे. **राक्षस** साथे मारे **पाटलिपुत्र**मां मैत्री थई. ते संधिमां अमात्ये कांइ राजकाजने लीधे **विषकन्या**वडे **पर्वतेश्वरने** मारी नांख्या. ए पापना छांटा **राक्षस**नी मैत्रीने लीधे मने लाग्या, ने मने **चाणक्ये** गुन्हेगार करी फजेती साथे देशपार कर्यो. हवे वळी पाछो **राक्षस** एवुं कांक करवा बेठो छे, जे तेथी मारे देशपार तो शुं, पण दुनियांपार थवानो अवसर आवे. ' तेने तेटलेथी अटकावी **भागुरायणे** कह्युं:—' अरे ! ए दुष्ट कर्म तो **चाणक्ये** कर्युं एम अमे तो जाणिये छिये. ' कानमां आंगळियो घाली नेत्र सहज नीचां ढाळी माथुं धुणावी गोरजिये उत्तर वाळ्यो:—' हळाहळ अधर्म ! **चाणक्ये** तो **विषकन्या**नुं नामे न हतुं सांभळ्युं.' **कौटिल्य**ना प्रणिधिये जोयुं जे ' आ ठीक घाट छे. गोरजी **राक्षस**नो परम मित्र छे, तेथी ए कहेशे ते **मलयकेतु**ना मनमां उतरी जशे. ' आ ठरावथी तेणे ते गोरजी प्रति कह्युं:— ' आ ल्यो छाप, पण आवो, कुमारश्रीने आ निवेदन करो. ' **मलयकेतु** जे पासेज ओथे ऊभो सांभळतो हतो, तेणे छता थई कह्युं:– ' अरे भाइ ! ए ज्वलंत[1] धातुद्रव[2] क्यारनोए आ कर्णकूपमां रेडायो. अरेरे **राक्षस** ! मित्र मानी भरुंसाथी जेमणे तने सउ काम सोंपी दीधुं हतुं, तेमनेज तारे आम

१ बळतो. २ धातुनो रस;–लावा (lava).

छेह देवो घटतो हतो ? धिक्कार छे तने ! तुं नाम प्रमाणे कृतिये पण खरेखर राक्षसज छे ! ' आम ते शोक मोह अने परितापथी विवश बनी लवतो हतो, तेवे **राक्षस** अने **मलयकेतु**ना पग नीचे आ भयंकर सुरंग फोडी **जीवसिद्धि**-वेशी **चाणक्य**नो प्रणिधि **इंदुशर्मा** ' अहो ! दुरात्मा **म्लेच्छे** सांभळ्युं तो ! अहाहा एटलुंज जोईतुं हतुं ' एम मन साथे कहेतो रस्ते पड्यो.*

पितृवधने लीधे तिव्र हृदयक्षोभथी उग्र रोषना आवेशमां, नहिने **मलयकेतु** अमात्य **राक्षस**ने एकदम मारी नखावे, तो तेने गमे ते प्रकारे जीवतो राखवानी आर्य **चाणक्य**नी आज्ञा बरबाद जाय; ए भीतिथी तेनो जान बचाववा विकळ **म्लेच्छ** कुमारने तेना दांभिक मित्रे धीमो पाडवा कह्युं:—कुमार ! शांत थाओ. राजद्वारीनी मित्रता शत्रुता अने तटस्थता अर्थसर होय छे. आथी, ते वखते महाराजा **नंद** मरतां करी **सर्वार्थसिद्धि**ने गादी अपाववी हती तेमां **राक्षस**ने प्रतापी **पर्वतेश्वर**नी खरेखरी आडखील हती, माटे कदापि ते अवसरे तेमनो तेने आम घाट घडवो पड्यो हशे. अर्थदृष्टिये एमां **राक्षस**नो दोष नथी. आटला माटे हाल आ बाबत एने कांइ कहेवुं नहि, पण आपणे आपणो अर्थ सरतां सुधी एने आपणो करी राखवो, एवी मारी विनंति छे. बाकी एने कांइ करवा जतां भारे प्रकृतिक्षोभ थशे अने आरे आव्युं वहाण डूबशे. '†

आ वात ए **म्लेच्छ** कुमारने गळे उतरी न उतरी, ने परिचारके चतुर्भुज-रूपे एक आदमीने आणी खडो कर्यो, अने कुमारने जयवंदना करी हजुर अमात्य प्रति बोल्यो:— ' आर्य ! आ माणस छाप विना कटकमांथी नीकळी जवानुं करतो हतो, जेथी सैन्यरक्षकना वडा अधिकारी **दीर्घरक्षे** बांधी एने आर्य पासे तपास सारुं मोकल्यो छे. एनी पासे बीडेलो लेख पण छे. ' आ बंदीवान ते **चाणक्य**नो आप्त प्रणिधि **सिद्धार्थक**ज हतो. ते **कौटिल्ये** शिखव्याप्रमाणे पेलो कपटलेख अने पेलां आभूषणनो दाबडो लेईने, मिथ्या अमात्य **राक्षस**नो संदेश **पुष्पपुर** लेई जवाना डोळे कटकमांथी चाली नीकळ्यो हतो. तेने पकडावुंज हतुं माटे जाणी जोईने तेणे छाप लीधी न हती. **भागुरायणे** परिचारकने पूछयुं जे ' आ कोइनी तेनातमां छे के कोइ अजाण्योज छे ? ' पण **सिद्धार्थके**ज तेनो उत्तर वाळ्यो जे ' हुं अमात्य **राक्षस**नो सेवक छुं; ने आ उतावळनुं काम हतुं, तेथी ताकीदने लीधे छाप लेवा न हतो रह्यो. ' ' जोइये, केवुं उतावळनुं काम छे ? ' एम कही **मलयकेतु**ए एनी पासेथी

---

* जुओ आ नाटक पृ. ८५–८९.

† जुओ आ नाटक पृ. ८९.

લેખ જોવા લીધો; પણ વાંચી જોયો તો બધું બાધેભારે નામનિર્દેશ વગર લખેલું દીઠું. તેથી કળ્યામાં ન આવ્યાથી **સિદ્ધાર્થક** પાસે મોઢે ખુલાસો માગ્યો. તે આપતાં તેણે આનાકાની કરી, ત્યારે **ભાગુરાયણે** તેને બંબજાવવા હુકુમ કર્યો. માર ખાતાં તેણે પેલો દાગીનાનો દાબડો નાંખી દીધો. સેવકે આવી તે કુમાર આગળ રજુ કર્યો. તેને ઉઘાડીને જોયું, તો પોતેજ અંગ ઉપરથી ઉતારી જે આભૂષણો **રાક્ષસ** અર્થે કંચુકીસાથે મોકલ્યાં હતાં તેજ દીઠાં. દાબડા ઉપર તેમજ લેખ ઉપર **રાક્ષસ**ની નામમુદ્રાની છાપ હતી, તથા દાબડો લેખ સાથે હતો, તેથી તેણે અટકળ બાંધી, જે લેખમાં લખેલો કાંઇ 'અશૂન્યાર્થ' તે આજ હશે. વિશેષ ખાતરી કરવા તેણે **સિદ્ધાર્થક**ને વધારે બંબજાવવાનો હુકુમ કર્યો. બહુ માર ખાધા પછી આખરે **સિદ્ધાર્થકે** કબૂલ કર્યું જે 'હું કુમારની સમક્ષ સઉ નિવેદન કરીશ.' તે ઉપરથી તેને **મલયકેતુ** પાસે આણ્યો. ત્યાં તેણે પ્રથમથી માફી માગી કહ્યું:— 'મને અમાત્ય **રાક્ષસે** આ લેખ આપી **ચંદ્રગુપ્ત** પાસે મોકલ્યો હતો, અને મોઢે કહાવ્યું હતું જે **કુલૂત, કાશ્મીર, મલય**ભૂમિ, **સિંધુ**દેશ, અને **પારસીક** રાજ્યના રાજાઓ મારા પરમ મિત્ર છે, તેઓ **ચંદ્રશ્રી**ને સંપૂર્ણ સહાય છે. એમાંના પહેલા ત્રણને **મલયકેતુ**ની ભોંય અને બીજા બેને હાથીઘોડા જોઇયે છે. માટે, **ચાણક્ય**ને દૂર કરી સત્યવંતે જેમ અમને પ્રસંન કર્યા, તેમ આમની પણ આશાઓ પૂર્ણ કરી સત્યવંતે આનંદ ઉપજાવવો ઘટે છે.'*

ગોરજી **જીવસિદ્ધિ**ના વચને **મ્લેચ્છ** કુમારનું મન જે ક્યારનું ધુંધવાઇજ રહ્યું હતું, તેમાં આ કથને ઘીની ધારા રેડ્યા જેવું થયું. તેણે તાબડતોબ અમાત્ય **રાક્ષસ**ને તેડવા માણસ મોકલ્યું. થોડીક વારમાં અમાત્ય **રાક્ષસ** આભૂષણ સજી આવી હાજર થયો. આસને બિરાજ્યા પછી **મલયકેતુ**એ ઘડીભર હૃદયમાં પ્રજળી રહેલો અગ્નિ સમુદ્ર સરખા ગાંભીર્યથી છુપાવી રાખી સહજ હસતે મ્હોડે **નંદ**કુળના મહામંત્રીને કહ્યું:— 'અહો! શી એવી ખટપટમાં ગુંથાયા છો, જે હવણાંનાં તમારાં દર્શને નથી થતાં?' અમાત્યે સરળ બુદ્ધિયે જવાબ દીધો:— '**પુષ્પપુર** ભણી સવારીની ગોઠવણ કરવા રહ્યો, તેથી હું આ ઠપકાને પાત્ર થયો છું.' 'શી રીતે ગોઠવણ કરી છે?'—એમ પહાડી રાજાએ પૂછ્યે **રાક્ષસ** નિરાતંકે[1] ચિત્તે બોલ્યો:— 'મોખરે મારી સાથે **ખશ** ને **મગર** સાચવશે, મધ્યે **યવન** અને **ગાંધાર** રહેશે, અને પુંઠે **હુણ, ચીણ** અને શક લોકનાં દળ આવશે. વળી **કુલૂત** આદિ દેશના પાંચ રાજાઓ છે તે કુમારશ્રીની આસપાસ રહેશે.' એ

---

* જુઓ આ નાટક પૃ. ९०-९३.

---

१ નિર્ભ્રાંત, વહેમ-અંદેશા રહિત.

हकीकत सांभळी पीपाशंकी **म्लेच्छ** राजा, महा हाळाहळ विष रोमेरोमे व्यापी गयुं होय तेम हृदयोन्माथी वेदनाना उग्र आवेगथी विकळ बन्यो छतां, प्रयत्ने मनोविकार रोकी राखी धीरजथी शंकित द्रोहना उद्घाटनने अर्थे **राक्षस** प्रति बोल्योः—' आर्य ! कोइ **कुसुमपुर** जतुं आवतुं छे के ? ' तेना मननुं कूड जेना कळ्यामां न हतुं तेवा अमात्य **राक्षसे** निर्भ्रांत उत्तर दीधोः— 'पोतेज थोडे दिवसे त्यां जईशुं, हवे जतुं आवतुं केवुं ? ' वचनपाशमां फसेला अमात्यने **मलयकेतुए** **सिद्धार्थक** तर्फ आंगळी करी पूछ्युंः— ' आने त्यारे आर्ये लेख लेईने शा प्रयोजने मोकल्यो छे ? ' **राक्षस** तो लेखनी वात जाणतोए न हतो. तेथी अनास्था विस्मय अने संशय साथे तेणे ते कूटपरिचारकने पूछ्यूंः—' केम भाइ ! शुं छे ? ' **कौटिल्यनी** कपटकळाना शिष्ये जाणी जोईने गल्लांतल्लां खावा मांड्यां. त्यारे **म्लेच्छ** कुमारे पोताना हजुर अमात्य **भागुरायणने** हकीकत टूंकामां कहेवा हुकुम कर्यो. आज्ञाने तावे थई तेणे कह्युंः— ' आर्य ! आ माणस कहे छे जे मने अमात्ये आ लेख आपी मुखसंदेश साथे **चंद्रगुप्त** पासे मोकल्यो हतो. ' **राक्षसे** अधीराईथी लेख लेई जोईने जवाब दीधोः— ' आ लेख मारो न होय. ए तो दुश्मननी बनावट हशे. ' **मलयकेतुए** त्यारे कह्युंः— ' लेखना अशून्यार्थ तरीके आर्ये आ आभूषण पण मोकल्यां छे, ने पछी ए दुश्मननी बनावट केम बने ? ' **राक्षसे** आभूषण तपासी मुझाया वगर निडर चित्ते उत्तर आप्योः— 'अहा ! आ तो असल कुमारेज मने सजावेलां आभूषण; ए में पाछळथी कोइक प्रसंगे **सिद्धार्थकने** बक्षीश आप्यां हतां. ' **मलयकेतुए** तेने फरीने प्रश्न कर्योः— ' मुखसंदेश **सिद्धार्थक** कहेशे एवुं जे ए लेखमां लख्युं छे, अने एने जे तमारी छाप छे, तेनुं शुं कहो छो ? ' अमात्ये जवाब दीधोः— मुखसंदेश केवो—लेखज अमारो न होय तो ? छाप तो कोइये खोटी बनावी हशे. ' त्यारे **भागुरायणे** ए वातनो निर्णय करवाने मिषे **सिद्धार्थकने** ए लेख लखनारनुं नाम पूछ्युं. त्यारे तेने मारनी धमकी पाछी आपी, त्यारे तेणे **शकटदासनुं** नाम दीधुं. ते उपरथी अक्षर अने छाप मेळवी जोवा **राक्षसनी** नाममुद्रा साथे **शकटदासना** हस्ताक्षरनुं पत्र मगाव्युं. सरखावतां मुद्रानो उठाव अने अक्षरनो मरोड मळतो आवतो दीठो. आथी **राक्षसनुं** म्हो जरा लेवायुं, अने ते अनेक संकल्पविकल्पमां पड्यो, एटलामां **मललकेतुनी** दृष्टि अमात्ये पहेरेला दागीना

---

१ अनिष्टनी आशंका राखतो. २ हृदयने मथी चीरी नांखती. ३ उघाडो करवो ते. ४ सेवकनो मिथ्या डोळ करनार.

उपर पडतां तेणे ते सहज कुतूहळथी जोयो, तो मरता पहेलां तेना पिताए जे दागीना पहेर्या हता तेना जेवो ते दीठो. धारीने जोतां तेनी खातरी थई के एतो एज छे. तेटले तेणे **राक्षसने** पूछयूं जे 'आ **पर्वतेश्वरनो** अलंकार तमारी पासे शी रीते–?' **राक्षस** बोल्योः–– 'अमे तो आवा त्रण दागीना कोइ वणिक वेचवा आव्या हता तेमनी पासेथी वेचाता लीधा हता. अहा! समज्यो हवे. ए तो दुरात्मा **चाणक्येज** आ आभूषण मने वळगाडवा काजे एओने वणिकवेषे मोकल्या हशे.' ए वात **मलयकेतुना** मानवामां आवी नहि. फरीने तेणे पेला लेख अने दाबडा भणी आंगळी करी अधीराईथी पूछयुंः— 'पण आनुं शुं?' अमात्य **राक्षसे** कपाळे हाथ दीधो, अने दैवनो दोष काढ्यो. एटले पहाडी **म्लेच्छनो** मिजाज[1] कबजामां न रह्यो. तेणे दांत पीशी अधर डशी भ्रुकुटि चढावी आंख फेरवी क्रोधथी रातातातां थई कह्युंः— 'हजुए दैवने दोष देई तुं तारां हीणां कर्म छुपाववानुं करे छे? अरेरे क्रूर कृतघ्न! तेंज ते **विषकन्यावडे** मारा विश्वासी पितानो घाट घड्यो! तेज तुं हवे तेटलेथीए न धराई आ अमारुं उन्हुं लोही पीवानुं करे छे!' **राक्षसे** जीभ करडी कानमां आंगळी घाली कह्युंः–– 'अरेरे! अधर्म मां बोलो. हुं **पर्वतेश्वरना** वधमां छुंज नहि.' **मलयकेतु** घांटो काढी तड्कीने बोल्योः— 'शुं? तें नथी मार्यो? तारो मूडियो **जिवसिद्धि** कहे छे ते खोटुं? **राक्षस जीवसिद्धिनुं** नाम सांभळतांज आभोज बनी गयो. जाणे कोइ महा प्रेते आक्रम्यो होय, अथवा कोइ कारमी मांत्रिक शक्तिये अचेत बनावी दीधो होय, तेम ते अवाचक शून्य संज्ञा रहित ऊभो हतो ने **मलयकेतुए** हुकुम कर्यो जे '**कुलूत** आदि देशना पांच फितुरी राजामांथी पहेला त्रण जेमने अमारी भोंय जोइये छे तेमने उंडी खाई जोई भोंय भेगा करवा, अने बाकीना बे जेमने हाथीघोडा जोइये छे तेमने हाथीघोडाना पगे बांधी मारवा.' पछी तेणे दिङ्मूढवत् बेटेला **राक्षस** तर्फ फरी तिरस्कार अने क्रोधथी अहंकार पूर्वक कह्युंः—'**राक्षस** . **राक्षस**! हुं विश्वासघाती **राक्षस** नथी, **मलयकेतु** छुं. माटे, जा जतो मूकुछुं; **चंद्रगुप्तनोज** संगी थईने रहे अने थाय ते करी ले.' [illegible] होत बनी गयेलो अमात्य कांइ जवाब आपे ते पहेलां, **म्लेच्छ** [illegible] साथे त्यांथी चाली नीकळ्यो, अने पांच **म्लेच्छ** राजाओना [illegible] अमलमां आव्यो के मुकाम उपाडी **पुष्पपर** भणी धर्यो.*

* जुओ आ नाटक पृ. ९३–१०२.

1 झपटमां–कबजामां लीधो.

ए गयो त्यारपछी केटलीक वारे **राक्षस** शुद्धिमां आव्यो. ए घडिये तो पांचे **म्लेच्छ** राजाओ देवशरण पहोंची चूक्या हता. ते मरतां करी हाथपग ने हैया वगरना बनेला **नंदना** महामात्ये निश्वास मूकी अत्यंत क्षोभ अने आवेगथी मन साथे कह्युं:—'अरेरे ! अफसोस ! अफसोस ! बिचारा **चित्रवर्मा**दिक पण मारे लीधे मार्या गया ! जा जीव ! शत्रुनुं नहि ने शुं मित्रनुंज सत्यानाश वाळवा बेठो छे ?. अरेरे ! हुं हीणभागी शुं करुं ... ... ?' अनेक संकल्प विकल्प कर्या पछी छेवटे तेणे पोतान मित्र **चंदनदासने** छोडाववानो मनसाथे ठराव कर्यो.*

आ निश्चयथी **पुष्पपुर** भणी तेणे पोतानां पगलां फेरव्यां. आ वखते तेनी पासे अमात्य पदवीनुं अभिज्ञान[1] जे शस्त्र तेज केवळ हतुं. मार्गमां तेना जाणवामां आव्युं जे पांच प्रधान मंडळेश्वरोने कमोते मारी नखाव्याथी, राजाराणा अने सुभटसैनिको जे जेनाथी जेम नसायुं तेम त्रासना मार्या **मलयकेतुनी** कटकभूमि छोडी नाशी जवाथी, **भद्रभट** आदि सुभटोए लश्कर निर्बळ त्यम बेदिल जोई **मलयकेतुने** पकडी केद करी लीधो; अने एज संधिमां **चाणक्ये** जूज चुंटी काढेला सैन्यथी समस्त **म्लेच्छ** सैन्यने शरण थवानी फरज पाडी. परंतु आ बाबत विषे अमात्य **राक्षस** हवे केवळ उदासीन हतो. एनुं चित्त तो एना वणिक मित्रना विमोचन[2] विषे लागी रह्युं हतुं. आटला माटे तेना कांइ समाचार मेळववा अमात्य **पुष्पपुरनी** उज्जडखंख पडेली जूनी वाडीमां पेठो. ए **पुष्पपुरमां** आव्याना समाचार **उदुंबर** नामे प्रणिधिये **चाणक्यने** क्यारनाए पहोचाड्या हता; जे उपरथी तेणे भणावीने एक प्रणिधिने तेनी पाछळ जीर्णोद्यानमां मोकल्यो हतो. तेणे, ज्यां **राक्षस** एक भागेला शिलातल उपर पोताना दुर्भाग्य अने दैवनी दुष्टता उपर विचार करतो बेठो हतो त्यां आवीने, ए देखे एम, एक झाडना डाळे गळे फांसो नांख्यो. परदुःखे दुखिया अमात्ये जाण्युं जे 'आ पण कोइ मारा जेवो दुखियारो छे; माटे, लाव जोई, पूछूं, ए शा माटे फांसो खाय छे ?' तेणे तेनी पासे जई पूछ्युं:—'[illegible]हो भाइ ! तुं आम शा माटे पराणे प्राण काढे छे ?' तेणे जवाब दीधो:— 'अ[illegible]गां अंतराय थाय छे. माटे माफ करो, हुं कही शकतो नथी.' [illegible]हेतो गयो तेम तेम दयाळु **राक्षसनी** सांभळवानी उत्कंठा व[illegible] अने ते वधारे वधारे आग्रह करवा लाग्यो.

---

* जुओ आ नाटक पृ. १[illegible]

---

१ निशानी, चिन्ह. २ छुट[illegible]रा.

आथी छेवटे तेणे लाचार बनी कह्युं:–'आर्य! आ नगरमां झवेरी **विष्णुदास** करीने मारो एक मित्र छे. ए हवणां पुण्यदान करी दु:खनो मार्यो बळी मरवा नीकळ्यो छे. तेनो विरह न खमाये हुं अहिं गळे फांसो खावा आव्यो छुं.' **विष्णुदास** ते **चंदनदास**नो मित्र हतो तेथी आतंक चित्ते **राक्षसे** फरी प्रश्न कर्यो जे 'ए तारो मित्र शा माटे बळी मरे छे?' त्यारे पेलो पुरुष बोल्यो जे 'आर्य! हवे तो माराथी मरणमां विलंब नहि खमाय. माफ करो मने.' अमात्ये बहुज हटहट करी त्यारे तेणे अत्यंत लाचारिये कह्युं:–'एनो झवेरी **चंदनदास** करीने मित्र छे. तेने आज अमात्य **राक्षस**नां बायडीछोकरां छुपावी राखवा बाबत शूळिये देवा हुकम थयो छे. एने छोडववा मारा मित्र **विष्णुदासे** पोतानुं सर्वस्व आपवा मांड्युं; पण **चंद्रगुप्ते** ते न मान्याथी, ते मित्रनी माठी खबर काने सांभळवी न पडे एटला माटे ए आगमच बळी मरवा नीकळेल छे.' **राक्षसे** शंकाकुळ फडफडते चित्ते फरी पूछयुं:–'**चंदनदास**ने हजु शूळिये देई तो नथी दीधो?' पेला मनुष्ये उत्तर आप्यो:–'आज एने शूळिये दे छे हवे. फरी फरीने हवणां पण एने बहु समजावे छे के आपी दे **राक्षस**नां बायडीछोकरां, पण ए शेठियो एकनो बे नथी थतो.' ए कथन सांभळी अंतरमां ए सुमित्रनी अचळ भक्तिनी प्रशंसा करता अमात्ये गळे फांसो खानारने कह्युं:–'भाइ! जा-जा तारा मित्र **विष्णुदास**ने वळतो अटकाव. हुं जईने आ शस्त्रथी **चंदनदास**ने छोडावुं छुं.' **कौटिल्य**ना गूढ प्रणिधिये पगे पडी कह्युं:–'अहा! शेठ **चंदनदास**ने जीवितदान आपवा आर्यने तत्पर जोई हुं धारुं छुं, जे आर्य शुभनामी अमात्य **राक्षस**ज छो. मारां धन्य भाग्य जे हुं आर्यनां पवित्र दर्शन पाम्यो. पण आर्य शस्त्र लेईने जशो तो ते बिचारा **चंदनदास**नो अंत उलटो वहेलो आवशे; केमजे पूर्वे **शकटदास**ने एक पुरुष उघाडी तरवारे छोडावी नाठो हतो, त्यारे, शा माटे गफलत करी एम कही, मारानी कमुर काढी तेमने **चंद्रगुप्ते** शूळिये चढावी दीधा हता; त्यारथी माराओ आगळ पाछळ कोइ पण हथियारबंध मनुष्यने जुए छे के पोतानो जीव बचाववा वध्यने पूरोज करी दे छे. माटे मारी प्रार्थना छे जे आम सशस्त्र आर्य नहि जशो.' एम कही ते **विष्णुदास**ने वळतो अटकाववाना मिषे त्यांथी रस्ते पड्यो.*

कौटिल्यना प्रणिधिये भडकाव्याथी **नंद**रायना महामात्य पदनुं छेल्लुं अभि-

* जुओ आ नाटक पृ. १०७–११७.

१ सभय.

ज्ञान जे शस्त्र ते फेंकी देई **राक्षस** पण **चंदनदास**ना विमोचन सारुं वध्यस्थान भणी धस्यो. त्यां चंडाळो तेना मित्रने पकडीने शूळिये चढावी देता हता, अने तेनी स्त्री 'कोइ धाओ रे! कोइ धाओ रे!' एम आक्रंद करती हती. तेवामां तेणे एकाएक चंडाळ पासे जई छता थई कह्युंः—'रे रे घातको! जेने माटे तमे आ बिचारा निरपराधी पूज्य सत्पुरुषने मारो छो ते हुं आ रह्यो. ए वधमाळा मने पहेरावो अने आने छूटो करो.' अमात्य **राक्षस** पकडायाना आ शुभ समाचार चंडाळे जई **चाणक्य**ने कर्या. एटले ते **राक्षस**ने मळवा आववा **चंद्रगुप्त**ने तैयार करी ते वध्यस्थाने आव्या, अने जई **राक्षस**ने अभिवंदन कर्युं. अमात्ये पाछा खशी कह्युं जे 'हुं चंडाळना स्पर्शथी छोवायो छुं, माटे तमे अळगा रहो.' त्यारे **कौटिल्ये** जरा हसते म्होए जवाब दीधोः— 'अमात्य **राक्षस**! आ चंडाळ नथी, पण **मलयकेतु**ना कटकनो पराजय थतां पाछो आवेलो तमारो परिचित **सिद्धार्थक** छे. अने आ तेनो मित्र **समिद्धार्थक** छे. वळी जे पेलो कपटलेख बिचारा **शकटदास** पासे प्रपंचथी लखावेलो ते पण मेंज. टुंकामां **भद्रभट** आदिने अहिंथी भगावी तमारामां मेळव्या ते, अने आ **सिद्धार्थक**ने तमारी पासे रखाव्यो ते, अने **पर्वतेश्वर**ना दागीना तमने वळगाड्या ते, अने गोरजी **जीवसिद्धि**ने तमारी मैत्री सजावी तेनाथी तमने फरेब देखराव्यो ते, तेम छेवट जीर्णोद्यानमां गळे फांसो खावानुं मिष करनार पुरुषथी तमने अहिं अणाव्या ते, सउ खेल **मौर्य** साथे तमारो संयोग थाय एटला माटे में रच्यो हतो. माटे आ **मौर्य** तमने मळवा आवे छे.' एटलामां **चाणक्य**ना अद्भुत बुद्धिवैभवथी ताजुब थतो **चंद्रगुप्त** त्यां आव्यो अने **चाणक्य**ने पगे पड्यो. ए प्रसंगे चतुरशिरोमणि विप्रे **चंद्र**ने कह्युंः— 'अहा! आ तारा परंपरागत मुख्य महामंत्री अमात्य **राक्षस** विराजे! एओने वंदन कर.' एटले **चंद्रगुप्त** अमात्यने वंदन करी बेठो. पछी **चाणक्ये** वात काढी जे 'अमात्य **राक्षस**! तमारा सुमित्र शेट **चंदनदास** झवेरीने तमे छोडाववा आव्या छो, केम खरुं कनी?' **राक्षसे** दृढताथी प्रौढपणे उत्तर दीधोः— 'एमां शो संदेह?' **चाणक्ये** प्रत्युतर वाळ्योः—'अमात्य **राक्षस**! साचेज जो ए झवेरीने जीवाडवो होय तो लीजीये आ **चंद्रगुप्त** उपर तमारो संपूर्ण अनुग्रह दर्शाववा एना पिताना वाराथी चाली आवेली तमारी अमात्य पदवीनुं शस्त्र, ने जीवाडिये तमारा सन्मित्रने. अन्यथा ए उगरनार नथी.' आ कथनथी अमात्य **राक्षस** विमासणमां पड्यो. तेना हृदयमां अचळ स्वामिभक्ति, स्थिर सुहृत्स्नेह

---

१ जाणोतो.

दृढ वीरधर्म आदि परस्पर विरुद्ध मनोभावनुं भारे युद्ध मची रह्युं. छेवटे सउ-मां मित्रस्नेह प्रबळ थयो. वणिक मित्ररत्नने उगारवा तेणे **चाणक्यनी** उदार विज्ञप्ति स्वीकारी शस्त्र ग्रहण कर्युं. ए अवसरे प्रथमथी करी राखेला संकेत प्रमाणे परिचारके आवीने **चाणक्यने** कह्युं जे 'आ **मलयकेतुने** लेईने **भद्रभट** आदि सुभटो द्वारे ऊभा छे, एने माटे हुकुम फरमाविये आर्य.' **चाणक्ये** अमात्य **राक्षस** भणी आंगळी करी जवाब दीधोः– 'आ अमात्य **राक्षसने** निवेदन करो ए.' **राक्षस** उदार दिलनो हतो. ते थोडोक वखत **मलयकेतुने** आश्रये रह्यो हतो, तेनी खातर तेणे तेनो जीव बचाववा विज्ञप्ति करी. **मौर्ये** ते उपरथी अमात्यनी प्रसंनता सारु तेने जीवतो जवा दीधो एटलुंज नहि, पण तेने तेनुं राज्य पाछुं सोप्युं. वळी अमात्य **राक्षसने** अधिक परितोष उपजाववा चतुर **चाणक्ये** शेठ **चंदनदास** झवेरीने मुक्त करी भारे संमान पूर्वक जगतशेठनी पदविये स्थाप्यो. आ शुभ समाधानना आनंदोत्सवमां **चाणक्ये** आज्ञा करीः– 'कारागृहना बेडी जडेला बंदीवानोनी साथे हयशाळाना पाखरिया अश्वोनां अने गजशाळाना बख्तरिया हाथीनां पण बंधन कापी नांखो. मात्र मारी शिखाज पण पूर्वीने लीधे बंधायली रहेशे.'*

ए रीते राज्यमदथी मस्त बनेला **नंदोने** उखेडी नांखी राज्ये **चंद्रगुप्त** जेवो उज्ज्वळ गुणवाळो प्रतापी राजा स्थिर स्थापी, अमात्य **राक्षस** जेवा बुद्धिशाळी साहसिक एकनिष्ठ सत्पुरुषने मिलावी लेई तेने **मौर्यना** महामंत्रीनुं पद स्वीकारावी, पोते [1]प्रतिज्ञापारावार पार ऊतरी, पोतानो कर्यो मानेला **चंद्रगुप्तने** पण शत्रुप्र-कोपरूपी संकटसमुद्र तरावी, विश्वने पण उद्धारी, कृतार्थ थई तथा करी, बु-द्धिमान **चाणक्य** प्रज्ञाप्रकर्षे उन्मत्त विकारशतना सबळ कुळने निर्मूळ करी ब्रह्मविद्याना बळे परम **पुरुषने** चित्तमंडळमां [2]सदोदित स्थिर तेजे [3]निर्बाध प्रदी-पाववा [4]प्रवृत्त थयो.

---

* जुओ आ नाटक पृ. ११९–१२९.

१ प्रतिज्ञारूपी महासमुद्र. २ हमेशां प्रकाशित. ३ आवरण रहित. ४ लागु, यत्नशील.

पात्रवर्ग.

रूपित पात्र.

चंद्रगुप्त चंद्र चंद्रमा–के वृशल......पाटलिपुत्रनो नवो राजा.

चाणक्य—विष्णुगुप्त के कौटिल्य......माजी राजा **नंदनुं** निकंदन वाळी **चंद्रगुप्तने** गादिये आणनार राजविद्याकुशळ विप्र.

मलयकेतु—केतु के मलय......हिमालयना मध्य डुंगरी प्रदेशनो, बापना वधथी **चाणक्य** साथे वैर आदरी बेठेलो, **म्लेन्छ** राजा.

राक्षस.........मलयकेतुने उश्केरी माजी राजा **नंदना** निकंदननुं वैर वाळवा तत्पर थयेलो माजी राज्यनो महामंत्री.

इन्दुशर्मा अथवा क्षपणकवेषधारी[1] **जीवसिद्धि......चाणक्यनो** सहाध्यायी मित्र, जेने तेणे **राक्षस** पुंठे मित्राचारीनो डोळ सजावी मूक्यो हतो.

सिद्धार्थक......चाणक्यनो आप्त प्रणिधि[3], जेने पण तेणे मित्राचारीनो डोळ रखावी **शकटदास** पुंठे लागु कर्यो हतो.

भागुरायण......मलयकेतु साथे कृत्रिम मैत्री सजी, तेने पकडी **चाणक्य**ना हाथमां सोंपनार, **चंद्रगुप्तना** सहोत्थायिवर्गमांनो[4] एक.

शकटदास......राक्षसनो कायस्थ मित्र.

चंदनदास......राक्षसना अर्थे शूळिये चढवा तत्पर थयेलो तेनो[2] वणिक मित्र.

सूचित पात्र.

नंद.........पाटलिपुत्रनो मर्हुम राजा, अमात्य **राक्षसनो** स्वामी; जेनो **चंद्रगुप्त** अनौरस पुत्र थाय.

सर्वार्थसिद्धि......नंदना मोत पछी **राक्षसे** गादिये बेसाडेलो **नंद** वंशनो छेल्लो पुरुष.

वक्रनास......मर्हुम राजा **नंदनो** पूर्वनो महामंत्री.

---

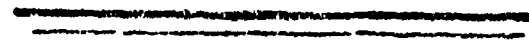
१ क्षपणक=जैन गोरजी. २ तननो. ३ भेदु; बातमीदार. ४ उदयना सहायक.

पर्वतक—पर्वतेश्वर-शैलेश्वर के **शैलेश......मलयकेतुनो** बाप, जेने **चाणक्ये विषकन्याना** फांदामां नांखी मारी नखाव्यो हतो.

वैरोचक......तेनो भाइ.

शिवाय **चंदनदासनां** बायडीछोकरां तथा बंने पक्षना राजाराणा, सामंत, सेनापति, सैन्यरक्षक, सुभट, प्रणिधि, परिचारक, प्रतीहारी, कंचुकी, छडीदार दूत, द्वारपाळ, लेखक, वैतालिक, अने बीजां माणसो.

स्थळ......पहेला, त्रीजा, छठ्ठा, तथा सातमा अंकमां **पाटलिपुत्र,** अने बीजा, चोथा, तथा पांचमा अंकमां **मलयकेतुनी** कटकभूमि.



श्रीमद्

विशाखदत्त कवि विरचित

मुद्राराक्षस नाटक.

अंक १.

नांदी

(स्रग्धरा.)

"धारी धन्या शिरे आ कवण?" "शशिकळा" "ए शुं छे एनुं नाम?"
"ए, हा, छे नाम एनुं; क्यम विदित छतां वीसर्या वारुं आम?"
"स्त्रीप्रत्ये पूछवुं छे नज शशी.... " विजया को' न जो मान्य चंद्र"
गौरीथी एम गंगा छळथी छुपवता शंभु हो सुखकंद !

वळी,

(स्रग्धरा.)

भूमि स्वैर-प्रहारे नमती निरखतां पाय धीमे धरीने,
लांबा ब्रह्मांडथीए, अभिनय करतां, हाथ वांका करीने,
दृष्टि लक्ष्ये न राखी, वरसती अगनि, आकरी, आग-बीके,
नर्तता एम दुःखे त्रिपुरविजयी हो श्रेयकारी सउने !

सूत्रधार (नान्दीने अंते)–बस छे; विशेष विस्तार करवानुं काम नथी. आर्यवर्गनी आज्ञा छे, जे आजे सामंत **वटेश्वरदत्त**ना पौत्र, अने **महाराज** पदधारी **पृथु**ना पुत्र, कविश्री **विशाखदत्ते** रचेलुं **मुद्राराक्षस** नामे

---

१ मंगळाचरण. २ चंद्रनी कळा. ३ जाणीतुं. ४ सुखनुं मूळ, सुख आपनार. ५ स्वच्छंद पग मांडवा ते. ६ नृत्य करतां हाथ वगेरेनो चेष्टा. ७ नेत्रना अभिनयनो विषयभूत पदार्थ. ८ त्रिपुरासुरने जीतनार, शिव. ९ कल्याणकारी. १० एकठा मळेला सज्जनो.

नवीन नाटक भजववुं. खरेज! रसज्ञ सुपरीक्षक श्रोताना समाज[1] आगळ भजवतां मारा पण मनमां अत्यंत आनंद उमगे छे. केमजे,

(उद्गीति.)

अबुधे बोयेलांए सुक्षेत्रे बी फळे सहजे;
फाले शाळ सबळ ते वावनारना गुणो जुए न रजे.

तो हवे घरमां जई पत्नीने बोलावी गृहजन साथे संगीत शरु करुं. (परिक्रमण करी, जोई) आ अमारुं घर; तो, चालो, अंदर जाउं. (प्रवेश करी, जोई) अहा! आ शुं[2] अमारा घरमां तो कंइक महोत्सवनो समारंभ[3] मची रह्यो छे! परिजन[4] पोतपोताना काममां अत्यंत मन देई मंडी गयेल छे.

(पुष्पिताग्रा.)

अहिं जळ वही जाय आः—वसे ओ
सुखडः—रूडी फुलमाळ को करे ओः—
वळी मुसळ[5] हिलोळतां गळामां
कलरव[6] रम्य करे छ आम श्यामा.

भवतुं[7]! पत्नीने बोलावी पूछुं. (पडदा तर्फ फरी)

(दिंडी.)

धर्म अर्थ कामकेरी साधनार,
स्थिति-स्थान, जुक्तिजाण, गुणागार,
भवननीतिनी **सरस्वती**, सुदार!
सकळ कार्यमां ऑचार्य, झट पधार.

नटी (प्रवेश करी)—आ आवी, स्वामिनाथ, मने आज्ञा करी कृतार्थ करिये.

सूत्रधार—सुंदरी! आज्ञानी वात पछी; पण प्रथम कहो वारुं, आजे

---

१ मंडळी, सभा. २ सारी भोंयमां. ३ तैयारी, ठाठ. ४ नोकर चाकर वगेरे. ५ सांबेलुं. ६ मधुर अस्पष्ट शब्द. ७ ठीक, भले.

शुं पूज्य भूदेवोने[1] घर पावन करवा नोंतर्या छे, के शुं मोघा मूलना प्राहुणा त्रेवड्या छे?—जेथी आ कांई सविशेषे[2] सामग्री सजाय छे.

नटी—स्वामिनाथ! पूज्य भूदेवोने नोंतर्या छे.

सूत्रधार—कहो, कये निमित्ते?

नटी—स्वामिनाथ! आज चंद्र भगवाननुं ग्रहण छे.

सूत्रधार—कोणे कह्युं?

नटी—नगरवासी जन कहेछे.

सूत्रधार—सुन्दरी! चोसठे अंगे सपूर्ण ज्योतिषशास्त्रनुं में रटन कर्युं छे.* पूज्य भूदेवोने माटे सामग्री तो, ठीक छे, थवादो. बाकी चंद्रग्रहणविषे तो कोइये तने भुलावामां नांखी छे. जो,

(संगतिका.)

नवपूर्णमंडळ[3] चंद्रने[4] रिपु राहु राक्षस[5] दुर्मने[6]
ग्रहवा[7] सकेतु करे बळे,

(पडदा पाछळथी) आह! कोण आ मारा जीवमां जीव छतां चंद्रने बळे ग्रहवानुं करे छे?

सूत्रधार (अधूरुं वृत्त पूरुं करतां)—

बुध[8]-योगथी नहि ते वळे.

नटी—स्वामिनाथ! आ वळी कोण पृथ्वीपरनो मानवी चंद्रने ग्रहणना सपाटाथी बचाववानी हिमायत करे छे?

सूत्रधार.—सुंदरी! में पण न ओळख्यो. भवतु! पुनः पाठे साद ओळखाशे; जोइये. (एम कही उपरनो श्लोक फरी बोलेछे.)

---

* जुओ भरतशास्त्र, अध्याय २४.

ग्रहनक्षत्रतत्त्वज्ञो देशव्याहारतत्त्ववित्।
एवंगुणस्तथाचार्यः सूत्रधारो विधीयते॥

---

१ ब्राह्मण. २ खास. ३ मंडळ=[1]बिंब; [2]राजमंडळ. ४ चंद्र=[1]चंद्रमा; [2]**चंद्रगुप्त.** ५ रिपु राहु राक्षस=[1]शत्रुता राखतो दैत्य राहु; [2]राहु तुल्य शत्रुता राखतो अमात्य **राक्षस.** ६ खुन्नस भरेला दिलथी. ७ ग्रहण करवा; पकडवा. ८ बुध=[1]बुधनामनो ग्रह; [2]बुद्धिमान् **चाणक्य.**

(श्लोक बोलतां बोलतां, पडदा पाछळथी) आह ! कोण आ मारा जीवमां जीव छतां **चंद्रगुप्तने** बळे ग्रहवानुं करे छे ?

सूत्रधार (सांभळी) आहा, जाण्युं.

(रोळावृत्त.)

अयि ए तो **कौटिल्य**

(नटी थरथर धूजेछे.)

सूत्रधार–(श्लोक पूरो करतां)

कुटिल, जेणे झट बळथी
भस्मज करी दीध **नंदवंश** निज क्रोध-अनळथी;[1]
चंद्रग्रहणकथार्थी नामराशि लही हा ! ए–[2]
मौर्य चंद्र रिपुग्रस्त शंकी अहिं आ ओ आवे ![3]

माटे आवो, आपणे आम जतां रहियें. (बन्ने जायछे.)

इति प्रस्तावना ।

(एवे छूटी शिखा छटकावतो **चाणक्य** प्रवेश करेछे.)

चाणक्य (सक्रोध)–आह ! कोण आ मारा जीवमां जीव छतां **चंद्रगुप्तने** बळे ग्रहवानुं करे छे ?

(रोळावृत्त.)

गॅजकेरा चावेल लोहीथी लांछित राती,[4]
संध्याकाळे लाल शशीनी कळाशी सुहाती,[5]
खातां, फाडी मुख, बगासुं, केशरीकेरा-[6]
जडबामांथी दाढ करे को खेंची लेवा ?

अने,

(भुजंगी.)

भुजंगी कुळे **नंदने** भारी झेरी, लता धूमनी लोल कोपाग्निकेरी,[7][8][9]
शिखा एवी आ बांधुं तो हाल तोये, ठरी ना अरि मार्गी ले मोत को ए ?[10]

---

१ क्रोधरूपी अग्नि. २ चंद्रमाना ग्रहणनी वात. ३ शत्रुथी घेरायलो. ४ हाथी. ५ राती रंगायली. ६ सिंह. ७ नागणी. ८ वेल. ९ चंचळ. १० शत्रु.

वळी,

(वसंततिलक.)

को नंदवंशवनने करीं सर्व स्वाहा
दीपंत क्रोधदवमां[1] मुरखो महा हा !
को झंपलावीं जीवकेरीं करे खुवारी
फुदापठे स्वपरे[2] शक्तिय ना विचारी ?

शार्ङ्गरव ! शार्ङ्गरव !

शार्ङ्गरव (प्रवेश करी)—आज्ञा, गुरुजी !

चाणक्य—वत्स ! आसन, आसन.

शार्ङ्गरव—गुरुजी ! आ द्वार आगळना खंडमां वेत्रासन तैयारज छे, त्यां विराजिये.

चाणक्य—वत्स ! हुं आकळो जणाउं छुं, ते राजकाजनी खटपटने लीधेज छे; गुरुनी शिष्य प्रति स्वभावसिद्धज तीक्ष्णता होय छे ते प्रमाणे हुं तारा उपर गुस्से छुं एम नथी. (आसन उपर बेसी, स्वगत) शुं लोकोमांए वात फेलाई के **नंद**कुळना विनाशथी ऊकळी रहेलो **राक्षस** पिताना वधथी क्रोधायमान, **पर्वतराज**ना पुत्र, **मलयकेतु**ने आखा **नंद**राज्यनी आशा आपी उश्केरी, तेने मेळवी लेई, तेना पक्षना मोटा **म्लेच्छ** राजाना लावलश्करथी **वृषल**पर चढी आववानुं करेछे ? (मन साथे विचारी) आः ए वात फेलाई गई तोए शुं ? सर्व लोक समक्ष **नंद**-वंशना निकंदननी प्रकाश प्रतिज्ञा लेई ते दुस्तर नदी[3] पण तरी पार करी गयो ते हुं ए अनर्थ शमावी नहि शकुं ?—हुं—हुं—जेनो

(कवित.)

धूंधवाता शोकधूमे शत्रुओनी श्यामातणा
सदा मुखचंद काळामेश करी देईने,
नीतिकेरी ले'रे मोहभस्म ठारठार वेर्ये
मंत्रितरुओ तमाम गाढ घेरी लेईने,

१ क्रोधरूपी दावानळ. २ पोतानी अने प्रतिपक्षीनी. ३ तरी न शकाय एवी नदी.

भये शियाविया पक्षियो[1] विहोणा स्वाहा करी
जई नंदवंशज[2] जडेथी जोई जोईने,
दावानळ पेठ वने क्रोध सर्वभक्षी[3] शमे
भक्ष्य ना रह्येः—न कांइ थाकी के धराईने.

वळी,

(हरिगीत.)

धरी शोच[4] अंतरमां, नीचुं शिर शरममां नांखी दई,
भयभीत चित्ते फिटकार ओठे आवतो रोकी रही,
लाचारिये अति, जेमणे अग्रासनेथी कर ग्रही
मुजने उठाडी मूकतां नृप नंदने जोयो सही;
ते तेय हावां, जेम पर्वतशिखरपरथी केशरी,
गजराजने त्राडी पछाडे जूथ साथ बळे करी;
त्यम तेज आ कौटिल्यकर ते रीत ते नंदे वळी
सकुटुंब सिंहासनथकी प्रच्युत[6] थयो पेखे अहिं.

ए रीते में मारी प्रतिज्ञा पार पाडी, तोपण हजुए हुं वृषलनी खातर शस्त्र धारी रह्यो छुं[7]. में—

(हरिगीत.)

जडथी पीडारूप पृथ्वीपडथी नंद नींदीज दीध छे;
सरवरतणी पोयणी पठे थिर लक्ष्मी मौर्यनी कीध छे;
मुज खीजरीझनुं ठीकज निज निज फळ सउनुं सिद्ध, ते
सर्जो यत्न दुश्मनदोस्तने सद्यज[8] चखाडी दीध छे.*

---

* जुवो आवाज अलंकारनो प्रयोग का. नी. सा. १३–५

नलिनीवाम्बुसंपत्त्या बुद्ध्या श्रीः परिपाल्यते ।
उत्थान व्यवसायाभ्यां विस्तारं चोपनीयते ॥

---

१ पक्षकार...मददगार...मित्र...तेज...पक्षी...पंखी. २ नंदवंश रुपीज वंश ...वासनुं जूथ. ३ सर्व स्वाहा करी जनार. ४ अफसोसी, दिलगिरी. ५ श्राद्धमां निमंत्रेला ब्राह्मणोमां मुख्य आसन; जुओ क. स. सा. १–६–१११–११३; ६ पतित, भ्रष्ट, पदभ्रष्ट. ७ अमात्य पदवीनुं चिह्न जे खड्ग ते धारण करी रह्यो छुं; अर्थात् ब्रह्मकर्ममां लागवाने बदले राजकार्यमां मची रह्यो छुं. ८ तुरतज.

अथवा **राक्षस** हाथमां आव्यो नथी, त्यांसुधी शानो **नंद**वंश नींदी नांख्यो ?—शानीज **चंद्रगुप्त**नी प्रभुता थिर करी ? (मन माथे विचारी) अहो ! **नंद**वंश प्रति **राक्षस**नी भक्ति अनन्यज छे ! **नंद**कुळनो कोइए जीवतो होय त्यांसुधी तेने कोटि उपाये **वृषल**नुं प्रधानवटुं लेवरावी नज शकाय. एटला माटे, आ रीते एने **नंद**वंश सारुं मथतो बंध पाडी शकीशुं एम धारी, ते बिचारा तपोवनमां जई वसेला **नंद**वंशना **सर्वार्थ-सिद्धि**नो पण घाट घडी नांख्यो; हवे त्यारे ते **मलयकेतु**ने पक्षमां लेई अमने उखेडी नांखवा महाभारत यत्नमां मंडयोज छे पाछो ! (आकाश तर्फ दृष्टिथी) धन्य छे ! अमात्य **राक्षस** ! धन्य छे ! धन्य छे ! महा ब्राह्मण ! धन्य छे ! मंत्रिवर्य ! धन्य छे तने ! केमजे

(कवित.)

स्वार्थ साधवाने सारुं सेवे सउ कोइ स्वामी
ज्यां सुधी रे' जामी झले विभवविलासनी;
वींटी ले विपत्ति भारे ज्यारे, तजे जे न त्यारे,
ते तो 'फरी राज्य थिर थाशे' एवी आशथी;
पण ना विसारी वफादारी पूर्वना संभारी
आभार, पछीए जेह स्वामीना विनाशनी
राजकाजनी उपाडी धूंसरी ले पोते, तेवा
तारा जेवा तो कृतार्थ लाधे ना तपासथी.

आटलाज माटे शी रीते तुं प्रतिकूळता छांडी **वृषल**नुं प्रधानवटुं स्वीकारी अनुकूळ थाय एज लक्ष्ये तने ग्रहवा अमारो यत्नछे. केमजे

(कवित.)

वधु वफादार तोय बायलो अबुध होय,
सेवक एवाए शोय अर्थ अहिं सुधरे ?
उरे वफादारी रेषे ना वसे, पछी विशेष
बळ बुद्धि होय बेश, तेणे काम शुं सरे ?

---

१ सत्ता, राजसत्ता, बादशाही. २ असाधारण, अपूर्व. ३ जरापण.

शूरातन, भक्तिभाव, बुद्धिशाळी सुस्वभाव,
ए गुणो समस्त जेमां होय, शुं न ते करे ?
संपत्ति विपत्तिमांहि एज भृत्य[1], एज बांही
स्वामीनी रे' साही, अन्य अंगना दीसे खरे !

आटला सारु हुं पण जागृतज रहुं छुं; ने तेने सपडाववाने बनतो यत्न कर्याज जाउं छुं. जुओ:–' **पर्वतक** के **वृषल** बेमांथी एकेनो घाट घडाय तो **चाणक्यनुं** माठुं थयुं कहेवाय ' एम करी **राक्षसे** अमारा अत्यंत उपकारी मित्र बिचारा **पर्वतकने** **विषकन्याथी** मारी नखाव्यो, एवो जगतमां अपवाद चलाव्यो छे. वळी ए वात लोकोना मनमां ठसे एटलामाटे तेना समर्थनमां **पर्वतकना** पुत्र **मलयकेतुने** न पकडतां उलटो अंदरखाने " तारा बापने **चाणक्ये** मारी नखाव्यो " एम कही बीवरावी **भागुरायणद्वारा** नसाडी मुकाव्यो. ए हवे **राक्षसनी** बुद्धिना बळे माथुं उठावे छे, पण तेने उपाय योजी बुद्धिकौशल्यथी सपडाववो सहज छे. परंतु हुं एवो नथी के **राक्षसने** पकडी, **पर्वतकना** वधनुं कलंक एने शिर चोटयुं छे ते भुंशी वाळवा चाहुं. वळी कोण आपणा पक्षमां ने कोण परपक्षमां छे ते जाणवा विविध देश, वेष, भाषा, आचारे संचारे[2] जाणनारा प्रणिधि[3] भिन्न भिन्न रूपे मूक्या छे. **पुष्पपुरमां** रहेता **नंदना** अमात्यना मित्रोनी हालचालनी सूक्ष्म तपास राखी छे. **भद्रभट** आदिक **चंद्रगुप्तना** सहोत्थायी[4] प्रधानपुरुषोने ते ते प्रसंग उपजावी कृतार्थ करी दीधा छे. शत्रुए योजेला मारा तथा विष देनाराथी बचाववा सदाए सावचेत केळवेला आप्तपुरुषोने राजाना हजुरी तरीके पण राख्या छे. वळी अमारो सहाध्यायी[6] मित्र **इंदुशर्मा** ब्राह्मण जे **शुक्राचार्यनी** **दंडनीतिमां** तेमज चोसठे अंगे संपूर्ण ज्योतिषशास्त्रमां पूरो हुशियार छे, तेने **नंदना** निकंदननी प्रतिज्ञा लीधा पछी तुरतज क्षपणकना[7] वेषे प्रथमथीज

१ भृति–मुसारो खानार, सेवक. २ कृत्य. ३ हालचाल. ४ बातमीदार, छूपो जासुस. ५ उदयना सहायक–सहभागी. ६ साथे भणनार, गुरुभाइ. ७ जैन दिगंबर साधु; जुओ एना संबंधी विशेष हकीकत सारु **प्रबोधचंद्रोदय** नाटकना त्रीजा अंकनी शरुआत.

पुष्पपुरवासी करी नंदना सर्वे अमात्य साथे मित्राचारी बंधावी, तेमां विशेषे राक्षसनो तेना उपर विश्वास बेठो छे; ए हवे खरेखरो काममां आवशे. आ प्रमाणे अमारा तर्फनी कांइ कचाश नथी. एक वृषलज सदाए आ राजकार्यनी चिंताथी जरा विरक्त–उदासीन रहे छे, अने, मुख्य प्रकृति जे हुं, तेना उपर बधो राज्यनो बोजो नांखी देछे. अथवा राजकाजनी भारे खटपट पंडे करवी न होय त्यारेज राज्य सुख आपेछे. केमजे घणुं करी

(मालिनी.)

गजजूथपतियो ने भूपतियो स्वभावे
समरथ सउ वाते जातथी तो छतांए,
खटपट करवी रे जात, तेनेज त्रासे
दिन निज दुःखमां ने दुःखमां ह्या वरांसे.

(एवामां यमपट[२] साथे चाणक्यनो प्रणिधि निपुणक प्रवेश करेछे.)

निपुणक–

(पद.)

जमनुंज लेने नाम, जन हो ! जमनुंज० ॥ ध्रुव० ॥
सेवे कोटिक देव बीजा पण, ए आवे शे काम? जनहो० ॥ १ ॥
तरवरतो जीव ए हरी जाये, ने मुखमां रहे राम! जनहो० ॥ २ ॥

वळी

(पद.)

भक्तिवश छे देव, भज हो ! भक्तिवश० ॥ ध्रुव० ॥
वसमा पण आधीन बनीज रहे स्नेहे सजतां सेव; भजहो० ॥ १ ॥
ते जमने आधारे जीविये जे हरे जीव ततखेव; भजहो० ॥ २ ॥

चाल, आ घरमां जई जमपट देखाडुं, ने कीर्तन करुं. (परिक्रमण करेछे.)

शार्ङ्गरव (निपुणकने घरमां पेसवानुं करतो जोई)–अरे ! क्यां जायछे? पेश मां घरमां.

---

१ विमुख, मन जे परोवतो नथी ते. २ जेमां यमयातना चितरी छे एवो चित्रपट.

निपुणक–केम भाइ ! कोनुं घर छे ?

शार्ङ्गरव–सवारना पहोरनुं नाम जे अमारा उपाध्याय आर्य **चाणक्य**, तेमनुं छे.

निपुणक (हास्यपूर्वक)–अहो ब्राह्मण ! त्यारे तो ए अमारा धर्मबंधुनुंज[1] घर छे. तेथी जवा दे मने; हुं तारा उपाध्याने जमपट पसारी उपदेश करुं.

शार्ङ्गरव (क्रोधयुक्त)–जा जा मूर्खा ! शुं तुं अमारा उपाध्यायथीए अधिक धर्म जाणनार ?

निपुणक–भाइ ब्राह्मण ! गुस्से ना था, जो, बधाय बधुं कांइ जाणता नथी. तेथी कांइक तारा उपाध्या, ने कांक अम जेवा जाणता हशे.

शार्ङ्गरव–आह मूर्ख ! शुं उपाध्यायनी सर्वज्ञता चोरी लेवानुं करे छे ?

निपुणक–अहो ब्राह्मण ! जो तारा उपाध्या बधुं जाणे छे, तो कहे, जोइये, कोने चंद्र अणगमतो हशे ?

शार्ङ्गरव–मूर्ख ! ए जाण्येए शुं, अने न जाण्येए[2] शुं ?

निपुणक–भाइ ब्राह्मण ! तारा उपाध्या जोशे, ए जाण्ये शुं ते. तुं आटलुं जाणेछे जे कमळने चंद्र अणगमतो छे. जो जोः–

(गीति.)

पूरण मंडळ मंडित चंद्रविषे अणराग कमळ दाखे,
छे एवो तेओनो स्वभाव उलटो स्वरूप सरस पोखे.

चाणक्य–(अंदरथी सांभली स्वगत) अहो ! **चंद्रगुप्त**थी अणराग राखनारा पुरुषोने हुं जाणुंछुं एवा मर्मनुं आ बोलवुं छे.

शार्ङ्गरव–जा जा, मूर्ख ! शुं असंबद्ध[3] लवे छे ?

निपुणक–भाइ ! ए सुसंबद्धजे[4] देखाय, जो—

शार्ङ्गरव–' जो ' शुं ?

निपुणक–जो सांभळनार अने समजनार मळे.

---

१ धर्मबंधु=स्वधर्ममां सहभागी, धर्मभाई, स्वधर्मी; राजकार्यविषे सहभागी. २ छतांए. ३ संबंध रहित. ४ बरोबर संबंधवाळुं.

चाणक्य (अंदरथी)—भाइ ! भले, निश्चित आव. सांभळनार अने समजनार मळशे.

निपुणक—आ आव्यो. (प्रवेश करी पासे आवी) जय जय आर्य !

चाणक्य (जोई स्वगत)—अहो ! आ तो प्रजानुं दिल जोवा प्रेरेलो निपुणक. (प्रकट) भाइ ! आव, बेश.

निपुणक—जेवी आर्यनी आज्ञा. (भोंय बेसे छे.)

चाणक्य—भाइ ! कहे हवे तने सोंपेला कामनी हकीकत. प्रजा चंद्रगुप्तने चहाय छे ?

निपुणक—बेशक, आर्ये ते ते अणरागनां कारण दूर कर्याथी देवश्री चंद्रगुप्तने प्रजा बहु चहाय छे. पण आ नगरमां अमात्य **राक्षसना** त्रण जूना परम मित्र छे, तेओ देवश्री **चंद्रगुप्तनी** प्रभुताना द्वेषी दीसे छे.

चाणक्य (क्रोधयुक्त)—एमज कहे के तेओ पोताना जीवतरना द्वेषी छे. भाइ ! तेमनां नाम तुं जाणे छे ?

निपुणक—नाम जाण्या विना आर्यना आगळ वातज केम करुं ?

चाणक्य—त्यारे ते कोण कोण छे ते कहे, हुं सांभळवा चाहुं छुं.

निपुणक—आर्य ! सांभळिये. शत्रुपक्षमां प्रथम तो छे क्षपणक—

चाणक्य (स्वगत)—क्षपणक अमारा शत्रुपक्षमां छे ?

निपुणक (पूर्वना अपूर्ण वाक्यना अनुसंधानमां)—**जीवसिद्धि**, जेणे अमात्य **राक्षसनी** योजी राखेली **विषकन्याथी** महाराज **पर्वतेश्वरनो** घाट घड्यो.

चाणक्य (स्वगत)—हां, ए **जीवसिद्धि** तो मारो प्रणिधि. (प्रकट) पछी बीजो कोण ?.

निपुणक—आर्य ! बीजो तो अमात्य **राक्षसनो** प्रियमित्र कायस्थ **शकटदास**.

चाणक्य (हास्य साथे स्वगत)—आंह ! कायस्थ ! ए ते शा लेखामां? तोए सामान्य जाणी शत्रुनी अवगणना[१] करवी नहि. तेनी पाछळ मै-

---

१ तुच्छकार, तिरस्कार.

त्रीनो डोळ करतो **सिद्धार्थक** मूक्यो छे. (प्रकट) भाइ ! त्रीजो जाणवा चाहुं छुं.

निपुणक—त्रीजो तो **पुष्पपुर**वासी शेठियो **चंदनदास** झवेरी. ए तो अमात्य **राक्षस**नो बीजो जीवज छे. एने त्यां अमात्य **राक्षस** बायडीछोकरां मूकी गयेला छे.

चाणक्य (स्वगत)—बेशक, ए तो परम मित्र. प्राणसमान मित्र वगर बीजाने त्यां **राक्षस** बायडीछोकरां मूकी न जाय. (प्रकट) भाइ ! **राक्षस चंदनदास**ने त्यां बायडीछोकरां मूकी गयानुं तुं शा उपरथी कहेछे ?

निपुणक—आ मुद्राज आर्यने बधुं कहेशे. (एम कही मुद्रा आपेछे).

चाणक्य (लेई **राक्षस**नुं नाम वांचतां सहर्ष स्वगत)—हाहा ! **राक्षस**ज आ अंगुलिप्रणयी[1] थयो एम कहेवुं जोइये. (प्रकट) भाइ ! आ अंगुलिमुद्रा[2] शी रीते मळी ते विस्तारथी जाणवा चाहुं छुं.

निपुणक—आर्य ! सांभळिये. आपे मने नगरचर्चा जोवानी आज्ञा करी हती, तेथी परघरमां पेसतां कोइ वहेम न आणे एटला माटे आ **यम**पट लेई फरतां फरतां शेठ **चंदनदास** झवेरीने घेर जई चढ्यो; ने त्यां **यम**पट प्रसारी कीर्तन करवा मंड्यो.

चाणक्य—पछी ?

निपुणक—तेवे एक ओरडामांथी पांचेक वर्षनो, देखावडो, सौने वहालो लागे एवो बाळक बाल्यावस्थाना स्वाभाविक कुतूहलथी नयन विकासी जोतो बहार आवतो हतो, एटले "अरे ! गयो-गयो !" ए रीते ते ओरडामां स्त्रीजननो शंकासूचक महान कोलाहल थयो. एवे एक स्त्रिये बारणा आगळ जरा म्हो काढी नीकळतां नीकळतां ते बाळकने नाजुक हाथे पकड्यो. झालवा जतां उतावळमां हाथ लांबो कर्यो तेवे तेनी प्रसारेली आंगळीथी पुरुषना हाथना परिमाणनी घडेली होवाथी आ मुद्रा बारणाना उमरा आगळ नीकळी पडी; पण ते

---

१ आंगळिये वळगी आवतो, हस्तगत. २ आंगळिये पहेरवानी महोरनी वींटी.

ए स्त्रिये जाण्युं नहि. पडी तेवी उछळीने, पतिव्रता आवी पिशुना चरण चूमे तेम ते मुद्रा मारे चरणे आवी थंभी. में पण अमात्य राक्षसनुं नाम जोई, लावी आ आर्यने चरणे रजु करी. ए रीते ए मुद्रा मळ्यानी हकीकत छे.

चाणक्य—भाइ ! जाण्युं. जा हवे. थोडी वारमां आ तारी महेनतने लायक फळ तने मळशे.

निपुणक—आर्यनी जेवी आज्ञा. (जाय छे.)

चाणक्य—शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव !

शार्ङ्गरव (प्रवेश करी)— आज्ञा, गुरूजी.

चाणक्य—वत्स ! कागळ-खडियो लाव.

(**शार्ङ्गरव** कागळ-खडियो लावी आपे छे).

चाणक्य (आणेलुं पत्र लेई स्वगत)—अहिं शुं लखवुं ? आज लेखे **राक्षसने** जीतवो.

प्रतीहारी (प्रवेश करी)— जय हो आर्यनो !

चाणक्य (सहर्ष स्वगत)—'जय' शुकन वधावी लीधा. (प्रकट) प्रतीहारी ! केम आववुं थयुं ?

प्रतीहारी—आर्य ! मस्तके कमळकळी तुल्य प्रणामांजलि[1] जोडी देवश्री **चंद्रगुप्त** आर्यने विज्ञापना[2] करे छे, जे "जो आर्यनी अनुज्ञा[3] होय, तो चाहुं छुं के महाराज **पर्वतेश्वरनी** उत्तरक्रिया करावुं, अने तेमना अंग उपरनां सर्व आभूषण ब्राह्मणोने आपी देउं."

चाणक्य (सहर्ष स्वगत)—धन्य छे ! **वृषल** ! धन्य छे ! माराज मनमां जे हतुं ते ठीक जाणी लेई तें कहाव्युं. (प्रकट) प्रतीहारी ! अमारा तर्फथी **वृषलने** कहेवुं जे "धन्य छे ! वत्स ! लोकव्यवहारमां बराबर कुशळ छे. योग्य विचार छे. ते प्रमाणे करवुं. परंतु **पर्वतेश्वरना** अंगनां आभूषण छे ते अमूल्य छे. तेथी करीने बहु गुण[4] होय एवा

---

१ नमस्कार करतां संपुटने आकारे हाथ जोडवा ते. २ विनंति. ३ अनुमति, रजा. ४ गुण=[1]सदाचार, सुलक्षण; [2]लाभ, फायदो.

उत्तम ब्राह्मणने आपवां जोइये. माटे हुं जातेज तपास करी गुणवान ब्राह्मणोने मोकलुं छुं."

प्रतीहारी—आर्यनी जेवी आज्ञा. (जाय छे.)

चाणक्य—**शार्ङ्गरव**! अमारुं नाम देई **विश्वावसु** अने एना बे भाइयोने कहे जे "तमारे जई **वृषल** पासेथी आभरणदान[1] लेई पाछा वळतां अमने मळवुं."

शार्ङ्गरव—जी, सारुं. (जाय छे.)

चाणक्य—थयुं. आ लेखना उत्तर भागमां आवशे[2]. पण पूर्व भागमां शुं लखवुं? (मन साथे विचारी)—आंह जाण्युं. प्रणिधिथी खबर मळी छे के ए एकठा मळेला म्लेच्छ राजाओमां सौथी मुख्य जे पांच राजाओ छे ते **राक्षसनेज** देखे छे; एवो तेमनो एना उपर भाव छे. ते आ आः—

(रोळावृत्त.)

कुलूतनो भडभूप **चित्रवर्माज** प्रथम तो;
सिंहनाद नरसिंह **मलयनो** महीपति वळतो;
काश्मीरनो अधिराज[3] **पुष्कराक्षज** पछी कहिये;
पछी अरिमर्दन[4] **सिंधुषेण** सिंधुपति लहिये;
ते पछी तो **मेघाख्य** सबळ हयदळनो स्वामी,
प्रभुता जेनी परम **पारसीक** देशे जामी;
निश्चय ए सउ नाम लखुं; निश्चित हवेथी
छेके **चित्रविचित्र** भले ए निज पानेथी

अथवा तो रहो. नहिज लखुं. सर्व अनभिव्यक्तज[5] भले रहे. (लेख पूरो करी)—**शार्ङ्गरव**!

शार्ङ्गरव (प्रवेश करी)—आज्ञा, गुरुजी!

---

१ आभूषण—घरेणानुं दान. २ 'आ' शब्दे करीने आभरण मोकल्यानी वात अभिप्रेत छे; जुओ अंक ५ नो कपटलेख. ३ महाराजा. ४ शत्रुओनो खोडो काढनार. ५ खुल्ले खुल्लुं नहि ते; मभम.

चाणक्य–वत्स! श्रोत्रियाक्षर[1] प्रयत्ने लख्या छतांए कायस्थाक्षर[2] जेवा चोखा मोतीना दाणा जेवा नथी बनता. माटे मारुं नाम देई **सिद्धार्थकने** कहे के हकीकत कोइ प्रति कोकने स्वतः मोढे कहाववानी होवाथी नामठाम वगर आटलो बोल लखवानाछे एम कही **शकटदास** पासे लखावी लेई लेख साथे मारी पासे आववुं; पण **चाणक्य** लखवा मोकलेलछे एवुं कहेवुं नहि.

शार्ङ्गरव–जी, सारुं. (जाय छे.)

चाणक्य (स्वगत)–अहा! **मलयकेतुने** जीत्यो हवे.

सिद्धार्थक (लेख साथे प्रवेश करी)–जय जय! आर्य! आ **शकटदास** पासे लखावेलो लेख!

चाणक्य (लेख लेई)–अहो! शा अक्षर सुंदर छे! (मनमां वांची जोई)–भाई, आ महोरनी वींटीथी एने महोरशिक्को कर.

सिद्धार्थक (छापी)–आर्य! महोरशिक्को कर्यो. हवे बीजुं शुं करवुं छे ते फरमावो, आर्य!

चाणक्य–भाइ कंइक आप्तपुरुषने सोंपवानुं काम तने भाळववा चाहुंछुं.

सिद्धार्थक (सहर्ष)–आर्यनी परम कृपा. फरमावो, आर्य! दास तैयारछे. शुं काम छे?

चाणक्य–पहेलां तो सशस्त्र वध्यस्थाने जई माराओने क्रोधयुक्त जमणी आंखना मचकारानी इशारतथी समजाववा. पछी ज्यां ए समजी जई ताराथी बीधा होय तेम आम तेम नासवा मांडे, के **शकटदासने** लेतेकने **राक्षसपासे** जवुं, तथा पोताना मित्रनो जीव बचाववाथी **राक्षस** तारा उपर प्रसंन थई जे बक्षीश आपे ते लेवुं, अने केटलाक काळसुधी पछी **राक्षसनांज** पासां सेववां. एम करतां ज्यारे शत्रुओ छेक

---

१ ब्राह्मणना अक्षर; पूर्वे काळमां विद्या पाठेज भणवा भणाववानो संप्रदाय बहुधा हतो, तेथी लखवानो महावरो ओछो होवाथी ब्राह्मणोना अक्षर सारा आवता नहि.
२ कायस्थना अक्षर; पूर्वे कायस्थो लिपिविद्यामां कुशळ होई राजलेखकनुं काम करता.

पुष्पपुर पासे आवी पहोंचे, त्यारे आ रीते तारे करवुं. (कानमां कहे छे.)

सिद्धार्थक–आर्यनी जेवी आज्ञा.

चाणक्य–शार्ङ्गरव ! शार्ङ्गरव !

शार्ङ्गरव (प्रवेश करी)–आज्ञा, गुरुजी !

चाणक्य–मारा नामथी कालपाशिक[1] अने दंडपाशिकने[2] कहे जे **वृषल** फरमावेछे के "पेलो क्षपणक **जीवसिद्धि** जे छे, तेणे **राक्षसनी** प्रेरणाथी **विषकन्यावडे पर्वतराजने** मारी नांख्या, एटलामाटे एने ए गुन्हासर ढंढेरो पिटावी फजेतीसाथे देशपार करवो."

शार्ङ्गरव–जी, सारुं. (जवा मांडे छे.)

चाणक्य–वत्स ! रहे. "वळी पेलो **शकटदास** नामे जे कायस्थ छे, ते **राक्षसनी** प्रेरणाथी अहोनिश अमारो जीव लेवानुं करे छे माटे तेने पण ते गुन्हासर दांडी पिटावी शूळिये परोववो, अने तेना वरनांने केदमां पूरवां."

शार्ङ्गरव–जी, सारुं. (जाय छे.)

चाणक्य (चिंताग्रस्त स्वगत)–अहा ! ए दुरात्मा **राक्षस** ग्रहाशे ?

सिद्धार्थक–आर्य ! ग्रह्यो

चाणक्य (सहर्ष स्वगत)–हंहां, **राक्षस** ग्रह्यो ! (प्रगट)–भाइ ! शुं ?–"ग्रह्यो" ?–कोण ?

सिद्धार्थक–ग्रह्यो में आर्यनो संदेश. माटे हवे हुं तेनी सिद्धि अर्थे जाउं छुं.

चाणक्य (मुद्रा तथा लेख सोंपी)–भाइ ! जा–फतेह कर.

सिद्धार्थक–अस्तु ! (जाय छे.)

शार्ङ्गरव (प्रवेश करी)–गुरुजी ! कालपाशिक अने दंडपाशिक गुरुजीने वीनवे छे के देवश्री **चंद्रगुप्तनो** हुकूम आ अमलमां आणिये छिये.

---

१ अपराधीना निग्रहनो निर्णय करनारो अधिकारी. २ अपराधीने शासन करवा नियमेलो अधिकारी; जुओ दण्डाधिप शब्द क. स. सा. ५-२-१२०.

चाणक्य—ठीक. वत्स! हवे शेठ **चंदनदास** झवेरीने मारी पासे आणवो जोइये.

शार्ङ्गरव—जी, आ लाव्यो. (जई **चंदनदास** साथे पुन: प्रवेश करतां शेठ प्रति)—आम आविये, शेठजी!

चंदनदास (स्वगत)—

(गीति).

निर्दोषे भय पामे तेडे **चाणक्यने** अचानकथी;
हुं तो छुंज गुन्हामां, तो क्यम भय रे' न तेह क्रूरथकी?

तेथी तो में **धनसेन** आदिक त्रण वणिकने कह्युं के "कदापिने दुष्ट **चाणक्य** मारुं घर जोवरावे; तेटला माटे स्वामिश्री अमात्य **राक्षसनां** घरनांने जापताबंध बीजे लेई जाओ. मारुं तो जे थनार होय ते थाओ."

शार्ङ्गरव—आ रस्ते, शेठजी!

चंदनदास—हा, आ आवुं. (बेउ परिक्रमण करे छे.)

शार्ङ्गरव (पासे जई)—गुरुजी! आ शेठ **चंदनदास** आव्या.

चंदनदास—जय जय आर्य!

चाणक्य (सामुं जोई)—अहो! पधारिये, शेठिया! आ आसन उपर विराजिये.

चंदनदास (प्रणाम पूर्वक)—आर्य क्यां नथी जाणता के अघटित आदरमान अपमानथी पण अधिक अकारुं लागेछे! माटे अहिं भोंयज बेसवुं घटे त्यां हुं बेसुं छुं.

चाणक्य—नहि नहि, शेठिया! अम जेवानी जोडे आ तमने घटेज छे. तेथी आसनेज विराजिये.

चंदनदास (स्वगत)—आ दुष्टनुं कांइक मर्म भर्युं बोलवुं छे. (प्रकट)—आर्यनी जेवी आज्ञा. (बेसे छे.)

चाणक्य—केम? शेठजी **चंदनदास**! व्यापार तो तेज चाले छे ना?

चंदनदास (स्वगत)–अत्यंत आदर शंका उपजावे छे.* (प्रकट)– हाहा, आर्यनी कृपाथी वेपार धमधोकार चाले छे.

चाणक्य–ठीक. **चंद्रगुप्त**ना दोषथी प्रजाने गत राजाना गुणो सांभरी आवता हशे नहि वारु ?

चंदनदास (कानमां आंगळी घाली)–हरि हरि!!! ए शुं बोल्या ? शरदृऋतुनी पूर्णिमाना चंद्रतुल्य देवश्री **चंद्रगुप्त**थी प्रजा तो परम प्रसंनज छे.

चाणक्य–शेठजी ! राजा पण प्रजानुं प्रिय करी तेमने प्रसंन राखी तेमना तर्फथी प्रतिप्रियनी इच्छा राखे छे.

चंदनदास–कांइ आज्ञा ? आर्यने सेवक पासेथी शुं-केटलुं-जोइये ?

चाणक्य–आ **चंद्रगुप्त**नुं राज्य छे, शेठ, **नंद**नुं नथी. **नंद** जेवा नाणाना लालचु नाणानी वातथी प्रसंन थाय. **चंद्रगुप्त** जेवानी प्रसंनता तो तमारी निवृत्ति ए.

चंदनदास (सहर्ष)–अहा ! आर्यनी मोटी कृपा.

चाणक्य–शेठिया ! अमने तमारे हवे पूछवानुं, जे ए प्रजानी निवृत्ति शाथी जणाय ?

चंदनदास–फरमावो, आर्य !

चाणक्य–टूंकामां–राजा प्रति अविरुद्ध वर्तवाथी.

चंदनदास–आर्य ! कोण एवो ते अधन्य होय के ते आर्यनी नजरे राजविरोधी लेखाय ?

चाणक्य–पहेला तो तमेज.

चंदनदास (कानमां आंगळियो घाली)–अरेरे ! हरि हरि ! ए शुं कह्युं ? अग्नि साथे तरणांनो विरोध केवो ?

चाणक्य–विरोध ते एवो जे अद्यापि पण तमे राजविरोधी अमात्य **राक्षस**ना घरनां ने पोताना घरमां आशरो आपी राखी रह्या छो.

---

* जुओ हितोपदेश ३–२३.

दुर्जनैरुच्यमानानि सस्मितानि प्रियाण्यपि ।
अकालकुसुमानीव भयं संजनयन्ति मे ॥

चंदनदास–खोटुं खोटुं. कोइ अजाण आदमिये आर्यने कह्युं हशे ए.

चाणक्य–शेठ! गभरावानुं कांइ कारण नथी. माजी राज्यनां माणसो, भयना मार्या, लोकोनी मरजी-उपरांत पण कुटुंबकबीलो तेमना घरमां नांखी परदेश जता रहे छे. पछी दोष तो ते छुपावी राखवामां छे.

चंदनदास–हांहां खरुं, तेवामां अमारे त्यां अमात्य **राक्षस**ना घरनां हतां.

चाणक्य–पहेलां तो "खोटुं खोटुं," ने हवे "हतां" ए बोली परस्पर विरुद्ध छे.

चंदनदास–एट-एटलो मारो वाग्दोष[1] थयो.

चाणक्य–शेठजी! महाराजा **चंद्रगुप्त**ने दोषनो छांयडो न जोइये. माटे **राक्षस**ना घरनांने आपी दो, अने निर्दोष बनी रहो.

चंदनदास–आर्य! में वीनव्युं नहि?–के तेवामां अमारे त्यां अमात्य **राक्षस**ना घरनां हतां.

चाणक्य–हवे त्यारे क्यां गयां?

चंदनदास–हुं जाणतो नथी ते.

चाणक्य–(स्मित हास्य करी)–शुं? नथी जाणता! शेठिया! भय आ माथे भमी रह्युं छे अने प्रतीकार[2] तो बहु दूर छे–

चंदनदास (स्वगत)–

(दुहो.)

अरे! आ शुं? घन[3] घन[4] उपर गर्जे, घरुणी[5] विदूर;
दिव्यौषधि[6] हिमगिरि रही काळ सर्प शिर क्रूर.

चाणक्य–वळी, **विष्णुगुप्ते नंदो**नी खराबी करी तेम **चंद्रगुप्त**ने अमात्य **राक्षस** खराब करशे एम रखे समजता. जुओ,

---

१ सहज बोलवामां चूक. २ इलाज. ३ मेघ, वादळ. ४ घट्ट, पुष्कळ. ५ बहु छेटे. ६ जादुई असरनी ओषधि.

(कवित्त.)

नंदनाज जीवतांए घडीघडी तेवामांए
डगुंज डगुं करंती लक्ष्मीने मथी मरी
नीतिमांहि पूरा राजभक्त सुसचिव शूरा
वक्रनासादिए स्थिर ना करी शक्या जरी
ठामुकी ठरी ते पोते चंदनीशी चंद संगे
सज्जनना वृंदने आनंद देती सुंदरी;
तेने कोण-कोण कहो मंदमति चंद्र थकी
विखुटी करवा करे ममत वृथा धरी ?

वळी,

(रोळावृत्त.)

गजकेरा चाखेल लोहीथी लांछित राती,
संध्याकाळे लाल शशीनी कळाशी सुहाती,
खातां, फाडी मुख, बगासुं, केशरीकेरा
जडबामांथी दाढ करे को खेंची लेवा ?

तेमज,

(भुजंगी.)

भुजंगी कुळे नंदने भारी झेरी, लता भ्रूमनी लोल कोपाग्निकेरी,
शिखा एवी आ बांधुं तो हाल तोये, ठरी ना अरि मार्गी ले मोत को ए ?

त्यम वळी,

(वसंततिलक.)

को नंदवंशवनने करी सर्व स्वाहा
दीपंत क्रोधदवमां मुरखो महा हा !
को झंपलावी जीवकेरी करे खुवारी
फुदा पठे स्वपर शक्तिय ना विचारी

चंदनदास (स्वगत)—वडाई पण एणे बोल्युं बर आण्युं छे एटले छाजे छे. (पडदा पाछळ कोलाहल संभळाय छे.)

चाणक्य–शार्ङ्गरव! जो, शुं छे ए?

शार्ङ्गरव–जी, सारुं. (खबर काढी पाछो आवी)–गुरुजी! ए तो देवश्री **चंद्रगुप्त**ना हुकुमथी राजविरोधी क्षपणक **जीवसिद्धि**ने फजेती साथे देशपार करे छे.

चाणक्य–क्षपणक? अरेरे!!! अथवा चाखो ए एना राजद्रोहनुं फळ. जुओ, शेठ **चंदनदास**, राजा राजद्रोहीने आम सखत शिक्षा करे छे. माटे आ मित्र ठीक कहे छे ते मानो, **राक्षस**नुं कुटुंब हवाले करी दो, अने निरंतर अद्भुत फळ आपनारी राजकृपा भोगवो.

चंदनदास–मारा घरमां अमात्यनुं कुटुंब छेज नहि.

(फरी पडदा पाछळ कोलाहल संभळाय छे.)

चाणक्य–शार्ङ्गरव! जो, शुं छे ए?

शार्ङ्गरव–जी, सारुं. (खबर काढी पाछो आवो)–गुरुजी! आ पण बीजा राजविरोधी कायस्थ **शकटदास**ने शूळिये चढाववा लेई जायछे.

चाणक्य–कर्यां कर्मनां फळ भोगवो. शेठजी, राजा राजद्रोहीने आम सखत शिक्षा करे छे. **राक्षस**ना घरनांने तमे छुपावी राख्यां छे, ते ए नहि सांखे. माटे परघरनांने आपी देई पोताना घरनांने अने पोताना पंडने उगारो.

चंदनदास–आर्य! शुं मने कांइ भयबय बतावो छो? घरमां होय तोए अमात्य **राक्षस**ना घरनांने न आपुं, तो नथी तेनुं शुं?

चाणक्य–चंदनदास! एज निश्चय तमारो?

चंदनदास–हा, ए मारो दृढ निश्चय.

चाणक्य (स्वगत)–धन्य छे! **चंदनदास**! धन्य छे तने! अहा! आ पृथ्वीपर–

(गीति.)

बीजानेज बतावी देवाथी सुलभ लाभ छे तोए,
नव लोभाई तेणे **शिबि**विण करनार अन्य अव कोए!

(प्रकट)–**चंदनदास**! त्यारे तमारो एज निश्चय?

चंदनदास–हा.

चाणक्य (क्रोध युक्त)–आह नापाक कमजात बकाल ! रहे–चाख त्यारे राजकोपनो स्वाद.

चंदनदास–सज्ज छुं, आर्य ! करो आपना अधिकार सरखुं.

चाणक्य–शार्ङ्गरव ! कालपाशिक अने दंडपाशिकने अमारा नामथी कहे के आ कमजात बकालने तुरत शिक्षा करे. अथवा रहे. दुर्गपाळ **विजयपाळने** कहे के मालमता जपत करी बायडी छोकरां-साथे एने झांझरियां पहेरावी केद राखे. दरम्यान हुं **वृषलने** कहुंछुं **वृषलज** एने देहांत दंडनी शिक्षा फरमावशे.

शार्ङ्गरव–गुरुजीनी जेवी आज्ञा. चालो शेठ.

चंदनदास–आव्यो, भाइ ! (स्वगत)–अहा ! सद्भाग्य के मित्र-कार्यथी मारुं मरवुं थायछे, कांइ पुरुषदोषथी नहि. (परिक्रमण करतो शार्ङ्गरव साथे जाय छे.)

चाणक्य (सहर्ष)–अहा ! हवे **राक्षस** हाथमां आव्यो. केमजे.

(गीति.)

एना संकटमां आ ज्यम निज अळखामणा करे प्राण
त्यम आफतमां आनी ए पण वा'लो नहिज करे जान

(वळी पडदा पाछळ कोलाहल संभळाय छे.)

शार्ङ्गरव (गाभरो गाभरो प्रवेश करी)–**गुरुजी** ! कहेछे, आ पेलो **सिद्धार्थक, शकटदासने** शूळी देतां वध्यस्थानथी छोडावी नाठो.

चाणक्य (स्वगत)–साबाश ! **सिद्धार्थक** ! साबाश ! परगण मांड्या. (प्रकट)–शुं बळ करी नाठो ? वत्स ! कहे **भागुरायणने** जे एनी सत्वर खबर ले.

शार्ङ्गरव (जई पाछो आवी शोकातुर वेषे)–अफसोस ! अफसोस ! गुरुजी ! **भागुरायणे** भागी गयोछे.

चाणक्य (स्वगत)–भले ! फतेह करो. (प्रकट सकोप)–वत्स !

---

१ कोटवाळ.

मारुं नाम देई **भद्रभट**, **पुरुषदत्त**, **डिंगरात**, **बलगुप्त**, **राजसेन**, **लोहिताक्ष**, तथा **विजयवर्माने** कहे जे तेओ ए दुष्ट **भागुरायणने** पकडी लावे.

शार्ङ्गरव—जी, सारुं. (जई पाछो आवी शोकातुर वेशे)—अरेरे ! अफसोस ! सघलुं ए कोकडुं गुंचायुं छे. ते **भद्रभट** आदि सुभटोए, वहाणुं वायुंए न हतुं, तेवामां अंधारामांज पलायन करी गयाछे.

चाणक्य (स्वगत)—सर्वेने कुशळ हो ! (प्रकट)—वत्स ! फिकर कर मां. जो,

(हरिगीत).

मनमांहि कांइक धारी जे पूर्वे गयाज, गयाज ते;
जावा भले माथुं सजे सर्वेय, जेह रह्या जते;
सो सेनथीए अदकी, विश्वे विदित **नंद** नवे हण्ये,
सौ साधवा अर्थो समर्थ, न बुद्धि एक तजो मने.

(ऊठी आकाश तर्फ नजर ठेरवी)—आ ए दुष्ट **भद्रभट** आदिने आण्या. (स्वगत)—रे रे दुष्ट **राक्षस** ! हवे क्यां जईश ?

(रोळावृत्त).

दान[1] उदार अपार थकी दीपंता फरता-
साथी विण स्वच्छंद बहु बळमद वळी धरता,
तुजने आ अव जाण **वृषल** अर्थे दीध पलटी[2]
रानी गजनी पेठ आंतरी बुद्धिबळथी.

(सर्वे जायछे).

इति मुद्रालाभो[3] नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

---

१ दान=[1]साम, दाम, भेद, अने दंड, ए चार उपायमांनो बीजो;–[2]हाथीना कुंभस्थळमांथी युवावस्थामां निकलतो रस, मद. १ पलटी=[1]पलटावी, प्रतिकूळ मिटावीने अनुकूळ बनावी;–[2]पलोटी. २ ज्यां **राक्षसनी** महोरनी वींटी प्रणिधि **निपुणक** द्वारा **चाणक्यने** मळी वर्णवी छे ते.

मुद्राराक्षस नाटक.

अंक २.

(एक तर्फथी गारुडीने वेषे **राक्षसनो** प्रणिधि **विराधगुप्त** प्रवेश करेछे).

विराधगुप्त–

(पद.)

[1]नागराजनी[2] माथे, खेले ते; नागराजनी० ॥ ध्रुव० ॥
मंडळ[3] जेह लखे[4] खंते खुब, मंत्र[5] जाळवे जाते; खेले ते० ॥ १ ॥
जाणे तंत्र[6] समग्रज वळी जे भूले न कोइ वाते; खेले ते० ॥ २ ॥

(आकाश तर्फ लक्षथी) शुं, भाइ! शुं कहे छे?–"तुं कोण छुं?" भाइ हुं सर्पनो खेलाडी **जीर्णविष** छुं. शुं कहे छे?–"मने पण सर्प खेलनुं मन छे." कहे तो वारुं, तुं शुं काम करे छे भाइ? शुं कहे छे? "राजसेवक छुं." त्यारे ए तारे सर्प खेलज छे. केमजे गारुडी होई मंत्र तंत्रथी अजाण होय, मस्त हाथीनो चढनारो होई प्रमत्त होय, राजसेवक होई अधिकारना मदे उद्धत होय, ए सौ सरखाज; त्रणेने नसीबे खराबी सरजीछे. अहा! देखा देई ए तो कहिंक रस्ते पड्यो. (फरी आकाश तर्फ लक्षथी) शुं कह्युं भाइ तें?–"आ करंडियामां शुं छे?" भाइ! एमां तो मुज गरीबनी रोजी नागदेवता छे. शुं कह्युं?–"हुं जोवा चाहुं छुं." भाइ! माफ कर. अहिं तो न देखाडाय. आव, आ मकानमां देखाडुं, जो जोवा होय तो. शुं कह्युं?–"ए तो स्वामिश्री अमात्य **राक्षसनुं** घर छे; अम जेवा अहिं पेसवा पामता नथी." त्यारे तो जा भाइ तुं तारे. मारे तो रोजीना प्रतापे सउ द्वार खुल्लां

१ सापनो खेल करी बतावनार. २ नाग अने राजा. ३ मंडळ=[1]जेमांथी सर्प जादुई बळनेलीधे चसकवा नथी पामतो ते कुंडाळुं;–[2]राजनीतिमां कहेलुं राज्यना सीमाडा बहारना बार राजाओनुं मंडळ, जेमाटे कामंदकीय नीतिसारमां जोवुं. ४ लखे=[1]दोरे छे;–[2]लक्ष धारणामां राखेछे. ५ मंत्र=[1]सर्पविद्या;–[2]गूढ राजकाजनी वात. ६ तंत्र=[1]विषविद्या, के झेर उतारवानी क्रिया;–[2]राज्यनी आंतर व्यवस्था.

छे. अहा! आ पण थयो विदाय. (स्वगत) अहो! अजब छे! आम चंद्रगुप्तने जोउं छुं ने चाणक्यनुं बुद्धिबळ विचारुं छुं, तो राक्षसना प्रयत्न निष्फळशा दीसे छे. आम मलयकेतुने जोउं छुं ने राक्षसनुं युक्तिकौशल्य लक्षमां लावुं छुं, तो चंद्रगुप्त अधिराज्यथी भ्रष्ट जेवो जणाय छे. खरेज,

(उपजाति.)

कौटिल्यना सज्जड बुद्धिबंधे[1] जडी जणाये ज्यम लक्ष्मी चंदे;
उपायहस्तो[2] तदपि प्रसारी आ राक्षसे ए लहुं लीध सारी.

आम आ बे बुद्धिशाळी मंत्रिवरोना विरोधमां राजलक्ष्मी संशय[3]-दोलाए चढीशी भासे छे.

(रोळावृत्त.)

विशाळ अटवी[4]-मांहि सामसामा बाझेला
बे रानी गजराजतणा जुद्धे, हरवेळा
जयसंशयथी[5] जेम व्याकुळी भयथी भारी
आवजार्थी दुःखी थाय हाथणी झाझी बिचारी;
त्यम अहिं आ बे मुख्य मंत्रिवरना[6] आ वसमा
विग्रहमां, अत्यंत अनिश्चयमांहि विजयना,
राजलक्ष्मी अब विकळ भीत चित्ते अति भारी
घडीघडी झोला खाई पिडाये परम बिचारी

त्यारे हवे अमात्य राक्षस क्यां हशे ते जोउं, ने जईने तेमने मळुं.

(परिक्रमण करी अमात्यने द्वारे ऊभो रहे छे.)

(एवे आसनस्थ[7] चिंताग्रस्त[8] राक्षस परिचारक प्रियंवदक साथे प्रवेश करे छे.)

राक्षस (आसुंभरी दृष्टिये)—अफसोस अफसोस!

---

१ बुद्धि रूपी दोरनुं बंधन. २ साम, दान, भेद, अने दंड ए चार उपाय रूपी हाथ. ३ संशयना हिंदोळे, अनिश्चय रूपी चगडोळे. ४ जंगल. ५ जीतना अनिश्चयने लीधे. ६ उत्तम अमात्य. ७ आसन उपर बेठेलो. ८ विचारमां गरक.

(हरिगीत.)

निज नीति शक्ति गुणे करी शमवो दीधा सउ शत्रु ते
मरतां करी सउ नंद दुष्ट [1]विधि लीधे [2]वृष्णि पठे,
दिनरात आंख उघाडीथी घाटो वणाक घडी घटे
आ चित्र[3]रचना चितरुं हुं, ते हाय! नोंधारी दीसे. *

अथवा

(शार्दूलविक्रीडित)

ना भूली जई भक्ति, मूढ विषयासक्ति[4]थीए ना बनी,
ना बी' जानथी जानना, न करी तृष्णा मर्तबा माननी,
संतापुं चित्त नीतिना रटनथी दासत्व बेठी अति
के संतोषित थाय शत्रुवधथी स्वर्गस्थिते भूपति!

(आकाश तर्फ लक्षथी अश्रुपात साथे)—देवी लक्ष्मी! तने जराए गुणनी बूझ नथी.

(वसंततिलक.)

[5]आनंदकंद नृप नंद अहा विसारी
कां वैरी मौर्यसुत संग सजीज यारी?
कां कां तुं गंध[6]गजनी मदपंक्ति पेठ
पामी न नाश, [7]चंपले, गजना [8]समेत!

अने, ओ हीणी पापपूतळी!

---

* जुओ आथी कांक जूदा प्रसंगे प्रकारांतरे आज अलंकारनो प्रयोग नीचेप्रमाणे क. स. सा. पृ० १८ श्लो. ५० उत्तरार्धमां.

धीनें चित्रीयते कस्मादमित्तौ चित्रकर्मणा।

---

१ दैव. २ यादव. ३ विचित्र पौरुषव्यापार तेज अहिं चित्रकर्मरूपे रूपकातिशयोक्तिथी कवि वर्णवे छे, अने ते प्रयासना आलंबनरूप नंदकुळने ते चित्रनी आधारभूमि (भिति) लेखे छे, अने ते नंदकुळ विनाश पाम्युं हतुं तेथी चित्ररचना नोंधारी जणावे छे. ४ संसारना भोगवैभवमां लपटाई जवुं ते. ५ आनंदनुं मूळ. ६ जेना मदना सुवासथीज बीजा हाथी भागी जाय तेवो उत्तम हाथी. ७ एकने मूकी बीजाने अने बीजाने मूकी त्रीजाने शोधनारी; दुराचारी; अमर्याद. ८ साथे.

(शिखरिणी.)

गया भूमिमां शुं सकळ कुळवंता नृप मरी?
अरे के तुं आवो वैरणविण मौर्ये वरी वरी !!!

अथवा

स्वभावे स्त्रियोनी गगनफुलशी अस्थिर मति
गुणे ना, न ज्ञाने प्रियमहिं जुए धारीज रति

माटेज, ओ अमर्याद ! तारुं ठामज फेडी आ तारो काम हुं प्रजाळुं छुं. (विचार पूर्वक) ठीक कर्युं के में पुष्पपुरमांथी नीकळी आवतां बैरांछोकरां प्रियमित्र **चंदनदासने** घेर मूक्यां; केमजे तेथी **पुष्पपुर**-संबंधी प्रयत्न विषे **राक्षस** उदासीन नथी एम समजी, अमे जे काममां मथिये छिये तेज काममां मंडेला महाराजश्रीना सेवकोनो कार्योत्साह मंद नहि पडे. वळी **चंद्रगुप्तनो** घाट घडवा योजेला कुशळ मारा तथा हळाहळ विष देनारा वगेरेने साधी राखवा तथा शत्रुने अकार्यमां फसाववानी खटपट योजवा पुष्कळ खजाना साथे **शकटदासने** त्यां राख्योज छे; अने घडिये घडिये शत्रुनी बातमी मेळववा तथा तेमनुं ऐक्य भेदवा **जीवसिद्धि** आदिक मित्रो योज्याज छे. टुंकामां

(वसंततिलक.)

शार्दूलबाळवत जेह उछेर्यो, नाथ
पाम्या विनाश सुतवत्सळ सुत साथ
आ मर्म तेनुं दीध वींधीज बुद्धिबाणे,
आडुं न जो अकळरूप अदृष्ट आवे.

(एवे **मलयकेतुनो** कंचुकी **जाजलि** दागीनानो दाबडो लेई प्रवेश करे छे.)

जाजलि—

(हरिगीत.)

हणी **नंद कौटिल्ये** क्रमे जुगते पुरे थापेल जे
छे **चंद** थिर जामेल, तेने मंत्री ज्यम जीतवा करे;

---

१ ब्राह्मण, क्षत्रिय ने वैश्य ए त्रण आर्यवर्णनो बहार, अर्थात् शूद्र. २ चणोठी पूर, जरापण. ३ काळजी रहित. ४ राजकार्यविषे उलट. ५ वाघनुं बच्चुं. ६ अमात्य **राक्षस.**

त्यम कामने हर्णो धर्म उरमां घडपणे घटवेल, ते
आ लोभ सेवाए [1]समीरित फेडवा फोगट मथे.

(परिक्रमण करी घर पासे आवतां) आ अमात्य राक्षसनुं घर. चालो अंदर. (प्रवेश करी अमात्यने जोई) कल्याण हो अमात्यने !

राक्षस—आर्य ! [2]अभिवंदन करुं छुं. प्रियंवदक ! आसन, आसन.

प्रियंवदक—आ आसन. अहिं विराजिये आर्य.

जाजलि (आसन उपर बेशी)—अमात्य ! कुमार मलयकेतु तमने विज्ञापना करे छे के, “आर्ये केटलोए काळ थयां उचित [3]शरीरसंस्कार विसारी मूक्या छे, तेथी आर्यनुं शून्य शरीर जोई मारुं दिल दाझे छे; खरुं छे के स्वामीना गुण सहसा विसार्या विसराय तो नहि, तथापि आर्ये मारी [4]विज्ञप्ति मान्य करवी घटे छे.” (एम कही दागीना देखाडी) आ [5]अलंकार कुमारे पोताना अंग उपरथी उतारी मोकलेला छे, ते अमात्य धारण करिये.

राक्षस—आर्य जाजलि ! मारा तर्फथी कुमारश्रीने विज्ञप्ति करशो के, “तारा गुणनी रसवटमां स्वामीना गुण तो क्यां ए विसारे पड्या छे; परंतु—

(हरिगीत.)

तुज कनककेरुं तख्त आ ज्यां सुधी [6]सुगांगे स्थिर करी
नथी थापियुं, तुज सकळ शत्रुसमूह समूळज संहरी;
नथी करवी ठठवठ त्यांसुधी आ टेक निज सउ वीसरी
[7]निर्वीर्य बनी [8]परपरिभवो सहनार शरीरतणी जरी.”

जाजलि—अमात्य सरखा धुरंधर मंत्री छतां कुमारने ए [9]सिद्धप्रा-

---

१ प्रेरित, उत्तेजन पामेलो. २ नमस्कार. ३ शरीरनी ठठवठ. ४ पोताना अंग उपरथी उतारी मोकलेलां आभूषण स्वीकारी ते शरीरे सजवानी प्रार्थना ५ आभूषण. ६ गंगानदीना किनारा उपर आवेलो पाटलिपुत्रनो राजमहेल. ७ निर्माल्य, बायलुं, कायर. ८ शत्रुए करेलुं मानभंग, अपमान, तिरस्कार. ९ थया जेवुं, घणुं खरुं सिद्ध.

यज छे. माटे अमात्ये कुमारनो आ प्रथम प्रणय मान्य करवो घटे छे.

राक्षस–आर्य! तमारुं वचन पण कुमारना वचननी पेठे में पाछुं ठेलाय नहि. तो कुमारनी आज्ञा होय तेम करो.

जाजलि (आभूषण पहेरावी)–सकळ कल्याण हो अमात्यने! हुं जाउं छुं.

राक्षस–नमस्कार आर्यने! (**जाजलि** जाय छे.)

राक्षस (**जाजलि** गया पछी)–**प्रियंवदक**! जो जोई द्वारे, कोइ अमने मळवा चाहे छे?

प्रियंवदक–अमात्यनी जेवी आज्ञा. (जई गारुडीवेषे **विराधगुप्त**ने जोई ते प्रति) भाइ, तुं कोण छे?

विराधगुप्त–भाइ! हुं सर्पनो खेलाडी **जीर्णविष** छुं. हुं अमात्य **राक्षस** आगळ सापना खेल करी बतावना आव्यो छुं.

प्रियंवदक–रहे, हुं अमात्यने जाहेर करुं. (**राक्षस** पासे जई)–अमात्य! आ कोइ गारुडी सापना खेल करी बतावना आव्यो छे.

राक्षस (डाबी आंख फरकतां स्वगत)–शुं! शुकनमांज सर्पनुं दर्शन! (प्रगट)–**प्रियंवदक**! अमने सर्प जोवानी इच्छा नथी माटे एने खुशी करी काढ.

प्रियंवदक–जी, सारुं. (जई गारुडी प्रति)–भाइ! अमात्य सर्पखेल जोवानी महेरबानी नथी करता पण सर्पखेल बताव्यानुं जे फळ, ते आ महेरबान थई अमथां तने आपे छे.

विराधगुप्त–भाइ! अमात्यश्रीने विनव जे "हुं कांइ केवळ गारुडीज नथी, प्राकृतकवि पण छुं. तेथी जो मारा उपर अमात्यश्री दर्शननी महेरबानी कदी न करो तोये आटलुं पत्र तो वाचवानी कृपा करो!"

प्रियंवदक (पत्र लेई **राक्षस** पासे जई)–अमात्य! आ विनवे छे जे

---

१ प्रार्थना; संपादक 'मैत्री के प्यारनुं चिह्न' एवो अर्थ आपे छे, पण मूळना पृ. २७७ मां आ शब्द फरी आवाज प्रसंगमां वापर्यो छे तेनी संगति विचारी जोतां 'प्रार्थना' एज अर्थ लागु दीसे छे.

"हुं केवळ गारुडी नथी, पण प्राकृतकवि पण छुं. तेथी जो मारा उपर अमात्यश्री दर्शननी महेरबानी न करो कदी, तोये आटलुं पत्र तो वांचवानी कृपा करो.

राक्षस (पत्र लेई वांचे छे)—

(आर्या.)

भ्रमर भमी [1]कौशल्ये ग्रही ग्रही रस समग्र [2]पुष्पथकी
सार सार वर्जे जे, सारे ते [3]अवर-अर्थ नकी.

(स्वगत)—अहो! 'हुं **पुष्पपुर**नी हकीकत जाणनार आपनो प्रणिधि छुं' एम आ गाथाद्वारा ए सूचवे छे. अहा! अनेक राजकाजमां मन व्यग्र होवाथी, तथा प्रणिधि बहु होवाथी, भूली गयो ते हवणांज सांभर्युं—ए तो गारुडीवेषे **विराधगुप्त** हशे. (प्रगट)—**प्रियंवदक**! आववा दे एने, ए सारो कवि जणाय छे. जोइये, एनुं सुभाषित सांभळिये.

प्रियंवदक—जी, सारुं. (गारुडी पासे जई)—आव, भाइ! आव.

विराधगुप्त (प्रवेश करी **राक्षस**ने जोई स्वगत)—आ अमात्य **राक्षस**. अहा! अद्यापि पण—

(हरिगीत.)

आ [4]मंत्रिवरना मंत्रबळथी, **राजलक्ष्मी**, डरी डरी
निज [5]वामबाहुलता सजड नज **मौर्य**ने कंठे धरी,
मुख फेरवी, [6]स्कंधे बळे मूक्या छतांए फरी फरी
पडी जता अन्य करे न भींडे [7]अंक कुच पीडित करी!

(प्रगट) जय जय अमात्यश्रीने!

राक्षस (जोइ)—अहो! शुं **विराध**—(एम अर्धुं कही फेरवी वाळतां) विरुढ दाढुं छेक दुंटिये अडे छे! **प्रियंवदक**! अमे हवणां सर्पखेल जो-

---

१ चतुराई, होशियारी. २ पुष्प=[1]फुल;—[2]**पुष्पपुर** के **पाटलिपुत्र**. ३ बीजानुं काम, बीजानो स्वार्थ. ४ मंत्रिवर=[1]उत्तम अमात्य;—[2]उत्तम मंत्रशास्त्रकुशळ ब्राह्मण. ५ वेल जेवो सुकोमळ डाबो हाथ. ६ खभो. ७ आलिंगन.

इये छिये. तेथी परिजननुं अहिं कांइ काम नथी माटे ते विश्राम ले. तुं पण तारे कामे लाग.

प्रियंवदक—जी, सारुं. (इतर परिजन साथे जाय छे.)

राक्षस—मित्र **विराधगुप्त** ! बेश आ आसने.

(**विराधगुप्त** आसन उपर बेसे छे.)

राक्षस (तेनी दशा जोई)अरेरे ! महाराजश्रीना चरणसेवकनी आ अवस्था !!! (आंखमांथी आंसुनी धारा वहे छे.)

विराधगुप्त—अमात्य आम शोच मां करो. अमात्य अमने पाछा पूर्वनी अवस्थाए सहजमां पहोचाडशो.

राक्षस—मित्र ! **कुसुमपुरनी** शी हकीकत छे? कहे.

विराधगुप्त—अमात्य ! **कुसुमपुरनी** हकीकत बहु लांबी छे. माटे, फरमावो, क्यांथी मांडीने कहुं ?

राक्षस—मित्र ! **चंद्रगुप्त** नगरमां पेठो, त्यारपछी में योजेला कुशळ मारा अने हळाहळ विष देनाराए शुं कर्युं, ते आदिथी सांभळवा चाहुं छुं.

विराधगुप्त—सांभळिये, अमात्य ! पेलां **शक, यवन, किरात, कांबोज, पारसीक, बाल्हीक,** वगेरेनां **चंद्रगुप्त** अने **पर्वतराजनां** लश्कर, बुद्धिमान् **चाणक्यनां** प्रेर्यां, प्रलयकाळे मर्यादा मूकी उलटता महासागरनी पेठे चढी आव्यां, अने चारे तर्फ **पुष्पपुर** आ घेरी लीधुं—

राक्षस (खड्ग खेंची आवेगथी)—अरे मारा जीवमां जीव छतां **पुष्पपुरने** घेरनार कोण ? **प्रवीरक ! प्रवीरक** ! शुं जुए छे ? एकदम—

(रोळावृत्त.)

बाणावळियो बुरज बुरजथी शर वर्षावो !
द्वारे [1]अरिकरिजूथ झीलवा गज धज लावो !
एकमने [2]जेशझंखो जुद्धना रसिया जे जे,
दुर्बळ रिपुपर [3]नीडर धसो मुज साथे ते ते !

---

१ शत्रुना हाथीना टोळांसामी टक्कर लेवा. २ जशने झंखता. ३ डर रहित.

विराधगुप्त—अमात्य! शांत थाओ. आ तो वीती वात छे.

राक्षस (निःश्वास मूकी)—अफसोस अफसोस, के वीती वात छे! में जाण्युं जे आ एज समय वर्ते छे. (खड्ग फेंकी देई)—अहा!—देव!—**नंद**!—**राक्षस** प्रति आपनो ते अत्यंत कृपाभाव हजुए सांभरे छे. तमे ते वखते संग्राम मची रह्यो हतो त्यारे—

(झूलणा वृत्त.)

'[1]गजघटा घन घूमे ज्यां [2]घनश्याम ओ-ओ-पणे, **राक्षसे** त्यांय धावुं!
हयदळे रोळवुं **राक्षसे** रोकी! ओ ऊर्मिवत् ऊछळी जेह आव्युं;
पायदळ प्रबळ दळी नांखवुंय **राक्षसे**!' ए रीते नेहघेला, अहाहा!
कल्पी ज्यम कोटि **राक्षस** हजुर हुकमपर हुकम का'व्या गया युद्धमां हा!

विराधगुप्त—ए रीते शत्रु **पुष्पपुर**ने चारे तर्फथी घेरी बेठा जोई घेरो लंबायाथी बहु दिवसथी लोकोने भारे दुःखी थता देखी न खमाये, नगरवासीनी दाझथी ए अवस्थामां वळी देवश्री **सर्वार्थसिद्धि** सुरंगद्वारा नीकळी तपोवनमां जई रह्या; एटले धणी धोरी विना आपना लश्करनो उत्साह मंद पड्यो; जेथी रिपुए नगर लीधुं अने पडो वजडावी पोतानी आण वर्तावी. ते समये, तेमां भेळ पाडी ए आदिक साहसथी पौर जननां मन जणाई गयां, एटले **नंद**राज्य पुनः स्थापन करवाना [4]उद्देशे आप सुरंगद्वारा बहार नीकळी पड्या. त्यारपछी, **चंद्रगुप्त**नो घाट घडवा सारुं तमे **विषकन्या** योजी हती, तेणे बिचारा **पर्वतेश्वर** मार्या गया—

राक्षस—मित्र! केवुं विचित्र! जो जो

(छप्पय.)

एकज हणवा शक्त [5]शक्ति निष्फळ न जणारी
[6]पार्थवधार्थे जेम राखी हती **कर्णे** धारी;

---

१ हाथीनुं टोळुं. २ वादळ समान श्याम. ३ पाणीना मोजानी पेठे. ४ हेतु, मतलब. ५ एक चमत्कारिक अस्त्र. ६ पृथाना पुत्र **अर्जुन**ने मारवा सारुं.

त्यम **विषकन्या*** जेह **मौर्य** हणवा राखेली,
तेणे हर्णो **शैलेश**, **घटोत्कचवत्**, ते मे'ली,
विष्णुवत् विष्णुगुप्त ते दुष्टतणुंज, अरे अरे !
तेनुंज साल हर्यो सर्वथा, प्रिय पूरण कीधुं खरे !!!

विराधगुप्त—अमात्य ! एमां कांइ इलाज नथी. दैवने गोठ्युं ते खरुं!

राक्षस—वारुं, पछी ?

विराधगुप्त—पछी बापना वधथी बीकना मार्या कुमार **मलयकेतु पुष्पपुर** छोडीने नाठा, त्यारे **पर्वतराज**ना भाइ **वैरोचक**ने **चाणक्ये** समजावीने राख्यो; अने **नंदराय**ना राजमहेलमां **चंद्रगुप्त**ना प्रवेशनो शुभ दिवस बहार पाडी, ते दुष्टे आखा नगरना सुतारोने एकठा कर्या, अने कह्युं के "ज्योतिषिये **नंद**ना राजमहेलमां **चंद्रगुप्त**ना प्रवेशनुं आज मध्यरात्रनुं मुहूर्त आप्युं छे, तेथी दरवाजाथी मांडीने बधो राजमहेल शणगारो" त्यारे सुतारोए कह्युं के "आर्य ! देवश्री **चंद्रगुप्त**ना राजमहेलमां प्रवेशनी वात जाणी आगमचथीज आगलो दरवाजो सुतार **दारुवर्मा**ए सोनेरी मेहेराब वगेरे ठाठमाठथी शणगारी मूक्यो छे; हवे राजमहेल मात्र मांहिथी शणगारवो रह्यो छे ते अमे करीशुं." ए सांभळी, वगर कह्ये सुतार **दारुवर्मा**ए आगलो दरवाजो शणगारी मूक्यो तेथी पोते अंतरमां बहु प्रसंन थयो होय तेम **दारुवर्मा**नी हुंशियारीनी वणी तारीफ करी, दुष्ट **चाणक्ये** कह्युं, "**दारुवर्मा**! तारी आ हुंशियारीनो बदलो थोडाक वखतमां मळशे."

राक्षस (उद्वेगथी)—मित्र ! ए दुष्ट ते प्रसंन थवो केवो ? माटे **दारुवर्मा**नो प्रयत्न अफळ गयानी अथवा तो अवळो फळ्यानी मने धास्ती रहेछे; केमजे एणे, भूल खाई अथवा तो राजभक्तिनी घेलछामां त-

---

* जुओ नीचेनो श्लोक.

लावण्यभूषणाक्रान्तां योषितं क्रमशो विषैः ।
युवतीं योजयेत् कामिरिपुभूपालशान्तये ॥

---

१ पर्वतक. २ कमान.

णाई, खरी तक आवतांसुधी दम मारवाने बदले पोतानी उतावळथी उलटुं ते दुष्टना मनमां पाको वहेम आणवानुं कर्युं. वारु, पछी?

विराधगुप्त–पछी ते दुष्टे, अनुकूळ मुहूर्त जोई, "आज मध्यरात्रे **चंद्रगुप्त** राजमहेलमां प्रवेश करशे," एवो ढंढेरो पिटावी, तेजक्षणे **पर्वतराज**ना भाइ **वैरोचक**ने **चंद्रगुप्त** साथे एक सिंहासने बेसाडी राज्यना अर्धनो भागियो कर्यो.

राक्षस–शुं त्यारे **पर्वतराज**ना भाइ **वैरोचक**ने पूर्वे कबूलेलुं अर्धु राज्य आप्युं?

विराधगुप्त–हाजी!

राक्षस (स्वगत)–बेशक एमां कांइक भेद हशे. अरे ए एणे **पर्वतराज**ना वधनी काळाटीली काढी नांखवा लोकोने समजाववा कर्युं हशे; अने तेमांए पाछो ते बिचारा **वैरोचक**ने ए पूरो करवानो कांइक उंडो घाट उतार्यो हशे. (प्रगट) पछी पछी?

विराधगुप्त–पछी **वैरोचक**ने, पट्टाभिषेक कर्यो छतां, बरफजेवां उज्जवळ मुक्ता[1]फळनी लटरोथी सुशोभित भव्य वस्त्रना पोशाकमां शरीर लपेटी लेई, माथे रत्नजडित मुकुट दृढ सजावी, विशाळ वक्ष[2]:स्थळे जनोईरोका महमहता फुलना हार पहेरावी, परिचितने ओळखवो मुश्केल पडे एम शणगारी करी, आगमचथी ठरावेला सर्वविदित[3] मुहुर्ते, रात्रिये, दुष्ट **चाणक्य**नी योजनाने अनुसार **चंद्रगुप्त**ने पोताने चढवानी हाथणी **चंद्रलेखा** उपर बेसारी, खुद **चंद्रगुप्त**ना अनुयायी[4] राजवर्ग साथे आगळ कर्यो. ए ठाठमां ए राजमहेल आगळ आवी पहोच्यो; एटले आपे साधी राखेला सुतार **दारुवर्मा**ए "आ **चंद्रगुप्त**ज छे" एम जाणी, जेवो ए अंदर पेसवा गयो के तेनाउपर नांखवा गोठवी मूकेली कमाननी कळ उपर पोतानो हाथ नांख्यो. दरम्यान, **चंद्रगुप्त**नो अनुयायी राजवर्ग वाहन रोकी बहार चोकमां ऊभो छतां तमे साधी राखेला **चंद्रगुप्त**ना

१ मोती. २ छाती. ३ सर्वेने जाणीतुं. ४ सवारीमां साथे चालनारा.

महावत **बर्बरके** सोनाना म्यानमांहिनुं शस्त्र खेंचवा सोनानी सांकळे लटकतुं म्यान हाथमां लीधुं.

राक्षस—बेउए जीवा न रही आडनुं दोढ कर्युं.

विराधगुप्त—एटले पूंठे प्रहारनी बीके हाथणी पोतानी धीमी चाल छोडी एकाएक दोडी. तेथी प्रथमनी चालनी गणत्रीथी वछोडी नांखेली कमान, निशान चूकी, हजुतो **चंद्रगुप्त** समजी मारवा चाहेला **वैरोचकने** पेला बिचारा **बर्बरके** मार्यो ए नथी ने एना हाथ तो शस्त्र खेंचवामां रोकाया छे एवामां, एनाज उपर ककडती आवीने पडी के एतो बिचारो पूरोज थई गयो. हवे, "कमान वछोडी नांखतां करी मने जीवतो नहि मूके" एम समजी **दारुवर्मा** जे उंचे छेक कमान उपरना भागे चड्यो हतो, त्यांथी तेणे ते कमाननी कळेज बिचारा **वैरोचकने** हाथणी उपर ने उपरज कूटी नांख्यो.

राक्षस—अफसोस! अफसोस! बेवडो अनर्थ थयो. **चंद्रगुप्तनो** घाट घडवो'तो ते न घड्यो, ने बिचारा **वैरोचक** अने **बर्बरकना** दैवे जीव लीधा! पछी सुतार **दारुवर्मानुं** शुं थयुं?

विराधगुप्त—**वैरोचकना** पुरःसर[1] पाळाए एने पथरा ने रोडांवते पूरो कर्यो.

राक्षस (आंसुभरी आंखे)—अफसोस! अफसोस! गयो रे बिचारो **दारुवर्मा**! अहा, एक दिलोजान दोस्त खोयो! वारुं, पेला वैद्य **अभयदत्ते** शुं कर्युं?

विराधगुप्त—बधुं ए कर्युं.

राक्षस (सहर्ष)—शुं त्यारे ते दुरात्मा **चंद्रगुप्तनो** घाट घडायो?

विराधगुप्त—अमात्य, दैव आडे आव्युं ने ए न मुओ.

राक्षस (शोकातुर चहेरे)—त्यारे हावां "बधुं ए कर्युं" शा माटे कहे छे?

विराधगुप्त—अमात्य! एणे, **चंद्रगुप्त** सारुं जे औषध हतुं ते झेर

---

१ अग्रयायी, आगळ चालनार.

मेळवीने मोकल्युं. ते जाते तपासी जोतां, दुरात्मा **चाणक्ये**, सोनाना वासणमां नांखतांज तेनो रंग बदलायो जोई, **चंद्रगुप्त**ने कह्युं के, "आमां झेर छे माटे ए पीवुं नहि."

राक्षस—ए दुष्ट पाको देखुं! वारुं, पण ते वैद्यनुं शुं थयुं?

विराधगुप्त—ए ओसड एनेज पायुं,* एटले ए जमपुरीने रस्ते पड्यो.

राक्षस (अपशोच साथे)—अरेरे! वैद्यविद्यानुं एक रत्न गयुं!!! पण, मित्र, पेला रंगमहेलना हजुरी **प्रमोदक**नुं शुं थयुं?

विराधगुप्त—जे बीजानुं थयुं तेज.

राक्षस (शोक पूर्वक)-एम केम!

विराधगुप्त—तमे आप्युं हशे ते अखूट धन मळतां ते मूर्खो मोटा ठाठथी रहेवा लाग्यो. तेथी **चाणक्ये** तेने पूछ्युं के "तारी पासे आटलो बधो पैसो क्यांथी?", त्यारे ते बहु बोली बोल्यो, ते उपरथी तेने ते दुरात्मा **चाणक्ये** भुंडे मोते मारी नखाव्यो.

राक्षस (शोकातुर चहेरे)—अरे! आमे अमनेज दैवे मार्या!!! वारुं, पेला **बीभत्सक** वगेरे जे अमे **चंद्रगुप्त**ने उंघतां पथारीमां पूरो करवा तेना रंगमहेलनी भींतमांहिनी सुरंगमां राख्या हता तेमनी शी हकीकत छे?

विराधगुप्त—अमात्य! बूरी हकीकत छे.

राक्षस (आवेग पूर्वक)—शुं? बूरी हकीकत छे? अरे ए दुरात्मा एओने त्यां रहेता जाणी तो नहि गयो होय?

विराधगुप्त—अमात्य! एमज थयुं. **चंद्रगुप्त**ना प्रवेश पूर्वे ते दुष्टे पेशी चारेतर्फ सूक्ष्म नजरे जोतांज तुरत भीतना एक बारिक छिद्रमांथी भातना दाणा लेई कीडियोनी हार नीकळती देखी, "निश्चय भीतर माणसनो वास छे" एम समजी जई, तेणे ते आवास बाळी मुकाव्यो. आग पसरी के तेना धुमाडाथी आंखो पुराई जवाथी रस्तो न जड्ये

---

* जुओ का. नी सा. ७–२७.

औषधानि च सर्वाणि पानं पानीयमेव च।
तत्कल्पकैः समास्वाद्य प्राश्नीयाद्भोजनानि च॥

बिचारा **बीभत्सक** वगेरे सउ मांहिना मांहि वळीने खाख थई गया.

राक्षस (आंसुभरी आंखे)—अफसोस ! अफसोस ! अहा आ अधम दुरात्मा **चाणक्यने** दैव केवुं पाधरुं ऊतरे छे तेतो जो भाइ ! में

(कवित.)

चंद्रगुप्तकेरो भलीभात घडवाने घाट
प्रथमथी पुंठे **विषकन्या** जे मूकी हती,
तेणे ते बिचारो गयो **पर्वतक** मार्यो, अने
एने मटयुं साल नीमे भागनुं ए मांहिथी ;
वळी विषे मारवा ने शस्त्रथी संहारवाने
योज्या हता जे जे ते ते मार्या गया ते थकी ;
मौर्यनेज लाभ आपनार उलटुं बने छे
जे जे करुं ते ते सउ कांइये हरि हरि ! ! !

विराधगुप्त—अमात्य ! तथापि हाथ लीधुं तजी देवातुंज नथी.* जुओ,

(रोळावृत्त.)

विघ्नभये डरी उर क्षुद्र[1] जन नज आरंभे ;
वचवांधाना विघ्न नड्ये आरंभीय थंभे ;
पण तम सम जे उच्च पुरुष, तेतो, शत सामे
विघ्न होय, नज तोय इष्टसिद्धिथी[2] विरामे.†

वळी,

(द्रुमिलावृत्त.)

नव भारथी शेष पिडाय शुं, के शिरथी न उसेटी दिये धरणी[3] ?
नशुं थाक जणाय कंइ शरीरे, नं घडीपण के विरमे तरणि[4] ?

---

* जुवो क. स. सा. पृ. १०३ श्लो. २३४ उत्तरार्ध.

आरब्धा ह्यसमाप्तैव किं धीरैस्त्यज्यते क्रिया ।

† जुवो हितोपदेश, ३–११८.

आरम्भन्तेल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च ।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः ॥

---

१ तुच्छ. २ धारेलुं कार्य पूरुं करवुं ते, इष्टकार्यनी समाप्ति. ३ पृथ्वी. ४ सूर्य.

तजतां पण पामर पेठ लई कर सज्जन ले' उर शर्म घणी ;
[1]प्रतिपन्नपथे [2]बेनी रे'वुंज ए कुळरीति' [3]सनातन सुज्ञतणी *

राक्षस–मित्र ! "हाथ लीधुं तजी देवातु नथी" ते तुं जुएज छे. पछी वारुं ?

विराधगुप्त–ते पछीथी ए दुरात्मा **चाणक्ये** **चंद्रगुप्तना** रक्षण सारुं हजारगणा अधिक जागृत रही, "आ आवुं आवुं करनार ते फलाणा फलाणा छे" एम बधानो पत्तो काढी, **पुष्पपुरमांना** आपना अंतरना माणसोने शोधी शोधी शिक्षा करवा मांडी.

राक्षस (उद्वेगपूर्वक)–कहे, कोण कोण ए दुरात्माना पंझामां पड्या ?

विराध गुप्त–प्रथम तो पेला क्षपणक **जीवसिद्धिने** फजेती साथे देशपार कर्यो.

राक्षस (स्वगत)–ठीक एतो. जेने कोइ वस्तुविषे ममता नथी एवाने देशपारदुनियापारथी दुःख नथी. (प्रगट)–मित्र ! शा गुन्हासर देशपार कर्यो ?

विराधगुप्त–"एणे **राक्षसनी** प्रेरणाथी **विषकन्या** वडे **पर्वतराजने** मारी नांख्या" एम कही.

राक्षस (स्वगत)–साबाश ! **कौटिल्य** ! साबाश ! तें.

(शिखरिणी.)

करी काळाटीली निज शिरथकी दूरज खरे ;
अने ते ते पेचे सजडज ! लगाडी अम शिरे ;
नीमे भागीदारे वळी घडीज घाली हर्युं शूळे ;
अकेका अंकुरो तुज नीतितणा शुं नव फळे ? ! ?

(प्रगट)–पछी ?

---

* जुवो क. स. सा. पृ. ७४ श्लो. १८८ उत्तरार्ध.
प्रतिपन्नार्थनिर्वाहः सहजं हि सतां व्रतम् ।

---

१ अंगीकार करेलो मार्ग, हाथमां लीधेलुं काम. २ तदाकार थई रहेवुं, मंड्या रहेवुं ३ हमेशनी.

विराधगुप्त—पछी, "**चंद्रगुप्त**नो जीव लेवा **दारुवर्मा** आदिक माणसो आणे योज्यां हतां" एवा ढंढेराथी **शकटदास**ने शूळिये चढाव्यो.

राक्षस (आंसुथी उभराती आंखे)—अरेरे ! कमोते मुओ रे भाइ **शकटदास** !!! तारी आ दशा नहती थवी. अथवा तुं तो भाइ जीती गयो !—स्वामीना कार्यमां देह पड्यो ! अमेज निर्भाग्य, के **नंद**कुळनुं जडामूळ जतांए अमारा आ पापी प्राण छूटता नथी.

विराधगुप्त—अमात्य ! स्वामिकार्यज सिद्ध करवा पाछळ तमारो जीव लागी रह्यो छे.

राक्षस—हा ! हा ! भाइ !

(उपगीति.)

अवलंबी[1] ए अर्थज—न जीवितेच्छा[2], कृतघ्नपणे,
स्वामी स्वर्ग जतांए करी ना कुरबान काय अमे !

कहे, भाइ, प्रियजननी बीजीए माठी खबर सांभळवा सज्ज छुं.

विराधगुप्त.—ए रीतभात जोतांज **चंदनदासे** अमात्यना कुटुंबने बीजाने त्यां संताड्युं.

राक्षस—**चाणक्य** महाक्रुर छे !—अरे ए दुष्टना विरुद्ध ए एणे महा भुंडुं कर्युं.

विराधगुप्त—अमात्य ! पण मित्रद्रोह एथीए भुंडो नहि शुं ?

राक्षस—पछीपछी ?

विराधगुप्त—पछी चाणक्ये तेने बोलावी आपनुं कुटुंब हवाले करवा कह्युं ते ज्यारे तेणे न कर्युं त्यारे ते दुष्टे क्रोधना प्रचंड आवेशमां—

राक्षस (उद्वेगथी)—हें—हें—शुं—मारी नांख्यो ?

विराधगुप्त—मारी तो न नांख्यो पण मालमता जप्त करी बैरांछोकरां साथे एने कारागृहमां[3] नांख्यो.

---

१ पकडी, स्वीकारी, आगळ करी. २ जीववानी इच्छा, आवरदा वहालो करवो—जात वहाली करवी ते. ३ केदखानुं.

राक्षस—त्यारे महासंतोषथी "**राक्षस**ना कुटुंबने एणे बीजाने त्यां संताड्युं" एम शाने कहे छे? एमज कहेने के सकुटुंब **राक्षस**ज केदमां पुरायो.

प्रियंवदक (एकदम प्रवेश करी)—जय जय! अमात्य! आ **शकटदास** द्वारे ऊभा छे.

राक्षस—अरे! शुं साचुं कहे छे?

प्रियंवदक—अमात्यश्रीनें जुठुं कदी कह्युं छे?

राक्षस—मित्र **विराधगुप्त**! आ शुं? आ केम?

विराधगुप्त—अमात्य! होय! एम ए होय मोतना म्होमांथी बचावी लेनार विधातानी बलिहारी छे!—जेनेलीधे बनवा काळ बनी आवे छे.*

राक्षस—**प्रियंवदक**! शा माटे त्यारे वार करेछे? सत्वर एने अंदर आववा दे.

प्रियंवदक—जी, सारुं. (जाय छे.)

(एटले **शकटदास सिद्धार्थक** साथे प्रवेश करे छे.)

सिद्धार्थक (स्वगत)—अरेअरे!

(कवित.)

[1]अवलोकी आंखे [2]महीमांहि थिर थपायेल
मौर्य, अने आंखे आज अवलोकी शूळीए,
[3]चेतना प्रमाथी पूरी प्रभुता रिपुनी धारी,
धारी बडी बूरी वधमाळा ए वळी शिरे,
काळोतरी काने सुणी स्वामिना निकंदननी
सुणी वळी भुंडी [4]वधभेरी आ पिटाइ ते

* जुओ क. स. सा. पृ० १५६ श्लो. ९१.

विधिरेव हि जागर्ति भव्यानामर्थसिद्धिषु ।
असंचेतयमानानां सद्भृत्यः स्वामिनामिव ॥

१ जोई. २ पृथ्वी. ३ केवळ चैतन्य-शुद्धि हरी लेनारी. ४ शूळिये चढावतां वगाडातुं पडघमने मळतुं पटह नामनुं वाद्य.

हृदय कठोर आ न क्यमे मुज फाटी पड्युं,
एए हा! कठण थयुं घडाई घडाईने!

(अमात्य पासे जई पहोचतां तेने निरखी सहर्ष)-अहा!!! अमात्यश्री,

(आर्या.)

जग तजी **नंद** जतांए अर्थ न स्वामीतणो तज्यो एवा
सर्व राजभक्तोना चूडामणिरूप विराजे आ!!!

(पासे जई)-जय जय! अमात्य!

राक्षस (जोई सहर्ष)-मित्र **शकटदास!** **कौटिल्यनी** दृष्टिये चढचा छतां ए तने हुं जोवा पाम्यो ए महा सद्भाग्य! माटे आव मने भेट.

(**शकटदास** तेम करे छे.)

राक्षस (खुबवार लगी भेटी लेई)-आ आसने बेश.

(**शकटदास** तेम करे छे.)

राक्षस-मित्र! मने आ परम आनंद उपजावनार कोण छे वारुं?

शकटदास (**सिद्धार्थक** तर्फ आंगळी करी)-आ प्रियमित्र **सिद्धार्थके** माराओने नसाडी मूकी मने वध्यस्थानथी छोडावी अहिं आण्यो.

राक्षस (सहर्ष)-भाइ **सिद्धार्थक**! तें आ अमारुं जे प्रिय कर्युं छे तेने लायक तो नथीज; तोये आ ले. (एम कही अंग उपरनां आभूषण उतारीने आपे छे.)

सिद्धार्थक (लेई पगे पडी स्वगत)-आर्य **चाणक्ये** आम कह्युं हतुं माटे ते प्रमाणे करुं. (प्रगट)-अमात्य! अहिं हुं केवळ नवो छुं, तेथी मारे कोइ साथे ओळखाण नथी के तेने आ अमात्यश्रीनी प्रसादी सोंपी निश्चित थाउं. एथी करीने आ महोरथी शिक्को करी अमात्यश्रीना भंडारमांज आ बक्षीश मूकवा चाहुंछुं ज्यारे मारे जोईशे त्यारे लेईश.

राक्षस-वारुं भाइ! एमां अमने शी हरकत छे? (**शकटदास** प्रति)-**शकटदास!** राखो त्यारे ए आपे ते.

शकटदास-जेवी अमात्यनी आज्ञा. (महोर जोई अलग अमात्य प्रति)-अमात्य! आ मुद्रा तो तमारा नामनी छे!

---

१ मस्तकना मणि जेवा. २ बक्षीश.

राक्षस (जोई स्वगत)-खरेज नगर छोडी नीकळतां वियोगना दहाडा काढवा बिचारी ब्राह्मणिये मारी पासेथी मागी लीधी हती तेज छे ए. एने हाथ ए क्यांथी आवी हशे? (प्रगट)-भाइ **सिद्धार्थक**! आ तने क्यांथी मळी?

सिद्धार्थक–पुष्पपुरमां शेठ **चंदनदास** करीने झवेरी छे. तेना आंगणामांथी मने ए जडी.

राक्षस–बरोबर.

सिद्धार्थक–अमात्य! "बरोबर" क्यम वारुं?

राक्षस–भाइ! महाधनाढ्यना भवनमां आवी वस्तु अथडाती हाथे चढे ए.

शकटदास–मित्र **सिद्धार्थक**! आ मुद्रा तो अमात्यना नामनी छे. अमात्य एने बदले तने एथीए अधिक धन आपी राजी करशे; माटे एमने ए अर्पण कर.

सिद्धार्थक–भाइ! अमात्य आ मुद्रा अंगीकार करे एतो मोटी कृपा! (एम कही मुद्रा आपेछे)

राक्षस–मित्र **शकटदास**! त्यारे आज मुद्रा तारे तारा लखावटना काममां सहीशिक्का करवा काम लागशे, माटे एथीज काम चलाववुं.

शकटदास–जेवी अमात्यनी आज्ञा.

सिद्धार्थक–अमात्य! मारे एक अरज गुजारवी छे.

राक्षस–भाइ, बेलाशक कहे.

सिद्धार्थक–अमात्यने विदितज छे के दुरात्मा **चाणक्य**थी विरोध करी मारे पाछा **पुष्पपुर**मां पेसवानुं रह्युं नथी. तेथी अमात्यना चरणकमळ सेववा चाहुं छुं.

राक्षस–वाह! अमे तो बहु खुशी छिये एशी. मात्र तारुं मन जाण्युं न हतुं तेथी तने अमे कह्युं नहि. भले! एम करवुं.

सिद्धार्थक (सहर्ष)–मोटी महेरबानी.

राक्षस–**शकटदास**! **सिद्धार्थक**ने विश्राम आपवो; ए थाक्यो पाक्यो छे.

शकटदास–वारुं, अमात्य ! (**सिद्धार्थकने** लेई जाय छे.)

राक्षस–मित्र **विराधगुप्त** ! तारी हकीकत पूरी कर. **चंद्रगुप्तना** प्रकृतिमंडळमां अमारी खटपट केवी फावे छे ?

विराधगुप्त–अमात्य ! सजड फावे छे, केम जे आपणी खटपट प्रमाणे प्रत्यक्ष थतुंज जोईये छिये.

राक्षस–मित्र ! प्रत्यक्ष शुं दीठुं ?

विराधगुप्त–अमात्य ! **मलयकेतु** छटकी गयो त्यारथी **चंद्रगुप्त चाणक्य** उपर गुस्से छे ए प्रत्यक्षज छे. वळी **चाणक्य** पण "ए ने वळी मारा उपर गुस्सो करे !" एम विजयना मदमां **चंद्रगुप्तनो** ताप न सांखी आडो पडी आज्ञाभंगथी वारे वारे **चंद्रगुप्तने** दूभवे छे, तेथी तेनुं मन वधारे उंचुं थतुं जाय छे; आ मारा पोताना अनुभवथी कहुं छुं.

राक्षस (सहर्ष)–मित्र **विराधगुप्त** ! आना आ गारुडीना वेषमां तुं पाछो **पुष्पपुर** जा. त्यां मारो प्रिय मित्र **स्तनकलश** नामे **वैतालिक** वसे छे. तेने तारे मारुं नाम देई कहेवुं के **चाणक्य** जे जे वाते आडो पडी आज्ञाभंग करे ते ते वाते चढावो करे एवी एवी कविता ललकारी **चंद्रगुप्तने** खुब प्रमोदवो[1]; अने तेनो जे परिणाम थाय ते अमने गुप्तरीते **करभकद्वारा** कहाववो.

विराधगुप्त–जेवी अमात्यनी आज्ञा. (जाय छे.)

प्रियंवदक (प्रवेश करी)–अमात्य ! **शकटदास** आपने विनवे छे, के आ त्रण दागिना वेचाय छे ते अमात्य जाते तपासी जुओ.

राक्षस (जोई).अहो ! दागीना बहु कीमती छे ! भाइ ! मारुं नाम देई **शकटदासने** कहे के वेचनारनुं मन मनावी दागीना लेवा.

प्रियंवदक–जी, सारुं. (जाय छे.)

राक्षस–त्यारे हुं ए **करभकने पुष्पपुर** मोकलुं. (ऊठीने) अहा ! कोइ प्रकारे **चाणक्य चंद्रगुप्त** वच्चे अणराग थाय अने ए दुष्टथी **चंद्र**-

---

१ वळ चढाववो, उश्केरवो.

गुप्त छूटो पडे !!! अथवा ए इच्छा अमारी हवे आ पूर्ण थईज पेखुं छुं. केमजे

(कवित.)

आण राणारायने मनावी **चंद्रगुप्त** पोते
चक्रवर्ती चारखुंट प्रथ्वीमां कहाव्यो छे;
'गोठव्यो छे गादिये आ **मौर्य** मेंज' एम वळी
पवन **चाणक्य**ना [1]भेजे भराई आव्यो छे;
छत्रपति थते अर्थ **मौर्य**नो सरी रह्यो छे,
कौटिल्ये कृतार्थ माने, [2]पण पूरी फाव्यो ते;
स्वारथ सर्याथी [3]उभेतानुं हित ना रह्याथी
ऐक्य तूटवानो समो समिपज आव्यो छे.

(सर्वे जाय छे.)

इत्यलंकारविक्रयो[4] नाम द्वितीयोऽङ्कः ॥

---

१ मगजमां. २ प्रतिज्ञा. ३ बेउ-**चंद्रगुप्त** अने **चाणक्य**-ने सामान्य. ४ ज्यां **चाणक्य**ना प्रेरेला वणिकवेषी **विश्वावसु** आदि त्रण भाइ **पर्वतेश्वर**ना अंगनां आभूषण **राक्षस**ने वेचातां आपी जता वर्णव्या छे ते.

मुद्राराक्षस नाटक.

अंक ३.

(एक तर्फथी कंचुकी **वैहीनरि** प्रवेश करे छे.)

वैहीनरि (वैराग्य पूर्वक)-अरे राक्षसी तृष्णा !

(कवित.)

जेणे तने रूप आदि विषयना[1] योगे करी
उपजावी आपथकी पोखी भली भातथी,
ते ते नेत्र आदिक समस्त इंद्रियोनी सर्वे
स्वार्थ साधवानी सत्ता घटी गई गातथी[2];
सूत्रतणा तांतणे बंधायलां शां वश तेए
अंगनांज[3] अंग अरे कह्युं ना करे रती;
पगतळे रोळे छे आ मस्तक जरा; हवे हा !
वृथा हाय हाय ओ पिशाचणी ! करे नकी !

(परिक्रमण करी आकाश तर्फ लक्षथी)-अहो **सुगांग** महेलना मनुष्यो ! पवित्र नामना देवश्री **चंद्रगुप्तनी** आज्ञा छे जे "कौमुदीमहोत्सवना[4] ठाठथी सुशोभित करेलुं **पुष्पपुर** जोवानी इच्छाए अमे **सुगांग** महेलमां पधारिये छिये. माटे महेल छेक अगाशी सुधी, अमे जोई प्रसंन थइये एम सुहावी राखवो." शुं कहो छो? "आर्य ! शुं कौमुदीमहोत्सवना प्रतिषेधनी[5] वात महाराजने विदित नथी?" अरे नसीबना फुटेलाओ ! तमारे आ माथुं खोवानी वात शाने करवी जोइये? जुओ,

---

१ रूप, रस, शब्द, स्पर्श, अने गंध, ए पांच इंद्रियग्राह्य वस्तु. २ गात्र, शरीर. ३ शरीरनाज अवयवो, कर्मेंद्रियो. ४ कार्त्तिकी पूर्णिमानो उत्सव; टीकाकार अने संपादक आसो सुद पूनमनो एटले माणेकठारीनो उत्सव समजे छे, पण **विष्णु** भगवाननुं जागवुं ते कार्त्तिकमांज थाय छे. शेते विष्णुः सदाषाढे कार्तिके च विबुध्यते। वळी **जुओ कौमुद शब्द मेदिनीमां.** ५ मना, बंधी, अटकाव.

(कवित.)

सत्वरज[1] पूनमना चंद्रकेरा किरणना
जूथ जेवी चारु चामरच्छटा[3] प्रकाशती
धूपना सुवासथी ने पुष्पमाळथी सुहाता
रम्य रत्नथंभने रो[2] लागी सुविलासथी[4];
वळी, दृढ धारी धारी सिंहासन शुं बिचारी
मूर्छा पामी होय त्यम, भूमि भली भातथी
फुलनी लटरे अने चंदनना थरे शीळे
सुखाळी सुखाळी सद्य कराई रहो नकी !

शुं कह्युं तमे? "आ देवश्रीनी आज्ञा प्रमाणे करिये आर्य!" भाइयो ! उतावळ करो, उतावळ करो, आ देवश्री चंद्रगुप्त तो पधार्या. जुओ

(कवित.)

धुरंधर धीरवीर धरणीधरे वडील
समरथ अंगे कंइ वखत जे धुंसरी
वसमी वसमी महा मोटी मोटी घांटीमांए
कदीए जराए डग्या वगर हती धरी;
तेज राजकाजकेरी भारी धुंसरी आ पोते
ऊगतीज वचमां उपाडी लेवानुं करी,
नव पलोटाये काय क्लेशलेश[5] लहे तोय,
मनस्वीपणे न दुःख धरे दिलमां जरी

(पडदा पाछळ)—आ रस्ते पधारिये महाराज !

(एटले प्रतीहारी साथे राजा चंद्रगुप्त प्रवेश करे छे.)

चंद्रगुप्त (स्वगत)—अहा ! राजधर्म प्रमाणे वर्तनार राजाने राज्य खरेखर भारे विडंबनारूप[6] छे. केमजे

---

१ तरतज, जलदी. २ टोळुं. ३ चंमरनी शोभा-खुबी. ४ रंगभेर संलग्न थई रहो. ५ क्लेशनो अंश, जरा पण क्लेश. ६ क्लेश आपनार.

(कवित.)

लोकपाळपणे जो ते लोकना हितार्थ मथे,
तो तो परमारथमां स्वारथ सधाय ना;
छत्रपति का'वे ने मनोरथ न बर आवे,
नाम तो लजावे, पृथ्वीनाथ कहेवाय ना;
ते छतांए धर्म जाणी स्वारथ कनिष्ठ मानी
मथे प्रजामाट तो ते दासज जणाय हा!
दास बनी दा'डोरात मचे प्रजामाट पछी
सुखनी घडीनो स्वाद तेनाथी चखाय क्यां?

वळी आत्मसंपन्न राजाओथी पण **राजलक्ष्मी** मुश्केलीथी रिझावी रखाय छे. केमजे

(कवित.)

नरम रहे तो मूके वहेतो प्रमाथभये,
उग्रता बतावताशुं अणराग दाखवे;
होय तरवारियो तो त्रासी त्रासी दूर नासे,
बी' बी' रहे तेने तो हशी हशी न लेखवे;
वारुं विद्यावानने ए पेखे नव प्रेमभावे,
मन तो क्यांथीज पछी माने मूर्ख पेखवे;
निर्पट नफट धीट वहेली वारांगनाशी
राखवी रिझावी **राजलक्ष्मी** मुश्केल छे.

आर्य **चाणक्यनी** वळी एवी आज्ञा छे के " तारे मारी. साथे लोकोने देखाडवा लढी पडी माराथी जूदा पडी कंइक वखत स्वतंत्र वर्त्या जवुं. " आतो बूरी ब्रह्महत्याज शिर आवी पडी. बाकी निरंतर आर्यना उपदेशे बुद्धि उज्ज्वळ रहेवी ए सदैवं स्वतंत्रताज छे. केमजे

१ दुनियाना पालणहार तरीके. २ आत्मसंपत्ति जेनामां छे एवा; आत्मसंपत्तिनुं वर्णन पूंठे समजुतीमां आप्युं छे ते जोवुं. ३ बीजाने हाथे परिभव–दुर्दशा. ४ पुष्कळ.

(कवित.)

जाय सारे मारगे जो सीधो सीधो शिष्य पोते
तो तो गुरु तेहने निवारे ना अवस्था;
ए तो छे अंकुशरूप, पडे उंडे मोहकूप
शिष्य ज्यां सुमार्गथी कुमारगे चढी जतां;
माटे सज्जनोए जे सुमार्गमां सदैव चित्त
परोव्युं छे तेतो छे निरंकुशज सर्वथा;
एथी तो लगारेए स्वतंत्रपणुं ना वधारे
जोइये अमारे क्यारे कोइए रीते वृथा

(प्रगट)—आर्य **वैहीनरि**! चालो **सुगांग** महेल भणी.

वैहीनरि—आ रस्ते महाराज! (परिक्रमण करी)—आ **सुगांग** महेल. आस्ते पधारिये महाराज!

चंद्रगुप्त (महेल उपर चढी चारे तर्फ जोई)—अहो शरदृऋतुनी अपूर्व शोभाए करी दिशाओ केवी परम रमणीय भासे छे! खरेज

(हरिगीत.)

[1]जळकच्छवत वादळ धवळनी छे छटा छाजी रही;
वळी छाई सुस्वरशाळी सारसकेरी जोड जहिं तहिं;
त्यम विधविधज आकारमां [2]उडुगण-कुमुद खील्यां सही;
नदीतुल्य [3]नभथी आ दिशा दश दीर्घ निर्मळी रही वही.

वळी

(हरिगीत.)

[4]आडी प्रवृत्ति [5]वेही जतां जळनी जरूर अटकावती,
ने विषम विषसम मद मयूरनो मूळमांथी मिटावती,
[6]सुसमृद्धि साथे शाळने वळी [7]नम्रताय सजावती,
आ शरद दे शुं सर्वने शिक्षा विनयनी भावथी.

---

१ नीतर्या छिदरा पाणीवाळा, रेताळ, उज्ज्वळ धोळा नदीतटना प्रदेश. २ ताराओनां झुमखां रूपी राते खिलनारां कमळ. ३ आकाश. ४ आडी प्रवृत्ति=[1]आडा जवुं ते;–[2]खोटी चाल. ५ वही जता=[1]जोसमां वहेता;–[2]वंठी जता. ६ सुसमृद्धि=[1]शाळना पाकनो फाल;–[2]पैसो. ७ नम्रता=[1]लची जवापणुं;–[2]नम्रपणुं.

अने वळी आम

(हरिणी.)

कलुषित बनी पेखी झाझी प्रिया सुरसिंधु जे
क्षिण थई गई, तेने हावां प्रेसंन करी अने
मनवी जुगते माने, सिंधुपति शुं मिलावी दे
शरद सखी आ दूतीभावे भलोज भजावीने.

(आसपास जोई)—अरे ! केम ! कौमुदीमहोत्सवनां पुष्पपुरमां कहिंए चिन्ह जणातां नथी ! आर्य वैहीनरि ! कौमुदीमहोत्सवनो ढंढेरो नगरमां अमारी आज्ञा प्रमाणे वजडाव्यो' तो ?

वैहीनरी—हा जी ! जरुर.

चंद्रगुप्त—शुं त्यारे प्रजाए अमारी आणनी अवगणना करी ?

वैहीनरी—(कानमां आंगळियो घाली)—हरि हरि !!! पृथ्वीपडमां कोइए अवगणना थई नथी ते आणनी प्रजा बिचारी अवगणना करनार कोण ?

चंद्रगुप्त—त्यारे शा माटे अद्यापि कौमुदीमहोत्सव नगरमां मच्यो नथी जणातो ?

(रोळावृत्त.)

नितंबभारे मंद गति धरती गणिकाए
दक्ष विलासी समेत सुहावे शेरी न कांए ?
क्यम वळी करी हरीफाइ धनाढ्य न ऋद्धि जणावे,
नव त्यम चांदनीमांहि मोज मनगमती उडावे ?

वैहीनरि—हा....ए तो....

चंद्रगुप्त—शुं "एं.तो" ते ?

वैहीनरि—महाराज ! आ....

चंद्रगुप्त—लोचा शा वाळे छे ? स्पष्ट कही दे.

---

१ कलुषित=[१]चोमासाना पाणीथी मेली;–[२]खिन्न, कलहकुपित. २ प्रसंग=[१]निर्मळ;–[२]रोषरहित. ३ मनावी=[१]सजावी, कबूल करावी;–[२]मुकावी. ४ मान=[१]माप मर्यादा, नदीनुं हमेशनुं वहेण;–[२]रुसणुं. ५ थापाना भारने लीधे. ६ दक्षिण, रसिक.

वैहीनरि–कौमुदीमहोत्सवनी मना करी छे.

चंद्रगुप्त (क्रोधपूर्वक)– आह ! कोणे अमारा उपरांत थई मना करी ?

वैहीनरि–महाराज ! वधारे कहेतां मारी जीभ उपडती नथी.

चंद्रगुप्त–शुं आ अत्यंत रमणीय जोवानुं ते आर्य **चाणक्ये** तो अटकाव्युं नहि होय ?

वैहीनरि–महाराज ! कोण बीजो जेने जीव वहालो होय ते महाराजनी आज्ञा उलटावे ?

चंद्रगुप्त (सरोष)–प्रतीहारी ! आसन आसन ?

प्रतीहारी–आ सिंहासन रह्युं महाराज !

चंद्रगुप्त (बेशी रोषमां ने रोषमां)–आर्य **वैहीनरि** ! **चाणक्यने** जोवा इच्छुं छुं.

वैहीनरि–आज्ञा, महाराज ! आ तेडी लाव्यो. (जाय छे.)

(एवे बीजी तर्फ भवनस्थ आसनगत **चाणक्य** कोपपूर्वक विचारग्रस्त स्थितिमां प्रवेश करे छे.)

चाणक्य–अहा ! दुष्ट **राक्षस** मारी सरसाई करवा करेछे !

(कवित.)

“ पूरवे प्रचंड छंछेडायला भुजंग पेठ
विष्णुगुप्ते जेम **पुष्पपुर** तजी नीकळी
जडमूळमांथी नवे **नंद**ने उखेडी नांखी
थाप्यो राजगादीपर **चंद्रगुप्त**ने वळी;
तेम हुं नगर तजी नीकळी आ **मौर्य**ने ए
उथापुंज तोज खरो” एम मनमां क्ररी,
चपटी मारेए माथे भभरावा करीं खांते
मथे महायत्नथी. ए अहाहा हरिहरि !!!

(आकाश तर्फ स्थिर दृष्टिथी)–अहो **राक्षस** ! **राक्षस** ! मूकी दे आ तारो दुराग्रह. जो,

---

१ खोटो आग्रह.

(रोळावृत्त.)

नथी नथी नथी आ **चंद नंद** उद्धत कंई तारो,
कुसचिवकर निज कार्यतंत्र अर्पण करनारो;
नथी नथी नथी **चाणक्य** तुंए; आ आपण बेमां
कट्टी शत्रुताज दीसे ज्यांत्यां समतामां.

(विचार करी)—अथवा आ वातमां मारे झाझो उधरावो न करवो जोइये. केमजे

(कवित.)

मलयकेतुए मारा भेदुओए छे विंटायो,
तेनी साथे सर्व वाते जोतां जे फावेल छे;
भलेरा भणावी जे जे काम भळावेल, ते ते
साधवा **सिद्धार्थका**दि प्राणिधि मचेल छे;
हवे **चंद्रगुप्त** साथे, शत्रुने भमावा, खांते
कपटकलहकेरो खेलुं खासो खेल के—
तेथी प्रतिकूळचारी **राक्षस** भेदाय म्लेच्छ
मलयकेतुथी भेदतंत्रथी काबेलिये.

वैहीनरि (एक तर्फथी प्रवेश करी)—सेवा महाबूरीज छे.

(कवित.)

प्रथम तो पृथ्वीपाळथी, पछी सचिवथी ने
मानीता महीपना मनाय तेमनाथकी,
वळी भूपभवनमां के'वाये जे अंतरना
क्रीडारसकेरा साथी तेमनाथीए नकी—
डरी डरी मरी, मुखे दयामणे दीनपणे,
मन मारी लटी लटी, पेट पूरवुं मथी;
बळी रे आ सेवकनी जिंदगी, विचारी जेने
शाणा सज्जनोए श्वाननी समीज छे कथी!

---

१ सरखापणामां. २ विरुद्धता दाखवतो. ३ भेदना प्रयोगथी. ४ राजा. ५ कुतरुं.

(परिक्रमण करी घर आव्युं जोई)–आ आर्य **चाणक्यनुं** घर. चालो, अंदर जाउं.

(प्रवेश करी नजर करी)–अहो! राजाधिराजना मंत्रीनी समृद्धिए केवी छे!

(प्लवंगम.)

पडियो आ अहिं पा'ण अडैयां आटवा;
शिष्ये संच्या दाभ ढगेढग वाट आ
दोदळी आ वळी भींत; लच्युं छे छाज; हा!
समिधो धरी असुमार सुकावाकाज ज्यां.

आवा निस्पृह पुरुष देवश्री **चंद्रगुप्तने वृषल** कही बोलावे ए घटे छे. केमजे

(कवित.)

कोडे करी कंइ कंइ अणछता गुण आप
भलीभातथकी उपजावी बेश बेश ने
समरथ सत्यवादी पुरुषोए रंक पठे
वाज आवे वखाणी वखाणीने नरेशने;
तृष्णा विना तेनुं बीजुं कांइए कारण नथी,
एज पापिणी प्रपंच रचावे अशेष ए:
बाकी तो करोडपति तृणतुल्य तेने नकी,
जेने कोइनीए नव स्पृहा लवलेश छे.

(जोई भयपूर्वक)–अहो! आ आर्य **चाणक्य** विराजे! लोकथी अधिक वधी

(चोपाया.)

सर्वदेशी निज एक प्रतापे नंद चंद बंनेने
एकज घडिये अस्तोदय दर्शावी, जीत्यो जेणे-
प्रताप एकजदेशी विश्वे दाखवता रविनेए;
जणवे अस्तोदय शीतोष्णने क्रमे सहस्र करे जे

१ बीजानी इच्छा-परवा न राखतो. २ बधो. ३ परवा. ४ सर्वस्थळे प्रसरतो, अखंडित. ५ प्रताप=[1]प्रभुता;–[2]प्रकाश. ६ एक स्थळमां प्रसरतो.

(डोंचणिये पडी **चाणक्य** प्रति)–जय ! जय ! आर्य !

चाणक्य–वैहीनरि ! केम आववुं थयुं ?

वैहीनरि–आर्य ! अभिवंदन करी त्वराथी ऊठता भूपाळनां शिरोरत्नना किरणे करी जेनां चरणकमळ झळहळी रह्यांछे एवा, सवारना पहोरनुं नाम जे महाराज **चंद्रगुप्त**, ते देवनी आर्यने मस्तक नमावी विज्ञापना छे के "जो आर्यने काममां अंतराय थतो न होय तो हुं आर्यने जोवा इच्छुं छुं."

चाणक्य–वृषल अमने जोवा इच्छे छे ! **वैहीनरि** ! अरे अमे कौमुदीमहोत्सव अटकाव्यानी एने खबर तो नथी थई ?

वैहीनरि–आर्य ! थई–थई–छे.

चाणक्य (क्रोधपूर्वक)–आह ! कोणे कह्युं ए ?

वैहीनरि (सभय)–आर्य ! क्षमा-क्षमा करो ! महाराज पोतेज कौमुदीमहोत्सवनो उठाव जोवा महेलनी अगाशिये चढ्या हता, तेथी तेमणे जाण्युं.

चाणक्य–हांहां जाण्युं ! एटले ते तक साधी तमे **वृषलने** वकारी अमारा उपर प्रकोपित[1] कर्यो ! बाकी शुं ?

(**वैहीनरि** भयथी चढ थई अधोमुख उभो रहेछे.)

चाणक्य–अहो ! राजपरिजननो **चाणक्य** उपर केवो द्वेप छे ! वारुं, **वृषल** क्यां छे हवणां ?

वैहीनरि (सभय)–आर्य ! **सुगांग** महेलमां हता ने महाराजे मने आर्यनी सेवामां मोकल्यो हतो.

चाणक्य (ऊठीने)–**सुगांग** भणी चालो त्यारे.

वैहीनरि–पधारिये आर्य ! (परिक्रमण करी महेल आगळ जई पहोचतां)– आ **सुगांग** महेल. आस्तेथी चढिये आर्य !

चाणक्य (चढी **चंद्रगुप्तने** सिंहासनस्थ जोई)–अहा ! **वृषल** सिंहासने विराजे छे ! वाहवाह !

---

१ कोपायमान.

(रोळावृत्त.)

शून्य पडेलुं [1]समृद्ध खपंतां करी नव नंदे,
[2]अध्यासित ते अद्य [3]नृपोत्तम नीत्तम चंदे
लायक प्रभु संयुक्त सरस सिंहासन सोहे;
[4]प्रभाव सुंदर सर्व अहाहा ! अमगुणनोए !!!

(चंद्रगुप्तपासे जई)–जय ! जय ! वृषल !

चंद्रगुप्त (सिंहासनथी ऊठी)–आर्य ! प्रणाम लीजिये आ चंद्रगुप्तना. (पगे पडे छे.)

चाणक्य–(हाथ झाली) वत्स ! ऊठ, ऊठ.

(छप्पय.)

शिलाविषे सुविशाळ खळकळळ खळळळ वे'ती
गंगानां जळबिंदु ऊडे शीत ते [5]शैलेथी,
रंगविरंगी रत्न झगे ज्यां नवे विधिनां
ते दक्षिण [6]नदीनाथतणा [7]उपकंठ सुधीना
भयभीत नृप आवी नमावी शिर शिरपेचनी ज्योते अदा
दीपावो तारा चरणनी अंगुळीनां बेवन सदा !!!

चंद्रगुप्त–आर्यनी [8]कृपाथी ए सौ अनुभवुं छुं. आसने विराजीए आर्य ! (बेउ पोतपोताने आसने बेसे छे.)

चाणक्य–वृषल ! अमने शा माटे बोलाव्या छे ?

चंद्रगुप्त–आर्यना दर्शनना अनुग्रहे कृतार्थ थवा.

चाणक्य (स्मितपूर्वक)–ए विनय समज्या; जवादे ए. [9]अधिकारस्थ पुरुषो राजाए विना-प्रयोजन बोलावाता नथी.

चंद्रगुप्त–आर्य ! त्यारे कौमुदीमहोत्सव जे आपे अटकाव्यो तेमां शो अर्थ छे वारुं ?

चाणक्य (स्मितपूर्वक)–अमने त्यारे ठपको देवा बोलाव्या छे ?

---

१ बहु समृद्धिवाळा. २ बिराजायलुं. ३ श्रेष्ठ नरपति. ४ प्रताप. ५ पर्वत; हिमाचळ अहिं निर्दिष्ट छे. ६ समुद्र. ७ किनारो. ८ महेरबानी, कृपा. ९ मोटो अधिकार धरावनारा.

चंद्रगुप्त–हरि हरि !!! एवुं जीभथी बोलाय केम ? एम नहि, एम नहि; आ विज्ञापना करवा.

चाणक्य–जो एम होय, तो विज्ञापना करवा योग्य जे गुरुजन, तेमने स्वेच्छाए वर्ततां अटकावाय नहि.

चंद्रगुप्त–एमज, सत्य छे; एमां शो संदेह ? परंतु कदी ए आर्यनी विना-प्रयोजन प्रवृत्ति होती नथी, एटले अमारा प्रश्ननो अवकाश रहे छे.

चाणक्य–वृषल ! ठीक समज्यो जणाउं छुं. विना-प्रयोजन **चाणक्य** स्वप्ने पण कांइ करे नहि.

चंद्रगुप्त–माटेज ए सांभळवानी उत्कंठा मने बोलावे छे.

चाणक्य–वृषल ! जो. अर्थशास्त्रकारो[1] राजतंत्र[2] त्रिविध चालतो वर्णवे छे; यातो राजाथीज, यातो प्रधानथीज, अथवा तो राजा प्रधान बंनेथी. हवे तारो राजतंत्र प्रधानथीज चालतो छतां, तारे प्रयोजन शोधी शो अर्थ छे ? केमजे राजकार्य तो अमारे शिर छे तेथी अमेज अमारे जोईशुं ते.

(**चंद्रगुप्त** कोपपूर्वक मुख फेरवे छे. एवे पडदा पाछळ बे वैतालिक नीचेनां बे बे पद अनुक्रमे बोले छे.)

(पद-राग झिंझोटी.)

मंगळ मधुर मूर्ति हरनी[3] हो क्लेश सकळ हरणी[4] रे ॥ ध्रुव० ॥
तांडव नृत्य करे गिरिजावर[5] खुशी न जाय वरणी रे;
पेखो अपूर्व[6] शरद-शोभा शुंज सजो सरसाइ तेहतणीरे....मंगळ० ॥
धरी शिर शुभ्र विभूति शरदना काश कुसुम समी रे;
ऊडी ऊडी उज्ज्वळ[7] रजथी[8] जेणे रहे गगन झगार बनी रे....मंगळ०॥
चंद्रप्रकाश छवाये तनना[9] श्याम गजाजीननी[10] रे,
शरदजलद[11] सम धवल सुहावे शुभ शोभा मनहरणी रे;....मंगळ० ॥

---

१ वर्तणुक. २ राजविद्या विषे लखनार. ३ **शिव**. ४ सर्व क्लेश हरनारी. ५ **पार्वती**ना पति **शिव**. ६ अद्भुत. ७ चळकती. ८ रज=[१]रजोटी;–[२]पराग. ९ शरीर. १० **गजासुर**नुं चर्म. **शिव** ओढे छे ते. ११ शरदऋतुनां वादळां.

मुंडमाळ राजे प्रौढा उरपर उज्ज्वळवर्णी रे;
उमगे जेनी कांति अपूरव शरदचंदनीशी घणी रे....मंगळ० ॥
विलसे हास प्रभुमुख पळपळ खुबी न शकाय भणी रे;
द्युति जेनी दीपे शुभ हंसशी अव उतरे जे अवनीरे....मंगळ० ॥

वळी,

(पद–राग जीलो.)

दृग हरिनी कतरातीं, सुखद हो, दृग हरिनी कतरातीं रे ध्रुव०
फणीनां अनंत कोटि उमीसांथकी सुहाती
शेष-शय्याथी विशाळ अर्ध घाडी उंघमांथी
जागवाथी ऊठवानुं करतां कोरे जणाती
घेरी राती राती रे........................दृग०
घोळाई रहेती अबघडीज ऊघडवाथी,
रैनदीपनो प्रकाश पडये फरी फरी जाती,
आळस मोडी बगासां खातां जळ भरायाथी
विकळ विशेष जणाती रे...............दृग० ॥

अने,

(पद-राग भेरवी.)

बळ अतुळितना निर्लयज जाणे,
को को कोंके अरथसर विधिये प्रगटाव्या तमशाने....बळ० ॥ध्रुव०॥
महात करे जे आप-प्रतापे गजपति मदथी छकयाने;
मांनोन्नति अति उद्भट जेनी जाणे सारी जहाने....बळ०॥
चक्रवर्ती तमशा ते सहे ना लोपाती निज आणे.
सांखी क्यम मृगराज रहे कदि नरवर! जडबुं जतांने?....बळ०

---

१ शोभे, दीपे. २ पृथ्वी. ३ दृष्टि, नेत्र. ४ शेषनी सहस्र फणा उपरना दीवानी पेठे झगझगता मणि. ५ व्याकुळी. ६ स्थान, घर. ७ विधाताए. ८ उन्मत्त अने दुष्टने दंडवा वगेरे काम सारुं. ९ जे मदथी छकेला गजपतिने पोताना प्रतापे महात करे छे. १० स्वाभिमाननो वळ. ११ उत्कट. १२ सिंह. १३ मनष्यमां श्रेष्ठ.

अने वळी,

(पद-राग खमाच.)

प्रभु तो आपशा, न अन्य हो. ध्रुव०
जेनी न लोपे आण कदी पण,
[1]परजन पण नित्य अधीन अधीन ज........प्रभु०
जणवे प्रभुपण नाज जरा पण,
भूषण [2]वसनतणी ठठवठ [3]घनज........प्रभु०

चाणक्य (स्वगत)-पहेलुं तो जाणे विशिष्ट देवता **शिव विष्णुनी** स्तुतिरूपे रम्य शरद ऋतु बेठानुं सूचन करतुं आशीर्वचन छे. पण आ जे पाछळथी कह्युं ते शुं?-ए न समजायुं. (विचार करी)-आंह, जाण्युं, ए तो **राक्षस**नुं चरित्र. अरे दुष्ट **राक्षस**! **कौटिल्य** जागे छे, तने जुए छे ते.

चंद्रगुप्त-आर्य **वैहीनरि**! आ बे वैतालिकने लाख लाख सोनामहोर अपावो.

वैहीनरि-जेवी महाराजनी आज्ञा. (जवा मांडे छे.)

चाणक्य (क्रोधपूर्वक)-रहे रे **वैहीनरि**! नथी जवुं. ऊभो रहे! **वृषल**! शामाटे पैसा आटला बधा आम अयोग्य वेडफी देवा?

चंद्रगुप्त (कोपपूर्वक)-आम आर्य जे ते वाते बांध्योबीड्यो राखो ने कशीए वाते अमारुं धार्युं थाय नहि, त्यारे तो पछी आ राज्य शानुं?-केदखानुंज.

चाणक्य-ए तो एमज-पोताने हाथे पोतानुं न संभाळी जाणे तेनुं न खमाय तो संभाळ तारुं तारे हाथे.

चंद्रगुप्त-संभाळीशुं त्यारे आ आजथीज अमे अमारुं.

चाणक्य-वाह! बहु सारुं. अमारे पण भावतुं थयुं. अमे पण अमारुंज विचारीशुं.

चंद्रगुप्त-ठीक, तो कौमुदीमहोत्सव अटकाव्यानुं प्रयोजन मारे जाणवुं छे.

---

१ शत्रुवर्ग. २ वस्त्र, कपडां. ३ पुष्कळ. ४ चोकस, अमुक.

चाणक्य–**वृषल** ! कौमुदीमहोत्सव करवानुं शुं प्रयोजन, ते मारेए जरा जाणवुं छे.

चंद्रगुप्त–प्रथम तो एज के में आज्ञा करी ते लोपाय नहि.

चाणक्य–**वृषल** ! तेज तारी आज्ञा ऐकदेशे स्वतः लोपाती बताववी एज कौमुदीमहोत्सव अटकाव्यानुं मारुं पण प्रथम प्रयोजन छे; एटले के,

(हरिगीत.)

जळ जेहनां चळ तिमिंगळना चलन वलन ऊछळे,
जेना तटे वळी श्यामळां घट वन तमालतणां झुले,
ते चार सागर पार सुधी शिर सौ चढावे भूप जे–
फुलमाळवत, ते आण मुजमां खंभी तुज विनयज वदे.*

वळी बीजुं प्रयोजन सांभळवुं होय तोये कहुं.

चंद्रगुप्त–बोलो.

चाणक्य–प्रतीहारी ! जा मारा नामथी कायस्थ **अचळने** कहे के पेली **भद्रभट** वगेरेनी यादी मगावी छे.

प्रतीहारी–आर्यनी जेवी आज्ञा. (जई यादी लेई पाछी आवी) आर्य ! आ, ए यादी.

चाणक्य (लेई)-**वृषल** ! आ जो सांभळ.

चंद्रगुप्त–हां, कहो, अवहित छुं.

चाणक्य (वाचतां)–"स्वस्ति श्री **पुष्पपुरथी** नाशी वध्य **मलयकेतु** पासे जई रहेला, पवित्र नामाभिधानना देवश्री **चंद्रगुप्त** ना सहोत्थायी प्रधान पुरुषनी आ यादीः–मोखरे गजाध्यक्ष **भद्रभट**; पछी अश्वाध्यक्ष **पुरुषदत्त**; पछी महाप्रतीहार–**चंद्रभानुनो** भाणेज **डिं**-

---

* जुओ का. नी. सा. १. ६७

सुनिपुणमुपसेव्य सद्गुरुं शुचिरनुवृत्तिपरो विभूतये ।
भवति हि विनयोपबृंहितो नृपतिपदाय शमाय च क्षमः ॥

---

१ एक स्थानमां. २ मगरमच्छ.

गरात; पछी देवश्रीनो स्वजनसंबंधी महाराज **बलगुप्त**; पछी देवश्रीनोज बाळपणनो सेवक **राजसेन**; पछी सेनापति **सिंहबळ**नो नानो भाइ **भागुरायण**; पछी **माळव**राजनो पुत्र **लोहिताक्ष**; अने पछी क्षत्रगणनो मुख्य **विजयवर्मा**."

चंद्रगुप्त–आर्य, एमना अणरागनां कारण सांभळवा इच्छुंछुं.

चाणक्य–वृषल! जो, सांभळ. आमां जे बे गजाध्यक्ष अने अश्वाध्यक्ष **भद्रभट** अने **पुरुपदत्त** कह्या छे, तेओ तो विषय, वारुणी, अने मृगयामां वह्या हता, अने गजदळ अने हयदळ उपर कांइए ध्यान आपता नहि; तेथी तेमने में अधिकारथी खशेडी तेमनी वृत्तिज तेओ खाई बेशी रहे एम कर्युं; तेने लीधे तेओ **मलयकेतु**ने जईने मळ्या अने परपक्षमां पोताना ते ते अधिकारे रह्या. वळी आ जे **डिंगरात** अने **बलगुप्त**, ते तो बहु लोभी हता; एटले तें बांधी आपेली वृत्ति नजरमां नआववाथी, पणे बहु मळे छे एम करी, नाशी **मलयकेतु** पासे जई रह्या. पछी आ जे तारो बाळपणनो सेवक **राजसेन** छे, तेपण तें प्रसंन थई आपेला पुष्कळ हाथी-घोडा ने पैसा पामी, ते वैभव पाछो खुंचावी लेवाना भयथी **मलयकेतु** पासे जई रह्यो. वळी आ जे सेनापति **सिंहबल**नो नानो भाइ **भागुरायण**, तेणे तो ते वखते, **पर्वतराज**नो मित्र होवाथी तेना प्रतिना प्रेमने लीधे, 'अरे तारा बापने **चाणक्ये** मारी नांख्यो' एम कही गुप्त रीते भयनी फडकमां नांखी **मलयकेतुने** नसाडी मूक्यो; पछी राजद्रोही **चंदनदास** आदिने शिक्षा करवा मांडी, एटले एए अपराधनो मार्यो बीहीने **मलयकेतु** पासे जई रह्यो. तेणे पण, 'आणे मारा प्राण बचाव्या' एम उपकार मानी, तेने हजुर अमात्य नियमी पोताने पासे राख्यो. बाकी बे जे **लोहिताक्ष** अने **विजयवर्मा**, तेओ पण बहु अहंकारना वळमां एमना भायातने तारातर्फथी मळतुं मान न देखी खमाये **मलयकेतु** पासे जई रह्या. आ तेमना अणरागनी हकीगत छे.

---

१ सगांसंबंधीमांनो एक. २ क्षत्रिय वर्ग. ३ लंपटपणुं. ४ दारू, मद्यपान.

चंद्रगुप्त–आ प्रमाणे ज्यारे तेओना अणरागनां कारणो आर्य जाणता हता, त्यारे शा माटे आर्ये एकदमज कांइ उपाय न लीधा?

चाणक्य–न बन्युं.

चंद्रगुप्त–'न बन्युं' ते ते अणआवडथी के कांइ कारणथी?

चाणक्य–कारणथीज. अणआवडनी वात केवी?

चंद्रगुप्त–त्यारे ते कारण हवे अमारे जाणवां जोइये.

चाणक्य–जो सांभळ, अने समजी ले.

चंद्रगुप्त–वेउए करुं छुं, कहो.

चाणक्य–वृषल! बेदील पुरुष प्रति वर्त्तवाना बे रस्ता छे:–अनुग्रह[1] अने निग्रह[2]. हवे अधिकारथी दूर करेला **भद्रभट** तथा **पुरुषदत्त** प्रति अनुग्रहनो रस्तो एज हतो के तेमने पाछो पोतानो अधिकार सोंपवो; परंतु एवा कुछंदे लागेला अने प्रमादी[3] पुरुषोने पाछो अधिकार सोंप्यो होत, तो गजदळ अने हयदळ बंने कोडीनां थई रहत—जेना उपर तो राज्यनो बधोए आधार. **डिंगरात** अने **बलगुप्त**ने तो लोभनो थोभ नहतो, एटले सारुं राज्य आपी-देतांए जेमनुं मन न माने तेमनो अनुग्रह पछी क्यां रह्यो? **राजसेन** अने **भागुरायण**ने आपेलुंज खुंचावी लेवानी बीक हती त्यां पछी अनुग्रहनो अवकाश केवो? वळी जे **लोहिताक्ष** अने **विजयवर्मा** कह्या ते तो पोताना हुंपदमां ने हुंपदमां तेमना भायातनेज देखी खमता न हता एटले उपाय नहि, पछी अनुग्रह शी रीते बनी आवे? हवे निग्रहनो जे बीजो पक्ष कह्यो, तेनो पण अवसर नहतो. *केमजे **नंद**राज्य हवणांज थोडा वखतथी हाथ आव्युं छे ने आपणे तेटलामां सहोत्थायी प्रधान पुरुषोने उग्र दंडथी पीडवा जइये तो प्रकृतिमंडळ जे हजु **नंद**कुळविषे

* जुओ का. नी. सा. ८. ६९.

यस्मिन् मण्डलसंक्षोभः कृते भवति कर्मणि।
न तत् कुर्यात् तु मेधावी प्रकृतीरनुरञ्जयेत् ॥

१ कृपा भाव, महेरबानी. २ शिक्षा करवी ते, क्रूरदृष्टि. ३ पोताना काममां गाफेल, बेदरकार.

अनुरक्त छे तेनो आपणा उपर अविश्वास थायज. हवे आ आपणां माणस पक्षमां लेई, पिताना वधथी ऊकळी रहेलो, **राक्षसना** वचने दोरातो **पर्वतराजनो** पुत्र **मलयकेतु**, मोटा म्लेच्छसैन्यनी सहायताथी आपणा सामो जंग मचावा आवे छे. माटे "आ कांइ उत्सवनो वखत नथी, पण व्यायामनो[1] छे; किल्लो समरावी सज थई रहेवु जोइये; कौमुदीमहोत्सवनुं शुं प्रयोजन छे?" एम करी में तेनी मना करी छे.

चंद्रगुप्त–आर्य! आविषे बहु पूछवानुं छे.

चाणक्य–**वृषल**! पूछ बेलाशक. मारे पण बहु कहेवानुं छे.

चंद्रगुप्त–आ सर्व अनर्थनुं मूळ जे **मलयकेतु** तेनेज मुद्दे केम पकड्यो नहि? शा माटे एम जवा दीधो?

चाणक्य–**वृषल**! न जवा देतां कांतो केद करवो पडत, अथवा तो तेने कबूलेलुं अर्धुं राज्य आपवुं पडत. आ सिवाय त्रीजो रस्तो नहतो. केद कर्यो होत, तो **पर्वतक** आपणेज मार्यो ठरत, ने ए आपणा स्वतः पुरावाथी आपणे शिर कृतघ्नतानुं कलंक सजड आवी चोटत. कबूलेलुं अर्धुं राज्य आप्युं होत, तो पछी **पर्वतक** मारी खालीज कृतघ्नतानुं पाप वहोरी लीधुं थात. आथी करीने **मलयकेतुने** जवा दीधो.

चंद्रगुप्त–वारुं, ए तो एम, परंतु **राक्षसज** आ नगरमां छतां आर्ये तेने कांइ कर्युं नाहि ने जवा दीधो तेनुं केम?

चाणक्य–**राक्षस** तो तेनी स्थिर स्वामिभक्तिथी बहुकाळना सहवासथी **नंदने** झंखती गुणज्ञ प्रजानो परम विश्वासु तेम जाते पण बुद्धिशाळी अने बहादुर रह्यो; ते वळी सहायसंपति[2] साथे कोश समेत अहिं ने अहिं नगरना भडमां रह्यो तो महान् अंतःकोप उपजावशे, अने बहार जवा देतां तो करीकरीने बाह्यकोप उपजावशे तोये कोइए युक्तिबळे हाथमां आवशे, एम समजी एने नगरमांथी जतो कर्यो.

चंद्रगुप्त–शा माटे त्यारे आर्ये एने बळे पकड्यो नाहि?

---

१ कमर कसवी ते. २ मित्रवर्गनी कुम्मक रूपी अनुकूळता.

चाणक्य–**राक्षस** छे ए–न होय बीजो! बळे पकडतामां तो ए तमारा लश्करमांथी कंइकनो घाण काढे के पोतानो पिंड पाडे! बेउ रीते ए अनर्थज. जो

(हरिगीत.)

सपडावतां कदी सबळ ए निज अंत आणे सर्वथा,
नुकशानी निश्चय तोय पण नररत्न[1] ए करथी जतां;
अतुळित बळे करी अन्यथा तुज सुभट दळो वाळेज ए,
खोटुंज तोये; तेथी वनगजवत् पलटवो ए कळे.

चंद्रगुप्त–अमे आर्यने वचनचातुरीमां पहोची शकता नथी. बाकी अमात्य **राक्षस**ज बधी रीते जोतां अधिक स्तुतिपात्र छे;–

चाणक्य (क्रोधपूर्वक) ने–ने–'तमे नहि' एम? कहे रे एणे एवुं शुं कर्युं छे?

चंद्रगुप्त–सांभळोः–जे समर्थ महात्मा

(कुंडळियो.)

गरदन पगे पलोटतो आपणी आ पुरमांहि
मन मान्युं त्यां तक रह्यो, जीत्युं नगर छतांय;
जीत्युं नगर छतांय आण वर्तावी ज्यारे
पडो पुरे वजडावा, भेळ[2] पाडी तव भारे;
राजभक्त परथीय हर्यो भरुंसो डगवी मन
नीतिबळे निज अकळ, पलोटी पगथी गरदन.

चाणक्य (खडखड हसी) अहहाहा! **राक्षसे** आज कर्युं के? **वृषल** में तो जाण्युं के अमे ज्यम **नंद**ने उखेडी नांखी तने राजाधिराज बनाव्यो, त्यम तेणे तने ए उथलावी पाडी **मलयकेतु**ने सिंहासने बेसाड्यो.

चंद्रगुप्त–ए तो बीजाए कर्युं. एमां आर्यने शुं?

चाणक्य–अरेरे अवगुणी! मत्सरी!

---

१ रत्न जेवो पुरुष. २ भंगाण.

(कवित.)

[1]कुंचित [2]करांगुळीना केडे रोमरोम रोषे
आवेशे अपार [3]शिखाभार पींखी वाळतां,
नंदना [4]अमंद [5]खंडखंडज निकंदननी
प्रतिज्ञा प्रचंड [6]खंडी भरी [7]भेळ [8]भाळतां,
भूपति अनंतकोटि–छतमां छकेल अति
एक पछी एक, पठे वध्य पशुबाळना,
कोणेज बीजाए, कहे, संहार्या ए नंद नवे
राक्षसतणाज ए निहाळतां निहाळतां ?

वळी,

थंभावी प्रचंड पंख [8]अभ्रमां भम्या करंत
गीधकेरा गाढ वृंदे दिशाचक्र आ अनंत
धूमकोटकेरा अंधकारे घनघोर जाणे
छवायुंज होय तेम [9]नष्टसूर्य दर्शावंत,
स्मशाननिवासी सर्व [10]सत्त्ववर्गकेरे उर
नंदनी उजाणीना आनंदनी हेली रेलंत,
[11]मज्जाना प्रवाहथी पोखेल प्रजळेल वन्हि
चिताना हजुए जोने जोने दीसे आ धिखंत !

चंद्रगुप्त–ए तो बीजाए कर्युं.

चाणक्य–आह ! बीजाए कोणे ?

चंद्रगुप्त–नंदकुळना उलटा नसीबे.

चाणक्य–अज्ञान लोक 'नसीब नसीब' बके छे.

चंद्रगुप्त–विद्वान्, लोके थोडाज बडाई हांके छे.

चाणक्य– (कोपपूर्वक) अरे **वृषल** ! शुं मने तुं सेवकनी पेठे दबडाववानुं करे छे ? अहा !

---

१ वांकी वाळेली. २ हाथनी आंगळियो. ३ माथाना वाळनी जटा. ४ सत्वर. ५ कडकेकडका; तुकडे तुकडा. ६ माथे लेई, कबूली. ७ लोकोनी ठठ, मेदिनी. ८ आकाश. ९ सूर्य नाश पामी–भुंसाइ गयो होय एवुं (–दिशाचक्र दर्शावता चिताना अग्नि.) १० प्राणीनो समुदाय. ११ चरबी.

(विषम प्लवंगम)

पुनः शिखा बांधेली जाय कर पींखवा !

(पृथ्वीउपर पग अफाळी)

पुनः प्रतिज्ञा माट चळवळे चरण आ !
पुनः **नंद** भखवार्थी झाळ जंपेल आ
काळे वेर्यो तुंय करे भभुकाववा !

चंद्रगुप्त (गभराटथी स्वगत) अरे शुं ? आर्य साचेज कोप्या ? अहा !

(हरिगीत.)

फरकंत पांपणथी गरंतां अश्रुए आवेशना
डो'ळाई लोचन लालधूम बनेल अग्नि झरे शुं आ ?
ने तरवरी तरवरी तरसे तरंगाई शके भवां
धूमाई चक्राकार गोटेगोटे धूम वमे शुं आ !
वळी भूमि पण भयकंपथी धूजंती अंगे अंग आ
धरी धीर उर क्यमे करी पादप्रहार सहंत, हा !
अति विकट तांडव नृत्य करता मस्त बनी रस रौद्रमां
पशुपतितणुं रूप उग्र संभारे शके अव चित्तमां !

चाणक्य–(कृत्रिम क्रोध शमावी)– **वृषल** ! **वृषल** ! खाली टकटकाट शाने ? जो तारे मन अमाराथी **राक्षस** अधिक होय, तो आ **शस्त्र** तेनेज आप. (एम कही शस्त्र फेंकी दई ऊठतां आकाश तर्फ स्थिर लक्षथी स्वगत)–**राक्षस** ! **राक्षस** ! **कौटिल्य**नी बुद्धिने आंटवा आदरी आ तें तारुं सउ बुद्धिचातुर्य प्रकाश्युं छे. पण

(वसंततिलक.)

चाणक्यनाथी अणराग करावी स्हेजे
जीती जउं **वृषल**ने" लही, ए मिषे जे
कीधो प्रपंच कलहार्थ, अहा ! अलेषे
ते ते, जतेज, तुजने शठ ! थाप देशे !

(जाय छे.)

---

१ क्रोधथी विकळ थई. २ गोळ गूछळां जेवो. ३ ओके छे, काढेछे. ४ पगनो धबकारो. ५ **शिव**. ६ छेवटे, जते सरवाळे, आखरे.

चंद्रगुप्त—आर्य **वैहीनरि**! आजथी हवे **चाणक्यने** मूकी **चंद्रगुप्त** खुद राज्य चलावशे, एवुं प्रजाने जाहेर करवुं.

वैहीनरि (स्वगत)—अहो! शुं "आर्य **चाणक्य**" मटी कोरोमोरा "**चाणक्य**" ज? अरे! त्यारे अधिकार हतो ते छिनावी लीधो! अथवा आमां महाराजने शाने दोष देवो? ए तो

(उपगीति.)

आडो जाय महीप तो मंत्रीकेरोज दोष सही
मा'वततणो प्रमादज गणाय, गज दुष्ट होय जहिं.*

चंद्रगुप्त—आर्य! मनमां शा संकल्पविकल्प करो छो?

वैहीनरि—कांइ नहि, महाराज! धन्य दिज आज!—महाराजे महाराजपणुं धारण कर्युं.

चंद्रगुप्त (स्वगत)—आर्य **चाणक्यने** पण एटलुंज जोइये छे; आमज सउ समजो! ने आर्यनी इच्छा सफळ थाओ! (प्रकट)—**प्रतीहारी**! आ खाली कटाकटीथी मारुं माथुं पाकी गयुं छे, माटे शयनगृह भणी चाल.

प्रतीहारी—पधारिये महाराज आ रस्ते.

चंद्रगुप्त (स्वगत)—

(रोळावृत्त.)

अवगणना करतांय मान्य गुरुनाज वचनथी,
"आपे महीं जो माग, समई जउं," थाये मनथी;
तो गुरुजननो आप अनादर नेट करे जे
झरई शरमे उर अरे! ना केम मरे ते!

(सर्वे जाय छे.)

इति कपटकलहो नाम तृतीयोऽङ्कः॥

---

* जुओ का. नी. सा. ४. ४९.

मदोद्धतस्य नृपतेः संकीर्णस्येव दन्तिनः।
गच्छन्त्यन्याय्यवृत्तस्य नेतारः खलु वाच्यताम्॥

---

१ गाफेली. २ ज्यां **चाणक्य चंद्रगुप्तनो** कृत्रिम कलह वर्णव्यो छे ते.

मुद्राराक्षस नाटक.

अंक ४.

(एक तर्फथी वटेमार्गुने वेषे **करभक** प्रवेश करे छे.)

करभक–अहाहा !

(गीति.)

सो सो जोजनकेरो खंतथकी पंथ को करे अहिं, हा !
धर्णीनी[1] वसमीं अवाटे अथडावतां[2] आण होय जो नहि आ !!!

चाल राम, आ अमात्य **राक्षसनुं** घर. (थाक्योपाक्यो परिक्रमण करी पासे आवतां) अरे ! कोण छे द्वारे ? स्वामिश्री अमात्य **राक्षसने** खबर करो के आ **करभक** एके श्वासे **पुष्पपुरथी** आव्यो छे.

द्वारपाळ (प्रवेश करी)–भाइ, धीमे बोल. राजकाजना रटणमां ने रटणमां उजागरे अमात्यनुं माथुं चढ्युं छे, तेथी अद्यापि पोते शयन छोडी ऊठ्या नथी. माटे घडीक रहे. लाग जोई तारी खबर अंदर करुं छुं.

करभक–वारुं भाइ ! तेम करजे.

(एवे बीजो तर्फ शयनगृहमां आसनस्थ **राक्षस** **शकटदास** साथे राजकार्यनी चिंतामां बेठेलो नजरे पडे छे.)

राक्षस. (स्वगत)–

(कवित.)

"विधिना विचित्र रंगढंग छे" एवुं विमांसी
आगमचथीज नव • एने भरुंसे रही,
सहज कुटिल अति नीति जे **कौटिल्य** केरी
ते ए वारवार बहु पेरज पौमी जई,

---

१ आडे के खराब–वसमा रस्ते. २ कळी लेई.

वळी मुज काम पार पाडवाने सर्व वाते
खांते भलीभाते घाटे घाट मेळवी दई;
"परिणाम आवशे शो?" ए विचारमांज मुज
जाय सारी रात अणमींच्यां लोचने सही.

अने,

उपक्षेप[1] पे'लो करी कार्यकेरो[2] स्वल्पमात्र
पछी पोते पेरे पेरे तेहने बढावतो,
गर्भित[3] रहेल जे जे बीज[4] ते तेकेरुं फळ
गहन घणेरुं गूढ रीते उपजावतो,
करतो विमर्ष[5] कोडे, बुद्धि ये आखरे खंते
बो'ळा कार्यकेरो उपसंहारज[6] लावतो,
नाटक बनावनार के करंत कारभार
अम जेवो जाणे आ आयास[7] ख्याले ना'वतो.

तो-हवे-अहा! ए दुष्ट **चाणक्यनो**

द्वारपाळ (प्रवेश करी अधवच)-विजय होय

राक्षस (अधूरुं वाक्य पूरुं करतां)-पराभव थाय!

द्वारपाळ ('विजय होय' ए वाक्य पूरुं करतां)-अमात्यनो!

राक्षस (डाबी आंख फरकतां स्वगत)-अहा! "ए दुष्ट **चाणक्यनो** विजय होय"—"पराभव थाय अमात्यनो"— एम वाग्देवीज[8] पोते

---

१ उपक्षेप=[1] कार्यनी आरंभ प्रकृति चितरतो मुखसंधिनुं एक मुख्य अंग, जेणे करीने कार्यनुं बीज प्रथम रोपायछे;-[2] शरुवात, मंडाण. २ कार्य=[1] नाटकमां वर्णवानो फळसिद्धि;-[2] जे कांइ करवा चहाता हइये ते, इप्सित सिद्धि. ३ गर्भित=[1]. प्राप्त्याशा (=फळ प्राप्त थवानी आशा) प्रकृति चितरतो गर्भसंधिमां दृष्टनष्ट रहेलां ते ते कार्यनां बीज;-[2] गुप्त, गुढ. ४ बीज=[1] नाटकमां वर्णववाना फळना बीजभूत अंश;-[2] राजकार्यमां इप्सित फळना बीजभूत अंश. ५ विमर्श=[1] नियताप्ति (=हवे फळ नक्की फळशे एवी स्थिति) प्रकृति चितरती विमर्श संधि;-विचार, विमांसवुं ते. ६ उपसंहार=[1] फलागम (=फळनी सिद्धि) प्रकृति चितरती उपसंहार के निर्वहण संधि;-[2] छेडो, कार्य संपेटवुं ते. ७ महेनत. ८ वाणीनी अधिष्ठात्री देवी.

जणावे छे ! ने ते वात आ डाबी आंख फरकी दृढ करे छे !!! तथापि उद्यम तो मूकी नज देवो. (प्रकट)–भाइ, तारे शुं कहेवुं छे ?

द्वारपाळ–अमात्य ! आ कोइ **करभक** द्वारे ऊभो छे.

राक्षस–सत्वर अंदर लाव एने.

द्वारपाळ–जी, सारुं. (जई **करभक** प्रति)–भाइ ! जा, आ अमात्य रह्या. (**करभकने** मूकीने जाय छे.)

करभक (पासे जई)–अमात्यनो विजय हो !

राक्षस–भाइ ! बेश.

करभक–जेवी अमात्यनी आज्ञा. (भोंय बेसे छे.)

राक्षस (स्वगत)–अरे ! शा कामे आने मोकल्यो हतो ते हजार कामना गडगच्चामां याद नथी; जोइये. (विचारमां पडे छे.)

(एवे छडीदार नेकी पोकारतो आवे छे.)

छडीदार–बाजु !–बाजु !–भाइयो !–आ आव्या–बाजु थाओ* ! खबर नथी शुं ?–जे

(उपगीति.)

निकट भेट तो क्यां पण, दूरथीए दोहली भाखी
अल्पभाग्य जनने आ मंगळमय देवनी[1] झांखी.

(आकाश तर्फ लक्षथी)–शुं कह्युं भाइयो ? "केम 'बाजु बाजु' करे छे?" भाइयो ! अमात्य **राक्षसने** जरा करार नथी, तेथी कुमारश्री **मलयकेतु** तेमने आ जोवा पधारे छे; तेनी आ नकी पोकारी. (जाय छे.)

(पछी **भागुरायण** तथा कंचुकी **जाजलि** साथे छे एवो **मलयकेतु** प्रवेश करे छे.)

मलयकेतु (निसासो मूकी स्वगत)–आजकाल करतां पितुःश्रीने मुए दस मास थवा आव्या, तोये अरेरे–जळनी अंजळि सरखीए अपाई

---

* जुओ नीचेनो श्लोक

निर्गमे च प्रवेशे च राजमार्गे समन्ततः ।
प्रोत्सारितजनं गच्छेत् सम्यगाविष्कृतोन्नतिः ॥

---

१ देव=[1] राजा;–[2] देव.

नथी–ने मरदनुं नाम मिथ्या भारे मारिये छिये. पहेलां में पण कर्युं हतुं के–

(कवित.)

छाती कूटी कूटी तूटे फूटे रत्नचूडलियो,
छेडो छट छूटी पडे साडीकेरो शिरथी;
धूळे वाळ तो रोळाय मुखे हाय! 'हाय हाय'
करेळी कराळी मूके दुःखे चित्त चीरती;
आवी जेवी जेवी मुजकेरी मावडली हाल,
आवी छे बेहाली मांहि बूरी दिलगीरीनी;
बेहाली बनावी तेवी तेवीज रिपुस्त्रियोनी,
अंजळि पिताने परलोके दे'श नीरनी.

टुंकामां,

(रोळावृत्त.)

शूर धुरंधर धीर थईने सद्यज यातो
पळवुं रणमुख पंथ पिताकेरे; अथवातो
आंसुडांना ओघ नयनथी मावडलीना
हरी वहाववा हाल लोचने शत्रुस्त्रीना.

(प्रकट)–आर्य **जाजलि** ! अमारा नामथी अनुयायी राजाओने कहो जे "अमारी मरजी छे के अणचिंत्या एकलाज अमात्य **राक्षसने** जोवा जवुं, जेथी एमने सारुं लागशे. माटे अमारी जोडे आववानी जरूर नथी."

जाजलि–जी, सारुं (परिक्रमण करी आकाश तर्फ लक्षथी)–अहो राजाओ ! कुमारनी आज्ञा छे जे 'कोइने अमारी जोडे आववानी जरुर नथी' (जोई सहर्ष)–कुमारनी आज्ञा सांभळतांज सर्वे राजाओ पाछा वळ्या. आहा ! जुओ जुओ कुमार !

(स्रग्धरा.)

रोकी राख्या तुरंगो गगन शुं खरिये[1] खंडता आम आम;
उंची ने उंचो डोकी रही सघळी वळी शिघ्रे[2] खेंच्ये लगाम

---

१ कडका करता. २ जलदी, एकदम.

वाळ्या मैत्तंगजो ओ गति धीरी करी, आ घंटशब्दे विरामे;
मर्यादा आ तमारी महीपति जलधि पेठ लोपे न नामे.

मलयकेतु–आर्य **जाजलि** ! तमारे पण परिजन साथे पाछा वळवुं. **भागुरायण**ज एक मारी साथे आवे.

जाजलि–जी, सारुं. (परिजन साथे जाय छे.)

मलयकेतु–मित्र **भागुरायण** ! शत्रुपक्ष छोडी आपणां पक्षमां आवता **भद्रभट** आदिके एम अर्ज करी जे "**चंद्रगुप्त** दुष्ट अमात्यनोज दोरायो दोरावा लाग्याथी अमारुं मन ऊठतां करी, कुमारश्रीनी ऊजळी कीर्ति सांभळी आश्रय करवा योग्य स्थान समजी, सेनापति **शिखरसेन**द्वारा अमे कुमारश्रीना छायाचक्रमां आवी रह्या छियेः–अमात्य **राक्षस**द्वारा न गणशो." आम कहेवानुं शुं मर्म हशे ए घणुंक विचारुं छुं पण लक्ष्यमां नथी आवतुं.

भागुरायण–कुमार ! ए लहेवुं सहज छे. पुरुष *आत्मगुणसंपन्न विजयरसिक नरेश्वर ने तेना स्नेही अने हितु पुरुष द्वारा अवलंबे छे; अने ए योग्यज छे.

मलयकेतु–पण मित्र ! अमात्य **राक्षस** अमारे स्नेहीमां स्नेही अने हितुमां हितु पुरुष छे.

भागुरायण–ए खरुं, परंतु "अमात्य **राक्षस** ने वेर **चाणक्य** साथे छे; **चंद्रगुप्त** साथे नथी. तेथी कदाच एनो विजयमद न सांखी **चाणक्य**ने **चंद्रगुप्त** अधिकारथी दूर करे तो पछी अमात्य **राक्षसे** कदापिने 'आ नंदकुळनोज छे' एम करी पोताना **नंदकुळ** प्रतिना गाढ प्रेमनेलीधे,

* जुओ का. नी. सा. १५. ३१.

उद्योगमेधाधृतिसत्यसत्त्वत्यागानुरागस्थितिगौरवाणि ।
जितेन्द्रियत्वं प्रसहिष्णुता ह्रीः प्रागल्भ्यमित्यात्मगुणान् वदन्ति ॥

१ हाथी. २ अटके छे, बंध पडे छे. ३ हितमां होनार आदमी, शुभचिंतक. ४ आश्रय ले, आश्रये आवे.

मित्रजनना सुखनी खातर, **चंद्रगुप्तथी** मेळ करवानुं करे; नें **चंद्रगुप्त** पण 'वंशपरंपरागत प्रधान छे' धारी मेळ करे; त्यारे पछी अमात्य **राक्षस** अळगा पडतानी साथे अमारा उपरथी कुमारश्रीनी पतीज जाय." एम कांइक एमना बोलवानो मतलब हशे.

मलयकेतु–ठीक ठीक. चालो त्यारे अमात्यना घर भणी.

भागुरायण–आम पधारिये कुमार! (बेउ परिक्रमण करे छे.)

भागुरायण (घर पासे आवी पहोचतां)–आ अमात्यजीनुं घर. कुमारश्री पधारिये.

मलयकेतु–हा, आविये (एवे सामे **राक्षस शकटदास** ने **करभक** तेमनी दृष्टिये पडे छे.)

राक्षस (स्वगत)–अहा, सांभर्युं. (प्रगट)–भाइ तुं **कुसुमपुरे स्तनकलशने** मळ्यो हतो?

करभक–हाजी, एमां ते फेर पडे?

मलयकेतु (सांभळी)–**भागुरायण! कुसुमपुरनो** प्रसंग चाले छे. माटे रहो. आपणे छेटे रहीने छानांमाना सांभळिये. केमजे मंत्री तो

(गीति.)

[1]सत्वभंगना भयथी नृपति समिप चोरवी कंइक राखे,
स्वजन समिप मन मूकी [2]स्वैरालापे वळी कंइक भाखे.*

भागुरायण–जेवी कुमारनी आज्ञा.

राक्षस–भाइ, त्यारे पेलुं काम पार ऊतर्युं के?

करभक–अमात्यनी कृपाए पार ऊतर्युं छे.

मलयकेतु–मित्र **भागुरायण**! ए शुं हशे ए?

भागुरायण–कुमार! सचिववृत्तांत बहु गूढ होय छे. आटलामांजे कांइ अटकळ बंधाय नहि. माटे ध्यान राखीने जरा सांभळिये.

---

* जुओ का. नी. सा. ५. ३१ पूर्वार्ध.

गुह्यं कर्म च वित्तं च न भर्तुः संप्रकाशयेत् ।

---

१ आरंभेलुं पार मूकवानो उद्योग भंग थवो ते. २ स्वच्छंद वातचित.

राक्षस–भाइ, केम बन्युं ते सविस्तर संभळाव तो.

करभक–सांभळिये अमात्य! अमात्ये मने आज्ञा करी हती के "**करभक**! जा **कुसुमपुर**, ने वैतालिक **स्तनकलशने** कहे जे अमात्ये कहाव्युं छे के दुष्ट **चाणक्य** जे जे वातें आडो आवी **चंद्रगुप्तनी** आज्ञानो भंग करे ते ते वातें चढावो करे एवी एवी कविताथी **चंद्रगुप्तने** खुब प्रमोदवो"

राक्षस–हां, पछी पछी?

करभक–ते उपरथी हुं **पुष्पपुर** गयो, ने अमात्यनो संदेशो **स्तनकलशने** में कह्यो. एवामां **नंद** कुळना नाशनी दुःखद वात विसारे पाडी पुरजनने रंजन करवा राजाए कौमुदीमहोत्सवनो पडो वजडाव्यो. हवे चिरकाळने अंतरे मनमानी परिचित प्रियतमाना समागमनी पेठे ते महोत्सवनी वार्ता नगरवासी समग्रने अत्यंत रुचिकर थई पडी.

राक्षस (आंसुभरी आंखे)–अरे अरे! देव **नंद**! अफसोस! अफसोस!

(सोरठो.)

छतांय [1]कुमुदानंद चंद, तुं विण नृपचंद हे!
[2]जगदानंदन **नंद**! हाय कशी ए कौमुदी!!!

करभक–परंतु दुष्ट **चाणक्य** आडो पड्यो, ने तेणे राजाना उपरवट थई नगरवासी जननां नयन ठारता ते महोत्सवनी एकदम मना करी. एवे प्रसंगे **स्तनकलशे** **चंद्रगुप्तने** चढाववा कविता गाई.

राक्षस–केवी कविता वारुं?

करभक–सांभळिये अमात्य.

(पद–राग भैरवी.)

बळ अतुळितना भिलयज जाणे,
को को कोक अरथसर विधिये प्रगटाव्या तमशाने....बळ०॥ध्रुव०॥

---

१ कुमुद–पोयणीने आनंद उपजावनार–खिलावनार. २ जगतने आनंद आपनार (**नंद**).

महात करे जे आप-प्रतापे गजपति मदथी छक्याने,
मानोन्नति अति उद्भट जेनी जाणे सारी जहांने........बळ०॥
चक्रवर्ती तमशा ते सहे ना लोपाती निज आणे;
सांखी क्यम मृगराज रहे कदी नरवर !-जडबुं जतांने....बळ०॥

अने वळी,

(पद–राग खमाच.)

प्रभु तो आपशा, न अन्य हो. ॥ ध्रुव० ॥
जेनी न लोपे आण कदी पण
परजन पण नित्य अधीन अधीनज....प्रभु० ॥
जणवे प्रभुपण नाज जरा पण
भूषण वसनतणी ठठवठ घनज....प्रभु० ॥

राक्षस–साबाश ! **स्तनकलश** ! साबाश ! आ अवसरे रोपेलुं भेदनुं बीज जरूर फळशे केमजे

(आर्या.)

रंचे रंग विषे पण भंग न साधारणे पुरुष सांखे;
तो पछी नरपति नृपपाति पृथ्वीपति ते सहे कां ते ?

मलयकेतु–बराबर कह्युं.

राक्षस–पछी पछी ?

करभक–ए रीते पोतानी आण उलटाव्याथी नाखुश थयेला **चंद्रगुप्त** प्रसंगवशात् अमात्यना गुणनी तारीफ करी दुष्ट **चाणक्यने** अधिकारथी दूर कर्यो.

मलयकेतु–मित्र **भागुरायण** ! अमात्यना गुणनी तारीफ कर्या उपरथी **चंद्रगुप्तना** मननुं वलण **राक्षस** तर्फ दीसी आवे छे.

भागुरायण–हा, गुणनी तारीफथी कांइक दीसे छे खरुं; परंतु ए ब्रह्मबंधुने अधिकारथी दूर कर्याथी जेटले दरज्जे ए स्पष्ट दीसी आवे छे तेटले दरज्जे नहि.

राक्षस–कौमुदीमहोत्सव बंध कर्यो एज के कांइ विशेष **चाणक्य**-उपर **चंद्रगुप्तनी** इतराजी विषे कारण छे ?

१०

मलयकेतु–मित्र **भागुरायण** ! **चंद्रगुप्त**नी इतराजी विषे विशेष कारण शोधवानी शी मतलब?

भागुरायण–कुमार बुद्धिमान **चाणक्य चंद्रगुप्त**ने निष्कारण दूभवेए नहि, तेम कृतज्ञ **चंद्रगुप्त** आटलामाटे गौरव लोपेए नहि; ए तो मळी मळी पुष्कळ कारणथी ज्यारे तेओनो संबंध तूटे त्यारे ते खरेखरो तूट्यो कहेवाय.

करभक–छे, विशेष पण कारण छे. "एणे **मलयकेतु** तथा अमात्यने नीकळी आवतां खाळ्या नहि ने गाफेली बतावी".

राक्षस–**शकटदास** ! त्यारे तो **चंद्रगुप्त** मारा हाथमां आव्यो समजवो. हवे **चंदनदास**ना बंध छूटशे, अने तुं पण कुटुंबकबीला भेगो थईश.

मलयकेतु–मित्र **भागुरायण** ! "**चंद्रगुप्त** हाथमां आव्यो समजवो" एनो शो अर्थ वारुं?

भागुरायण–**चाणक्य** तो ज्यां त्यां दूर थयो; हवे **चंद्रगुप्त** एकलो रह्यो तेने उथापवानी अमात्यने मतलब नथी; एमज एनो अर्थ दीसे छे.

राक्षस–भाइ ! अधिकारथी दूर थयेलो ए ब्रह्मबंधु क्यां छे हाल?

करभक–त्यांज–**पुष्पपुर**मां छे.

राक्षस (आवेग पूर्वक)–अरे ! त्यांज छे ! त्यारे ए तपोवन न गयो शुं? प्रतिज्ञाए फरी न लीधी शुं?

करभक–अमात्य ! "तपोवन जाय छे–जाय छे" एम संभळाय छे.

राक्षस–नहि नहि नहि, **शकटदास** ! ए घटे नहि. जो

(रोळावृत्त.)

अग्रासनथी सहज उठाड्यानुं अपमाने
नरेन्द्र **नंद** करेय न सांख्युं जोतां जेणे,
केमज वारुं तेह मनस्वी नर निज हाथे
स्थापित-बाळक-**मौर्य**-करे अवगणना आ सहे?

---

१ पूज्यभाव, मान, माझा. २ स्वाभिमानवाळो.

मलयकेतु—मित्र! **चाणक्य** तपोवन सेवे अगर पुनः प्रतिज्ञा ले एमां अमात्यने शुं वारुं?

भागुंरायण—एमां बहु विचारवा जेवुं नथी. जेटलो **चंद्रगुप्त** ए दुष्ट **चाणक्य**थी वेगळो, तेटलुं अमात्यने फावतुं.

शकटदास—अमात्य! खाली खोटा तर्क जवादो; बधुंए घटे छे. जुओ

(कवित.)

धरे जे जरूर राजराजतणा[1] ताजे शिर—
पेचनी जवाहीरनी ज्योते झातकार पाय,
एवो पार्थिवेन्द्र **चंद्रगुप्त** ते स्वजनजथी
लोपाती लगारे आण केमज सहे कदाय?
तेमज प्रतिज्ञा पोते लेतां तो शुं लीधी पण
पळाई सुभाग्ये अभिचारकष्टथी[2] घणांय,*
हवे ते **कौटिल्य** वळी चीडाई चीडाईने ए
दैवना झपाटा जोवा प्रतिज्ञा ते करे कांय?

राक्षस—**शकटदास**! एम हशे त्यारे. पण तुं जा, आ **करभक**ना उतारानो बंदोबस्त कर

शकटदास—आ चाल्यो. (करभक साथे जाय छे.)

राक्षस (पूर्व वाक्यना अनुसंधानमां)—हुं ए कुमारना दर्शनार्थे जवानुं करुं छुं.

मलयकेतु—(पासे जई)—हुंज आर्यने जोवाने आव्यो छुं.

राक्षस (जोई सचकित)—अहो कुमार! (ऊभो थई) आ आसन. कुमारश्री विराजीये.

मलयकेतु—आ बेसुं छुं. आर्य, बेसो. (सौ यथोचित आसने बेसे छे.)

---

* जुओ का. नी. सा. १. ४.

यस्याभिचारवज्रेण वज्रज्वलनतेजसः।
पपातामूलतः श्रीमान् सुपर्वा नन्दपर्वतः॥

---

१ राजाओना राजा. २ अथर्व संहिताना मारणमंत्रनुं अनुष्ठान.

मलयकेतु–आर्य ! [1]शिरोवेदना कांइ मटी छे वारुं ?

राक्षस–कुमार ! ज्यां सुधी कुमारपद मटी अधिराज पद कुमारना नामने नथी जोडायुं त्यां सुधी शिरोवेदना मटवी केवी ?

मलयकेतु–आर्ये आदर्युं छे तो ए कांइ दुःसाध्य नथी. तो हवे आपणी युद्धसामग्रीमां कांइ बाकी नथी, छतां आ लावलश्कर समेत शत्रुनां अपचिन्हनी शोधमां हजुए क्यां सुधी आपणुं बेशी रहेवुं थशे ?

राक्षस–हवे "क्यां सुधी" शुं ? ने बेशी रहेवानी वात केवी ? उपडो. फतेहज छे.

मलयकेतु–आर्य ! शत्रुना अपचिन्हनी शुं कांइ भाव मळी ?

राक्षस–हा; मळी छे.

मलयकेतु–शुं अपचिन्ह छे वारुं ?

राक्षस–सचिवतर्फनुंज अपचिन्ह छे. **चंद्रगुप्त चाणक्यथी** विखुटो पड्यो छे.

मलयकेतु–पण आर्य ! सचिव तर्फनुं अपचिन्ह ते कांइ अपचिन्ह नहि.

राक्षस–बीजा राजाना संबंधमां कदाच एम खरुं, के सचिव तर्फनुं अपचिन्ह ते कांइ अपचिन्ह नहि. पण **चंद्रगुप्त**नी वात जुदी छे.

मलयकेतु–आर्य ! एम केम होय ? **चंद्रगुप्त**नी रैयतनी बेदीलीनुं कारण **चाणक्य**नाज दोष हता, ते तो हवे दूर थयो. आथी, मूळे **चंद्रगुप्त**ने प्रजा चाहे छे ते हवे तो बमणी चाहशे.

राक्षस–नहि नहि, एम नथी. रैयतमां बे तफा छे; केटलाक **चंद्रगुप्त**ना उदये उदयना संगी छे, ने केटलाक छे माजी राजा **नंद**ना संगी. आमां जे **चंद्रगुप्त**ना संगी कह्या तेमने तो **चाणक्य**नाज दोष अणरागनुं कारण छे; परंतु **नंद**ना संगीने तो तेम नथी. तेओ तो [2]"अरे आणे पितृभूत **नंद**कुळ संहार्युं" ए विचारे क्रोध अने अणरागना आवेशे अंतर-

---

१ माथानी पीडा, माथानो दुखावो. २ जुओ पूर्वे कथासार.

मा खिन्नज छे, पण. स्वपक्षमां आश्रय करवा योग्य अग्रेसर कोइ न होतां करी चंद्रगुप्तनेज ताबे रहे छे. पण हवे तम जेवा समर्थ वीर शत्रु-सामां मेदानमां पड्या छो एवुं तेओ जोशे, एटले तेज घडिये एने तजी तमनेज आवी मळशे. आनी साबीतीमां दृष्टांत जोइये तो आ अमेज छिये.

मलयकेतु–आर्य ! शुं एकलुं सचिव तर्फनुं अपचिन्हज के कांइ बीजुं चंद्रगुप्त उपर चढाई करवानुं अनुकूळ कारण छे ?

राक्षस–बीजां बहुए होईने ते कारणोथी शो अर्थ छे ? आज खरेख-रुं मुद्दानुं छे.

मलयकेतु–आर्य ! केम "आज खरेखरुं मुद्दानुं छे" कहो छो' ? शुं हवे चंद्रगुप्त राजकारभार बीजा मंत्रीने सोंपी अगर जातेज संभाळी लेई, पंडेज टक्कर नहि लेई शके के ?

राक्षस–अलबत, नहिज लेई शके; केमजे [1]आपतंत्रीथीज ते बने. दुर्बुद्धि चंद्रगुप्त तो सदाए सर्व काममां सचिवतंत्रेज वर्ततो थको अंधवत्* लोकव्यवहारथी अजाण्यो छे; ए शुं टक्कर ले ?

(वसंततिलक.)

अत्युच्च मंत्रिवर ने नरनाथकेरे
स्कंधे धरी चरण ठीक ठरावी श्री रे '
ते राज्यभार पण ना सहीं स्त्रीस्वभावे
बेमांथी एक तजी देज अधीरताए.†

---

* जुओ हितोपदेश २. १६.

यः कुर्यात्सचिवायत्तां श्रियं तद्व्यसने सति ।
सोऽन्धवज्जगतीपालः सीदेत्संचारकैर्विना ॥

† जुओ क. स. सा. पृ. ३५८ श्लोक ११७ उत्तरार्ध तथा श्लोक ११८

यस्तुल्यः क्रियते राज्ञा न तद्वच्छ्रीः प्रसर्पति ॥
द्वयोर्दत्तपदा सा च तयोरुच्छ्रितयोश्चला ।
न शक्नोति चिरं स्थातुं ध्रुवमेकं विमुञ्चति ॥

---

१ स्वायत्तसिद्धि, पोताने हाथे खुद कारभार चलावनार.

अने वळी,

(रोळावृत्त.)

सचिवतंत्री नरनाथ मंत्रीथी छूटो पडतां,
कुमळा बाळक पेठ सद्य धावण छोडवतां
केवळ अहिं सर्वेय शिरस्ताथी अणजाण्यो,
विणअनुभव दिङ्मूढ शके धर्डाए रही शानो ?

मलयकेतु (स्वगत)–सद्भाग्ये हुं सचिवतंत्रेज वर्तनारो नथी. (प्रगट) एम हशे, तो पण चढाईनां पुष्कळ अनुकूळ कारण होय, ने पछी अपचिन्ह जोई दावे सोगठी मारी होय, तो तो जरूर फतेहज मळे.

राक्षस–जरूर फतेहज छे एम कुमारे समजवुं. कांजे तमे

(कवित.)

लायक लडायक छो, सा'यक छे सेन एन,
पौरजने गीत नंदरायनांज गाय छे;
कौटिल्ये वंकाई वीफर्यो छे अधिकारथकी
दूर कर्ये, **मौर्य** वळी नवो नरराय छे.
मदद वळी छे मारी सदाकाळ
(एकलुं कहेतां शरमथी अटकी पुनः)
स्वल्प तोय
खंत करी पंथ बेश बतावववामांय ए;
"हां हां" कहेवानी हावां तमारीज वार थकी
मळवी रही छे बाकी सिद्धि से'ज राय हे !

मलयकेतु–जो आ शत्रु उपर चढी जवानो समय आर्य प्रीछता हो, तो शा माटे बेशी रहिये ?

(हरिगीत.)

मदजळ गळंत निरंतरज, घनघोर गुरु गर्जंत जे,
उद्दंड दंतूशळ वडे भड भेखडो भेदंत जे,

---

१ सचिवायत्तसिद्धि, मंत्रीने हाथे काम चलावनार. २ प्रौढ, गंभीर, पुष्कळ.

वळी श्यामतन पण सिंदुरे सोहंत शोणज रंग जे,
एवा असंख्य उतंग[3] अंगे मस्त मुज मातंग ते
खळखळ वहंत अनंत जळ युत, गंभीरज घुघवंत जे,
जळथंभशा भरा प्रवाहथी तट विकट तोडंत जे,
वळी तीर तरुना वृंदथी अति दीसे श्यामळरंग जे,
ते शोण पण उत्तुंग नद आ पार करी देशे क्षणे.

अने

(वसंततिलक.)

गर्जंतो घोर बळथी, जळ ठार ठार
रेली, सुहेलो मचवंतो मदे अपार,
आ घेरशे गजघटा पुर हालहाल
ले वींटी विंध्यगिरिने ज्यम मेघमाळ.*

(एम कहेतो **मलयकेतु** आवेग पूर्वक **भागुरायण** साथे जाय छे.)

राक्षस–अरे! कोण छे रे अहिं?

प्रियंवदक (प्रवेश करी)–शी आज्ञा छे? अमात्य!

राक्षस–प्रियंवदक! ज्योतिषीमांथी कोण वारुं द्वारे हाजर छे?

प्रियंवदक–क्षपणक

राक्षस (अपशुकन लेखी स्वगत)–अरे शुकनमांज क्षपणक?

प्रियंवदक (अधुरुं वाक्य पुरुं करतां)–**जीवसिद्धि** छे.

राक्षस (प्रकट)–वेष अबीभत्स करी एने अंदर लाव.

प्रियंवदक–जी, सारुं. (जाय छे, अने कथ्या प्रमाणे वेष समारी **जीवसिद्धिने** लेई आवे छे.)

---

* जुओ का. नी. सा. १५. १२

जले स्थले च द्रुमसंकटे च साधारणे वा विषमे समेऽपि।
प्राकारहर्म्यादिविदारणे च ध्रुवं जयो नागवतां बलानाम्॥

---

१ जेना शरीरनो वान काळो छे ते. २ लाल. ३ उंचा, प्रौढ, प्रचंड. ४ जे रंगे श्याम देखाय छे ते. ५ प्रचंड, प्रौढ.

जीवसिद्धि (प्रवेश करतां)-

(पद.)

स्नेहे करी सर्व स्वीकारो,
[1]मोहव्याधिना वैद्यरूप अर्हंत तणुं शासन सुखकर....स्नेहे० ॥ ध्रुव० ॥
घडीभर तो विषयीय विशेषे
कडवुं जदपि जणाय [2]अलेशे;
अमीसम पछी ए सुख देशे रे........स्नेहे० ॥

(अमात्य पासे जतां) धर्मलाभ हो शिष्यने !

राक्षस—महाराज जुओ जोई, अमारे प्रस्थानयोग्य दिवस चोखो कयो छे ?

जीवसिद्धि (उंडी गणत्री करी)-शिष्य ! जोई काढ्युं. मध्यान्ह-पर्यंत भद्रा करण छे ते भाग तजी देतां पछीनो संपूर्ण चंद्र भोगवती आ पूर्णिमा तिथि बहु सारी छे. वळी तमारे उत्तर दिशाथी दक्षिण दिशाए सिधाववुं छे, एटले नक्षत्रे [3]दक्षिण छे. तेथी तमारे

(सवैयो त्रीसो.)

[4]उदित [5]भुवनमां पूरणमंडळ आनंदकंद चंद छतां,
त्यम वळी [6]उदितथको अस्तंगत [7]केतु निश्चय करी होतां,
सुखे सिधाववुं [8]बुधलग्ने [9]सूर [10]अस्त थवानी [11]संधि थतां;
मुहूर्त ए अर्हंतकृपाए फळ अपूर्व फळशे महीमां.

राक्षस—पण महाराज ! तिथिज मुद्दे वांधापडती छे.

जीवसिद्धि—शिष्य !

• १ अज्ञानरूपी रोग. २ अत्यंत. ३ दक्षिण=[1] दक्षिणद्वारियुं;–[2] अनुकूळ. ४ उदित=[1] मुहूर्तनी कुंडळीनुं लग्नभुवन;–[2] उदय पामेलो. ५ भुवन=[1] मुहूर्तकुंडळीनुं घर, आसन;–[2] जगत, विश्व. ६ उदितथको अस्तंगत=[1] उदित–लग्नभुवनथी सातमे स्थाने गयेलो (अस्तंगत) ;–[2] उदय पामीने अस्त पामेलो. ७ केतु=[1] फळादेशना ग्रहोमांनो एक ग्रह;–[2] **मलयकेतु**. ८ बुधलग्ने=[1] बुध जेनो स्वामी छे एवा कन्यालग्नमां;–[2] बुद्धिमान (बुध) **चाणक्य**नी पासे (लग्ने). ९ सूर=[1] सूर्य;–[2] हे शर पुरुष राक्षस ! १० अस्त=[1] आथमवुं ते;–[2] पडती. ११ अवसर, तैयारी.

(गीति.)

एकवसा तिथिगुण छे, चारवसा नक्षत्रगुणज भाखे;
चोसठवसा वळी गुण सिद्धांते लग्ननो निपट दाखे.

तेथी

स्वामी सौम्य[1] छतां करों दुर्लग्ने आ सुलग्न छे आपे;
माटे जरूर जातां चंद्रबळे लहोश सिद्धि अणमापे.

राक्षस—महाराज ! रहो. बीजा ज्योतिषीथी नक्की करिये ए.

जीवसिद्धि—शिष्य ! फोडो माथुं तमे रह्या, अमे तो आ चाल्या.

राक्षस—अरे महाराज रूठ्या तो नथी?

जीवसिद्धि—महाराज नथी रूठ्या—

राक्षस—त्यारे?

जीवसिद्धि—भगवान यमराज रूठ्या छे; कांजे तमे पोतीकाने मूकी पारकाने शोधो छो !*

(एम कही जतो रहे छे.)

राक्षस—प्रियंवदक ! हवे दिवस केटलो छे वारुं ?

प्रियंवदक—जी, सूर्य भगवान आथमवानी तैयारी उपर छे.

राक्षस (ऊठी नजर करी)अहो ! भगवान सूर्य अस्त पामे छे ! क्यमजे

(कवित.)

वनकेरां वृक्ष सर्व पे'लां पूर्व पर्वते
उदय पामतो प्रतापभानु[2] पेखी ते पळे
अंगे अंग राग[3] उभराई जातो दाखतां ने
दोडतां जे ओळारूपे आगळ ने आगळे;

---

* जुओ हितोपदेश पृ. १०४.

आत्मपक्षं परित्यज्य परपक्षेषु यो रतः ।
स परैर्हन्यते मूढो नीलवर्णशृगालवत् ॥

---

१ सारो, क्रूर नहि ते. २ प्रताप दाखवतो सूर्य. ३ राग—रताश तेज रक्तता-अनुराग.

ते आ पश्चिमाद्रिना प्रदेश तणा प्रांतभागे
भाण अस्त थाळी पुंठ फेरवी पाछां वळे;
जरूर तजीज जाता जगमां जणाय जोतां
पडती विषे प्रभुने सेवक सउ स्थळे.*

(सर्वे जाय छे.)

इति प्रयाण[2]विनिश्चयो नाम चतुर्थोऽङ्कः ॥

---

* जुओ का. नी. सा. पृ. ६२.

उत्थिता एव पूज्यन्ते जनाः कार्यार्थिभिर्नरैः ।
शत्रुवत् पतितं को नु वन्दते मानवं पुनः ॥

१ कोर उपर. २ ज्यां **पुष्पपुर** उपर चढी जवानो **राक्षस मलयकेतुनो** निश्चय वर्णव्यो छे ते.

मुद्राराक्षस नाटक.

अंक ५.

(एक तर्फथी महोरछापवाळी दागीनानी पेटी अने लेख लेई **सिद्धार्थक** आवे छे.)

सिद्धार्थक—अहाहा!

(आर्या).

बुद्धिजळना झरणे घाटघडुले घणीक सिंचाई
फळ गरवां अव फळशे नीतिलता आर्यनी आंहि.*

अहा! अगाउ **शकटदासना** हस्ताक्षरे लखावी अमात्य **राक्षसनी** मुद्राथी महोरछाप करी आर्य **चाणक्ये** जे आ लेख आप्यो हतो, ते आ लीधो. वळी तेनी साथे, अमात्यनाज पंडे बक्षीश करी दीधेला पेला दागीनानी पेटी जे तेनीज महोरथी छापी मूकी हती तेए आ लीधी. हवे जाऊं **पुष्पपुरभणी.** (परिक्रमण करतां सामो क्षपणक **जीवसिद्धि** आवतो जोई) अरे! पण सामो क्षपणक आवे छे! पण आपणने तो एनुं अपशुकनियाळ दर्शन भला भावतुंज छे, माटे ते परिहरवुं शाने? चालोजने.

जीवसिद्धि (सामेथी प्रवेश करतां)—

(उपगीति.)

प्रबळ बुद्धिथी लोके लोकोत्तर[१] मारगे नित्ये
सिद्धि लहे जे सहजे, नमुं ते अर्हंतने प्रीते.

---

* जुओ क. स. सा. ६–७–८५.

उपायरससंसिक्ता देशकालोपबृंहिता ।
सेयं नीतिमहावल्ली किं नाम न फलेत् फलम् ॥

---

१ अपूर्व, असामान्य, लौकिकथी भिन्न.

सिद्धार्थक–नमो नमो ! महाराज !

जीवसिद्धि–धर्मलाभ शिष्यने ! (धारीने जोई)-अहो शिष्य ! तुं ग्रामांतर जवा आदरी नीकळ्यो जणाय छे.

सिद्धार्थक–महाराजे शा उपरथी जाण्युं ?

जीवसिद्धि–एमां शुं जाणवुं हतुं शिष्य ? आ तारा हाथमांनो लेखज कही आपे छे ते; जेना तात्काळिक शुकने तुं पंथे पड्यो छुं.

सिद्धार्थक–वाह महाराज ! ठीक जाण्युं; हुं देशांतर जवाज नीकळ्यो छुं. त्यारे कहो वारु, आजनो दिवस केवो छे ?

जीवसिद्धि (खडखड हसी)-वाहवाह ! माथुं मुंडावी करी हवे मुहूर्त पूछे छे* !

सिद्धार्थक–महाराज ! हजुए शुं वही गयुं छे ! कहो; जो अनुकूळ हशे तो जईश.

जीवसिद्धि–शिष्य ! अनकूळ हो के प्रतिकूळ हो, पण हवे जवानी वात न करवी.

सिद्धार्थक–महाराज ! एम केम कहो छो ?

जीवसिद्धि–जो, सांभळ, शिष्य. अगाउ तो जवा आववानी आ कटकमां कोइ प्रकारनी बंधी न हती. पण हवे **पुष्पपुर** समिप होतां करी छाप विना कोइने जवा आववा देता नथी. माटे जो तारी पासे **भागुरायण**नी छाप होय, तो सुखे सिधाव. नहितो रहे. बाकी जोजे, सैन्यरक्षको तने झांझरियां पहेरावी चतुर्भुज स्वरूपे दरबारमां ना दोरे.

सिद्धार्थक–महाराज ! कां जाणता नथी के हुं तो खुद अमात्य' **राक्षस**नो अंगभूत माणस छुं ? मने तो छाप विना पण जतां कोण रोकनार छे ?

---

* जुओ. स. कं. १ अपक्रम दोशना उदाहरणनी उपगीति.

कारविऊण खउरं गामडिओ न्हाइओ जमिओ।
ण क्खत्ते तिहिवारे जोइसिअं पूच्छिउं चलिओ ॥

जीवसिद्धि—शिष्य ! भले ने तुं राक्षसनो के पिशाचनो अंगभूत माणस होय, परंतु छाप विना अहिंथी चसकवानो रस्तो नथी.

सिद्धार्थक—हशे ! महाराज ! कफा न थतां कहो के "फतेह !"

जीवसिद्धि—फतेह कर, शिष्य ! हुं पण आ **भागुरायण** पासे छाप लेवा जाउं छुं.

(बन्ने जाय छे.)

इति प्रवेशकः ॥

(एवे बीजी तर्फथी परिचारक **भासुरक** साथे **भागुरायण** प्रवेश करे छे.)

भागुरायण (स्वगत)—अहाहा ! आर्य **चाणक्यनी** नीति शी अद्भुत छे ! खरेज

(दुहा.)

नियति[1] ने नीतितणी गति अति दीसे अनेरी[2] !
छतीं अणछतीं घडींमां, अने घडींमां गहन घणेरी,
समग्र घडींक विषे वळी नजरे तरी रहेज,
आछी अणछतींशी थती घडींमां दीसे से'ज,
नरीं अणछतीं घडींमां बने ने नव लाधे लेश,
घडींमां तो फाली फूली फळी फळ रहे अशेष !!!

(प्रगट) भाइ **भासुरक** ! कुमारश्री मने घडीए एमनाथी अळगो थयो इच्छता नथी. माटे आ दरबारना मंडपमांज आसन बिछाव.

भासुरक—आर्य ! आ आसन. विराजिये.

भागुरायण (बेशी)—भाइ ! जे कोइ छाप लेवा अमने मळवा आवे, तेने अंदर लाववो.

भासुरक—जेवो हुकुम आर्यनो. (जाय छे.)

भागुरायण—(स्वगत)—अरेरे ! अफसोस ! आटले दरज्जेए चाहता **मलयकेतुने** छेह देवो ए ते केम थाय ? अथवा

---

१ दैवेच्छा. २ अवनवी, विचित्र.

(रोळावृत्त.)

कोरे मूकी-कीर्ति-मान-कुळलाज-सउए
वेच्युं अपट लोभिज धनिकने क्षणिक वपुए;
रह्युं करवुं कह्युं काम दास बनी; शुं पछी वारुं
हारी बाजी हाथ विमांसवुं सारुं नठारुं ?

(एवे प्रतीहारी **विजया** साथे **मलयकेतु** प्रवेश करे छे.)

मलयकेतु (स्वगत)–अहा ! **राक्षस** विषे कंइ कंइ विकल्प[1] आव्या करे छे, जेथी मारुं मन एवुं तो व्यग्र रहे छे जे कांइ सूझ पडती नथी.

(कवित.)

शुद्ध भक्तिभावथी[2] शुं ए ते नवे **नंद**तणा
कुळक्रमे उतरेला पूर्ण प्रेमबंधथी[3],
चलित **चाणक्य** जाणी, **नंद**कुलालंबी[4] मानी
मळी जाशे पूरण प्रवीण **मौर्य चंद्र**थी ?
के शुं टकी रे'शे टेके पूर्वनी प्रतिज्ञाकेरे
अमारी अनन्य[5] स्थिर भक्तिना संबंधथी ?
एना एज तर्क ने वितर्कना संपर्क[6]थकी
चित्त मुज चाक चढ्युं रहे भ्रमबंधथी[7].

(प्रगट) **विजये** ! **भागुरायण** क्यां छे वारुं ?

विजया–कुमारश्री ! एओ लश्करमांथी बहार जवानी रजा लेवा आवनारने आ छाप करी आपे छे.

मलयकेतु–**विजये** ! रहे, ए पेली तर्फ जुए छे तेटलामां पाछळथी जई एनी आंखो दबावुं छुं. माटे हालीश चालीश नहि.

विजया–जेवी आज्ञा कुमारश्रीनी.

भासुरक (प्रवेश करी)–आर्य ! आ क्षपणक छाप लेवा आवेल छे, ते आपने मळवा चाहे छे.

---

१ संशय, खोटा विचार. २ राजभक्ति, वफादारी. ३ प्रीतिना बंधनने लीधे. ४ **नंद**कुळनुं अंग, **नंद** अनौरस पुत्र. ५ असाधारण रीते दृढ. ६ योग, संबंध. ७ भ्रांतिना बंधने लीधे.

भागुरायण–भले ! आववा दो एने.

भासुरक–जी, सारुं. (जाय छे; पाछळथी क्षपणक **जीवसिद्धि** प्रवेश करे छे.)

जीवसिद्धि (पासे जतां)–धर्मलाभ शिष्यने !

भागुरायण (जोई स्वगत)–अहो ! **राक्षसनो** मित्र **जीवसिद्धि** ! क्यां जतो हशे ए? जोइये. (प्रगट)–महाराज ! कांक **राक्षसनाज** कामे जाओ छो, नहि वारुं ?

जीवसिद्धि (कानमां आंगळी घाली)–अरेरे ! ए दुष्ट भाषण शुं कर्युं शिष्य ? मारे तो ज्यां न राक्षसनुं के न पिशाचनुं नामे संभळाय, त्यां टळवुं छे.

भागुरायण–अहो ! कांइ मित्र उपर बहु प्रणयकोप[1] जणाय छे ! शुं कांइ **राक्षसे** महाराजने दूभव्या छे ?

जीवसिद्धि–शिष्य ! **राक्षसे** कांइ मने दूभव्यो नथी. आ हुं दुर्भाग्य मारां पोतानांज कर्मथी लाजुं छुं.

भागुरायण–महाराज ! आपनुं आ बोलवुं मारी जिज्ञासा दुप्पट तनखावे छे. ए हुं सांभळवा इच्छुं छुं.

मलयकेतु (स्वगत) हुं पण सांभळवा आतुर छुं.

जीवसिद्धि–शिष्य ! जे संभळावाय एवुं नथी, ते संभळाववामां शो अर्थ ?

भागुरायण–वात गुह्यज होय तो रहेवा दो त्यारे.

जीवसिद्धि–वात गुह्य तो नथी, पण कांइ संभळाववा जेवीज नथीः–बहुज बुरी छे.

भागुरायण–गुह्य नथी त्यारे तो कहोज.

जीवसिद्धि–शिष्य ! गुह्य नथी तोये कहेवानी नथी.

भागुरायण–त्यारे भले छापे मळवानी नथी.

जीवसिद्धि (स्वगत)– आटला आतुर आग्रह आगळ वात कहेवी घटे छे. (प्रगट)–शुं करुं ? बीजो रस्तो नथी ! सांभळिये शिष्य !

---

१ मित्र प्रति सहज रीस.

हुं हीणभागी पहेलां **पुष्पपुरमां** रहेतो हतो, तेवामां मारे **राक्षस** साथे मित्राचारी बंधाई. ते अवसरे **राक्षसे** छानामानां **विषकन्या** योजी **पर्वतेश्वरनो** घाट घडाव्यो;

मलयकेतु (अश्रुपातपूर्वक स्वगत)–अरे ! शुं **राक्षसे** पितुःश्रीनो वध कर्यो ?–**चाणक्ये** नहि ?

भागुरायण–पछी ?

जीवसिद्धि–पण हुं **राक्षसनो** मित्र होतां करी तेना छांटा मने लाग्या; ने मने **चाणक्ये** गुन्हेगार करी फजेती साथे देशपार कर्यो. हवे पाछो ए **राक्षस** एनी अनेक राजकाजनी खटपटमां एवुं कांक करवा बेठो छे के तेथी मारे देशपार तो शुं, पण दुनियांपारज थवानो समय आवे.

भागुरायण–पण महाराज ! ए अघोर कृत्य तो **राक्षसे** नहि, पण पेला पापी **चाणक्ये** कर्युं, एम अमे तो सांभळ्युं छे. कहे छे जे एणेज कबूलेलुं अर्ध राज्य आपवुं न पडे एटला माटे एम कर्युं.

जीवसिद्धि (कानमां आंगळियो घाली) अनाहुत, हळाहळ अधर्म !!! **चाणाक्ये** तो **विषकन्यानुं** नामे न हतुं सांभळ्युं.

भागुरायण–महाराज ! आ रही छाप (आपे छे), पण रहो, कुमारश्रीने निवेदन करो आ, आवो.

मलयकेतु (पासे जई प्रगट)–

(कवित.)

अरे सांभळ्युं आ एज **राक्षसना** जीवजान
दोस्तदारकेरा मुखे मित्र ! कानोकान में
दाखवतुं दुश्मनाई दारुण ए दुष्टतणी
[1]श्रवणविदारणज वेण निरवाण ए;
जेणे करी [2]जनकना [3]निधननी वेदना हा !
[4]व्यतीत छतांए जाणे फरीने आ अंतरे

१ कानने वींधी-फोडी नाखतुं. २ बाप. ३ मोत. ४ वीती गयेली.

कंइक वखतनी ते ताजी थई आज पाछी
अतिशय तिव्रताए दो'री दो'री विस्तरे !!!

जीवसिद्धि (स्वगत)-अहो ! दुरात्मा **मलयकेतुए** सांभळ्युं तो ! अहाहा ! एटलुंज जोइतुं हतुं. काम थई गयुं आपणुं. हवे आपणे आपणे रस्ते. (सटकी जाय छे.)

मलयकेतु (आकाश तर्फ नजर ठेरवी)-**राक्षस** ! **राक्षस** ! बराबरज छे !

(वसंततिलक.)

सौ कार्यभार मरुंसो तुज भूर ! आणी
सोंपी नचिंतज रह्या निज मित्र मानी,
ते तात सौथ-स्वजनाश्रु पड्या करे आ
ताराज ! राक्षसज **राक्षस** तुं दीसे हा !!!

भागुरायण (स्वगत)-**राक्षसनो** जान जरूर करी बचाववो एवी आर्य **चाणक्यनी** स्पष्ट आज्ञा छे. माटे रहो. (प्रगट)-कुमार ! अकळाओ नहि; शांत थाओ; आसने विराजो; मारी विज्ञापना एक कुमारश्री जरा श्रवण धरो.

मलयकेतु (बेशीने) मित्र ! शुं कहेवुं छे ?

भागुरायण-कुमार ! राजद्वारीनी मित्रता, शत्रुता, अने तटस्थता सौ अर्थसर होय छे; सामान्य संसारीनी पेठे स्वेच्छानुसार नथी होती. हवे ते समये जोइये तो **राक्षसने सर्वार्थसिद्धि** गादिये बेसाडवो हतो. आ अर्थ पार पाडवामां महाराजा **पर्वतेश्वरज** पेरिपंथी हता. ए सवारना पहोरमां समरवा लायक पृथ्वीपति **पर्वतराज चंद्रगुप्तथीए** प्रतापे अधिक हता. माटे **राक्षसे** ते समये एम कर्युं हशे. ए जोतां अर्थदृष्टिये एमां कांइ दोष नथी एम हुं समजुं छुं. जुओ

(उपजाति.)

सुमित्रना शत्रु, अने प्रसंगे शत्रुतणा मित्र करी सुरंगे,
नीति करेलां कृत भूलवाडी आ जन्म जन्मांतर दे पमाडी.

---

१ संबंधीने रोता, करी, संबंधिवर्गनां आसु साथे. २ प्रतीकूळ, आडा आवता, विघ्नरूप.

तेटला माटे आ बाबत राक्षसने कांइ उपालंभ न आपतां नंदराज्य हस्तक थतां सुधी तेने आपणो करी राखवो. त्यारबाद जेवी कुमारश्रीनी मरजी.

मलयकेतु—बरोबर कह्युं, मित्र ! एमज एमज, केमने अमात्यनो वध करवामां प्रकृतिमंडळ खळभळी ऊठे, ने तेम थतां जीतनी बाजी हाथ आवी कदाच कथळी जाय.

भासुरक (प्रवेश करी)-जय जय कुमारश्रीने ! (**भागुरायण** प्रति) आर्य ! सैन्यरक्षकनो वडो अधिकारी **दीर्घरक्ष** विनवे छे जे "आ छाप विना कटकमांथी नीकळी जवानुं करतो हतो, जेथी अमे एने पकडी आर्य पासे मोकल्यो छे. एनी पासे बीडेलो लेख पण छे. माटे आर्य एनी घटित तपास करशो."

भागुरायण—भाइ क्यां छे ए ! अंदर लाव एने.

भासुरक—जी, सारुं. (जाय छे, अने बंदीवाननी दशामां **सिद्धार्थक**ने लेइ पाछो प्रवेश करे छे.)

सिद्धार्थक (प्रवेश करतां स्वगत.)—

(गीति.)

प्रगट प्रतीति[1] गुणनी उपजावणी, दोषदृष्टि[2] तणी हरणी,
जय ! जननी[3], अम जननी स्वामिभक्ति पोषक हे ! जयजननी[4] !

भासुरक—आर्य ! आ ए आदमी.

भागुरायण (जोई **भासुरक** प्रति)—भाइ ! आ कोइ नवो अजाण्यो आदमी छे, के अहिं कोइनी तेनातनो छे ?

सिद्धार्थक—आर्य ! हुं तो अमात्य **राक्षस**नो सेवक छुं.

भागुरायण—भाइ ! त्यारे कटकमांथी जाय छे ने छाप केम नथी लीधी ?

सिद्धार्थक (लेख तर्फ नजर खेंची)—आर्य ! काम घणुं अगत्यनुं छे, ने मने बहुज ताकीद करवामां आवी छे.

---

१ ठपको. २ दोष जोवानी वृत्ति. ३ मा. ४ जय आपनारी.

भागुरायण–अरे ! एवुं केवुं अगत्यनुं काम छे जे हजुरश्रीना हुकुम उपर पण पग मूके ?

मलयकेतु–मित्र ! ए लेख जोइये !

भागुरायण (**सिद्धार्थक**ना हाथमांथी लेख लेई ते उपर महोर जोई)–कुमार ! आ लेख लीजिये. आने **राक्षस**ना नामनी महोरछाप छे.

मलयकेतु–रहे, महोरने इजा न आवे एम उघाडीने बताव.

(**भागुरायण** महोर जाळवी लेख उघाडीने **मलयकेतु**ने आपेछे.)

मलयकेतु (वांचे छे)–"स्वस्ति श्री अमुक स्थाने कोइक अमुक विशेषणना पुरुषने कोइक स्थानथी कोइकनी विज्ञापना छे जेः—अमारा प्रतिपक्षीने दूर करी सत्यवंते पोतानी सत्यता अपूर्व दर्शावी. हवे जे आ अमारा मित्रो प्रथमथी आ संधिमां मळ्या छे तेमने ए संधिसमये सत्यवंते आशा आपेली छे तेना संबंधमां जेथी तेओ उश्केराय तेम करी तेमने पण आनंद उपजावशो. एओ पण सत्यवंतनी महेरबानी जोई अने आवी कृपाप्रसादी अनुभवी पोतानो आश्रय पण फेडी सत्यवंतनी सेवा उठावशे. सत्यवंत आ भूलीतो नहिज गया हो, तोये जणाविये छिये, जे एमांना केटलाकने प्रतिपक्षीना हाथीघोडा ने केटलाकने तेनी भोंय जोइये छे. सत्यवंते जे त्रण अलंकार मोकल्या ते मळ्या. अमे पण आ साथे अशून्यार्थ कांक मोकलेल छे ते लेशो. लेख लेईने आ आप्तमां आप्त **सिद्धार्थक** मोकल्यो छे, ते मुखसंदेश[1] कहेशे."

मलयकेतु–**भागुरायण** ! आ शुं चितर्युं छे ?

भागुरायण–भाइ **सिद्धार्थक** ! आ लेख कोना उपरनो छे ?

सिद्धार्थक–हें....महाराज ! मने खबर नथी.

भागुरायण–आह धूर्त ! लेख लेई जाय छे ने खबर नथी कोना उपरनो छे ए ? ठीक ठीक; रह्युं ए; तारे मुखसंदेश कहेवानो छे ते कोने ?

सिद्धार्थक (थथरतो)–आं....आं....आ आपने........

भागुरायण–शुं अमने कहेवानो छे ?

---

१ म्होडे कहेवानुं ते.

सिद्धार्थक–आ....आ....आर्यने तापे, मने अहिं बां....बां....बांधी आणी खडो कर्यो छे ए. ..ए....एटले हुं गभराई गयो छुं. म....म.... मने खबर नथी के शुं कहुं ?

भागुरायण (क्रोध पूर्वक)–हवणां खबर पडशे. **भासुरक** ! ठोको हरामखोरने बहार लेई जई, सीधो जवाब दे त्यांसुधी.

भासुरक–जेवो अमात्यनो हुकुम. (**सिद्धार्थक**ने लेई जाय छे; पछी थोडीक वारे पुनः प्रवेश करी)–आर्य ! मारतां मारतां एनी काखमांथी आ महोरछापवाळी पेटी नीकळी पडी ते तपासिये.

भागुरायण (जोई)–कुमार ! आना उपर पण **राक्षस**नीज छाप छे.

मलयकेतु–मित्र ! ए लेखनो अशून्यार्थ हशे. ए छापने पण इजा न आवे एम उघाडीने लाव जोइ.

(**भागुरायण** महोर साचवी पेटी उघाडो बतावे छे.)

मलयकेतु (जोई)–अरे ! आ तो जे अलंकार में मारा शरीर उपरथी उतारी **राक्षस**ने पहेरवा मोकल्या हता तेज ! जाण्युं, जाण्युं. खुल्लुं छे, आ लेख **चंद्रगुप्त** उपरज छे.

भागुरायण–कुमार ! संशयनुं आ निराकरणज थायछे. भाइ ! एने वळी बांधो ने बंबजावो.

भासुरक– जी, सारुं. जई (पाछो **सिद्धार्थक** साथे प्रवेश करी) – आर्य ! मार खाधो त्यारे आ कहे छे के खुद कुमारश्रीनाज आगळ कहीश.

मलयकेतु–भले ! तेम.

सिद्धार्थक–(**मलयकेतु**ने पगे पडी)–अभयदाननी मने कुमारश्री तर्फथी कृपा थवी जोइये.

मलयकेतु–भाइ ! पराधीन माणसने भयनुं कारणज नथी. तुं तारे जेवुं होय तेवुं कही दे एटले थयुं.

सिद्धार्थक–सांभळिये महाराज ! अमात्य **राक्षसे** मने आ लेख आपी **चंद्रगुप्त** पासे मोकल्यो हतो.

मलयकेतु–वारुं, पण हवे मुखसंदेश जे कहेवानो, ते शो छे ?

सिद्धार्थक—कुमार ! अमात्ये मने एम कह्युं हतुं जे "आ पांच राजाओ, जे मारा परममित्र छे, तेओ आप चंद्रश्रीने संपूर्ण चहाय छेः—एक तो **कुलुत** देशनो राजा **चित्रवर्मा**, बीजो **मलय** भूमिनो अधिपति **सिंहनाद**, त्रीजो **काश्मीर**नो राजा **पुष्कराक्ष**, चोथो **सिंधु** देशनो राजा **सिंधुषेण**, ने पांचमो **पारसीक** राज्यनो अधिराजा **मेघनाद**. एमांना पहेला त्रणने **मलयकेतु**नी भोंय जोइये छे, अने बीजा बेने तेना हाथीघोडा जोइये छे. माटे जेम **चाणक्य**ने दूर करी महाभागे अमने आनंद उपजाव्यो, तेम आमने आपेली आशा पण पूरी पाडवी जोइये. ए प्रमाणे मुखसंदेश कहेवो."

मलयकेतु (स्वगत)—शुं **चित्रवर्मा** आदिक पण मारा माठामां छे? हां हां, तेमांज **राक्षस**ना उपर तेओनो आवो असाधारण भाव छे. (प्रगट) **प्रतीहारी** ! **राक्षस**ने जोवा चाहुं छुं माटे बोलावी लाव.

प्रतीहारी—जेवी कुमारश्रीने आज्ञा. (जाय छे.)

(एवे अनुचर **प्रियंवदक** सहवर्तमान, स्वभवनस्थ, आसनगत, विचारग्रस्त दशामां बेठेलो **राक्षस** दृष्टिये पडे छे.)

राक्षस (स्वगत)—आपणुं सैन्य **चंद्रगुप्त**ना सामंत पटावत वगेरेथी भरपूर छे, तेथी मारा मनमां डगडगो रहे छे. केमजे

(हरिगीत).

जे साध्यसिद्धिनिमित्त सउविध सुनिश्चित छे, सर्वदा
वळी समर्थित छे सपक्षे—नर्थी विपक्षे दूषित कदा,
त्यम वळी निरंतर पक्षमां निज स्थिरतज सोहे सर्वथा,
तेवा सबळ साधनथकी स्थिर विजय निश्चय निज सदा.
पण साध्यनी सिद्धिनिमित्ते साधनज संदिग्ध जे,
वळी एकसरखुंज जे सपक्ष विपक्ष उभयविषे दीसे

१ कसायलुं, समर्थ. २ धारेलो अर्थ सिद्ध करवामां. ३ कुम्मकवाळुं. ४ मळतिया राजा. ५ दुश्मन. ६ फाटफूटवाळुं. ७ स्वपक्षमां. ८ चुस्त. ९ लश्कर. १० नकसायलुं, जेना सामर्थ्यविषे संशय रहे एवुं. ११ बे पक्षप्रति समान वृत्तिवाळुं, बेउने मळतुं—बेउने विरुद्ध—के—बेउने उदासीन.

त्यम वळी सदाए पक्षमां निज अस्थितिज जे दाखवे
तेवा विकळ[1] साधनथकी नर्को पराभव निज नीपजे.

अथवा प्रगट अणरागनां ते ते कारण जोई करी प्रथमथी योजेली आपणी खटपटथी जेओ दूषित थई चूकेला, तेज ए सउ छे; तो पछी डगडगो शाने राखवो? (प्रगट)–भाइ **प्रियंवदक**! अमारा नामथी कुमारना अनुयायी राजाओने खबर आपवी जे हवे दिवसे दिवसे **पुष्पपुर** पासे आवतुं जाय छे, तेथी प्रयाणसमये[2] सउए आ प्रमाणे पोतपोताने नियमित स्थाने रहेः–

(हरिगीत).

रे' मोखरे मुज संगमां **खशने मगर** निज हारमां,
भींज्या रहे भडमां **यवन** भडभूप ने **गांधारना**,
ने पूंठ पूरे शूर **शकपति चीण हूणना** साथमां;
नृप **कौलूतादि** कुमार वांसे रे' निरंतर वाटमां.

प्रियंवदक–जी, सारुं. (जाय छे.)

(एवे **मलयकेतुनी** मोकलेली प्रतीहारी बीजी तर्फथी प्रवेश करे छे.)

प्रतीहारी (पासे जई)–जय जय! अमात्य! कुमारश्री अमात्यने जोवा इच्छे छे.

राक्षस–भद्रे! घडीक थोभ. अरे! कोण छे रे हाजर?

अनुचर (प्रवेश करी)–आज्ञा करिये अमात्य!

राक्षस–**शकटदासने** कहे जे "कुमारे अमने अलंकार सजाव्या छे; तेथी हवे कुमार पासे अलंकार धारण कर्या विना जवुं ते ठीक नहि. माटे पेला खरीद करेला त्रण अलंकारमांनो एक लावो."

अनुचर–जी, सारुं. (जई अलंकार लेई पाछो आवी)–अमात्य! आ अलंकार.

राक्षस (अलंकार सजी आसनथी ऊठी)–भद्रे! चाल दरबार भणी, आगळ था.

---

१ दुर्बळ. २ कूच करी चालती वखते.

प्रतीहारी–पधारिये अमात्य !

राक्षस (स्वगत)–अहो! निर्दोष पुरुषने पण अधिकारपदवीमां निरंतर भारे दहेशत रहे छे. केमजे

(कवित.)

शरीर सोसाई जाय स्वामीना सदैव तापे
"के'शे शुं!" अने "थशे शुं?" एज शोचनामांहि
"कान भरे कोइ रखे स्वामीना समिपना जे"
एनी एज बी'के रहे हैयुंए हींक्युं कंइ,
दुर्जननी शनि समी दृष्टि दुष्ट पीडे वळी
लागी ने लागीज भाग्यभुवन भणी रही,
वावादळ दुःखनुं झझुमी रहे, "आ पड्यो आ
पड्यो" एम उच्चपदधारी[1] चिंतवे सही.

प्रतीहारी (परिक्रमण करी)–अमात्य ! पधारिये. आ कुमार विराजे.

राक्षस (जोई)–अहो ! कुमार विचारग्रस्त होय एम बेठा छे. कांजे

(आर्या.)

जोती एकटशे पण, प्रत्यक्षे[2] स्थित न ले'तो लवलेशे,
धर्यो छे निज चरणाग्रे दृष्टि स्थिर शून्य[3] आवेशे.
वळी आ इंदुशुं वदने मा'भारत राजकाजना भारे
नमियुं होय शके त्यम धार्युं करे पंकजाकारे[4].

(पासे जई)–जय जय ! कुमार !

मलयकेतु–आर्य ! नमस्कार. आ आसने विराजिये.

(**राक्षस** आसने बेसे छे.)

मलयकेतु–आर्य ! आज तो अमने वणे दिवसे दर्शन देई आर्ये बहु खेद उपजाव्यो.

राक्षस–कुमार ! पुष्पपुरभणी सवारीनी गोठवणी करवा रह्यामां हुं आपना ठपकामां आव्यो.

---

१ उच्च पदवी धरावनार. २ नजर आगळ स्थित-पडेल पदार्थ. ३ विचार के मनोभावना आवेशने लीधे शून्य. ४ कमळना आकारना-कमळ जेवा (हाथ उपर.)

मलयकेतु–आर्य ! सवारीनी शी रीते गोठवण करी छे ते हुं जाणवा चाहुं छुं.

राक्षस–कुमार ! आ प्रमाणे अनुयायी राजाओने खबर आपी छे.

(हरिगीत.)

रे'मोखरे मुज संगमां **खश** ने **मगर** निज हारमां,
भींडच्या रहे भडमां **यवन** भडभूप ने **गांधार**ना,
ने पूंठ पूरे शूर **शक**पति **चीण हूंण**ना साथमां,
नृप **कौलूतादि** कुमार वांसे रे' निरंतर वाटमां.

मलयकेतु (स्वगत)–शुं ? जेओ मारो घाट वडी **चंद्रगुप्त**नी कृपा संपादन करवा टांपी रह्या छे तेओज मारी वांसे नीम्या छे ? ठीक. (प्रगट)–आर्य ! कोइ **कुसुमपुर** जतुंआवतुं छे के ?

राक्षस–हवे जताआवतानुं प्रयोजन नथी. पोतेज त्यां थोडे दिवसे जईशुं.

मलयकेतु (स्वगत)–जाणिये छिये. (प्रगट)–एम छे तो आ माणसने लेख आपीने आर्ये शा सारुं मोकल्यो छे वारुं ?

राक्षस (जोई)–अहो ! **सिद्धार्थक** (तेना प्रति)–भाइ ! केम ! शुं छे ?

सिद्धार्थक (अश्रुपात पूर्वक शरमिंद बनी)–म ....म....माफ करो अमात्य ! म....म....मने मार मार्यो ए....ए....एटले में न रहेवायुं त.... त....तेथी गुह्य वात हती ते हती ते कही दीधी.

राक्षस–भाइ ! गुह्य वात शी, ते कांइ मारा समजवामां नथी.

सिद्धार्थक–आं....आं....अमात्यने मारुं विनववुं ए छे जे म.... म....मने मार्यो एटले म....म....में....(एटलुं कहेतां अधवच अटको नीचे म्होए धूजतो ऊभो रहे छे.)

मलयकेतु–**भागुरायण** ! स्वामीना रुबरु दहेशतनो के शरमनो मार्यो ए नहि कहे. माटे तुंज पोते आर्यने कहे.

भागुरायण–कुमारनी आज्ञाने ताबे छुं. अमात्य ! ए कहे छे जे "अमात्ये मने लेख आपी मुखसंदेश साथे **चंद्रगुप्त** पासे मोकल्यो हतो."

राक्षस–भाइ **सिद्धार्थक** ! आ साचुं ?

सिद्धार्थक (लज्जा पूर्वक)–म....म....मने मरणतोल मार मार्यो त....त....त्यारे में ह....ह....हा ए कह्युं.

राक्षस–कुमार ! ए केवळ खोटुं छे. मारनुं मार्युं माणस शुं न कहे ?

मलयकेतु–मित्र **भागुरायण** ! लेख बताव. मुखसंदेश ए अनुचर कहेशे.

भागुरायण–अमात्य ! आ लेख, जुओ.

राक्षस (वांची जोतांज)–कुमार ! आ तो दुश्मननी बनावट दीसे छे.

मलयकेतु–लेखना अशून्यार्थ तरीके आर्ये आ अलंकार पण मोकलेल छे, ने पछी दुश्मननी बनावट केम मनाय ?

राक्षस (अलंकार तपासी जोई)–आ तो कुमारे जे अलंकार अमारा सारुं मोकल्या हता तेज. कोइएक प्रसंगे खुशी थई में ए **सिद्धार्थकने** बक्षीश आप्या हता.

भागुरायण–आवा अमूल्य अने तेमां ए कुमारे पोताना अंग उपरथी उतारी आपेला अलंकार ते आवा पात्रने बक्षीस आपवा होय !

मलयकेतु–' मुखसंदेश **सिद्धार्थक** कहेशे ' एवुं पण आर्ये लेखमां लख्युं छे.

राक्षस–मुखसंदेश केवो ?....लेखज अमारो न होय तो !

मलयकेतु–त्यारे आ महोरछाप कोनी ?

राक्षस–खोटी महोर धूर्त जनने बनावतां क्यां नथी आवडती ?

भागुरायण–कुमार ! अमात्य बराबर कहे छे. भाइ **सिद्धार्थक** ! आ लेख लखेलो कोणे ?

(**सिद्धार्थक राक्षस**ना मुख सामुं जोई नीचे म्होए ऊभो रहे छे.)

भागुरायण–भाइ ! फरीने मार खावानुं शा माटे करे छे ? कही दे जे होय ते.

सिद्धार्थक आर्य ! **शकटदासे.**

राक्षस–कुमार ! जो ए **शकटदासे** लख्यो होय तो ते मेंज लख्यो.

मलयकेतु–प्रतीहारी ! लाव **शकटदासने** अहिं.

प्रतीहारी–जेवो कुमारश्रीनो हुकुम.

भागुरायण (स्वगत)–आर्य **चाणक्यनां** भूत ते कदी वहेम पडती वात करनार नहि. माटे रहो. (प्रगट)–कुमार ! आवीनेए कदी पण **शकटदास** अमात्यना रुबरु आ में लख्युं छे एवुं कबूल करशेज नहि. एटला माटे बीजुं कांइ एनुं लखेलुं मगावो. अक्षर मेळवी जोवाथीज जणाई आवशे.

मलयकेतु (प्रतीहारी प्रति)–भले, तो जा ए प्रमाणे कर.

प्रतीहारी–कुमार ! महोर पण लावुं ?

मलयकेतु–बेउए लाव.

प्रतीहारी–जेवो हुकुम कुमारनो. (जई पत्र तथा महोर लेई पुनः प्रवेश करी)–कुमार ! आ **शकटदासना** हस्ताक्षर अने महोर.

मलयकेतु (तपासी)–आर्य ! अक्षर मळता आवे छे.

राक्षस–(स्वगत)–अक्षर मळता आवे छे–पण "**शकटदास** तो मारो मित्र" ए अक्षर मळता नथी आवता. अरे कदाच आ ते **शकटदासने**

(शिखरिणी.)

हशे स्वामिभक्ति विमळी वीसरी शुंज समूळी ?
हशे आव्यां स्त्री ने स्वजन सुत शुं सांभरी वळी ?
हशे शुं कीर्तिए उरथी ऊतरी नित्य ऊजळी ?
हशे शुं बुद्धिए कंइ क्षणिक अर्थे चळी वळी ?

अथवा हवे संदेह शो ?

(शार्दूलविक्रीडित.)

मुद्रा एनीज आंगळीतणी, सखा एनोज **सिद्धार्थके**,
राजद्रोहनुं पत्र आ पण नकी एनुं, बीजो लेख के';
जाण्युं, जाण्युं, फितुरमां भळी भूली सद्भक्ति स्वामीविषे
हीणो स्वारथ साधवाज **शकटे** आ कर्म कीधुं हशे ! ! !

मलयकेतु (जोई)–आर्य ! "सत्यवंते अलंकार त्रण मोकल्या ते

मळ्या" एम जे लख्युं छे, तेमांनोज एक आ के? (निहाळीने स्वगत)– अरे! आ तो पितुश्री पहेरता तेज! (प्रगट)– आर्य! आ अलंकार क्यांथी तमारे हाथ आव्यो?

राक्षस–वणिक पासेथी वेचातो लीधो हतो.

मलयकेतु–प्रतीहारी! आनी कांइ ओळख पडे छे?

प्रतीहारी (तपासी अश्रुपात पूर्वक)–कुमार! शा माटे न ओळखुं! ए तो पुण्यवंत **पर्वतेश्वर** पोते धारण करता.

मलयकेतु (अश्रुपात पूर्वक)–अहा! प्रिय पिताजी! तमारां

(शिखरिणी.)

अरे ते आ उंचां कुलभूषण[1]! आभूषण भलां
पितुश्रीने अंगे उचित अति वा'लां अवनवां;
दीपंता जे ज्योते झगझगतां तारागण समां
शरज्ज्योत्स्ना[2] जेवा शशिवदनना[3] शुभ्र[4] तनमां!!!

राक्षस (स्वगत)–शुं? **पर्वतेश्वर** पहेरता तेज आ एम कह्युं? (प्रगट)– बराबर, स्पष्ट छे. एए ए **चाणक्येज** योजेला वणिक अमने वेचातां आपी गया हता.

मलयकेतु–आर्य! पितुश्री पोते पहेरता ते आभूषण वणिकने हाथ वेचावां क्यांथी?–तेमां ए **चंद्रगुप्तना** हाथ गयेलां तेनी तो वातज शी? अथवा ठीक ठीक, समज्या.

(आर्या.)

अधिक लाभने अर्थे वेचंता **चंद्रगुप्तने** हां हां
अमने निर्दय! आना मूल तरीके हशे वेच्या!!!

राक्षस (स्वगत)–अरे! शत्रुनो प्रयोग भारे सुश्लिष्ट[5] छे!

(शार्दूलविक्रीडित.)

"नो'ये आ मुज लेख" के'वुं न घटे, आ मारी मुद्रा रही:
"दीधो छेह थई सुमित्र **शकटे**" ते ना मनाशे कहिं;

---

१ कुळना शणगाररूप. २ शरदऋतुनी चंदनीना जेवा. ३ जेनुं चंद्र जेवुं मुख हतुं ते (**पर्वतेश्वर**). ४ गौर, उज्ज्वळ. ५ सारी रीते गोठवेलो, सुघटित.

'वेचे भूषण **मौर्य** भूप' कर्दीए ते कोइ धारे नहि;
खाली उत्तरथी निरुत्तर[1] रहेवुं एज सारुं सही.

मलयकेतु–आटलुंज आर्यने पूछुं छुं–

राक्षस (आंसुभरी आंखे)–कुमार ! जे *आर्य होय तेने पूछो. अमे तो हवे अनार्य ठर्या.

मलयकेतु–

(कवित.)

हुकुम बजावनारो स्वामिसुत **मौर्य** छे, ने
ह्यां तो मित्रपुत्र तम दोर्यो दोरानार छे;
त्यां तो लेवुं रह्युं आप्युं एहनुं तमारे, अने
अंहि तो तमारुं आप्युं उलटुं लेनार छे;
मंत्रिपद पामीनेए त्यां तो पराधीनपणुं,
अंहि तो धणीरणीपणुं पूरा पोबार छे;
तो पछी विशेष कया लाभथी लोभाई आ
अनार्यपणुं आदरवुं पडे शाज स्वार्थे?

राक्षस–कुमार ! अघटतुं बोली तमेज तेनो उत्तर वाळ्यो छे. अथवा तो, नाना, एमां तमारो दोष नथी; ठीकज कह्युं–

(कवित.)

हुकुम बजावनारो स्वामिसुत **मौर्य** छे, ने
ह्यां तो मित्रपुत्र अम दोर्यो दोरानार छे;
त्यां तो लेवुं रह्युं आप्युं एहनुं अमारे, अने
अंहि तो अमारुं आप्युं उलटुं लेनार छे;
मंत्रिपद पामीनेए त्यां तो पराधीनपणुं
अंहि तो धणीरणीपणुं पूरा पोबार छे;

---

* जुओ का. नी. सा. १७. ४८

कुलं शीलं दया दानं धर्मः सत्यं कृतज्ञता ।
अद्रोह इति येष्वेतत्तानार्यान् संप्रचक्षते ॥

---

१ जवाब दीधा वगर, मौन, चूप.

तो पछी विशेष कया लाभथी लोभाई आ
अनार्यपणुं आदरवुं पडे शाज स्वारथे ?

मलयकेतु (लेख तथा दागीनानो दाबडो बतावी)–पण त्यारे आ शुं ?

राक्षस (आंसु साथे)–दैवे वाट उठाडी ! दैवनां वानां ए !

(हरिगीत.)

स्थिति तुच्छ सेवकनी छतां पण जे पूरण प्रेमे भर्या
स्वामी सुजाण न लेखता निज तनुजथी जूदा जरा,
ते प्रवीण पृथ्वीपति परीक्षक पापिये जेणे हण्या
ते पुरुषयत्नो पैरिभवंता दुष्ट दैवनुं कृत्य आ !!!

मलयकेतु (रोष पूर्वक)–शुं ? हजी पण छुपाववानुं करे छे ? दैवे वाट उठाडी ?–तारा लोभे नहि ? दैवनां वानां ए ? अरे कृतघ्न !!! अरे अनार्य !!!

(हरिगीत.)

पूर्वेय योजी कारमी तें तेंज ते **विषकन्यका**
तें फसवी तेना फंदमां मुज तात छेह दई हण्या !!!
ते तुं महामांसज पठे अमने करे अव वेचवा
आराधवा वळी वैरीने अति उलटथी मंत्री थवा !!!

राक्षस (स्वगत)–आ वळी दाझ्या उपर डाम ! (प्रगट कानमां आंगळियो घाली)–एवुं अधर्म मां बोलो. हरि हरि ! में **पर्वतेश्वर** प्रति **विषकन्या** योजीज नथी.

मलयकेतु–कोणे त्यारे पितुश्रीने मार्या ?

राक्षस–दैवने मालूम. दैवने पूछो.

मलयकेतु (क्रोध पूर्वक)–"दैवने मालूम" ? "दैवनें पूछो" ! ने भूडिया **जीवसिद्धि**ने नहि ?

राक्षस (स्वगत)–शुं ? **जीवसिद्धि** ए **चाणक्य**नुंज माणस छे ? हाय हाय ! मारुं हृदय पण शत्रुए स्ववश कर्युं छे !

---

१ धूळ मेळवता, बरबाद–निष्फळ करता. २ खुशी करवा. ३ पोताने ताबे.

मलयकेतु (क्रोध पूर्वक)-**भासुरक**! **शिखरसेन**ने फरमाववुं के **कुलूत** देशनो राजा **चित्रवर्मा**, **मलय** भूमिनो अधिपति **सिंहनाद**, **काश्मीर**नो राजा **पुष्कराक्ष**, **सिंधुदेश**नो राजा **सिंधुषेण**, अने **पारसीक** राज्यनो अधिराजा **मेघनाद**, ए पांच राजाओ जे **राक्षस** साथे मळी **चंद्रगुप्त**ने प्रसन्न करवा अमारो जान लेवानी जुक्तिमां छे, तेमांना पहेला त्रण, जेमने अमारी भोंय जोइये छे, तेमने उंडी खाई जोई भोंय भेगा करवा; अने बीजा बे, जेमने मारा हाथीघोडा जोइये छे, तेमने हाथीघोडाने पगे बांधी पीली मारवा.

भासुरक—जेवो हुकुम. (जाय छे.)

मलयकेतु (क्रोध पूर्वक)-**राक्षस**! **राक्षस**! हुं विश्वासघाती **राक्षस** नथी, **मलयकेतु** छुं. माटे जतो मूकुं छुं. जा, **चंद्रगुप्त**नो संपूर्णज संगी थईने रहे, ने थाय ते करी ले. याद राखः—

(आर्या.)

आवो एक थईने **चंद्रगुप्त**, **चाणक्य**, अने तुंए,
दुर्नय[1] त्रिवर्गने[2] ज्यम, त्यम हणवा छुं समर्थ हुंए.

भागुरायण—कुमार! हवे विलंब न करतां आपणा सैन्यने एकदम **कुसुमपुर** घेरी लेवा आज्ञा करिये, के—

(हरिगीत.)

हयदळतणी खरीथी प्रसरतो, वाधतो दश दिशमां,
आकाश रे'तो आवरी[3] पूरो अंतरिक्ष [4]निमिषमां,
शर्मी शर्मी मूळे वळी महीतळे मदजळ गळ्ये मातंगना
उत्पातरूप झझुमंत अद्धर रेणुपुंज अभंग आ
श्रवणे सजेला लोध्रफुलना रम्य रजथी छायला
[7]गौडांगनाना गौर गालनी लाली ले लुंटी लैला,

---

१ उलटो आचार, दुराचार अनीति. २ धर्म, अर्थ अने काम ए त्रण पुरुषार्थनो समुदाय. ३ रे'तो आवरी=छाई रहेतो. ४ क्षणमात्रमां. ५ एकजथामां, अखंडित. ६ पराग. ७ गौड देशनी स्त्रियोना. ८ सुंदर.

ने केश [1]कुंचित श्याम मधुकरवृंदशा श्यामातणा
रोळे धूळे, ने गर्दमां रगदोळी ले शिर शत्रुनां.

(परिजन साथे **मलयकेतु** जाय छे.)

राक्षस—(आवेग पूर्वक)—अफसोस ! अफसोस ! ते बिचारा **चित्रवर्मा**-दिक पण देवशरण थया !!! जा जीव ! शु करी करीनेए शत्रुनुं नहि ने मित्रनुंज सत्यानाश वाळवा बेठो छे ? अरेरे ! हवे हुं हीणभागी शुं करुं ?

(स्वागता.)

शुं तपुं तप तपोवन सेवी ?—शांति चित्ततणी त्यां पण केवी?
लागी ला'य उर वैरनी आ ते ना क्यमे शमदमेय शमाशे.
शुं [2]परिहरुंज स्वामीनी वांसे [3]पिंड ?—तेय नरने नव छाजे;
[4]र्वेजी जीव निज मेरी मरे छे, मर्द तो अरि [5]विदारी ठरे छे.
तो शुं खड्ग लई एकज जाते भींडी सैन्यभडमां भली भाते
खोळी खोळी दळी दुश्मन दावे दाखवुं भुज-पराक्रम भावे ?
बंधने पण अरे ! मुज सारुं मित्र छे; क्यम कृतघ्न हुं का'वुं ?
चाहुं [6]चंदनविमोक्षज जाउं थाउं [7]मुक्तऋण—धर्म बजावुं.

(जाय छे.)

इति [8]भेदविधिर्नाम पञ्चमोऽङ्कः ॥

---

१ कुटिल. २ तजुं. ३ शरीर. ४ तजीने. ५ संहारीने. ६ **चंदनदास**नो छुटकारो. ७ ऋणथी मुक्त, मित्रना उपकारना ऋणमांथी छूटो. ८ **राक्षस**ने **मलयकेतु**थी भेदवानो प्रयोग ज्यां वर्णव्यो छे ते.

मुद्राराक्षस नाटक.

अंक ६.

(एक तर्फथी **सिद्धार्थक** सिरपाव साथे सहर्ष प्रवेश करे छे.)

सिद्धार्थक (प्रवेश करतां)–

(दुहा.)

जयति जयति जनतापहर[1] जगजीवन[2] घनस्याम !
जयति नयननंदन[3] सुजनचंद[4] चंद अभिराम[5] !
जयति आर्य **चाणक्य**नी नीति सबळ, बळवंत
खिष्ट[6] करी प्रतिपक्षी सउ जय निश्चय जमवत !

लांबी मुदते आवुं छुं, माटे प्रियमित्र **समिद्धार्थक**ना भेगो थतो जाउं. (परिक्रमण करतां **समिद्धार्थक**ने जोई)–अहो ! प्रियमित्र **समिद्धार्थक** तो आ सामो आवे ! चाल, त्यारे एने हुं मळुं.

(एत्रे बीजी तर्फथी **समिद्धार्थक** प्रवेश करे छे.)

समिद्धार्थक (प्रवेश करतां)–

(उपगीति.)

संतापे अति शीतळ अमिनिधि[7] सम सो'य जे नित्ये,
उत्सवमां शुभ टाणे सुखरूप वळी होय जे प्रीते,
एवा सुमित्रकेरा निशदिन सालंत विरह विषे
सुखसमृद्धि सर्वे कंइ दुःखज दे देहने अतिषे.

में सांभळ्युं छे जे प्रियमित्र **सिद्धार्थक मलयकेतु**ना कटकमांथी पाछो आव्यो छे. माटे लाव एनी भाळ काढुं. (परिक्रमण करतां **सिद्धार्थक**ने जोई)–अहो ! आ **सिद्धार्थक** आवे !

---

१ मनुष्यना ताप–दुःख हरनार. २ जगतना जीवाडनार, **कृष्ण** भगवान. ३ नेत्र ठारनार. ४ सज्जनने चंद्ररूप,–शीतलता–आनंद उपजावनार. ५ मनोहर. ६ परास्त. ७ अमृतनो भंडार, चंद्र.

सिद्धार्थक (पासे आवतां)- अहो! **समिद्धार्थक**! भाइ, सुखी तो खरो ?

(बेउ एक बीजाने भेटे छे.)

समिद्धार्थक–भाइ! तुं चिरकाळथी प्रवासे गयेलो आजे पाछो आव्यो, पण मने म्होसरखुंए नथी देखाड्युं, ने सुखनुं शुं पूछे छे ?

सिद्धार्थक–भाइ! माफ करजे. हुं आवतोज हतो, तेवामां आर्य **चाणक्यनी दृष्टिये** पड्यो, एटले आर्ये मने पकड्यो ने फरमाव्युं जे "**सिद्धार्थक**! जा हवणां ने हवणां देवश्री **चंद्रगुप्तने** आ खुश खबर विदित कर." आथी महाराजने समाचार निवेदन करी, तेमणे आ सिरपाव आप्यो तेभेरज परभार्यो तने मळवा आवतो हतो.

समिद्धार्थक–भाइ! शी खुश खबर प्रियदर्शन देवश्री **चंद्रगुप्तने** निवेदन करवा तने मोकल्यो हतो वारुं? जो मने कहेवाय एवी होय तो कहे.

सिद्धार्थक–भाइ! तने न कहेवाय एवुं ते कांइ होय! माटे सांभळ. आर्य **चाणक्यनी** नीतिना इंद्रजाळे[1] मूढ बनेला म्लेच्छ **मलयकेतुए राक्षसने** तिरस्कारपूर्वक काढी मूकी, **चित्रवर्मा**दिक पांच प्रधान मंडळेश्वरोने कमोते मारी नखाव्या. ते उपरथी "अरेरे, आ तो केवळ अविचारी—दुराचारीज छे", एवुं सउना मनमां वशी गयुं; अने आखा सैन्यमां त्रास ने हाहाकार वर्ती रह्यो. आथी कंइक सैनिको कटकभूमि छोडीने जता रह्या. एटले ए भागाभाग थतां पोतानां जे थोडां माणसो रह्यां हतां तेमने लेईने ते ते राजाओ पण पोतानी सलामती चाही भयना मार्या पोतपोताने देश सिधावी गया. रह्या मात्र **मलयकेतुना** पोताना सामंतो. ते पण सर्व विरक्त बनी रह्या हता. ए तक साधी **भद्रभट, पुरुषदत्त, डिंगरात, बलगुप्त, राजसेन, भागुरायण, रोहिताक्ष, विजयवर्मा** आदिक सुभटोए **मलयकेतुने** पकडी केद करी लीधो.

समिद्धार्थक–भाइ! **भद्रभट** आदिक सुभटो तो देवश्री **चंद्रगुप्त**

---

१ जादुई प्रयोग,–माया.

प्रति अणरागने लीधे **मलयकेतुना** पक्षमां जई भळ्या हता, एवुं लोकोमां तो कहेवाय छे. आतो कुकविना नाटकनी पेठे उपक्रम[1] कंइक रह्यो ने अंत कंइक आव्यो एम केम ?

सिद्धार्थक—भाइ ! विधातानी गतिने अने आर्य **चाणक्यनी** नीतिने नमस्कार ! कोण एनो पार पामे एवुं छे ?

समिद्धार्थक—पछी पछी ?

सिद्धार्थक—पछी चूंटी काढेला जुज सैन्यथी आर्य **चाणक्ये** जई सर्व मांडलिक राजा सहित समस्त म्लेच्छ सैन्य घेरी लेई तेने शरण थवानी फरज पाडी.

समिद्धार्थक—भाइ ! क्यां छे ए आर्यनुं सैन्य ?

सिद्धार्थक—भाइ !

(मंदाक्रांता.)

गर्जे जो ओ घन घेनघटा[2] तुल्य डोलंत अंग
धारा रेली मद-जळ तणी मत्त मातंग तुंग,
ने आ वाजां सुणी विजयनां हणहणंता तुरंग
चाले चोंकी प्रहरणभये[3] नर्ती नर्ती थनंग !

समिद्धार्थक—भाइ ! एतो ठीक. पण आर्य **चाणक्ये** तो सर्व लोक समक्ष मंत्रिपद छोडी दीधुं हतुं, ते पाछुं केम अंगीकार कर्युं ?

सिद्धार्थक—भाइ ! तुं तो घेलो छे. अमात्य **राक्षस** पण जे आर्य **चाणक्यना** चरित्रनो पार न पाम्या ते तुं प्रीछवा चहाय छे !

समिद्धार्थक—वारुं भाइ ! पण ते अमात्य **राक्षस** त्यारे क्यां छे हवे ?

सिद्धार्थक—ज्यारे **मलयकेतुना** कटकमां, उपर कह्युं तेम, भागाभाग थई रही हती त्यारे पोते **मलयकेतुना** कटकमांथी नीकळी **पुष्पपुर** आव्या, एवी तेमनी पूठे पूठे आवेला **उदुंबर** नामे प्राणिधिये आर्य **चाणक्यने** खबर आपी छे.

---

१ आरंभ, शरूआत. २ मेघमाळा. ३ चाबुकना प्रहारनी बीके.

समिद्धार्थक–भाइ ! अमात्य **राक्षस नंद**राज्य पुनः स्थापन करवा कंमर बांधी **पुष्पपुरथी** नीकळ्या हता, ते ए अर्थ पार पड्या विना पण हावां आ **पुष्पपुर** पाछा आव्याज के ?

सिद्धार्थक–भाइ ! मने लागे छे जे **चंदनदासना** स्नेहे एमने अहिं खेंची आण्या हशे.

समिद्धार्थक–भाइ ! त्यारे तो **चंदनदास** कदापि छूटे, एम मने भासे छे.

सिद्धार्थक–अरे ए हिणभाग्य छूटवो क्यांथी ? एने तो आर्य **चाणक्यनी** आज्ञा छे जे आपणे बेए हवणांज वध्यस्थाने लेई जई शूळिये परोववो.

समिद्धार्थक (क्रोध पूर्वक)–शुं आर्य **चाणक्यने** बीजा मारा नथी जडता जे आपणी पासे आवुं घातकी काम करावे छे ?

सिद्धार्थक–भाइ ! एवो कोण छे के जे जीव वहालो होय ने आर्य **चाणक्यनी** आज्ञा न उठावे ? माटे चाल आपणे चंडाळनो वेष लेईने **चंदनदासने** वध्यस्थाने लेई जइये.

(बन्ने जाय छे.)

इति प्रवेशकः ।

(एवे कंठपाश लेई **चाणक्यनो** प्रणिधिभूत पुरुष प्रवेश करे छे.)

पुरुष–

(हरिगीत.)

षड्[1]गुणतणा शुभ योगथी दृढता दीपे जेनी भली,
बहुविध उपाये रचित फांसो फंदनो सोहे वळी;
धनधन्य नीतिपाश तेह अपूर्व आर्यतणो जयी
फसवंत परपक्षी प्रबळ सउने सुयुक्तिबळे सही !

(परिक्रमण करी बतावेलुं स्थल आव्युं जोई)–अहो ! आर्य **चाणक्य** आगळ **उदुंबरे** कहेलुं स्थळ ते आज. आर्य **चाणक्यनी** आज्ञा छे, माटे

---

१ संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध, अने संश्रय ए छ गुणरूपी छ सेरो.

जोउं, अहिंज अमात्य **राक्षस मळशे.** (आसपास जोई)–अहो ! आ अमात्य **राक्षस** माथे गोटपोट वींटी करी आमज आवे छे. तो आ वाडीना वृक्षने ओथे रही जोउं वारुं, ए क्यां विराजे छे ! (परिक्रमण करी झाड ओथे जई ऊभो रहे छे.)

(एवे वर्णले वेषे सशस्त्र **राक्षस** सामेथी प्रवेश करे छे.)

राक्षस (अश्रु पूर्ण नेत्रे)–अफसोस !!! अफसोस !!!

(कवित.)

अन्यसंग बेठी घर मांडी भुंडी रांड पठे
लक्ष्मी भयभीत **नंद** नाथजी जतां करी;
विसारी विसारी प्रजापाळ प्रति प्रीति सारी
गई वही प्रजा पण पूंठे पूंठे पांशरी;
पुरुषप्रयत्न सर्व व्यर्थ गये आम
पुरुषोए पण तजी दीधी कार्यकेरी धुंसरी;
मस्तक विहीन जड देहना अवेवकेरी[1]
दशामां बिचारा तेए शुं करे करी करी ?

वळी

(रोळावृत्त.)

छिद्र जोती कुळवंत कंथ तजी **नंद,** नकारी
नीच वर्णनी नारी पेठ सउ लाज विसारी,
राजलक्ष्मी जई रही **वृषल**संगे सजी यारी;
विफळ करे, करिये शुं? वैरी विधि युक्ति अमारी.

अहा ! में

(हरिगीत.)

महाराज मोते अघटते स्वर्गे सिधावंता करी
आगळ करी **पर्वतक** यत्नो आदर्या खांते खरी;
तेए जतां सेव्यो **मलय;** न फतेह तोय मळी कंइ;

१ अवयव, अंग, गात्र.

प्रभुकुळतणो रिपु विधिज छे, द्विज तो निमित्तज ते सही.

अहो ! म्लेच्छ केटलो विचारशून्य !

(शार्दूलविक्रीडित.)

‘ स्वामी स्वर्ग जतां निकंदन थतांए ते हजी जे भजे,
शुं ते **राक्षस** जीवमां जीव छतां शत्रुशुं संधि सजे ?’
जोयुं ए नहि एटलुंय अविवेकी मूढ म्लेच्छे अहा !
बुद्धि माणसनी जरूर बगडे, तेने रूठे दैव त्यां.

अरे, ए अत्यारे आ दशामांए शत्रुना हाथमां पडी पोताना प्राण काढशे, पण **राक्षस चंद्रगुप्त** साथे संधि करनार नथी. भलेने तेथी ‘ ए पोतानुं पण पाळी न शक्यो ’ एवो अपयश गवाय ! बहेतर ए बदनामी; पण ‘ शत्रुनी कपटजाळमां ए मूढ बनी फसायो ’ एवुं तो कहेवाशेज नहि. (आसपास जोई अश्रुपात पूर्वक)—अहा ! ते आ देवश्रीना चरणारविंदना संचारथी पवित्र थयेला **कुसुमपुर**नी आसपासना प्रदेश.

(कवित.)

पणछतणो टंकार करीने चढावी चाप[1]
हाथथी लगाम अहिं नरम मूकी दई
महाराजे विस्मय पमाडी दोडते तुरंगे[2]
नांख्या हता वींधी चेल लक्ष्य[3] बाणथी कंइ;
आ अनेक वृक्षकेरा पुंजना निकुंजमांहि[4]
ऊभा हता, वात करता हता वळी अहिं;
हावा तेमना विना आ **पुष्पपुर**ना प्रदेश
हाय! खावा धाय, जोया जाय क्यमे में नहि!

हाय ! हुं हिणभाग्य क्यां जाउं? (आसपास नजर फेरवी)—आहा—जोई—आ रही पेली उज्जड वाडी. अहिं जई **चंदनदास**नी खबर कोइकथी मेळवुं. अहो ! सम विषम दशाचक्रनी गति अकळज छे. केमजे

१ धनुष. २ अस्थिर, गतिमान. ३ निशान. ४ कुंज, घटा.

(कवित.)

बतावी करांगुळिये बीजचंद्र तुल्य नेहे
निरखता लोकतणा थोकमां थई क्यमे
राजाना समाज साथ महाराजा पेठ आज
नगरथी नीकळवा पामतो हुं जे धीमे;
तेज नगरे फरीने तेज हुं फरी फरीने
यत्न करोडो करीने व्यर्थ जतां सौ श्रमे
पेसुं छुं उतावळो उतावळो आ बी'तो बी'तो
तस्करनी पेरे जीर्ण वाडीमां आवे समे !!!

अहा! आ उज्जडखंख वाडी केवी खावा धाय छे! अरे! अहिं आ

(कवित.)

जाय जडमूळ सुविशाळ वारु वंशकेरुं
तेवी रीते मे'लनुं निशान के न नाम छे;
स्नेहीना विनाशे शोष पामे मन सज्जननुं
तेनी पेरे सरोवरे शोषायुं तमाम छे;
निर्गुणे नरेशयोगे निष्फळ सुनीति बने
तेज मिषे वृक्षपर फळनुं न नाम छे;
दुष्टनीति जेम मति आवरी ले अज्ञतणी,
तृणतति तेम छाई रही ठाम ठाम छे.

अहिं वळी

(चोपाया.)

कुठारकेरा उग्र अर्णी-अग्रे विदारेल तरुवरनी
शाखानी चिःकारी शके सुर्णी कपोतमुख दुःखकरणी

---

१ लोकनां टोळेटोळां. २ राजा गुणरहित होवाने लोधे. ३ खड, घास, खसलीनो विस्तार–फेलाव. ४ कुहाडो. ५ धारना अग्रभागथी. ६ डाळो. ७ होलाना मुखे.

श्वासभर्यां, दाझी दिल दोहली दशा देखी दिलभरनी[1]
वींटी दीधज अहिये त्वचा[2] उतारी आ तनपरनी.

अने आम अरेरे ! आ वृक्षो केवां बेहाल देखाय छे !

(चोपायी.)

जीवजंतुए वींध्ये झरता जळरूपे आ वे' छे
आंसुडांना ओघ अधिक; वळी विच्छायज[3] वेषे छे;
अंतःशोष[4] दीसे अति; डूब्या दुःखसमुद्रविषे छे
तरु सौ; ए ते स्वामी वांसे स्मशानमार्गे शुं ले छे!

आ भाग्युंतूटचुं शिलातल पड्युं, ते उपर घडीक बेसुं. अवदशामां तो एवुंज आसन मळवुं होय. (बेशी हर्षनी गर्जना सांभळी)–अहो ! आ शुं, अत्यारे आ दुंदुभि गडगडे छे, शंखनाद संभळाय छे, ने हर्षनी गर्जना ऊठी रही छे !! अहा !

(हरिगीत.)

अति उग्रताए भेदी सद्यज ग्रहण-तत्पर[5] श्रवणने,
वळी पेट पण फोडी ग्रसंतां[6] भवननांय विपुलपणे,
दिग्वृंदना[7] विस्तारनो निस्तार[8] लेवाने शके,
वेगे गगनमंडळविषे आ अधिक अधिकज विस्तरे !

(विचार पूर्वक)–आहा, जाण्युं. आ तो **मलयकेतु** केद पकडायाथी राज–(एटलुं कही कचवाई अधवच शब्द फेरवी नांखी)–मौर्यपक्षमां प्रवर्तता आनंदनो कोळाहळ हशे. (सजळ नेत्रे) अरेरे ! अफसोस ! अफसोस !

(उपगीति.)

रिद्धि रिपुतणी दिनदिन सुनावी आ पकावियां श्रवणे;
वळी अहिं आणी बतावी, विधिये संतापियां नयने;

१ प्राणप्रिय, मित्रभूत. २ चामडी सापना शरीरनी, कांचळी. ३ विच्छाय=[1]छांयडा वगरनो;–[2]म्लान, निस्तेज. ४ अंतःशोष=[1]भीतरथी सुकाई जवुं;–[2]चित्तनी शोसना. ५ पकडवाने–सांभळवाने तैयार, एकदम आकर्षाई सांभळता. ६ ग्रास करता. ७ दिशाचक्र. ८ पार, ताग.

दीसे जरूर हवे तो ए आ विध अनुभवावी मने
अंतर विदारवानो प्रयत्न हा एहनो दुर्मोने

पुरुष (झाडने ओथेथी)—अहा ! अमात्य **राक्षस** विराज्या. ठीक, तो हवे हुं आर्य **चाणक्यनी** आज्ञा प्रमाणे करुं. (पछी **राक्षसने** जाणे दीठा नथी एम तेना सामां गळे फांसो नांखे छे.)

राक्षस (तेने तेम करतो जोई)—अरे ! आ माणस गळे फांसो खाय छे ! ए पण बिचारो मारी पेठे दुखियारो देखाय छे. लाव, एने पुछुं. (तेना प्रति)—अरे भाइ ! आ तुं शुं करे छे ?

पुरुष (सजळ नेत्रे)—आर्य ! प्राणसमान मित्र मरवानी अणी उपर छे, ते दुःखे हुं पिंड पाडुं छुं. अमारा जेवा दुखियारा हिणभाग्यजनथी बीजुं शुं बने ?

राक्षस (स्वगत)—में प्रथमथीज धार्युं हतुं जे आ कोइ बिचारो मारी पेठेज दुखियारो छे. (प्रगट)—हे भाइ ! हे संकटना सहोदर ! जो अति गुह्य के अति भारे न होय तो मने कहीश. हुं सांभळवा चाहुं छुं.

पुरुष—आर्य ! अति गुह्य के अति भारे नथी. तथापि, प्राणसमान मित्र मरवानी अणी उपर छे ए दुःखे कंइ कंइ थई जाय छे, जेथी कहेवावारे रहेवाय एम नथी.

राक्षस (निःश्वास मूकी स्वगत)—अफसोस ! अरेरे ! मित्रने माथे भारे आफत गुजरे छे ने अमे तो निष्ठुर[1] शून्यवत् जोया करिये छिये, तेने आथी केटलो ठपको !!! (प्रगट)—हे भाइ ! अति गुह्य के आति भारे न होय तो तो जरूर कहीश. हुं सांभळवा उत्सुक छुं.

पुरुष—आर्य ! तमारा अत्यंत आग्रह आगळ लाचार छुं, कहुं छुं. आ नगरमां शेठ **विष्णुदास** नामे एक झवेरी छे.

राक्षस (स्वगत)—**विष्णुदास** के **चंदनदासनो** मित्र—(प्रगट)—भाइ ! तेनुं शुं ?

पुरुष—ए मारो प्राण-समान मित्र—

---

१ कठोर हृदय छे जेनुं.

राक्षस (अधवच सहर्ष स्वगत)-अहा ! " मारो प्राणसमान मित्र " एवुं कह्युं ! ए तो अत्यंत निकट संबंध. हहा ! त्यारे **चंदनदास**नी एने कांइ खबर हशे. (प्रगट)-भाइ ! शुं तेनुं ?

पुरुष (सजळ नेत्रे)-ए हवणांज पोताना अलंकारादिक सउ पुण्यदानमां आपी देई जीवतो बळी मरवा नगरथी नीकळ्यो छे. तेना माठा समाचार काने न पडे एटलामां गळे फांसो खाई आ दुखियारा देहनो अंत आणवा आ उज्जडखंख वाडीमां हुं आव्यो छुं.

राक्षस–भाइ ! तारो मित्र शा माटे बळी मरे छे ?

(कवित.)

रीबे महा व्याधि शुं असाध्य सर्व औषधोए
रिपु थई लागी वपु[1] पूंठ [2]चिरकाल, के ?

पुरुष–ना रे ना–

राक्षस– विषशा कराळ[3] विकराळ[4] वन्हिझाळ[5] जेवा
रोषे नरनाथना थया शुं बूरा हाल छे !

पुरुष–आर्य ! ए शी वात ! शिव शिव शिव ! **चंद्रगुप्त**ना राज्यमां घातकी कृत्य केवुं ?

राक्षस– के शुं मोहकेरे कूप को अगम्य सुंदरीना
अंध थईने पडीने बन्यो छे बेहाल ए ?

पुरुष (कानमां आंगळियो घाली)–अररर ! ए शुं कह्युं ? एवा अविनयनो छांटोए एनामां नथी.

राक्षस– के शुं तुज पेठ तेनो मित्र मुखे मृत्युना छे
ऊगरे न एम, जेथी बळी मरे हाल ए ?

पुरुष–आहा–एज–एज–आर्य !

राक्षस (आवेग पूर्वक स्वगत)–हा....हा....सत्स्नेहना उत्कट आवेशथी

---

१ शरीरनी वांसे. २ लांबो वखत थयां. ३ उग्र. ४ अत्यंत भयंकर. ५ देवतानी झाळ.

मारा मनमां कांइ कांइ थइ जायछे; केमजे **चंदनदास** एनो प्राणसमान मित्र थाय, एटले तेज मृत्युना मुखमां हशे, जेथी करी ए बळी मरवा तत्पर थयेल छे. (प्रगट)–भाइ! ते मृत्युना मुखमां पडेला प्राणसमान मित्रनो, तथा तेना प्रतिनी प्रेमभक्तिये मरवा तत्पर थयेला ए **विष्णुदास**ना पवित्र चरित्रनो, सविस्तर वृत्तांत सांभळवा उत्कंठित छुं.

पुरुष–माराथी हवे रहेवातुं नथी. लाचार छुं. हुं हीनभाग्यथी मरणमां विघ्न नथी खमातुं.

राक्षस–अरे भाइ! एम कां सांभळवानी वात अधवच मूकी दे छे? कहे कहे.

पुरुष–अरे हवे शुं करवुं? लाचार! आ कही नांखु त्यारे. सांभळो आर्य!

राक्षस–भाइ! तत्परज छुं.

पुरुष–आ नगरमां शेठ **चंदनदास** करीने झवेरी छे.

राक्षस (विषाद पूर्वक स्वगत)–आ अमारां दुःखनां द्वार दैवे उघाड्यां! हृदय! स्थिर था, कंइक अधिक कारी घा तारे खमवा सरज्या छे. (प्रगट)–हा,–जे सत्पुरुष मित्रवत्सल रूपे विख्यात छे. तेनुं शुं वारुं?

पुरुष–ते ए **विष्णुदास**नो प्राणसमान मित्र,

राक्षस (स्वगत)–हा........! आ शोकवज्र, हृदय उपर कडकडतुं आवी पड्युं.

पुरुष–तेथी ए **विष्णुदासे** मित्रस्नेहने अनुरूपे[१] आजे **चंद्रगुप्त**ने प्रार्थना करी–

राक्षस–हें! कहे, शी वारुं?

पुरुष–के "महाराज! मारा घरमां कुटुंबना निभाव जोग जे कांइ द्रव्य छे ते ल्यो, अने मारा मित्र **चंदनदास**ने छोडो."

राक्षस (स्वगत)–धन्य छे! **विष्णुदास**! धन्य छे! शो अपूर्व मित्रस्नेह दर्शाव्यो छे! अहाहा!!!

---

१ मित्रस्नेहने अनुरूप=मित्राचारीने घटे–छाजे एवी.

(कवित.)

पुत्र माततातने हणे, ने माततात हणे
जे माटे पराया पेठ पेटनाज पुत्रने,
विसारीज सारी मित्राचारी वळी जेह सारुं
फंदथी फरेब देई मित्र हणे मित्रने,
एवो श्वासप्राण व्हालो अर्थ ते अनर्थ पठे
तजवा तयार थयो संकटे सुमित्रने
छतां वाणियाई तेए! अहो रूडा वाणिया तें
कर्यो अर्थ सारथक अत्र ने परत्र[1] ते!

(प्रगट)-भाइ! एणे एवी प्रार्थना करी, त्यारे पछी **मौर्ये** शुं कह्युं वारुं?

पुरुष–आर्य! पछी, ए रीते शेठ **विष्णुदासे** प्रार्थना करी त्यारे **चंद्रगुप्ते** उत्तर आप्यो जे "अमे पैसा सारुं नहि पण अमात्य **राक्षस**-ना कुटुंबने आश्रय आपी संताडी राखी बहु बहु कहेवामां आव्युं छतां ए मानतो नथी तेटला माटे एने केद कर्यो छे." पछी "ए माने अने आपे तो एने छोडवो, नहि तो परोवी देवो शूळिये" एम कहेतांक **चंदनदासने** शूळिये देवा वध्यस्थाने लेई जवा हूकुम कर्यो. आथी "प्राणसमान मित्र **चंदनदासना** माठा समाचार काने पडे ते पहेलां वळी मरवुं" एवा ठरावे **विष्णुदास** नगर छोडी नीकळ्यो. एटले हुं पण "**विष्णुदासनी** माठी खबर काने पडे ते पहेलां गळे फांसो खावो" एवा निश्चयथी आ उज्जडखंख वाडीमां आव्यो.

राक्षस–भाइ! **चंदनदासने** शूळिये देई दीधो तो नथी?

पुरुष–आर्य! आ एने शूळिये दे छे हवे. फरी फरीने हवणां पण तेने अमात्य **राक्षसनुं** कुटुंब आपी छूटवा कहे छे, पण ते मित्रवत्सल शेठियो नानी नाज कहे छे. एटले हुं पण आ अविलंबे[2] आवरदानो अंत आणुं छुं.

---

१ अत्र ने परत्र=आ दुनियांमां अने पेली दुनियांमां, उभय लोकमां. २ सत्वर.

રાક્ષસ (સહર્ષ સ્વગત)-ધન્ય છે ! મિત્ર **ચંદનદાસ** ! ધન્ય છે !

(આર્યા.)

કરી ધર્મ ધારી રક્ષા મિત્રકુટુંબની વિદૂર મિત્ર છતાં
શરણ લહી **શિબિ** સમ તેં અક્ષય યશ જમવિયો અહહા !!!

(પ્રગટ)-ભાઇ ! જા જા ઝટપટ હવણાં ને હવણાં, **વિષ્ણુદાસ**ને બળી મરતો અટકાવ. હું પણ આ જઈને **ચંદનદાસ**ને મોતથી મુકાવું છું.

પુરુષ—અહો—પણ આપ શી રીતે **ચંદનદાસ**ને મોતથી મુકાવશો ?

રાક્ષસ (ખડ્ગ ખેંચી)-આ સાહસના સાથી સમશેરથી. જો

(કવિત.)

જળે ભર્યા જળદના મંડળથી છવાયેલા
અસમાનના સમાન સોહે ઘનઘોર જે,
ટીપે ચૂતા પાણિયે કરીને શુભ્ર સોહે શકે
જંગરંગના તરંગે રોમાંચિત ઓર જે,
જેનું રિપુમંડળે પ્રચંડ પરાક્રમે કરી
યુદ્ધની કસોટીમાંહી જોયું ઝાઝું જોર છે,
તે આ ભુજદંડનો સુમિત્ર ખડ્ગ ચંડે પ્રેરે
મિત્રસ્નેહે વ્યાકુળાને સાહસે સામે મુખે.

પુરુષ—આર્ય ! શેઠ **ચંદનદાસ**ને જીવિતદાન આપવા આપને તત્પર જોઉં છું, તેથી સહજ ભાસ થાય છે; તો પણ આવી વિષમ દશામાં આપને દેખું છું તેથી મનનો નિશ્ચય થતો નથી. અહો ! શું ત્યારે હું સદ્ભાગ્યે આ શુભનામી અમાત્ય **રાક્ષસ**ને મારી નજરે જોઉં છું !—(એમ કહેતાં પગે પડે છે.)

રાક્ષસ—ઊઠ, ઊઠ, ભાઇ ! વિલંબ કરવાની આ વેળા નથી. **વિષ્ણુદાસ**ને કહે જે "**રાક્ષસ ચંદનદાસ**ને આ મોતથી મુકાવે છે." (એમ કહી ઉઘાડી તરવારે ઉપરનું કવિત બોલતો પરિક્રમણ કરે છે.)

---

૧ નાશ ન પામે એવો. ૨ આકાશ. ૩ તીક્ષ્ણતા. ૪ યુદ્ધનો ખેલ, રણસંગ્રામની ગંમત. ૫ ભયંકર.

पुरुष—(अधूरुं मूकेलुं वाक्य पूरुं करतां)—माटे कृपा करिये ने मारो संदेह टाळिये आर्य !

राक्षस—हा भाइ ! तेज हुं अनार्य बदनामी **राक्षस**, जेणे स्वामीनुं निकंदन थतुं जोई रही, मित्रने दुःखना दावानळमां झुकावी देई **राक्षस** नाम सार्थक कर्युं.

पुरुष (सहर्ष पुनः पगे पडी)—अहाहा !!! अहाहा !!! मोटुं भाग्य मारुं जे आपनां दर्शन थयां ! पण अहो अमात्यजी ! एक वाते कृपा कीजिये. पहेलां दुरात्मा **चंद्रगुप्ते** आर्य **शकटदासने** शूळिये देवा आज्ञा करी हती. तेने वधस्थाने लेई जई शूळिये देता हता, तेवामां कोइक तेने लेई देशांतर नाठो ते हवे हाथ आवशे. तेथी **चंद्रगुप्ते शकटदास** उपरनो उग्र रोष माराओ उपर काढी, " शा माटे गफलत करी ? " एम कही, तेमने शूळिये चढावी दीधा. त्यारथी माराओ वखते कोइपण हथियारबंद माणस आगळ के पाछळ जुअे छे के पोताना प्राण बचाववा सावध रही वध्यने तुरतज पूरो करी देछे. आथी करीने, अमात्यश्री हथियारबंद पधारशो, तो शेठ **चंदनदासनो** अंत उलटो वहेलो आवशे. (एम कही जाय छे.)

राक्षस (स्वगत)—अहो ! दुरात्मा **चाणक्यनो** नीतिप्रपंच महा दुर्बोध छे !

(हरिगीत.)

जो **शकटने** छळभेद रमवा आणियो अरिये सही
तो क्यमज माराने हण्या अति रोष अंतरमां लही ?
ने तेम जो नज होय तो क्यम **शकट** मुजमित्रज थई
ते कपटलेख घडे कुडो ? मन मुझाये न सूझे कंइ.

(विचारपूर्वक)—

(कवित्त.)

शस्त्रबळ दाखवानी वेळा आ नथीज, मारा
शस्त्रधारी जोई वे'लो वध्यने पूरो करे छे;

नथीज नथीज सामदानआदी नीतिनोए
समय आ, ए तो फळ काळे केटले फळे छे;
जोई रे'वुं ए न जोइयेज मारे छांयडे ए
ऊभो रही मित्र मुज माटे कमोते मरे छे;
हां..हां..जाण्युं प्राणाधिक ए सुमित्रकाज आज
अर्पवुं शरीर जेणे अर्थ सर्वथा सरे ए.

(जाय छे.)

इति जीर्णोद्यानं[1] नाम षष्ठोऽङ्कः ॥

---

१ जूनी वाडीनो वृत्तांत ज्यां वर्णव्यो छे ते.

मुद्राराक्षस नाटक.

अंक ७.

(एक तरफथी लोकनां टोळांने खशेडतो चंडाळ **वज्रलोम** प्रवेश करे छे.)

वज्रलोम—खसो ! खसो ! कोरे थाओ के !

(दुहा.)

जो तन धन कुळकीर्ति ने कुटुंबकुशळ चाहो
तो दूर रायनुं परहरो अरिष्ट दुःखदरियाव !

केमजे

अरिष्टथी निज देहना व्याधिज थई कदी थाय,
के बहु बहु तो छेवटे जन निज जानथी जाय;
पण राजानुं अरिष्ट तो सबळ उपावी शूळ,
पलकजमहिं कुळ विपुळ पण सकळ करे निर्मूळ.

जो ते तमारा मानवामां न आवतुं होय, तो जुओ !—आ राजद्रोही शेठ **चंदनदास** बैरां छोकरां साथे आवे—एने शूळिये देवा वध्यस्थाने लेई जइये छिये. (आकाश तर्फ नजर करी)—शुं कहो छो मोटा ?—"एने छूटवानी कोइ बारी छे ?" होवे मोटा ! ए जो अमात्य **राक्षसनां** बायडी छोकरां दे तो छूटे. (पुनः आकाश तर्फ दृष्टि करी)—शुं कहो छो वळी ?—"ए शरणे आवेलानो बेली छे, ते पोताना मात्र प्राण सारुं एवुं हीणुं काम करे नहि." त्यारे तो मोटा ! एना बुरा हाल एज. एनी छूटवानी बारीना विचार केवा ?

(एवे शूळी खभे छे ने पत्नी पुत्र पुंठे छे एवो **चंदनदास** वध्य वेषे प्रवेश करे छे; तेनी पाछळ चंडाळ **बिल्वपत्र** छे.)

---

१ माठुं, खोटुं. २ उत्पन्न करी.

चंदनदास (सजळ नेत्रे)-अफसोस ! कृतांतने[1] नमस्कार हो ! अमारा जेवा, रखेने कांइ लांछन लागे एम अंतरमां निरंतर बिहीता रहेता पुरुषने पण चोरने मोते मरवा वारो आव्यो ? अथवा निर्दयने मनतो तटस्थ अने बीजामां फेरज नथी. हहा !

(आर्या.)

आग्रह आ ते केवो पारधिनो ? रांक के हणे हरणां,
मांसमात्र परिहरी जे मरणभये चरी रहे तरणां !

(आसपास नजर नांखी)-अहो प्रियमित्र **विष्णुदास** ! शुं मने उत्तर सरखोए नथी आपतो ? अथवा आवी वेळाये दृष्टि आगळे रहे एवा पुरुषे दुर्लभ ! (पुनः सजळ नेत्रे)-आ अमारा स्नेहियो शोकना आवेशथी दयामणे झोडे, अश्रुपातनी[2] जाणे अंजळि आपी महाप्रयत्ने पाछा वळता, आंसुए उभराती दृष्टिये अनुसरे ! (एम कहेतो परिक्रमण करे छे.)

बिल्वपत्र–शेठिया **चंदणदाह** ! आ शूळिये देवानी जागा आवी. हवे घरनां ने विदा कर के.

चंदनदास–प्रिय पत्नी ! हवे आ बाळकने लेई पाछां वळो. हवे विशेष पुंठे आववुं योग्य नथी.

पत्नी (आंसु भरी आंखे)–स्वामिनाथ ! आप परदेश नहि पण परलोक सिधावो छो.

चंदनदास–सुंदरी ! मित्रकार्यथी मारुं मोत थाय छे; पुरुष दोषथी नथी थतुं. माटे शोच मां करो.

पत्नी–एम छे तो कुळस्त्रिये[3] आ वेळाए वळी जवुं होयज नहि.

चंदनदास–सुंदरी ! तमे शुं करवा मागो छो ?

पत्नी–स्वामिनाथना पगले पळी कृतार्थ थवाय एज.

चंदनदास–सुंदरी ! ए ठीक नहि. आ बाळके हजु दुनियां श्रवणे सांभळीए नथी. ए तमारे खोळे छे.

---

१ यमराजा. २ आंसु पाडवां ते. ३ कुलीन–पतिव्रता स्त्री.

पत्नी (बालकने माथे हाथ फेरवती)–परम कृपाळु देवताओने खोळे हो-ए ! वहाला बाळका ! तारा पिता परलोक सिधावे छे, तेमने छेलवहेला प्रणाम करी ले.

पुत्र (पगे पडी)–बापा ! तम विहोणां मारे शुं करवुं ?

चंदनदास–बापु ! ज्यां **चाणक्यनुं** नामे न संभळाय त्यां जई रहेवुं.

बिल्वपत्र–शेठिया **चंदणदाह** ! आ हूळी तो ऊभी करी. थाई जा तयार.

पत्नी–हाय हाय रे ! मारी नांखे छे ! कोइ धाओ रे !

चंदनदास–अरे ! आम वेलां शुं काढो छो ? परिजनने दुःखी देखी दिले दाझे एवा देवश्री जे **नंद** ते तो अहा ! स्वर्गे सिधावी गया ! हवे कां खाली आक्रंद करो छो ? वळी कांइ अयुक्तकार्यथी नहि पण मित्रकार्यथी मारुं मोत थाय छे. तो पछी खुशी थवाने बदले आम शोच करो छो शाने ?*

वज्रलोम–अल्या **बिल्लपत्ता** ! साह के **चंदनदासने**. जाशे एना घरनां एनी मेळे.

बिल्वपत्र–हा'ल्या **वज्जरलोमा** ! आ हायो.

चंदनदास–भाइ ! एक पळ वार रहे. हुं पुत्रने भेटी लेउं. (पुत्रने भेटी माथे सुंघी) बापु ! अमथुं ए मरवुं निर्मित छतां हुं मित्रकार्य करतां मरुं छुं.

पुत्र–बापा ! ए ए कहेवुं जरूर छे शुं ? ए तो आपणो कुळधर्म छे. (एम कही पगे पडे छे.)

वज्रलोम (पोते पकडवा जतां बीजा प्रति)–अल्या ! साह के एने, साह के हवे !

(बेउ **चंदनदासने** पकडी शूळिये देवानुं करे छे.)

---

* जुओ हितोपदेश ३. १३९.

भवेऽस्मिन् पवनोद्भ्रान्तवीचिविभ्रमभङ्गुरे ।
जायते पुण्ययोगेन परार्थे जीवितव्ययः ॥

पत्नी (छाती कूटी नांखती)–हाय हाय रे ! कोइ धाओ रे ! मारी नांखे छे ! कोइ धाओ रे !

(एवे पडदो खशेडी नांखी **राक्षस** एकदम प्रवेश करे छे.)

राक्षस–बाइ ! बिहो मां. रे रे घातको ! **चंदनदास**ने मारशो मां. ए यमपाशरूप वधमाळा मारे कंठे पहेरावो, जेणे

(हरिगीत.)

रिपुवृंदसम स्वामिकुटुंबनुं निकंदन थतुं पेखियुं,
उत्सव पठे रही स्वस्थ संकट स्नेहीनुंय उवेखियुं,
जेणे वळी चंडाळकर मरवा, विडंबन वेठियुं,
बहु बहुज, तोये जीवन हीणुं प्रिय अधिक उर लेखियुं.

चंदनदास (जळभरी आंखे जोतो)–अमात्य ! आ शुं ?

राक्षस–कांइ नहि, तारां रूडां चरित्रनी लेशमात्र नकल.

चंदनदास–अमात्य ! आ सर्व प्रयास निष्फळ कर्यो !!! ए शुं कर्युं तमे ?

राक्षस–मित्र ! में मारो स्वार्थ साचव्यो छे. बस बस, ठपको रहेवा दे तारो. अहो भाइ ! दुरात्मा **चाणक्य**ने कहे जे—

वज्रलोम–शुं जे ?

राक्षस–

(कवित.)

पापियोना पर्वरूप कूडा कळिकाळमां आ
बीजाने बचावी बरजान्हम जतांय जान
जेणे ज्ञातकार जशे शिबिनो सुकीर्तिमेर
जीर्ण-जाजरो करी विसारे पाड्यो सर्व स्थान,
जे महानुभावे वळी झांखां पाडियां पवित्र
कृत्यथी सुचित्र सौ चरित्र बुद्धनां महान,
एवा आ सुपूज्यने तुं वध्य करी शूळिये
चढावे जेने काजे आजे, ते हुं आ रह्यो निदानें.

१ मारा. २ परिभव, तिरस्कार, फजेती. ३ उत्सवना प्रसंग रूप. ४ कीर्त्तिनो मेरु. ५ नक्की.

वज्रलोम—अल्या **बिल्लपत्ता** ! **चंदनदास**ने लेईने तुं पेला मशाणना झाडनी छाये घडीक थोभ, के हुं आर्य **चाणक्य**ने जाहेर करुं जे अमात्य **राक्षस** पोते झलाया छे.

बिल्वपत्र—हा के **वज्जरलोमा** ! आ चाल्यो हुं तो तुंए जा के !
(एम कही **चंदनदास**ने लेईने बतावेले ठेकाणे जाय छे. तेनी पाछळ **चंदनदास**नां पत्नीपुत्र पण जाय छे.)

वज्रलोम—हालो, अमात्य, हालो. (**राक्षस** साथे परिक्रमण करी)—ए........छे के कोइ ! नंदकुळना पहाडना वज्जररूपे चूरेचूरा करी नांखी **मौर्य**कुळने स्थिर करी स्थापनार पूज्य **चाणक्य**ने कहो जे—

राक्षस—(स्वगत)—अरे ! आ पण मारे काने सांभळवुं ?

वज्रलोम—आर्यनी नीतिनी जाळमां प्रज्ञा अने पौरुष जेनां झलाई गयां ते आ अमात्य **राक्षस** पकडाया छे.

(एवे पडदा पाछळ म्हो शिवाय जेनुं सउ अंग ढंकायलुं छे एवो **चाणक्य** प्रवेश करे छे.)

चाणक्य—अहो भाइ !

(हरिगीत.)

कोणे कुटिल[1] ज्वाळावळीवलये[2] जटिल[3] आ, अंचळे
जाज्वल्यमान[4] झील्यो अनळ[5] उच्चंड[6] अव मँहीमंडळे[7] ?
ने निरंतर विचरंत स्वच्छंदे निरंत[8] दिगंतरे[9]
आ पवन ते कोणे कर्यो गतिरहित ग्रही पाँशांतरे[10] ?
कोणे मतंगजवृंदना मदगंधथी आ, केशने
मे'कावतो . मृगराज पूर्यो पंजरे भैडवेश[11] ? ने
कोणे, अनर्गळ तिमिंगळना चळ कुळे[12] उछळंत जे
आ भयंकर सागर, युगल कर[13] तरी दीध दुरंत[14] ते ?

---

१ वक्र. २ ज्वाळानी हारनी हारना जूथथी. ३ युक्त. ४ भभुकतो. ५ अग्नि. ६ उग्र, भयंकर. ७ पृथ्वीउपर. ८ अंत रहित. ९ दिशामां. १० पाशमां—पाशथी. ११ उग्र स्वरूपनो. १२ चळ कुळे=आनथी तेम पछाडा मारतां टोळांए. १३ युगल कर=बे हाथथीज. १४ दुस्तर, जेना पार ऊतरवुं मुश्केल छे ते.

वज्रलोम–नीतिनिपुण आर्येज.

चाणक्य–नहि नाहि, " **नंदकुळना द्वेषी दैवे** " एम कहेवुं घटे छे.

राक्षस (स्वगत)–आ दुरात्मा–अथवा ना ना–महात्मा **कौटिल्य** !

(दुहा.)

अगणित रत्ने ऊजळा सागरकेरीं समान,
विद्या सकळतणो निधि सोहे ए सुमहान !
एना गुण गरवा प्रति नगणुं दीसे जेह,
मत्सरथी बन्युं आंधळुं मन एम लहिये एह.

चाणक्य (जोई सहर्ष स्वगत)–अहो ! आज ते महात्मा अमात्य **राक्षस** !–

(आर्यागीति.)

संतत सजाईकेश आयासे ने उजागरे दिनरेणे
मौर्यतणी सेना ने अतिषय संतापी मुज बुद्धिए जेणे !

(पडदो हाथथी खशेडी पासे जई प्रगट)–अहो अमात्य **राक्षस** ! नमस्कार **विष्णुगुप्त**ना.

राक्षस (स्वगत)–हहा ! 'अमात्य' पद हावां लजामणुं छे ! (प्रगट)–अहो **विष्णुगुप्त** ! अळगा रहो. जो जो, हुं चंडाळना स्पर्शथी दूषित छुं.

चाणक्य–अमात्य **राक्षस** ! आ चंडाळ नथी. आ तो राजसेवक–तमारो जोयेलो–**सिद्धार्थक**ज छे. आ जे बीजो छे, ते पण राजसेवक **समिद्धार्थक** छे. वळी पेलो कपटलेख ते बिचारा **शकटदास** पासे एना अजाणतां लखावराव्यो हतो ते पण मेंज. ए—

राक्षस (स्वगत)–अहा ! भला भगवान ! **शकटदास** उपरनो वहेम दूर थयो.

चाणक्य–अने बीजुं शुं शुं कहुं ? टूंकामां हे महावीर !

---

१ आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, अने दंडनीति ए चार अर्थ शास्त्रमां कहेली विद्याओ. २ जेथी कोइनी मोटाई देखी न खमाय ते दुर्गुण. ३ निरंतर.

(कवित.)

भद्रभट आदि भड वीरने भगावी भेळ्या
तेय, ने लखावी कूडो लेख जे लगाव्यो ते,
सेवा सौ सजावीने सिद्धार्थक फगाव्यो ते, ने
दागीनानो दाबडो जे दगाथी ओढाव्यो ते,
स्नेह संधावी कपट कळाव्यो भदंत ते, ने
जन जे उज्जडखंख वाडीमां मिलाव्यो ते,
शूळिये अणाव्यो वळी शेठियो ते,—खेल सौ में
(एटलुं कहेतां सलज्ज जणातो पुनः)
मौर्य शुं संयोग तम सजावा उठाव्यो ए !

माटे आ मौर्य तमने मळवा आवे.

राक्षस (स्वगत)—शुं करवुं ? लाचार ! मळवुंज !

(एवे परिजन साथे राजा **चंद्रगुप्त** प्रवेश करे छे.)

चंद्रगुप्त (स्वगत)—अहा ! शस्त्र सरखुं वावर्या वगर आर्ये दुर्जय शत्रु बळ जीत्युं तेथी हुं अंतरमां लजवाउं छुं. खरेज आ—

(दुहा.)

फळ्ये विजय फळ अन्यथा विधियोगे भली भात
विलक्षता प्रगटज पूरी दाखंतो शरसाथ,
नार्मा शके शिर शोचमां रही अधोमुख आप
भाथामांहि पुराइ उर अधिकज लहे अदाप.

अथवा

(औपच्छंदसिक.)

सउनेय समर्थ जीतवाने जगमां तेह कश्या विना कमाने
मुज माफक, जेहने सुतांए गुरु खंते सउ वात जागता रे'

(**चाणक्यनी** पासे जई)—आर्य ! नमस्कार **चंद्रगुप्तना**.

---

१ योज्यो, ओठव्यो. २ प्रपंच खेल रमवा, तमने फगवा प्रेरित कर्यो. ३ माथे मार्यो, वळगाड्यो. ४ जैन साधु. ५ विलक्षता=लक्ष (=निशान चोट) शून्य होवापणुं; शरमिंदपणुं. ६ बाणनो समुदाय. ७ नीचे म्होए. ८ दुःख, संताप, परिताप.

चाणक्य–वृषल! अमात्य सर्वे आशिष तारे सफळ थई, आ जो **राक्षस** तारा पिताना वाराना परंपरागत मुख्य अमात्य, एओने वंदन कर.

राक्षस (स्वगत)–योज्यो एणे संबंध.

चंद्रगुप्त (राक्षसनी पासे जई)–आर्य! नमस्कार चंद्रगुप्तना.

राक्षस (जोई स्वगत)–अहो! चंद्रगुप्त!

(अनुष्टुप्.)

दाखवी उन्नति[1] भावी बाल्यावस्थाथकीज जे
पो'च्यो यूथपति[2] पेठे सार्वभौम पदे[3] क्रमे!

(प्रगट)–राजन्! विजय हो!

चंद्रगुप्त–आर्य!

(हरिगीत.)

अति अटपटी नीतितणी गति गहन जेह खरेखरी,
खटपटतणी ते खटक खंतथकी अपट चित्ते धरी
सउ कार्यमां गुरुवर्य उभयज आर्य जागृत छो जहिं;
तहिं विजयकेरी न्यूनता मुजने कशी महींतळमहिं?

राक्षस (स्वगत)–आह! आ कौटिल्यशिष्य मने स्वसेवक रूपे पेखे छे! अथवा ना ना, ए तो चंद्रगुप्तनो शुद्ध विनयज छे, जेने हुं मत्सरथी उलटो लेखुं छुं. चाणक्य जे सर्वथा फावी यशस्वी थयो ते बराबर, घटे छे. केमजे

(आर्या.)

विवेकी ने विजयेच्छु पात्र छतां मंद मंत्री पण विश्वे
पूरण मान प्रतिष्ठा पामे सद्योगथी निश्चे.
पण ते कुपात्रकेरा प्रसंगमां प्रवीण पूर्ण पुरुषवरे
नदीतटना तरुवरवत् थाये खाली खुवार खरे.

चाणक्य–अमात्य राक्षस! चंदनदासने जीवाडवो छे?

---

१ उन्नति='महत्ता, अभ्युदय;–' कदमां उंचाइ. २ हाथीना टोळानो आगुओ हाथी. ३ सर्वोपरि राजानी पदविये.

राक्षस–**विष्णुगुप्त** ! एमां शो संदेह ?

चाणक्य–अमात्य **राक्षस** ! विनाशस्त्रे[1] तमे **चंद्रगुप्त** उपर अनुग्रह कर्योछे, एटलो संदेह. माटे **चंदनदासने** जीवाडवो होय तो आ खड्ग लीजिये ने जीवाडिये !

राक्षस–नहि नहि, **विष्णुगुप्त**, एम नहि, ए खड्ग–अने ते ए तमे धारण करेलुं जे–ते हुं धारण करवा योग्य नथी.

चाणक्य–**राक्षस** ! हुं योग्य ने तमे योग्य नहि, एम शा माटे ?

(कवित.)

लगाम लगावी ने लगाव्यां सौ पलाण रह्ये
पेखो प्रौढ पाखरिया बन्या हाडमाळ आ !
पेखो वळी–कश्या ने कश्या रह्याथी पीठ सौ
सुजी गई छे जेनी एवा मेगेळ[2] बेहाल आ–
खान पान स्नाननुं दीसे न दिनरेण भान
चेन सुखशेन भणी भूल्या छे ए माळवा !
दीपे ए प्रताप आपना अमाप पौरुषनो[3],
मैत्तवैरिवृंदमदमर्दन[4] विशाळ आ !

अथवा लांबी–टूंकी वात शाने ? तमे शस्त्र ग्रहण कर्या विना **चंदनदास** छूटनार नथी.

राक्षस (स्वगत)–

(कवित.)

नेह **नंद** रायकेरो भारी उभराई आवे
उरे, ने अरेरे ! अरिसेवा में स्वीकारवी आ !
हाथथी परंतु पेरे उछेर्यां अरेरे ! ते . ते
वृक्ष अडाबीड वधी सर्व कोइ भागी पड्यां !

---

१ अमात्यना होद्दामां धारण करवानुं जे शस्त्र ते धारण कर्याविना. २ मद झरता हाथी. ३ पराक्रम. ४ महामस्त शत्रुनां टोळांनो मद उतारनार.

अने एक मित्र—ते ए मृत्युना मुखे छे हावां—
एना रक्षणार्थ समशेर सद्य धारवी आ!
कार्यगति केवळ अनेरी छे! [1]विरंचिनुं ए
चाले नहि कांइ पछी कोणमात्र मानवी त्यां!

(प्रगट)—**विष्णुगुप्त** ! वारुं !—मित्रस्नेह प्रबळ छे—नमस्कार हो तेने ! तेमे तैयार छुं,—ते जे कहे ते कबूल.

चाणक्य (सहर्ष **राक्षसने** शस्त्र अर्पी)-**वृषल** ! **वृषल**! अमात्य **राक्षसे** हावां शस्त्र ग्रही तारापर अनुग्रह कर्यो. तारुं भाग्य तपे छे !

चंद्रगुप्त—आर्यनी कृपाप्रसादी आ **चंद्रगुप्त** अनुभवे छे[2]

(एवे एक पुरुष एकदम प्रवेश करे छे.)

पुरुष—जय जय ! आर्य ! आ **भद्रभट, भागुरायण** आदिये हाथे पगे डसकलां दीधां छे एवो **मलयकेतु** द्वारे खडो छे. एना संबंधमां जेवी आर्यनी आज्ञा !

चाणक्य—भाइ ! अमात्य **राक्षसने** निवेदन कर. सउ कांइ एओ जाणे हवे.

राक्षस (स्वगत)—हा—हा ! **कौटिल्य** दास बनावी हवे मारे म्होडे विज्ञापना पण करावे छे ! लाचार ! (प्रगट)—राजन् **चंद्रगुप्त** ! तारी जाणमांज छे जे केटलोक काळ हुं ए **मलयकेतुना** आश्रये रह्यो हतो. माटे एने जीवतो मेलवो.

(**चंद्रगुप्त चाणक्यना** म्हो सामुं जुए छे.)

चाणक्य—**वृषल** ! अमात्य **राक्षसनो** आ प्रथम प्रणय मान्य करवो घटे छे. (पुरुष प्रति)—भाइ ! अमारुं नाम देई **भद्रभट** आदिने कहे जे " अमात्य **राक्षसनी** विज्ञापना उपरथी देवश्री **चंद्रगुप्त मलयकेतुने** मात्र एना बापनुं राज्य पाछुं सोंपे छे. माटे जाओ तमे एनी साथे. ए गादिए बेठापछी पाछा वळी आववुं."

---

१ विधाता, ब्रह्मा. २ अमात्य राक्षसे जे आ कृपा करी छे ते हुं समजुं छुं.

पुरुष—जेवी आर्यनी आज्ञा. (जवा मांडे छे.)

चाणक्य—भाइ ! रहे रहेः—वळी दुर्गपाळ **विजयपाळ**ने कहेवुं जे अमात्य **राक्षसे शस्त्र ग्रहण** कर्याथी परम प्रसंन थयेल देवश्री **चंद्रगुप्त**नी आज्ञा छे के ' आ जे शेठ **चंदनदास** छे तेने जगतशेठनी पदविये चढाववो,—वळी हाथी-घोडा शिवाय सउने बंधनथी मुक्त करवा. ' अथवा अमात्य **राक्षस** सरखा धुरंधर मंत्री छतां हवे हाथी-घोडानोए शो अर्थ छे ? माटे

(दुहो.)

'हय हाथी सह सर्वनां छेदो बंधन छेक;'
पण पूर्ये रे' बंधने शिखाज आ मुज एक.

पुरुष—जेवी आर्यनी आज्ञा. (जाय छे.)

चाणक्य—राजन् **चंद्रगुप्त** ! अमात्य **राक्षस** ! कहो शुं तमारुं वळी अधिक प्रिय करुं ?

चंद्रगुप्त—शुं हजुए प्रिय करवुं कांइ बाकी छे ?

(उपगीति.)

राक्षस साथ सजावी मैत्री, थिर थापियुं राज्ये,
निर्मूळज नव **नंदो** करिया, रह्युं बाकी शुं आजे ?

राक्षस(**चाणक्य**नी उक्तिना उत्तरमां)—तथापि आ [1]भरतवाक्य सफळ हो !

(कवित.)

प्रलये प्रभुए पंडे [2]वराह रूपे प्रचंडे
दंतुडीनी अणीतणी धारे हती धारी आ,
पाछी तेनी ते [3]धरा आ म्लेच्छना मोजाए महा
रेलाई रोळाई हावां रही हती भारी हा !
छे ते हवणांज प्रौढ [4]पार्थिवेन्द्ररूप धारी

---

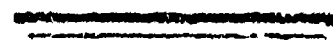
१ नटनी उक्ति. २ वराह अवतार लेई. ३ पृथ्वी. ४ राजाओना राजानुं प्रौढ रूप धारण करी.

प्रभुए [1]उद्दंड भुजादंडथी उद्धारी आ;
एवा देवनाए अधिदेव आ [2]अवंतिवर्मा
सर्वना सुखार्थ रहो धरा [3]ध्रुव धारी आ!

(सर्वे जाय छे.)

इति [4]राक्षसोपग्रहो नाम सप्तमोऽङ्कः ॥

समाप्तं चेदं श्रीमद्विशाखदत्तविरचितं
मुद्राराक्षसं नाम नाटकम् ॥



---

१ उग्र, प्रचंड. २ कविने आश्रय आपनार राजा; जुओ प्रस्तावनामां आपेली हकीकत. ३ स्थिर. ४ ज्यां **राक्षसने** प्रतिकूळ मिटावी अनुकूळ कर्यो छे ते.

मुद्राराक्षस नाटक.

व्याख्यान.

अंक १. पृष्ठ—१ पंक्ति—७–१०.

जटामंडळमांथी **गंगानी** प्रसंन मुखाकृति झळकती जोई शोक्यनी सहज ई-र्ष्याथी **पार्वती शंकर** प्रति पूछे छेः— 'अहो! आ कोण भाग्यवती तमारे ए माथे विराजे छे?' त्यारे **शिवजी** छळथी जटामांनी इंदुलेखाविषे प्रश्न मानी कहे छे जे 'आ तो शशिकळा छे.' त्यारे **पार्वती** उथलावी पूछे छेः— 'शुं एज—शशिकळा एनुं–जटामंडळमांनी स्त्रीनुं नाम छे?' **शिवजी** तो चंद्रनेज उद्देशीने तेनो उत्तर आपे छे जे 'हा हा, एज एनुं नाम छे, जाणतां छतां क्यम वीसरी गयां वारुं?' त्यारे **शिवजीना** प्रपंचवाक्यथी चीडाई जई **पार्वती** कहे छेः— अरे हुं जटामंडळमांनी स्त्री प्रति (=स्त्री संबंधी) पूछुं छुं, चंदा प्रति नथी...' एटलुं अडधुंपडधुं कह्युं न कह्युं ने **शिवजी** प्रश्नज उडावी देवानो अवसर जोई उत्तर वाळे छे जे 'हां, एम! तमे चंद्रने पूछवा नथी चहातां! तो रह्युं. भले! स्त्रीव्यक्तिने तमे पूछवा इच्छतां हो तो तमारी सखी **विजयाने** जे पूछवुं होय ते पूछो' ए रीते **गौरीथी गंगाने** छळथी छुपवता **शंकर** तमने सुखदायी हो.

'स्त्रिव्यक्ति धारीने तमे भुलावो खाधो होय ने स्त्रीव्यक्तिनेज तमारे कांइ पूछवुं होय तो आ तो चंद्र–पुंव्यक्ति छे, माटे तमारी सखी **विजया** छे तेने पूछवुं होय ते पूछो' एम करी **शिवजी** प्रश्नावकाशज बंध करे छे. अलंकार वक्रोक्ति.

अहिं काव्यार्थनुं सूक्ष्म सूचन पण छे. **शंकरनी** जटामां विराजता चंद्रनो नामराशि जे **मौर्य चंद्र** तेनी राजलक्ष्मीनुं पृथ्वीने सुखरूप (शंभु) जे **चाणक्य** ते पोतानी वक्र–कुटिल नीतिवडे ईर्ष्यावेशथी उकळता **राक्षसनी** ऋजु नीतिथी रक्षण करे एवो गूढार्थ नीकळे छे.

पंक्ति—१३–१६.

पुमः वस्तुध्वनिगर्भित मंगळाचरणे कवि नाट्यविद्याना अधिष्ठाता **शंकर** भगवाननुं स्तवन करे छे. **'त्रिपुरासुर** मरायो त्यारे हर्षमां स्तुति करता देवोनी साथे नाचता **शंकर** तमारुं रक्षण करो!' श्लोकना पहेलां त्रण चरणे तांडव नृत्य करतां **शंकर** भगवाननी भौतिक सृष्टि प्रति दयार्द्र कल्याणकारक वृत्ति चितरी छे.

नंदोनो विध्वंस करी प्रतिज्ञा पार उतरेला **चाणक्यनो राक्षसना** संग्रहणार्थ अवघडता भरेलो प्रयास आ श्लोके सूचव्यो छे.

पृष्ठ—२ पंक्ति—२–६.

अहिं अलंकार दृष्टांत गर्भित अप्रस्तुत प्रशंसा छे. आ प्ररोचना नामे प्रस्तावनानुं अंग छे. तेनुं लक्षणः—

सभ्यानामुन्मुखीकारः प्रशंसात प्ररोचना ।

पंक्ति—१९–२२.

यज्ञयागादिक धर्मकृत्य स्त्री साथेज थाय छे. पैसो पण घरवहीवटमां करकसरथी स्त्रीथीज बचे छे. सर्वे मोजमझा पण स्त्रीने अंगेज छे. घर ऊभुं रहे छे तेपण स्त्रीथीज. हरेक खांचखुचमां तथा गुंचवणमां जुक्ति जाणनारी, सलाह आपनारी, उपाय योजनारी पण तेज छे. टूंकामां स्त्री ते घरवहीवट(भवननीति)नी साक्षात् **विद्या-सरस्वती**ज छे. एज गृहतंत्रमां आचार्यरूप छे. आवी पोतानी स्त्रीने सूत्रधार राजनीतिना आचार्य **चाणक्य**नी गहन खटपट जेमां चितरी छे एवुं आ नाटक भजववां मददमां अन्य प्रसंग कल्पी बोलावे छे. राजनीतिनी **विद्या** पण धर्म, अर्थ, अने काम, ए त्रिवर्गनी साधनारीछे; वळी ते लोकस्थिति–लोकमर्यादानो आधार छे. साम, दान, भेद, अने दंड ए उपायनी योजना (जुक्ति) जाणे छे; अने संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध, तथा संश्रय ए छ गुणनुं अगार-घरछे. आ श्लोकथी **कौटिल्य**नी नीतिनी गूढ प्रशंसा करी छे. नीतिशास्त्रनी एकदेशी आवा प्रकारनी प्रशंसा सारुं जुओ वळी **शुक्रनीति**नो नीचे आपेलो श्लोकः—

सर्वोपकारकं लोकस्थितिकृन्नीतिशास्त्रकम् ।
धर्मार्थकाममूलं हि स्मृतं मोक्षप्रदं तथा ॥ शु. नी. १–५.

पृष्ठ—३ पंक्ति—२–११.

सूत्रधार अने नटीना आ संभाषणमां नाट्यवस्तुनो आक्षेप छे. नांदीना श्लोके अभिनेय वस्तुनुं गूढ सूचन करी, नटीना संबोधनना श्लोके श्लेषबळे प्रयोगनी अर्थशास्त्रविषयकता जणावी, आ संवादथी कवि कार्यनुं भान करावे छे. ‘ आज तो **चंद्र**ने रिपु राहु **राक्षस सकेतु** ग्रहवानुं करनार छे. ’ एवुं नगरवासीनुं प्रकृत नाटकना प्रयोग परत्व वाक्य नटी सरळ स्वभावे चंद्रमाना ग्रहण परत्वे समजे छे. आथीज सूत्रधार कहे छे जे ‘चंद्रग्रहणविषे तो कोइये तने भुलावामां नांखीछे.’ जौतिषशास्त्रनां चोसठ अंग **भट्टाचार्य तारानाथना** वा-

चस्पत्य बृहदभिधान कोशमां गणावेलां छे ते त्यांथी जोई लेवां. स्थळसंकोचने लीधे अहिं नथी आप्यां.

पंक्ति—१३-१४,-१८.

अहिं प्रस्तुत विषयमां टीकाकार **ढुंढिराज** अने **भट्टाचार्य तारानाथ** परस्पर विरुद्ध व्याख्यान आपेछे. जेना सत्यासत्यनो निर्णय ते ते टीका जोई करी लेवा व्युत्पन्न वाचक वर्गने विनंति छे.

पूर्व संभाषणथी नाट्य वस्तुनोज मात्र आक्षेप कर्यो होतां आ श्लोके कवि नाटकना प्रधान पात्र **चाणक्य**ना प्रवेशनो प्रसंग उपजावी प्रस्तावनानो अंत आणे छे. अहिं वस्तुध्वनि नीचे प्रमाणे छे. **चंद्रगुप्त** जे हजु पूर्णमंडळ नथी—अर्थात् जे हजु पूरो जाम्यो नथी, तेने राहुनी पेठे वैरभाव राखतो अमात्य **राक्षस** धुंधवाई **मलयकेतु** साथे मोटा **चित्रवर्मा**दिक राजाओना लावलश्करथी ग्रहवानुं करे छे; परंतु बुद्धिमान **चाणक्य चंद्रगुप्त**ना पक्षमां छे, तेथी कांइ वळनार नथी.

प्रस्तावनानुं आ श्लेषगंड अंग छे, जेनुं लक्षण **भरत**शास्त्रमां नीचे प्रमाणे छे.

द्व्यर्थत्वाद्यत्र वाक्यानां श्लेषेणार्थः प्रतीयते ।
शब्दभङ्ग्यानुपात्तोऽपि श्लेषगण्डः स उच्यते ॥

पृष्ठ—४ पंक्ति—१४.

आ प्रस्तावना उद्धातक नामे ओळखाय छे. **साहित्यदर्पण**मां तेनुं लक्षण नीचे प्रमाणे आप्युं छे.

पदानि त्वगतार्थानि तदर्थगतये नराः ।
योजयन्ति पदैरन्यैः स उद्धातक उच्यते ॥

पृष्ठ—५ पंक्ति—२४-२७ ई.

वनमां वांसनी झाडीमां परस्पर संघर्षथी दावानळ उत्पन्न थई ते समग्र वनने स्वाहा करी जाय छे, ते समयना उग्र पवनथी राखोडी ऊडे छे ते आसपासनां वृक्षवृंदने पण दाटी नांखे छे, अने धुमाडो सउ दिशामुख छाई ले छे. ते घडिये आश्रयदाहे पक्षिगण सउ भये शियावियु वनी जाय छे. ए दावानळ ज्यारे कांइए खावानुं नथी रहेतुं त्यारे शमे छे. तेमज **चाणक्य**नो क्रोध पण **नंद** वंशने स्वाहा करी शत्रुस्त्रियोने शोकमां डुबावी देई तेमना पक्षनाने भयथी शेह खवरावी दइ नीति प्रपंचना बळे मंत्रियोनी बुद्धिने मोह पमाडी भक्ष्य न रह्ये हवे शमेछे. **अलंकार परंपरित रूपक.**

पृष्ठ—६ पंक्ति—१९.

खेतरमां केटलाक नकामा रोप ऊगे छे ते नुकशानकारक होई रोगरूप मनाय छे; केमजे ते जमीननुं वित्त चूशी ले छे. एवाने खेडुत निंदी नांखे छे. तेमज नंदोए सारी पृथ्वीनुं वित्त चूशी लेता हता ने पृथ्वीने पीडारूप हता तेमने में पण उखेडी नांख्या छे.

पृष्ठ—८ पंक्ति—४–५.

राजा अनेक स्त्रियो परणे छे ते केवळ पोष्य छे. ए कांइ भीडनी वखते एने सहायभूत थती नथी. आथी जे राजसेवक संपत्तिना संगी बनी रही विपत्तिमां कांइ लीलुं न वाळे ते पण ए स्त्रियोना जेवाज लेखाय. पण जे चडती पडतीमां एकसरखी रीते स्वामीने वळगी रहे तेज भृत्य—भृति(=मुसारा)ने लायक कहेवाय. जुओ नीचेनुं श्लोकार्ध शुक्रनीतिना बीजा अध्यायनुं:—

यथालङ्कारवस्त्राद्यैः स्त्रियो भूष्यास्तथा हि ते

अने वळी नीचेनुं वचनः—

न वै पत्युः कामाय प्रिया भवत्यात्मनस्तुकामाय ।

पंक्ति—१५–१६.

आना खुलासा सारु त्रीजा अंकमां चंद्रगुप्तना 'आ अनर्थनुं मूळ जे मलयकेतु तेनेज केम पकड्यो नहि?' ए प्रश्नो चाणक्ये जे उत्तर आप्यो छे ते जोवो.

पंक्ति—२३.

शुक्राचार्य ए चाणक्यनी पेठे नीतिशास्त्रना मोटा आचार्य मनाय छे. एओए ए विषय पर जे ग्रंथ रच्यो छे तेमां साम, दान, अने भेद ए त्रण उपयोने निःसार गणी रद करी मात्र दंडने एकलानेज उपाय तरीके मान्यो छे, जेथी ते दंडनीतिने नामे प्रसिद्ध छे.

पृष्ठ—९ पंक्ति—१७–२०.

टीकाकार कहे छे तेम आ तथा ते पछीना पदथी चाणक्य यमजेवो क्रूर छतां स्वपक्षनाने अनुग्रह करनार अने परपक्षनाने निग्रह करनार छे एम सूचव्युं छे.

पृष्ठ—१४ पंक्ति—२३.

चित्रविचित्र ए यम राजाना लेखक छे. ए मनुष्यना आयुषनी नोंध राखे छे. ज्यारे मुदत पूरी थाय छे, त्यारे ते यमदूतने मोकली मनुष्यने तेना कृत्यनो जवाब आपवा यम राजानी समक्ष मगावे छे. चाणक्यना कहेवानो भावार्थ एवो छे जे 'हवे तेमना मृत्युनी चित्रविचित्रे काळजी राखवानी जरुर नथी;

भले ए एमना चोपडाना पानेथी एमनां खातां काढी नांखे; हुंज आ एमनी खबर लेउं छुं.

पृष्ठ—१५ पंक्ति—४–७.

"**शकटदास** परपक्षनो होइ मननी पूरी खातरी थया वगर लेख नहि लखी आपे एम समजीने **चाणक्य सिद्धार्थकने** कहावे छे जे—संदेश लेई जनार हुं (**सिद्धार्थक**)ज छुं; हकीकत छे ते मारे मोंढे कहेवानी छे, तेथी लेखमां नाम ठाम नथी, आ तो ओळख पडे एटला सारुं आटली चवरखीए लेई जवी पडे छे; आवो लेख होय तो पतीज पडे:—एम **शकटदासने** कहेवुं ने एनी पासे ज्यम त्यम करी लेख लखावी लेवो ने पछी ते लेई मारी पासे आववुं."

पृष्ठ—१७ पंक्ति—२३–२४.

उपरथी तो एटलोज अर्थ छे जे 'तमे मोटा शेठिया छो, माजी राज्यना प्रतिष्ठित पुरुष छो. माटे तमने आ उपचार घटे छे.' मर्मार्थ **चंदनदास** समजा जाय छे ते प्रमाणे एवो छे जे '**चंद्रगुप्तनी** छाया नीचे रही अंदरखाने **राक्षसनो** पक्ष पकडी तेनां घरनांने आश्रय आपी फितूरमां मच्या रही अमारा प्रतिपक्षी–समोवडिया बन्या छो. भले तो अम समान आसनज लीजिये !'.

पृष्ठ—१८ पंक्ति—११–१२.

नंदने नाणुं बहु वहालुं हतुं. तेणे नवाणुं कोटि द्रव्यनो संचय कर्यो हतो. द्रव्यना गर्हणीय अत्यंत लोभने लीधे अद्यापिए कहेवत चाले छे जे नाणुं तो राजा **नंदनुंए** न रह्युं. वळी वैश्यमात्रने नाणुं विशेष वहालुं होय छे माटेज कदाच वाणियाने पण नंद कहेता हशे. **कच्छना** छेक पश्चिमोत्तर भागमां गोळ मटोळ अडधा पावलीना आकारना स्वाभाविक पत्थरना पातळा कूका जथाबंध मळी आवे छे तेने लोकोक्ति **नंद** राजानुं नाणुं कहे छे.

पंक्ति—१४.

चाणक्यने पैसोबैसो नथी जोइतो तेथी वाणियो **चंदनदास** हर्ष पामे छे ने पैसो न माग्यो माटे **चाणक्यनो** आभार मानेछे.

पृष्ठ—२१ पंक्ति—२६–२७.

शिबि महा दानश्री दयाळु धर्मशीळ राजा हतो. ते शरणे आवनारनो बेली हतो. एक समये तेनी दृढतानी परीक्षा लेवा **धर्मे** होलानुं रूप लीधुं, अने तेनी पाछळ **इंद्र** सिचाणानुं रूप लेई धायो. होलो नाशी **शिबि** राजाना खोळामां जईने पड्यो. एटले मनुष्यनी वाणीथी सिचाणाए राजाने कह्युं जे 'हे राजा ! मारा भूखे प्राण जाय छे. आ होलो मारुं भक्ष्य छे तेने तुं छोडी दे.

नहिं तो तने मारी हत्या लागशे.' शिबि राजाए उत्तर वाळ्यो जे 'होलो मारे शरणे आव्यो छे तेने हुं केम आपी देउं ? जोइये तो ते बदले तारा निर्वाह सारूं तेटलुंज बीजुं मांस ले.' सिचाणाए जवाब दीधो जे 'त्यारे तत्काल तारा शरीरमांथी तेटलुं मांस तोळीने आप.' ते उपरथी राजाए तुला मगावी एक तर्फ होलाने राखी बीजी तर्फ पोताना अंगनुं मांस कापीकापीने नांखवा मांडयुं. पण जेमजेम ते वधारे नांखतो गयो तेमतेम होलो वधारे भारे थतो गयो. त्यारे राजाए सारुं शरीर तुलामां मूक्युं, एटले आकाशमांथी धन्यवादनी साथे पुष्पवृष्टि थई, अने इंद्र तथा धर्मे सिचाणानुं अने होलानुं रूप मूकी देई, साक्षात् दर्शन देई, राजानुं शरीर हतुं तेवुं करी तेने वरदान आपी अंतर्धान थया.

पृष्ठ—२३ पंक्ति—१८–२१.

जेम कोइ उदार (=उत्कट) अपार मद (दान) जळथी शोभता, असंख्यात बळथी उन्मत्त, स्वच्छंदे साथी रहित फरता जंगली हाथीने बुद्धिबळथी मनुष्य आंतरी रहेतेरहेते जंगलीपणुं मुकावी–पलोटि काममां ले छे; तेम उदार (=वहोळा) अपार दानप्रयोगथी शोभता, असंख्यात लश्करनो मद मनमां धरता, स्वच्छंदे साथी रहित फरता **राक्षस!** तने पण बुद्धिबळथी आंतरी–संकडामणमां लावी **मौर्य** माटे आ पलटी–बदली–प्रतिकूळ मिटावी अनुकूळ करी दीधो जाणजे.

अहिं 'दान' पदथी कोशसंपत्ति, 'बळ' पदथी सहायसंपत्ति अने 'स्वच्छंद' तथा 'साथी विण फरता' ए पदसमुदाये करीने प्रज्ञा अने पौरुष आदि संपत्ति सूचवी छे. वळी 'स्वच्छंद' अने 'साथी विण फरता' ए पदे करीने निष्फळ प्रत्यासक्ति अने प्रमत्तता पण जणावी छे. अलंकार उपमा.

अंक २. पृष्ठ— २४ पंक्ति—६–८.

जे गारुडी जादुइ मंडळ खुब खंतथी दोरे छे, त्यमवळी सर्पविद्या जाते जाळवे छे एटलेके विद्या विफळ न थाय एवी रीते योग्य आचारथीज वर्त्यो जाय छे, तेनी साथे विषविद्या के झेर उतारवानी क्रिया जे संपूर्ण जाणे छे अने कोइपण वाते चूक करतो नथी तेज महा विषम भुजगम साथे खेले. आ प्रस्तुत अर्थे पाखे ध्वन्यमान अर्थ एवो छे के— जे मंत्री सीमाढाबहारना नीतिशास्त्रमां कहेला बार राजानुं मंडळ खुब खंते लक्षमां राखे छे, त्यम वळी राजकाजनी खटपट कोइना लगारे लक्ष्यमां न आवे एम जाळवे छे, तेनी साथे राज्यनी अंतरव्यवस्थामां परम निपुणता धरावे छे अने कोइ वाते गफलत करतो नथी तेज विषधर जेवा विषम नरपति साथे खेले.

आ पदथी गारुडीवेषी **विराधगुप्त म्लेच्छ मलयकेतुने पण काबुमां लेई** स्व-

कार्यमां मचेला अमात्य **राक्षसनी** अंदरखाने प्रशंसा करी पोते **राक्षसनो** प्रणिधि छे एम सूचवे छे. वळी कवि पोते प्रस्तुत नागराजना उदाहरणथी ते ते बाबतमां प्रमादने लीधे **राक्षसनो** भावि पराभव सूचववा मागे छे.

पृष्ठ—३० पंक्ति—२४.

पूर्वे **प्रियंवदक** प्रति 'अमने सर्पखेलनी इच्छा नथी' ने पछी पाछुं 'आववा दे एने, जोइये,–एनुं सुभाषित सांभळिये' एम कही, अहिं 'सर्पखेल जोइये छिये' एम जे **राक्षस** कहे छे ते, तथा अहिं **विराधगुप्तनुं** नाम अर्धुं बोली दबाववानुं करे छे ते छतां आगळ एज **प्रियंवदक शकटदासना** आगमननी खबर लावे छे त्यारे तेनाज सांभळतां एनुं नाम सहज बोली जाय छे ते, अने वळी **सिद्धार्थक**ने मुद्रालाभना प्रसंगमां 'घटे छे' वगेरे **चंदनदासने** घेर पोतानुं कुटुंब मूक्याना सूचक शब्दे कही जाय छे ते खसुस **राक्षसनो** कंईक गभराट ने कंइक प्रमाद बताववा माटे होतां करी सयुक्तिक अने सार्थक छे.

पृष्ठ—३२ पंक्ति—१४.

मूळे लोकमां गभराट तो प्रवर्तीज रह्यो हतो, ते घडिये वळी देवश्री **सर्वार्थसिद्धि** तपोवन जता रह्या, जेथी धणीधोरी विना लश्करनो उत्साह मंद पड्यो; जो एओ रह्या होत तो सैन्य हथियार मूकी देत नहि, ने शहेर सुरक्षित हतुं तेथी शत्रु एकदम बळे ते लेई शकत नहि एटलुंज नहि पण छेवट तेमने थाकी प्रयत्न समूळगो मूकी देवो पडत; एम वस्तुस्थिति छतां आवी संकडामणमां वळी **सर्वार्थसिद्धि** तपोवनमां जता रह्याः—एम कही 'वळी' शब्दना बळेज सैन्यनो उत्साह मंद थयानुं कारण सूचव्युं छे.

पृष्ठ—३९ पंक्ति—१३.

आ जे बोलवुं छे ते उग्र अंतःसंतापनुं छे. **राक्षस** एम कहेवा मागे छे जे अफसोस अफसोस !!! **दारुवर्मादिक** महाराजना कार्यमां काया कुर्बान करी कृतार्थ थई गया, ने अमेज कृतघ्न जीववानी इच्छा नहि पण राजकार्यनी वात आगळ करी प्राण धारी रह्या छिये !!!, संपादक जे रीते अर्थ करे छे ते रीतथी परितोषनो भाव उपजतो जणाय छे, जे प्रसंग जोतां बराबर घटवाय एम नथी.

पृष्ठ—४० पंक्ति—१०–११.

मतलब एवी छे जे '**शकटदासने** 'आपने आवी मळवुं निर्म्युं हशे ते मिथ्या न थाय माटे दैवेज पोते एने बचाव्यो.'

अंक ३. पृष्ठ—४६ पंक्ति—३–६.

जेम कोइ ज्योत्स्ना जेवी खुबसुरत सुंदरी खुशबोथी महकेता अने फुलना हारथी सुहाता रसिकने सालिंगन देई रहे तेम चामरच्छव देई पण स्तंभने वळगी रहो.

पृष्ठ—४८ पंक्ति—१७–२०.

शरदऋतुमां धोळां वादळां दिशाचक्रमां छूटां छूटां छाई रहे छे, तेम पाणीनुं पूर ऊतरी जवाथी नदीकिनारे पण आछा पाणीवाळा उज्ज्वळ रेताळ प्रदेश सोहे छे. वळी सारसनां जोडा पण ज्यां त्यां दिशाचक्रमां अने नदीतटमां दीपी रहे छे. तेम वळी रात्रिये अनेक तारानां झूमखांथी दिशाओ उज्ज्वळ दीसे छे. तेम नदियो पण कमळना पुंजथी मनोहर लागे छे. तेमज वळी वर्षामां एकाकार अने म्लान रूपे दिसती हती ते दिशाओ हाल दीर्घ (=विस्तृत) अने निर्मळ स्वरूपे प्रसरे छे, तथा नदियो पण वर्षामां जळजळाकार ने डोळायली जणाती हती ते हाल दीर्घ(=फेलायली मत्स्याथी लांबी) अने निर्मळ स्वरूपे वहे छे. 'नभस्तः' पद मूळनुं संपादक श्लिष्ट माने छे पण ते सउ क्लिष्ट कल्पना छे.

पंक्ति—२५.

मगध देश प्राचीन काळथी शाळनी पेदाशने माटे प्रसिद्ध छे. जुओ गउ-डवहो २७३, २७७, २७९, ३९७, ३९९.

पृष्ठ—४९ पंक्ति—४–७.

जे सुरसिंधु(=गंगा) पोताना पति समुद्रने झाझी नदीरूपी प्रिया जोईने शके कलुषित (=[1]चोमासाना पाणीथी म्लान;–[2]खिन्न) बनी हती, अने तेथीज शके दहाडे दहाडे क्षीण थई गई हती तेने मान(=[1]मर्यादा, नदीनुं हमेश वहेण;–[2]रुसणुं) मनावी प्रसंन (=[1]निर्मळ;–[2]रोष रहित) करी आ शरद सखी बेश दूतीपणुं बजावी सिंधुपति साथे मिलावे छे.

पृष्ठ—५२ पंक्ति—२४–२७.

आखा विश्वमां पोताना एक अखंडित प्रतापथी लोकनाथी अधिक वधी एक-ज वखते **नंदने** अस्त अने **चंद्रगुप्तने** उदय पमाडी जे **चाणक्य, लोकालोक** पर्वतथी नीचो होई अर्ध भागमांज व्यापतो प्रताप दर्शावता-फरताफरती ने ते ए वळी सहस्र किरणे हिम अने उष्णने अस्तोदय दर्शावता सूर्यने हरावे छे. अलंकार व्यतिरेक.

पृष्ठ—५५ पंक्ति—१९ थी पृष्ठ—५७ पंक्ति—७.

शरदऋतु आ वखते प्रवर्तती होवाने लीधे तेनुं आहिं उपमानरूपे वर्णन सविशेष सार्थक छे. जेम शरद ऋतु प्रकट उपमानरूपे आ श्लोकमां उपात्त छे तेम पछीना श्लोकमां ते **विष्णु** भगवानना जागवाथी परोक्ष रीते बेठी चूकी सूचावी छे. आम शरद ऋतुना प्रत्यक्ष ने परोक्ष प्रख्यापन **चाणक्य**-नी सोयं व्यायामकालः ई. उक्तिनुं पूर्व सूचन कविये कर्युंछे. रात गई हती

ने **चाणक्य चंद्रगुप्तनी** वातचितमां विरोधनां चिन्ह जणातां हतां ते समये प्रथम वैतालिक आ कपट-कलहने वास्तविक लेखी क्लेशसंकट परोक्ष चेतवी प्रथम पदथी ए क्लेश दूर थवानुं प्रार्थे छे; केमजे कह्युं छे जे

पानस्त्रीद्यूतगोष्ठीषु राजानमभितश्चराः ।
बोधयेयुः प्रमाद्यन्त मुपायैर्नाडिकादिभिः ॥ का. नी. सा. ५. ५१.

वळी तेनुं बीजुं पद ते क्लेश शमी जई **कौटिल्य**नी कुटिल दृष्टि **राक्षस** तथा **मलयकेतु**थी रक्षण करी **चंद्रगुप्त**ने सुखी करो एवा अर्थनी प्रतीति करावे छे. आ क्लेशने **चाणक्य**ना पक्षना वास्तविक समजे त्यारे पछी **राक्षस**-ना पक्षनो **स्तनकलश** तो तेज भ्रांतिमां भटकाई **चाणक्ये** करेला आज्ञाभंगना संबंधमां वळ चढाववा पद ललकारे ए स्वाभाविक छे.

पृष्ठ—५६ पंक्ति—१७ थी पृष्ठ—५७ पंक्ति—७.

आ बे प्रशस्तिमां उपरथी एम कह्युं छे जे "देवश्री **चंद्रगुप्त**! तमने धन्य छे! बहारना ठाठथीज खाली संतुष्ट न रही सर्वने तमारी आण मनावी तमे तमारुं प्रभुत्व दाखव्युं छे. बेशक आवा प्रतापी पुरुषो विधाता उन्मत्तनो मद उतारवा सृजे छे. तेओ केम आज्ञाभंग सहे ? तेओ तो उन्मत्तनो मद उतारे त्यारेज विरमे." परंतु अंदरखाने मतलब **चंद्रगुप्त**ने उश्केरवो एज छे, जे सहज ध्यानमां आवे एम छे.

पृष्ठ—५८ पंक्ति—५–१२

'तुं जेवो प्रतापी छे तेवोज विनयशाळी छे एवी तारी कीर्ति फेलाय तथा तारा दृष्टांतथी प्रजापण विनय शीखे ए आ कौमुदीमहोत्सव अटकाववानो मारो प्रथम हेतु छे.' जुओ का. नी. सा. विनयाध्याय, तथा 'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः' ए महावाक्य, अने द. कु. च. नी टीकामां आपेलो **चाणक्य**नोज 'यथा राजा तथा प्रजा' ए श्लोक.

अंक ४. पृष्ठ—६५ पंक्ति—७–१४

अम जेवा राजकारभार करनार के नाटक रचनार आ आयास जाणे छे. बीजानी तो कल्पनामां ए आववो मुश्केल छे. राज्यतंत्री मनमां जे काम सिद्ध करवा धार्युं होय तेनुं मंडाण तो कोइ कळे नहि एम स्वल्पमात्रज करे छे, पण पछी युक्तिये तेने पोषे छे. दरम्यान सिद्धिनां ते ते बीज आरंभे नांख्यां होय छे तेनां अतर्क्य फळ गूढ रीते उपजावे छे. वळी वच्चे जरा शांति राखी केम थाय छे ते विमांसे छे. छेवट अनेक प्रकारे विस्तारेला बहोळा कार्यने खंत राखी ईप्सित

सिद्ध करी संपेटे छे. नाटककार पण प्रथम मुखसंधिमां लक्ष्यामां न आवे एम नाटकना कार्यनुं बीज रोपे छे. पछी प्रतिमुखसंधिमां तेने पेरेपेरे पोखी बढावे छे. वळी गर्भसंधिमां पूर्वे प्रयोजेलां ते ते बीज आ फळ्यां आ फळ्यां एम नानाप्रकारनी अनुकूळता आणी जोनारनी उत्सुकता अंकुरित करे छे. पाछो विमर्श संधिमां वचमां अंतराय दर्शावी आनो परिणाम शो आवशे एम विमांसणमां नांखी जोनारनी आतुरता तनखावे छे. छेवट उपसंहार के निर्वहण संधिमां धारेलुं निशान साधी सकळ कार्य संपेटे छे. उपरना श्लोकमां नाटक पक्षे उपक्षेप, कार्य, गर्भ, बीज, विमर्ष, उपसंहार, ए सउ सांकेतिक शब्द छे. बीजा चरणमां बीज शब्द बहुवचनमां वापरवानो हेतु आधिकारिक अने प्रकरीपताकात्मक प्रासंगिक वस्तुना सूचन अर्थे छे.

नाट्यशास्त्रनो प्रस्तुत प्रकरणने लगतो विषय नीचेना **भरत**शास्त्र अने **दशरुप** आदि लक्षणग्रंथमांथी लीधेला श्लोकथी स्फुट थशे.

आद्यन्तं वस्तु निश्चित्य पञ्चधा तद्विभज्य च ।
खण्डशः संधिसंज्ञांश्च भागानपि च खण्डयेत् ॥
बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः ।
अर्थप्रकृतयः पञ्च तत्रैताः परिकीर्तिताः ॥
अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यत्प्रसर्पति ।
फलावसानं यच्चैव बीजं तदभिधीयते ॥
प्रयोजनानां विच्छेदे यदविच्छेदकारणम् ।
यावत्समाप्तिं बन्धस्य स बिन्दुरिति संज्ञितः ॥
यद्वृत्तं हि फलार्थे स्यात्प्रधानस्योपकारकम् ।
प्रधानवच्च कल्प्येत सा पताकेति कीर्तिता ॥
फलं तु कल्प्यते यस्याः परार्थायैव केवलम् ।
अनुबन्धविहीनां तां प्रकरीं तत्र निर्दिशेत् ॥
यदाधिकारिकं वस्तु सम्यक् प्राज्ञैः प्रयुज्यते ।
तदर्थो यः समारम्भस्तत्कार्यं परिकीर्त्यते ॥
अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः ।
आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमाः ॥
औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे ।
प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः ।
उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसंभवः ।

अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता ।
समग्रफलसंपत्तिः फलयोग उदाहृतः ।
अर्थप्रकृतयः पञ्च पञ्चावस्थासमन्विताः ।
यथासंख्येन जायन्ते मुखाद्याः पञ्च संधयः ॥
मुखं बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरससंभवा ।
न्यासो बीजस्य तत्र स्यादुपक्षेप इतीरितः ॥
लक्ष्यालक्ष्य इवोद्भेदस्तस्य प्रतिमुखं भवेत् ।
गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजस्यान्वेषणं मुहुः ।
यत्र प्रलोभनक्रोधव्यसनाद्यैर्विमृश्यते ।
बीजार्थो गर्भनिर्भिन्नः स विमर्श इतीर्यते ॥
बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम् ।
ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत् ॥

पृष्ठ—७२ पंक्ति—१६-१७.

‘ अहा ! सारा विश्वने आनंद आपनार तो, नृपचंद्र **नंद** रायजी, तमेज हता. तमे जतां करी शरद ऋतुनो चंद्र छतांए कौमुदीनो ते बहार ते क्यांथीज ? चंद्र खिलावी खिलावीनेए कुमुदनेज खिलावे छे. तमे छतां तो सारुं विश्व आनंदमां मग्न हतुं. ’ आवो स्फुट अर्थ छे. एवी पण ध्वनि सहज शब्दबळे ऊठे छे जे विश्वने आनंद उपजावता स्वगुणे राजाओमां चंद्ररूप **नंद**रायजी बेठा छतां कौमुदीनो जे बहार हतो ते तुच्छ वस्तुथी मुदित थता (कुमुद्) मुठ्ठीभर मनुष्यनेज आनंद आपता नामेज मात्र **चंद्र** जे **मौर्य चंद्रगुप्त** तेना वखतमां शानोज ?

पृष्ठ—७३ पंक्ति—२५-२७.

अमात्यना गुण वखाण्या तेथी कांइ विशेष अनुमान न थाय. गुणवानना गुण प्रसंगवशात् वखाणवानी रीति छे. परंतु तेटलेज न अटकतां एकदम **चाणक्य**नो परित्याग कर्यो एथी ‘ अमात्य **राक्षस** साथे सरखावतां **चाणक्य** प्रधानवटाने लायक नथी ’ एम वर्तणुकथीज दर्शावी आप्या उपरथी **चंद्रगुप्त** वंशपरंपरागत अमात्य मानी **राक्षस**नेज तेऽकाम समर्पे एवुं **भागुरायण**ना वचननुं तात्पर्य छे.

पृष्ठ—७७ पंक्ति—१७-२०

पूर्वनी **मलयकेतु**नी उक्तिमांनी ‘ हवे राजकारभार बीजा मंत्रीने सोंपी टक्कर नहि ले ’ ए शंकानो परिहार करतां **राक्षस** ‘ अत्युच्च मंत्रिवर् ... ’ इ. श्लोक

कहे छे. जेम कोइ नटी माथे बेडु आदिक भार लेई बे नटना खभे पाय धरी अधर ऊभी रहे छे, पण पछी माथाना भारने लीधे ते विकट साम्यावस्था स्त्री-स्वभावे तजी देई बेमांथी एकनेज आश्रयीने रहे छे; तेमज राजलक्ष्मी(=प्रभुता) पण नरपति अने अत्युच्च समर्थ मंत्रीने आश्रये खडी थाय छे, पण असह्य राज्यभारने लीधे ए विकट साम्यावस्थामां दोलायमान होईने ते पछी एकमांज विश्रांत थई रहे छे; अर्थात् **चाणक्य**ने दूर करी **चंद्रगुप्त** स्वतंत्र थयो छे ते पाछो बीजाने राज्यनी लगाम सोंपी परतंत्र नहि बने. जुओ तृतीय अंकनी **चंद्रगुप्त**नी उक्ति 'आजथी हवे **चाणक्य**ने मूकी **चंद्रगुप्त** खुद राज्य चलावशे'.

तेम छतां 'जातेज संभाळी लेई पंडेज टक्कर नहि ले' ए शंका रही. आनो परिहार त्रीजा श्लोकथी करे छे. श्लोक सुगम छे.

पृष्ठ—७९ पंक्ति—२१.

क्षपणकना बीभत्स वेष संबंधे जुओ **प्रबोधचंद्रोदय** नाटकना तृतीय अंकनी शरुआत.

पृष्ठ—८८ पंक्ति—१२–२०.

प्रस्तुत विषयने उपयोगी मुहुर्त संबंधी व्याख्यान परिशिष्टमां आप्युं छे ते जोवाथी प्रकरण सहज समजाशे.

अहिं कवि गूढ रीते एवुं सूचन करे छे जे 'अहो! शूरा अमात्य! तमे दक्षिण दिशा तर्फ एटले **संयमनी** पुरी भणी जवानुं करो छो, अर्थात् **चाणक्य** साथे विग्रह मांडी तमे जमपुरी सिधाववानुं करो छो–तमे तमारुं मोत शोधो छो. पण **भागुरायण** आदि क्षत्रियवर्ग (क्षत्र) ते तमारा विनाशनी वातने प्रतिकूळ (न–दक्षिण) छे; केमजे 'अमात्य **राक्षस**नो जीव बचाववो' एवी स्पष्ट **चाणक्य**नी तेमने आज्ञा छे. आथी करीने, तमे अस्त(=खराबी, पायमाली) पामवानी अणिये आवी जशो, जेना तमे संगी थया छो ते **मलयकेतु** जे हाल आटलो चढ्यो छे ते खुवार (अस्तंगत) थशे, अने **चंद्रगुप्त** संपूर्ण मंडळे शोभशे, त्यारे तमारे बुद्धिमान **चाणक्य**नी पासे जवानुं थशे.'

टीकाकार आ गूढार्थ कविनो पोतानो नहि पण **जीवसिद्धि**नो अभिप्रेत लेखे छे. परंतु **जीवसिद्धि, भागुरायण** वगेरेने **चाणक्य**ना पक्षना छे, एम ओळखतो नथी. तो पछी उपर प्रमाणे सूचना करवा जाय ए केम संभवे? आथी करीने टीकाकारनो अर्थ–जे उपरना व्याख्यानथी बहु अंशे जूदो छे–ते अमे पडतो मूक्यो छे.

भाषाशास्त्रना रसिकने मूळमां **गमणं** अने **लग्गे** ए बे पद लक्षमां लेवा यो-

ग्य छे. आमानुं प्रथम रूप **हिंदुस्तानी, पंजाबी, सिंधी,** तथा **मराठी** भाषाना सामान्य कृदंतनुं पूर्वरूप छे; अने बीजुं रूप जूनी **गुजराती** लागि–ला–लि, **मराठी** लागि–ला, **कच्छी** लाय आदि प्रत्ययोनुं मूळ छे, अने एनो यौगिक अर्थ 'पासे' छे. आ पछीनो एक श्लोक मूकीने बीजामां मूळमां **वहेसि** पद छे ते पण बीजां 'वहीहिसि' आदि **प्राकृत** रूप करतां **गुजराती** 'वहीश' साथे वधारे नजीकनुं छे.

पृष्ठ—८१ पंक्ति—१३–१४.

जीवसिद्धिनो अभिप्राय उपरथी तो एटलोज छे जे, तमे मने पोतीको समजतां छतां बीजा ज्यौतिषीथी नक्की करवा चाहो छो, एटलोए विश्वास नथी, त्यारे वेशक तमारा उपर यमराजज रूठ्या छे. पण एनो मर्मार्थ तो टीकाकार कहे छे तेम 'पोताना स्वामी **नंद**ना वंशना अवयवीभूत **चंद्रगुप्त**ने मूकी **मलयकेतु** जेवा परायाने अधिक करी मानो छो तेथी अचूक तमारो दिवस घेर नथी' एवो छे.

अंक ५. पृष्ठ—८३ पंक्ति—६–७.

घाटघडुले=देशकाळने अनुसरती जुक्तिरूपी कळशथी. भावार्थ एवो छे जे कार्यनी घटना अनेक जुक्ति द्वारा बुद्धिथी पोसायाथी सफळ थाय छे. अलंकार परंपरित रूपक.

पंक्ति—१७–१८.

टीकाकार कहे छे तेम बुद्धिबळे अपूर्व नीतिप्रपंचथी कार्यसिद्धि सहज मेळवता **चाणक्य**नी प्रशंसानी ध्वनि आ श्लोकथी उदय थाय छे.

पृष्ठ—८६ पंक्ति—२२–२३.

आंखो दबाववानी रमत विषे **विक्रमोर्वशीय** तथा **अमरूशतक**मां वांचवामां आवे छे, ते प्रसंगो जोतां ए रमत गाढप्रेमसूचक छे, एम जणाय छे. **भागुरायणने मलयकेतु** प्राणप्रिय मित्र समजे छे. ए मैत्री **मलयकेतु** तर्फथी केटली गाढ हती अने ए एनी साथे केटलो हळी गयो हतो ते कविये आ प्रसंग दाखल करी दर्शावेल छे. टीकाकारनुं व्याख्यान आ प्रसंगे प्रामादिक छे. छोकरवादी जणावनारी आ रमत होय तो, **पुरुरवा** आदि उत्तम नायकने पण छोकरवाद लेखवा पडे.

पृष्ठ—८८ पंक्ति—८–१२.

'मारा जेवा विरक्त मनुष्ये आवा **राक्षस** जेवा राजप्रपंची माणसनो संगज करवो न हतो जोईतो. तेम छतां जाण्ये अजाण्ये समागम कर्यो. तोये **विषकन्या**-

थी **पर्वतेश्वर**नो बिचारानो घाट घडायो त्यारे तो चेतवुं हतुं. तेए न थयुं तो खेर, पण ते दोष मारे शिर लगावी मने **चाणक्ये** देशपार कर्यो त्यारेए आंखो ऊघडवी जोईती हती, ने मारे **राक्षस**नो प्रसंग मूकवो जोईतो हतो. पण तेम न कर्युं ने पाछो **राक्षस** पासेज अहिं आव्यो. हवे **राक्षस** तो कांइ राजप्रकरणिक कारणोथी पाछो एवुंज अथवा एथीए अधिक घोर कृत्य करवा बेठो छे; जे मारे माथे पाछुं आवी लागे तो मारे दुनियांपार थवानो वखत आवे. आथी एकदम मारी आंखो ऊघडी. हवे, ते ते चेतवणी पहोंची छतां हुं **राक्षस**नो प्रसंग राख्यांज गयो, ते मारा पोतानांज उंधां कर्मनो मने पस्तावो थाय छे, ने अंतरमां हुं अत्यंत लजवाउं छुं. **राक्षसने** राजकाजनी खटपटमां अनेक उंधां चतां करवां पडे. एनुंतो ए कामज रह्युं. एनो शो दोष एमां ? मारोज वांक के हुं चेती अळगो न थयो.’ आवो कांक आ प्रसंगनी उक्तिनो अर्थ छे.

पृष्ठ—८९ पंक्ति—४—६

प्रथम अंकमां **चाणक्य** जणावे छे तेम **इंदुशर्मा**ने क्षपणकना वेषे **जीवसिद्धि** नाम धारण करावी **राक्षस** साथे मैत्री एटलां सारुं करावी हती के ए **राक्षस**नो आभ्यंतर मनायाथी तेनुं कहेवुं वजनदार थई पडे; एटले तेनाथीज प्रसंगे **मलयकेतु**ना मनमां **राक्षस** प्रति अटळ उग्र विद्वेष उपजावाय, जेथी ते **राक्षस**ने पोतानी पासेथी अधिक्षेप साथे दूर करे, ने पछी एकला पडेला असहाय **राक्षसने** युक्तिये सपडावी शकाय, तेम **मलयकेतु** प्रति पण सहज फावी शकाय. ए मतलब साधवानी आ तक सहजमां बनी आवी एटले **राक्षस**ना मोढामोढ थवा रहेवामां अर्थ न होतां रजाचिठ्ठी लेई ते सटकी जाय छे.

पृष्ठ—९१ पंक्ति—९—२०

मलयकेतुने पक्षमां लेई **राक्षस चंद्रगुप्त** अने **चाणक्य**ना सामां मेदानमां पडेलो, तेना प्रयत्न निष्फळ करी तेने संकडामणमां आणी आखरे प्रधानवटुं लेवरावबाना निशानथी प्रथम अंकमां **चाणक्ये सिद्धार्थक** पासे **शकटदास**ना हस्ताक्षरे जे कपटलेख लखावी मगाव्यो हतो अने **राक्षस**नी मुद्राथी छापी करी तेनुं शुं करवुं ते बाबत भणावी **सिद्धार्थक**ने सोंप्यो हतो, तेज आ लेख. ‘अमुक विशेषणना’ पदे करीने राजाधिराज आदि प्रकृतने अनुगुण उपलक्षण अभिप्रेत छे. **मलयकेतु** छाप जाळवी उघाडवानुं कहे छे ते पाछळथी लेखनी सर्वांशे तपास थाय ए मतलबे.

आ लेखगत अशून्यार्थ शब्दनो अर्थ ‘खाली लेख न मोकलाय माटे तेनी जोडे मोकलेली भेट’ एवो कांक टीकाकार **ढुंढिराज** अने संपादक आपता जणाय छे.

पण लेख खाली नज मोकलाय ए प्रचार कांइ सार्वत्रिक नथी; जुओ **मालविकाग्निमित्र, वीरचरित, कादंबरी** आदि काव्योना लेख. आथी करीने अहिं-लेख अनभिव्यक्त होई तेनी मुखसंदेशना संबंधमां प्रतीति–पूर्ति–मजबूती सारुं जे कांइ ते–एवो स्थूळ अर्थ मूळने अवलंबी अमे उपजाविये छिये.

पृष्ठ—९६ पंक्ति—६–९.

आ बे हरिगीतनो प्रस्तुत अर्थ नीचे प्रमाणे छे. धारेलो अर्थ सिद्ध करवा निमित्ते जे सैन्यनुं सामर्थ्य सउ प्रकारे बराबर कसायलुं छे, वळी जे सैन्यने मळतिया राजानी सर्वदा पूरेपूरी कुम्मक छे, तथा मांहि दुश्मनने लीधे फाटफूट नथी, त्यम वळी जे सैन्य स्वपक्षमां चुस्त छे; एवा सबळ सैन्यथी सदाए स्थिर जयज मळे. परंतु धारेलो अर्थ सिद्ध करवा निमित्ते जे सैन्यनुं सामर्थ्य संदिग्ध होय, वळी जे सपक्षविपक्ष बेउ विषे एकसरखी अभिमुखपणानी विमुखपणानी के विरुद्धपणानी वृत्ति बतावे, तेम वळी स्वपक्ष विषेज अस्थिति अनासक्ति बतावे; एवा विकळ सैन्यथी तो बेशक पराभवज नीपजे.

पंक्ति—१२.

राक्षसने तेनाज बोले बांधी लेवाना प्रपंचनी आ प्रस्तावना छे. **राक्षसे** सवारीनी तैयारी करी छे एवुं कहेवा उपरथी **कुसुमपुरथी** कांइ नवा समाचार मळ्या जाणवाने जाणे पोते इच्छतो होय तेम **मलयकेतु** उपर प्रमाणे **राक्षसने** पूछे छे. प्रकट प्रश्न एटलोज छे जे ‘ कोइ जता आवताथी बातमी मेळवो छो ?’ **राक्षस** भोळे भावे जवाब दे छे जे ‘ हवे शा समाचार मगाववा हता के माणस जतुं आवतुं होय ? आपणेज **कुसुमपुर** भणी कुचमुकाम करिये छिये. ’ अर्थात् ‘ हवे आपणेज **कुसुमपुर** जइये छिये तेथी हवे कोइ माणस जतुं आवतुं नथी. ’ आवी **राक्षसना** म्होनी कबुलात लेई **मलयकेतु** तेने प्रश्न करे छे जे ‘ आम ज्यारे छे त्यारे आ **सिद्धार्थकने** क्यां मोकल्यो छे ? ’ इ.

पृष्ठ—९९ पंक्ति—१३–१४.

आप पितुश्रीनुं मुख शरद ऋतुना चंद्र जेवुं सोहतुं हतुं, ने शरीर चंदनी जेवो प्रकाश मारतुं हतुं. तेमां विविध रत्ननी झगमगती ज्योते करीने ते आभूषण तारामंडळ जेवां शोभतां हतां. शरद ऋतुना चंद्र तथा प्रकाश साथे मुख अने शरीरने सरखावी प्रसंनता अने आनंद उपजाववानी शक्ति सूचवी छे. आभूषणने तारा जोडे सरखाववामां शरीरनी कांति तेमनाथी अधिक छे एवो आशय रहेलो छे.

पृष्ठ—१०० पंक्ति—३.

मूळमां चोथा चरणमां ‘संप्रतिपत्ति’ शब्द छे. एनो मूळ अर्थ ‘कबूल करवुं’ थाय छे. ते उपरथी अहिं तेना अनुभावात्मक कार्यनो गौण अर्थ कल्प्यो छे.

पृष्ठ—१०२ पंक्ति—१६.

'जेम दुर्नय धर्म अर्थ अने काम ए त्रणेने परास्त करे छे तेम हुं पण तमने त्रणेने एकत्र परास्त करवा समर्थ छुं' अहिं दुर्नयनी उपमाना प्रयोगे **मलयकेतु**नी पात्रता–तेनुं म्लेच्छत्व सूचित छे, तथा दुर्नयनी जेम आखरे खराबी थाय छे (धर्मे जय ने पापे क्षय) तेम तेनी पण सत्वर खराबी थवानी छे ए पण सहज गम्यमान छे.

पंक्ति—२५.

गौड स्त्रियोना गालनी सुरखी लुंटावाथी तथा केशनी काळाश रोळावाथी तथा शत्रुओनां शिर धूळे रगदोळावाथी स्त्रियोना भावि वैधव्यनो तथा शत्रुओना मरणनो आक्षेप **भागुरायण** करावता चहाय छे.

अंक ६. पृष्ठ—१०४ पंक्ति—६–९.

आपणा प्राचीन साहित्यशास्त्रमां रंगभूमि उपर संग्रामनुं प्रत्यक्ष निरूपण निषिद्ध गण्युं छे. आथी करीने **मलयकेतु**नो निग्रह थयो जणाववा कविये **सिद्धार्थक**ना मुखमां आ जयवाद मूक्यो छे. जुओ वळी आवोज कांक प्रयोग **मृच्छकटिक**ना दशमा अंकमां. **वीरचरित**मां आवोज अर्थ चूलिका रूपे वर्ण्यो छे.

पृष्ठ—१०७ पंक्ति—२२–२५.

'संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध, अने संश्रय ए छ गुण रूपी छ सेरोनो जे दृढ बनावेलो छे, ने जेनो गाळो साम दान भेद दंड आदि उपायोथी रचेलो छे, एवो ते आर्य **चाणक्य**नो अपूर्व प्रपंचपाश धन्य सोहे छे, जे परपक्षीरूपी मोटा (पर) पक्षीने फसवे छे' आ श्लोके करीने अमात्य **राक्षस** आदिने फसवती **चाणक्य**नी नीतिनी प्रशंसा करी छे.

टीकाकार कहे छे तेम **पुष्पपुर** पाछा आवेला **राक्षस**ना संग्रहणार्थ **चाणक्ये** बतावेली युक्ति योजवानी इच्छाथी हाथमां लीधेला कंठपाशने प्रणिधिभूत पुरुष अहिं **चाणक्य**ना नीतिपाशना रूपे वर्णे छे.

पृष्ठ—१०९ पंक्ति—९–१३.

'आवी दुर्दशा थई छे तोये मारो प्राण आपी **चंदनदास**ने छोडावीश, पण **चंद्रगुप्त** साथे संधि नहि करुं. आथी वैर वाळवानी प्रतिज्ञा न पळाई तेनेलीधे अपयश गवाय ते भले, पण शत्रुनी कपटजाळमां फसाई पराभव पामी दीनपणे **राक्षसे** संधि करी एम कहेवाशे नहि.'

पृष्ठ—११० पंक्ति—१४–२१.

आ श्लोकमां **नंदकुळनुं** निकदन, **दारुवर्मादिकना** विनाशथी पोताना हृदयनो शोष, **मलयकेतुना** योगे पोतानी नीतिनुं वैफल्य, अने **भागुरायण** वगेरेना कुटिल उपदेशे **मलयकेतुनो** मोह गम्यमान छे.

पृष्ठ—११० पंक्ति—२४.

आ चोपायाना प्रथम चरणमां छंदोभंग छे ते प्रसंगना अनुरोधे रहेवा दीधो छे. मूळ करतां भाषांतरमां रस विशेष पूरी अर्थ खिलावेलो छे ते रसज्ञना जोवामां सहज आवशे.

पृष्ठ—१११ पंक्ति—६–९.

वाडीनां झाडोमांथी कीडाना दंशने लीधे ज्यां त्यां चीकणो मेलो रस टपकतो जणाय छे; पानडां सुकाई खरी जवाथी एम दीसे छे जे अंदर पोषणने बदले शोषण चाल्युं छे. छांयडानुं नामे नथी; सउ वृक्ष महा दुर्बळ स्थितिमां देखाय छे. आथी करीने अंतर उद्विग्न होई जे संसारने स्मशानमय पेखे छे ते **राक्षस** वृक्षो संबंधे स्वामी वांसे स्मशानमार्ग लेवानी उत्प्रेक्षा करे छे.

पृष्ठ—११६ पंक्ति—२०–२१.

आ उक्ति अहिं पूरी नथी थती, परंतु पछी आवनारी ' माटे कृपा करी मारो संशय निवारण करिये आर्य ' ए उक्ति साथे जोडायली छे.

अंक ७. पृष्ठ—१२० पंक्ति—२३.

' परगाम के परदेश जवा निकळेलाने संबंधी वर्ग एक मजलसुधी वळाववा जाय छे (जुओ **कंसवध** पृ. ४२ 'उचितं च प्रथमनिवसतौ सुहृदां प्रस्थितानुव्रजनम्') स्वामिनाथ ! तमे तो तेमां परलोक हमेशने माटे सिधावो छो, तो पछी आम वारो छो शाने ' एवो आ उक्तिनो भावार्थ छे.

पृष्ठ—१२१ पंक्ति—२१.

चंदनदास एना पुत्रने आ जे छेल्लुवेलुं कहे छे तेनी मतलब एवी जणाय छे जे ' आपणा मित्र अमात्य **राक्षसनी** खातर हुं मरुं छुं, माटे भाइ तारे पण गमे ते संकट आवी पडे तोपण पाछा न हठतां प्राण आपीने पण मित्रकार्यनो निर्वाह करवो ' एवुं तेने ते व्रत लेवरावतो होय.

पृष्ठ—१२२ पंक्ति—१३.

' मारे केटला काळ काढवा छे जे मित्रमे मरावीने हुं जीवुं ? ने तेए शा पार-

माथिक लाभ सारुं ? माटे भाइ मारुं परलोकनुं ने आ लोकनुं हित चाहीनेज में आ काम कर्युं छे.'

पंक्ति—२२–२३.

बुद्ध दयाने माटे सुप्रसिद्ध छे. जुओ बुद्धनां जूदा जूदा अवतारनां चरित्र वळी जुओ. क. स. सा. पृ. १४२.

बुद्धेन च परस्यार्थे करुणाकुलचेतसा ।
आत्मापि तृणवद्दत्तः का वराके धने कथा ॥

पृष्ठ—१२३ पंक्ति—१८–२५.

भावार्थ एटलोज छे जे 'अहो ! आ **राक्षस** शी रीते पकडायो ?' **राक्षसने** अग्नि, अनिल, सिंह, अने सागर रूपे वर्णवी तेनी उग्र मंत्रशक्ति तथा उज्ज्वळ प्रज्ञा, संतत कार्याभियोग तथा अद्भुत उत्साहशक्ति, अपूर्व सत्व तथा प्रचंड पौरुष, अने प्रकांड सहायसंपत्ति तथा दुर्वार बळमदनुं भान कराव्युं छे.

टीकाकार काकूक्ति रूपे आ श्लोक समजी आत्म प्रशंसानो अर्थ मांहिथी खेंची काढे छे. पण ते **चाणक्य**नाज "नहि नहि, '**नंद** कुळना द्वेषी दैवे' एम कहेवुं घटे छे" ए विनयवाक्यथी विरुद्ध छे. तेमज वळी ते स्वतः अनुपपन्न अने असंगत छे. त्रीजा अंकमां दैववाद विद्वानने मान्य नथी एम कह्युं छे ते मात्र कपटकलह उपजाववाज; पूर्वापर विरोधनी शंका न करवी.

पृष्ठ—१२४ पंक्ति—१७.

नंद मरी परवार्या छतां पण **राक्षस**नी राजविग्रहना संबंधे 'अमात्य' पदवी थी प्रसिद्धि हती. ते तेनी अटळ राजभक्तिनी कीर्ति प्रकाशती हती. ए राजविग्रह एने **चाणक्य**ना नीतिकौशल्ये पारिपत्य पामी **चंद्रगुप्त**ने पदभ्रष्ट करवानी प्रतिज्ञा पार पाड्या विना तजी देवो पड्यो तेथी ए उपर प्रमाणे कहे छे. संपादक 'अमात्य' पदे करीने **मलयकेतु**नो अमात्य समजे छे. पण **राक्षस** कांइ **मलयकेतु**ना अमात्यनो होदो धरावतोज न हतो. एनो अमात्य तो **भागरायण** थई पड्यो हतो. जुओ अंक ५ पृष्ठ ९२ पंक्ति ७.

पृष्ठ—१२५ पंक्ति—३–८.

मूळनो संक्षिप्त अर्थ अहि अमे वैशद्य सारुं खिलाव्यो छे. वीर अथवा महावीर पदे करीने **चाणक्य** जणावे छे जे 'पुरुषपराक्रमे तमने वश करवा ए केवळ अशक्य हतुं तेथी आटआटली युक्तियो अमारे योजवी पडी'.

पृष्ठ—१२६ पंक्ति—१५.

'**भद्रभट** आदि भडवीरने भगावी भेळ्या' इ. पूर्व पृष्ठमांना श्लोकमां जे संयोगनुं बीज अंकुरित कर्युं छे; 'माटे आ **मौर्य** तमने जोवा आवे' ए वचनथी वळी जे बे पांखडिये आण्युं छे; वळी 'जो आ अमात्य **राक्षस** तारा पिताना वाराना परंपरागत मुख्य अमात्य, एओने वंदन कर' ए उक्तिथी जे नवपल्लव बन्युं छे; त्यम वळी **चाणक्य**ना ते आदेशने अनुसरी 'आर्य! नमस्कार **चंद्रगुप्त**ना' ए वचनथी जे मुकुलित थयुं छे; तेज संयोगबीज आ उक्तिथी पुष्पित प्रफुल्लित बने छे. अंहि **राक्षस**ने भृत्यरूपे नहि पण **चाणक्य**वत् गुरुरूपे उपसर्पी **चंद्रगुप्त** संयोगनी अनुकूलता आणवानुं करे छे. आम एक पक्षनी प्रवृत्ति चाली रही छे ते दरम्यान **राक्षस**ना मनना संकल्प विकल्प 'शुं करवुं? लाचार!' अने 'योज्यो एणे संबंध' अने 'आहा आ **कौटिल्य**शिष्य मने स्वसेवकनी दृष्टिये जुए छे? अथवा नाना, ए तो **चंद्रगुप्त**नो शुद्ध विनयज छे, जेने हुं मत्सरथी उलटो पेखुं छुं' ए आदि वचनोथी दर्शाव्या छे. आ संकल्प विकल्प **राक्षस**नी बदलाती चित्तवृत्तिनुं स्वरूप चितरे छे.

पृष्ठ—१२९ पंक्ति—१–१०

'हवे हाथीघोडानोए शो अर्थ छे?' इ. कहेवानो अभिप्राय एवो छे जे 'हवे हाथीघोडानुं लश्कर बंधन कवचादिकथी सज्युं ने सज्युं राखवानी जरुर नथी. जे अमात्य **राक्षस**नी भीतिथी ए लश्कर तैयार ने तैयार राखवुं पडतुं ते तो अनुकूळ थया छे. माटे तेमनां ए तंग पलाण पाखर आदि दूर करो ने बीजा सउनां ए बंधन छोडो. मात्र, प्रतिज्ञा पार पाडी जे आ शिखा में बांधी छे, तेज बंधने रहेशे.

पंक्ति—१६–१७.

आ पश्चादवलोकन होई विलोम उपन्यास छे. लोम रचना अनुसार व्याख्यान नीचे प्रमाणेः–.

कोशसहायसंपत्तिवाळा महासमर्थ जे **नंद**–तेए एक नहि पण नवे–केवळ संहार्याज नहि पण निर्मूळ करी नांख्यां; एटलुंज नहि पण ते ते शूळ दूर करी मने खाली पडेली गादी अपावी न अटकतां मारुं राज्य स्थिर कर्युं; ए उपरांत वळी परपक्षना **राक्षस** सरखा प्रकांड राज्यधुरंधर मंत्रीने प्रतिकूळ वर्ततो केवळ बंध न पाडतां पलटी ते साथे मैत्री सजावी. आ रीते मदोन्मत्त नंदना निर्मूलने धर्म, निष्कंटक राज्यलाभे अर्थ, अने कार्यधुरंधर स्थिरभक्तिमान

राक्षस मंत्र कार्यमां योजाये काम, एम राज्यनीतिनो फलभूत त्रिवर्ग सिद्ध थयो छे एटले ईप्सित रह्युं नथी.

पंक्ति—२० इ.

पूर्वे **हिरण्याक्ष** दैत्ये पृथ्वीने महा समुद्रमां बुडावी त्यारे **विष्णु** भगवानने **वराह** अवतार धरी ए दैत्यने संहारी दंतुडीनी अणिये पृथ्वीने टेकावी महासमुद्रमांथी उद्धारी हती. अहिं ते **विष्णु** भगवानने अने **अवंतिवर्मा**नो अभेदारोप छे. जुओ विशेष खुलासा सारुं प्रस्तावना.

मुद्राराक्षस नाटक.

विवेचन.

अंक १, पृष्ठ—२ पंक्ति—२०.

संपादक तथा टीकाकार मूळनी त्रीजी पंक्तिमां 'स्थितिहेतोः' पाठ स्वीकारे छे. परंतु ते सुसंगत अने रुचिकर न होतां B. E. संज्ञक प्रतोमां विसर्ग रहित पाठ आप्यो छे ते ज भाषांतर करतां अमे कबूल राख्यो छे.

पृष्ठ—३ पंक्ति—१५-१६.

संपादके आ उक्ति 'आहा ! कोण आ मारा जीवमां जीव छतां—' एटली-ज कबूल राखी छे. पण आगळ नटी जे 'आ वळी कोण...चंद्रने...बचाव-वानी हिमायत करे छे' एम कहे छे ते कहेवुं जो आ उक्ति अधूरीज लेइये तो बनी आवे नहि. आथी करीने B. N. अने कांक P. संज्ञानी प्रतना अनुरोधे पूर्ण उक्ति स्वीकारी अमे भाषांतर कर्युं छे.

पृष्ठ—४ पंक्ति—१५.

नंद वंशना निकंदननी प्रतिज्ञा पूरी पडये **चाणक्यने** छुटी शिखा पाछी बांधतो प्रवेश करतो कविये अहिं वर्ण्यो छे. टीकाकार नाटकने अंते **राक्षस**-ना संग्रहण बाद **चाणक्यने** शिखा बांधतो लेखे छे; पण ते आंतर प्रमाणथी विरुद्ध होई भूल छे. पात्र प्रवेशनी सूचनामां 'छुटी शिखा छटकावतो लखी तुरतज पात्रमुखे 'शिखा एवी आ बांधु—' कहेवडाव्युं छे, तेमज वळी पृ. ६४ पं. ३ मां **चाणक्यना** मुखमांज 'पुनः शिखा बांधेली जाय कर पींखवा' ए वाक्य मूक्युं छे, ए बधाथी तेमज प्रतिज्ञा पण **नंद**वंशना निकंदननी हती **राक्षसना** संग्रहणनी न हती ए उपरथी ए वातमां कांइ संशय नथी.

पृष्ठ—५ पंक्ति—२२.

अहिं संपादके छापेलो 'कुतः। यस्य मम' पाठ व्याकरणदोषथी ग्रस्त होवाथी B. E. N. इ. संज्ञानी प्रतोनो वधारे विशद 'कुत एतत्' इ. अधिकांशवाळो पाठ स्वीकारी भाषांतर सुधार्युं छे.

पृष्ठ—७ पंक्ति—६-७.

मूळमां 'निरुद्योगः शक्योवस्थापयितुम्' छे, जेना छेल्ला पदनो अर्थ टीकाकार वशेवस्थापयितुम् अने संपादक it is possible to make him steady,

to manage him एवो कांक करे छे. परंतु ते क्लिष्ट छे एम समजी 'अवस्था' (मूळ) नो अर्थ 'रहेवुं' एवो होतां, तेना प्रेरक रूपनो 'राखवुं, बनाववुं' एवो अर्थ लेई अमे तेने अनुसरी भाषांतर कर्युं छे.

पृष्ठ—८ पंक्ति—२१.

मूळमां 'तीक्ष्णरसदायिनाम्' पद छे, जे पैकी **तीक्ष्णरस**नो अर्थ संपादक 'झेर' करे छे. परंतु बीजा अंकमा **राक्षस विराधगुप्त** पासेथी 'मित्र! **चंद्रगुप्त** नगरमां पेठो त्यारपछी ... ... ' इ. उक्तिथी जे हकीगत जाणवा मागे छे ते मात्र विष देनारा संबंधीज नथी पण गूढ मारा संबंधी पण छे, ए बीजो अंक वाचतां ने तेमांए '**चंद्रगुप्त** केरो भलीभात—— —' इ. श्लोक जोतां सहज जणाई आवशे. आथी करीने अमे तीक्ष्ण अने रसदायिन् ए पृथक स्वतंत्र शब्द लेइये छिये, जेमनो अर्थ 'घातक' अने 'झेर देनार' एवो यथाक्रम थाय छे. जुओ दशकुमारचरितना पृष्ठ १६३ नी पंक्ति १८ ने ... रनी संस्कृत टीका अने तेमां मूकेलुं 'रसाधानं विषाधानं तीक्ष्णा नर्माण घातकाः' ए **वैजयंती**नुं वाक्य. जुओ वळी **हितोपदेश** पृ. १०६.

पृष्ठ—११ पंक्ति—११.

अहिं मूळमां 'किंदु उण' छे ते शाब्दिकने ध्यानमां लेवा जेवुं छे. उण (सं. पुनः) पदनो कांइ अर्थज नथी. मात्र पदपूर्ति सारुं अनुग तरीके वापर्युं जणाय छे. 'कोण' सर्वनाममां ए अनुग केवळ संहित थई गयो छे. जुओ प्राकृत रूपो कउण, काउण इ.

पंक्ति—१७–२२.

अहिं मूळनी **निपुणक**नी प्रथम उक्तिमांथी **'जीवसिद्धि'** अने ते पछीनी **चाणक्य**नी उक्ति पूर्वेनी सूचनामांथी 'सहर्षम्', तथा तदनंतर **निपुणक**नी बीजी उक्तिमांथी 'सो' पद तजी देई भाषांतर आप्युं छे. छापेली **बंगाळ**नी अने **मुंबाई**नी प्रतना पाठ सुसंगत नथी.

पृष्ठ—१४ पंक्ति—२४.

अहिं मूळमां संपादके 'पूर्व' पाठ स्वीकार्यो छे. पण आनीज पूर्वेनी आठमी पंक्तिमां एज पद लेखार्थनुं विशेषण होई पुल्लिंगमां वापरेलुं छे; एटले अहिं एनो नपुंसकमां प्रयोग बाधित दीसे छे. माटे B. E. अने N. संज्ञानी प्रतोनो 'सर्व' पाठ अमे स्वीकार्यो छे.

पृष्ठ—१५ पंक्ति—४.

मूळमांनुं 'केनापि' पद संदेश मोकलनारने, 'कस्यापि' पद संदेश जेना प्रति

छे तेने, अने 'स्वयं' पद संदेश लेई जनार–लेखातर्गत सूचन प्रमाणे मुखसंदेश कहेनार **सिद्धार्थकने**, लागु पडे छे. वळी 'वाच्यं' पद वच् धातुना प्रेरकना विध्यर्थ कृदंतनुं रूप छे; अर्थात् तेनो अर्थ 'आख्येयम्=कहेवुं' नहि पण 'आख्याप्यम्=कहाववुं' थायछे. जो 'कहेवुं' एवो अर्थ करिये तो 'केनापि' पद कहेनार–संदेश लेई जनार–**सिद्धार्थकने** लागु पडे, ने तेम थाय तो लेखमां तेनुं नाम खुल्लुं न घटे; एटले **शकटदासने** वहेम ऊपज्या विना पण नज रहे, जेथी ते लेख लखी आपेज नहि. जुओ अंक ५ मां कपट लेखना संबंधमां विवेचन. आ कारणसर उपर प्रमाणे 'वाच्यं' ते प्रेरक कर्मणिरूप लीधा विना छूटको नथी.

पृष्ठ––१७ पंक्ति––८–९.

मूळमां अहिंनी तेमज **वंग** आवृत्तिमां आ अर्थनो श्लोक गद्य रूपे छाप्यो छे; परंतु ते शुद्ध आर्या छे. पद्यस्वरूप जाणवामां आवे एटला माटे ते अहिं आपिये छिये.

चाणक्कम्मि अकरुणे सहसा सद्दाविअस्स वि जणस्स ।
णिद्दोसस्स वि सङ्का किं उण मह जाददोसस्स ॥

पृष्ठ––१९ पंक्ति––११.

मूळमां आ अने ते पछीनी उक्तिमां 'वाआच्छलं' अने 'छलं' तथा 'अच्छलं' पद छे तेमांना 'छल' अंशनो अर्थ संपादक 'अप्रमाणिकपणुं कूडकपट' एवो आपे छे. पण पूर्वापर संबंध जोतां 'स्खलित–दोष–अपराध' एवो अर्थज ठीक लागे छे. जुओ **मेदिनी** छलं स्खलित साद्ययोः । वळी जुओ **हैमी देशीनाममाळा** पृ. ११ पं. ३ अच्छलमनपराधः । **चंदनदासनुं** वाणियागतथी कहेवुं एवुं छे जे एटली बोलवामां चूक थई.

पंक्ति––२२–२३.

आवा अर्थनो मूळनो श्लोक ग्रंथकर्तानो नथी, पण केवळ सुभाषित तरीकेज दाखल करेलो छे, एम जणाय छे. आ तर्कने G संज्ञानी प्रतनो 'उक्तं कस्यापि' पाठ पुष्टि आपे छे. वळी **सरस्वतीकंठाभरणमां** पण उत्तरवक्रनिदर्शनना दृष्टांत तरीके आवोज श्लोक संस्कृतबद्ध ननामो आप्यो छे, अने **सुभाषितावली**-मां पण संस्कृतबद्ध आवो श्लोक छे; ते उपरथी पण आज विचार दृढ थाय छे. ए श्लोकनुं उत्तरार्ध कहेवतरूप जणाय छे. जुओ **कर्पूरमंजरी** पृ. १००. टीकाकार पण प्रस्तुत आर्या प्रक्षिप्त लेखे छे.

पृष्ठ—२२ पंक्ति—२०.

आ **शार्ङ्गरव**नी उक्ति पूर्वे 'पडदा पाछळ कोळाहळ संभळाय छे' ए सूचना पछी अहिंनी आवृति नीचे प्रमाणे त्रण उक्ति वधारे आपे छे.

चाणक्यः। शार्ङ्गरव शार्ङ्गरव।

शिष्यः। प्रविश्य। उपाध्याय आज्ञापय।

चाणक्यः। किमेष कलकलः।

वंग आवृत्तिमां पण थोडाघणा फेरफारथी उपर प्रमाणेज छे. परंतु आ पाठ असंभाव्य छे; केमजे **शार्ङ्गरवने चंदनदास**नी जोडे मोकल्यो हतो; जेथी **चाणक्य** तेने हांक मारे ए घटतुं नथी. शिष्य पोतेज **चंदनदासने** दुर्गपाळना हाथमां सोंपीने पाछा आवतां रस्तामां **शकटदास** भागी गयानी खबर सांभळी श्वासभर्यो आवे ने वात **चाणक्यने** कहे ए वधारे संभवतुं तेम बेसतुं आवतुं सयुक्तिक छे. वळी **चंदनदास** हाजर छतां तेने बिहीवराववाने शिष्यने मोकली कोलाहल संबंधे पृच्छा करावबीए घटे छे; पण **चंदनदास**ना गया पछी तेम करवानुं तेवुं काइ कारण नथी. अहिं क्षेपक भाग पेशी गयो छे ए वात M. R. अने K. संज्ञानी प्रतो आ त्रणे उक्ति छोडी दे छे तेथी सिद्ध थाय छे. आंतर प्रमाणने अनुसरी संगति साचवी अमे ए त्रण प्रतोनो पाठ स्वीकारी भाषांतर करतां उपरनी त्रण उक्ति गाळी नांखी छे.

अंक २. पृष्ठ—२४ पंक्ति—१२–१४.

संपादके स्वीकारेलो पाठ अहिं 'अमन्तोसहिकुसलो वालग्गाही मत्तमतंगआरोही लद्धाहिआरो जिदकासी राअसेवओ' ए प्रमाणे छे. तेमां व्यालग्राही अने राजसेवकना संबंधमां विधेय अंश यथान्याय जूदो जोवामां आवे छे, परंतु मतंगजारोहीनो विधेय अंश व्यस्त नथी: जे व्याकरणदृष्टिये ठीक नथी. आथी करीने ए अंशमां अमे पमत्तो मतंगआरोही पाठ G. A. आदि संज्ञानी प्रतो उपरथी उपजावी भाषांतरमां तेने अनुसर्या छिये.

पृष्ठ—२६ पंक्ति—९.

अहिं संपादके श्लोकनी प्रथम पंक्तिमां 'विषयव्यासङ्गरूढात्मना' पाठ लीधो छे परंतु विस्मृतभक्तित्व, भीरुत्व अने प्रतिष्ठार्थित्व आदि दोषवाचक पद आज श्लोकमां ते ते प्रसंगे प्रत्युक्त जोइये छिये, तेना अनुरोधे '–मूढात्मना' पाठ वधारे रुचिकर छे. आ B. E. N. G. अने P. संज्ञानी प्रतोनो पाठ छे ने ए बहुसंमत छे तेमज इतर पाठ भ्रांतिमूलक जणाय छे तेथी एज ग्राह्य लही तेनेज अहिं अवलंब्यो छे.

पृष्ठ—२७ पंक्ति—१४–१५.

मूळमां अहिं 'परकृत्योपजापार्थम्' पद छे, जेनो संपादक 'शत्रुनां कृत्यनी छूपीरीते ना मी आपवा सारुं' एवो अर्थ करे छे, ने कहे छे जे आगळ मूळ पृष्ठ १०७ मां उपजाप शब्द फरी वापरेलो छे त्यां पण तेनो आवोज पण सहज भिन्न अर्थ छे. आ बीजी वारना 'उपजाप' शब्दनुं निर्वचन ते स्थळेज स्पष्ट करीशुं. पण अहिं एटलुं कहिये छिये जे त्यां पण कांइ एवो अर्थ नथी थतो. प्रस्तुत विषयमां तो एओ जे अर्थ आपे छे ते केवळ बाधित छे; केमजे अहिंज एक पंक्ति मूकी के 'शत्रुनी प्रतिक्षण वातमी मेळववा तथा तेमनुं ऐक्य भेदवा **जीवसिद्धि** आदिक मित्रोने योज्या छे' एम आपणे वांचिये छिये. आज वाक्यथी वळी एम पण दीसी आवे छे जे तेनो 'अर्थ भेद' एटले 'फाटफुट' पण नथी. आथी करीने प्रकृत पदनो 'शत्रुओनां कृत्यना उपजाप सारुं–शत्रुओने स्वकार्य विषे उपजपित करी उंधी मति आपी अकार्यमां प्रवृत्त करवानी खटपट सारुं' एवो अर्थ करिये छिये. एना समर्थनमां **दशकुमारचरित**–पृ. १६२–पं. १९ नुं 'तेषु तेषु चाकृत्येषु प्रासरन् परोपजापाः' ए वाक्य तथा ते उपर **पदचंद्रिका**मां **अमर** (? **अजय**) मांथी आपेलुं 'उपजापः कृतो (? कृतेर्) भेदः' ए प्रमाण लक्षमां लेवा सुज्ञ वांचनारने विनविये छिये.

पृष्ठ—३० पंक्ति—२३–२४.

राक्षस अहिं **विराधगुप्त**नुं पूरुं नाम कहेवा तो जतो हतो परंतु **प्रियंवदक** पासे होवाथी तेनाथी छुपाववा फेरवी वाळी उपर प्रमाणे कहे छे. जाणे के 'अये विराधरूपः– अरे! शुं वरवुंविराध रूप छे!' एम कहेवा जतो होय, पण असभ्यतानी शंकाथी वचेथीज '–रूपः' अंश पडतो मूकी मुद्दाना अंश उपर आववा करतो होय, तेम 'ननु विरूढश्मश्रुः' कही उक्ति पूरी करी दे छे. 'अये' पद मूळे स्मरणार्थे ने पाछळथी पलटेली वचनरचनामां संभ्रमार्थे छे, अने अपूर्ण 'विराध' अंश प्रथमा **विराधगुप्त**ना अर्थे पण पाछळथी फेरवी वाळतां 'अरे! शुं वरवुंविराध रूप छे!' एवा गम्यमान अर्थे योजेल छे, अने 'ननु' विनिग्रहार्थे छे. टीकाकार 'विराध' अंश 'प्ररूढश्मश्रुः' साथे समस्त ले छे. परंतु वचे 'ननु' निपात आव्यो छे तेथी ए व्याख्यान ग्राह्य नथी.

पृष्ठ—३२ पंक्ति—१७.

मूळना 'अन्तर्नगरवासिषु' पदे करीने संपादक 'नगरमांहिना **राक्षस**ना पक्षना' एवो अर्थ करे छे, पण चतुर्थ अंकना छेवटमां आवेला 'लायक लडायक छो...'

इ. श्लोकथी तेमज ते पहेलांनी गद्य वातचितथी एम जणाय छे जे **राक्षस** ज्यारे नगर छोडी नीकळ्यो त्यारे तो पुरवासी समस्त **नंदना** पक्षमां हता, जेमने प्रथम अंकमां **निपुणक** कहे छे तेम रहेते रहेते ते ते अणरागनां कारण दूर करी करी **चाणक्ये** पाछलथी मेळवी लीधा.

पृष्ठ—३४ पंक्ति—१५–२२.

अहिं मूळ पृ. ९१ पं. ९ मां 'कृताभिषेके किल वैरोचके' लखी **वैरोचकना** विधेय पद तरीके पृ. ९२ पं. ५ मां 'नन्दस्य भवनं प्रविशति' ए आपेलुं छे तेथी बहुसंमत बीजीवारनुं 'वैरोचके' पद प्रक्षिप्त होतां A. P. संज्ञक प्रतोने अनुसरी ते गाळी नांख्युं छे.

पृष्ठ—३५ पंक्ति—२७.

मूळमां अहिं 'योगचूर्णमिश्रितमौषधम्' एम छे. एमांनां 'योगचूर्ण' अंशनो संपादक 'चमत्कारिक असर करनार चूर्ण' एवो अर्थ आपेछे. परंतु क. स. सा. पृ. ८३ श्लो. ८४ मांना 'प्रतियोग' पदथी तेमज द. कु. च. पृ. १६३ पं. १२ ने १६ तथा ते उपरनी टीका उपरथी जणाशे जे आवा प्रसंगमां वपराता 'योग' शब्दनो अर्थ अमे आप्या प्रमाणे झेर थायछे. जुओ वळी **मेदिनी.**

पृष्ठ—३८ पंक्ति–९.

अहिं मूळमां 'निगृहीतः' एवो अंश छे तेनो संपादक 'केद कर्या' एवो अर्थ करे छे. पण **जीवसिद्धि** अने **शकटदासने** केदथी भिन्न सजा थई छे ते जोतां केवळ 'शिक्षा' नो भाव लेई भाषांतर आप्युं छे.

पृष्ठ—४० पंक्ति–२१.

अहिं मूळमां श्लोकना बीजा चरणमां 'मूर्ध्नवबध्य स्रजम्' एवो पाठ लेई 'अवबध्य'नो अर्थ 'विधूत्य' एवो करी भाषांतर करवामां आव्युं छे. संपादक जो के पाठ तो अहिं बीजो छापे छे तथापि पोताना टिप्पणमां ते अमे लीधेला पाठ तर्फ स्पष्ट वलण बतावे छे. त्रीजा चरणमां 'अपरोप' शब्दनो **'राज्यभ्रंश'** अने **'आघात'** शब्दनो 'वजाडवुं' एवो अर्थ संपादक आपे छे. पण प्रथम शब्दनो 'उन्मूलन' ए वधारे विशद अर्थ होई अमे भाषांतरमां 'निकंदन' पद योज्युं छे. आथी **नंदनुं** उन्मूलन उपमान छतां उपमेय अंशनो 'आघात' शब्द पण वधवाचक लेवो उचित छे. जुओ आ अर्थना समर्थनमां मृ. पृ. १४४ पं. ३ तथा हि. ४–७१.

पृष्ठ—४१ पंक्ति १७–१८.

अहिं पण संपादकना दक्षिणात्य पाठने बदले B. E. N. G. संज्ञक प्र-

तोना ' काममपर्याप्तमिदमस्य ' इ. प्राच्य पाठ वधारे सारो होवाथी भाषांतरमां तेज स्वीकार्यो छे.

पृष्ठ—४३ पंक्ति—४.

अहिं मूळमां ' उपजाप शब्द ' छे. जेनो अर्थ संपादक overtures अथवा secret negociations with the enemy's adherents एवो कांक आपे छे. परंतु अहिं कांइ 'करारपूर्वक सरत ' के ' मसलत ' कशुं ए न हतुं. मात्र अकार्यमां प्रवृत्ति करावबा—आडे रस्ते चढावी देवा, गूढ युक्तियो राक्षस ते ते प्रणिधि द्वारा योजतो. अर्थात् पूर्व प्रसंगमां ए शब्दनो जे अर्थ करवामां आव्यो छे तेज अहिं लेवानो छे. अमे ते बदल मभम 'खटपट' (अलबत भमावी दूषित करी अकार्यमां प्रवृत्त करवानीज खटपट) ए शब्दज भाषांतरमां योज्यो छे.

पंक्ति—६.

अहिं मूळमां ' अमात्य बाढं क्षमन्ते यथाप्रकाशमनुगच्छन्त्येव ' एम छापी पाछळना भागनो They act in pursuance of such overtures as things are coming to light एवो कांक अर्थ संपादक करे छे. आ रीते जोतां तेओ ' बाढं क्षमन्ते ' अने ते पछीना पदसमुच्चयने बे समकक्ष स्वतंत्र वाक्य लेता होय एम दीसे छे पण आम लेवामां बहु बांधा छे. प्रथम तो जोडवाने संयोजक नथी. संयोजक अध्याहार लेतां ए बेनो संबंध बेसतो नथी. तेम वळी ' यथाप्रकाश ' शब्दनो अर्थ क्लिष्ट छे. ए समस्त पद मानवाथी वळी बीजो बांधो आवे छे ते ए जे समासगत 'प्रकाश' अंशने एकलो पाडी पछीनी राक्षसनी 'सखे किं तत्र प्रकाशम्' ए उक्तिमां जोडवो पडे छे. आथी अमे प्रथम वाक्यने मुख्य वाक्य लेई बीजाने गौणवाक्य मानी 'यथा' ने संयोजक गणी 'प्रकाशम्' पद स्वतंत्र लेखी ' यथा प्रकाशमनुगच्छन्त्येव तथा बाढं क्षमन्ते ' एम अन्वय कल्पी भाषांतर कर्युं छे.

पंक्ति—८–१२.

अहिं पण मूळमां उपर जेवोज छापवामां वाक्ययोजना विषे गोटाळो थई गयो जणाय छे. 'कुपितश्चन्द्रगुप्तश्चाणक्यस्योपरीति' अहिं विराम जोइये, अने एमां अंतना 'इति' पदने 'इदं तत्र प्रकाशम्' साथे योजके जोइये. विराधगुप्तनो स्पष्ट अभिप्राय एवो छे जे मलयकेतुने भागी जवा दीधा ने पकड्यो नहि तेथी चंद्रगुप्त चाणक्य उपर गुस्से छे एज आपणी खटपट फाव्यानुं प्रकट प्रमाण

छे; वधारामां वळी मारा पोताना अनुभवथी कहुं छुं जे **चंद्रगुप्तनुं** मन जेम उंचुं छे तेम **चाणक्यनी** चाल पण **चंद्रगुप्त** प्रति बदलाई छे;—ते तेने वारे वारे आडो आवी दुभवे छे. अमारी योजना प्रमाणे पुनरुक्तिनो संभव न रहेतां ' इत्थमपि ' मानुं ' अपि ' पद सार्थक थशे.

अंक ३. पृष्ठ—४६ पंक्ति—२२.

आ पडदा पाछळथी प्रतीहारीनुं बोलवुं छे, तेथी मूळमां ए उक्ति संस्कृतमां आपी छे ते प्राकृतमां जोइये. N (४) संज्ञानी प्रत ते भाग्यानुख्या प्राकृतमांज आपे छे.

पृष्ठ—४७ पंक्ति—११.

मूळमां 'आत्मवद्भिः' पद छे जेनो संपादक टीकाकारने अनुसरी ' मनःसंयमवाळा ' एवो अर्थ आपे छे. पण आ अर्थ नीतिशास्त्रना संपूर्ण संकेत प्रमाणे न होतां असे उपर **कामंदकीय नीतिसारने** अनुरोधे भाषांतर कर्युं छे. ते ग्रंथमां आत्मसंपत्ति नीचे प्रमाणे आपी छे.

वाग्मी प्रगल्भः स्मृतिमानुदग्रो बलवान् वशी ।
जेता दण्डस्य निपुणं कृतशिल्पः स्ववग्रहः ।
पराभियोगप्रसहो दृष्टसर्वप्रतिक्रियः ।
परच्छिद्रानुपेक्षी च संधिविग्रहतत्त्ववित् ॥
गूढमन्त्रप्रचारश्च देशकालविभागवित् ।
आदाता सम्यगर्थानां विनियोक्ता च पात्रवित् ॥
क्रोधलोभभयद्रोहस्तम्भचापलवर्जितः ।
परोपतापपैशुन्यमात्सर्येर्ष्यानृतातिगः ॥
वृद्धोपदेशसंपन्नः शक्तो मधुरदर्शनः ।
गुणानुरागी स्थितवागात्मसंपत् प्रकीर्तिता ॥

पृष्ठ—५५ पंक्ति—१०.

अहिं मूळ श्लोकना चोथा चरणमां सर्वसंमत पाठ 'हरतु तनुरिव क्लेशमैशी शरद्वः' एवो छे. ए पाठ भुलावो खवरावनारो छे. बन्युं छे पण एमज. टीकाकार अने संपादक आ कुटिल रचनाथी भ्रममां भरमायाज छे. तेओ 'शरद्'ने प्रधान पद—उपमेय लेखी ' शरद तमारुं रक्षण करो ' एवोज अर्थ असंदिग्ध शब्दोमां आपे छे. टीकाकार 'शरद्'ने उपमेय गणतां करी अर्थ घटनानी मुश्केली जोई तेमांथी छटकवा शरद अने **शिवमूर्तिनो** परस्पर उप-

मानोपमेयभाव लेता होय तेम लोचा वाळे छे. संपादक अहिं टीकाकारथी जूदा पडे छे, अने पोते आ श्लोक उपर स्वतंत्र स्वकल्पित व्याख्यान आपे छे. परंतु कल्पना उद्भट छतांए अर्थ केवळ क्लिष्ट अने असंभाव्य ऊपर्जी आवे छे. मूळना 'भस्म' अने 'ऐभी कृत्ति' शब्दनो साहजिक मान्य अर्थ प्रकरण जोतां 'विभूति **शिव** चोळे छे ते' अने '**गजासुरनुं** चर्म **शिव** ओढे छे ते' एवोज छे. एने बदले संपादक 'शरद ऋतुनां धोळां वादळां' अने 'असमान' एवो अघटमान अर्थनो आक्षेप करे छे. **भट्टाचार्य तारानाथ** पण 'शरद्'नेज उपमेय ले छे; तेओ रूपक अलंकार लेखी 'इव'ने स्थाने 'इह' पाठ लेई अर्थ करवा जाय छे, पण तेथी गोटाळो दूर थतो नथी.

अहिं यातो जाणीजोईने कविये आवी कूटरचना करी होय अथवा तो बहुज जूना वखतथी कविनो असल पाठ पलटाई गयो होय. गमे तेम होय तोपण पूर्वापर संगति जोतां 'हरतु शरदिव क्लेशमैशी तनुर्वः' (अमे तो गुंचवण दूर करवा पाठ पण आज अहिं कल्पवा चाहिये छिये) एवोज कविनो अभिप्रेत अर्थ छे; केमजे 'प्रथमं तावद्विशिष्टदेवतास्तुतिरूपेण प्रवृत्तशरद्गुणप्रख्यापनमाशीर्वचनम्' एम जे **चाणक्यने** मुखे कवि कहे छे ते उपरथी खुल्लुंज छे जे प्रथमनुं अर्थात् पहेला वैतालिकनुं बोलवुं ते विशिष्ट देवतानी स्तुति रूपे आशीर्वचन छे, जेमां प्रसंगवशात् चालती शरद ऋतुनुं पण प्रख्यापन कर्युं छे; एटले जेम ते वैतालिकना बीजा पद्यमां **विष्णुनी** दृष्टिनुं वर्णन छे तेम पहेला पद्यमां **शिवनी** मूर्तिनुंज वर्णन समजवुं जोइये. आथी 'ऐशी तनुः' पद उपमेय अने 'शरद्' पद उपमानने स्थाने समजवुं जोइये, अने देवस्तुति रूपेज बंने पद्य लेखवां जोइये. आम करवाथी, अन्यथा एक वखत शरद ऋतुनुं अने बीजी वखत **विष्णुनी** दृष्टिनुं वर्णन लेतां प्रक्रम भंगनो दोष आवे, ते पण दूर थाय छे.

पृष्ठ—५८ पंक्ति—१३–१४.

आ भाषांतर संपादके आपेला अति संक्षिप्त दाक्षिणात्य पाठ प्रमाणे छे. एना करतां B. N. G. संज्ञक प्रतोनो प्राच्य पाठ विशेष उक्तिप्रत्युक्तिवाळो होई प्रकरणने ठीक दीपावे छे. माटे ए पाठने अवलंबी शुद्धिपत्रमां प्रकारांतरे भाषांतर आप्युं छे ते आ बे पंक्तिने ठेकाणे वांचवा वाचकवर्गने विज्ञप्ति छे.

पंक्ति—१५–१६.

आ स्थळे अमे संपादकना दाक्षिणात्य पाठनो अनादर करी प्राच्य पाठज स्वीकार्यो छे; केमजे दाक्षिणात्य पाठमां 'इतोपरागादपक्रम्य मलयकेतुमाश्रिता-

नाम्' एटलो जे वधारानो अंश छे ते आगळ आपेली यादीनुं आगळथी कढंगु सूचन करी वैरस्य उपजावे छे. वळी ते ए यादीना आरंभना शब्दोए कंईक अंशे पुनरुक्त पण छे.

पंक्ति—१९–२१.

पूर्वनी पंक्ति १३–१४ ना संबंधमां दर्शावेलां कारणोने लीधे तथा बीजापण सबबथी संपादकनो संक्षिप्त दाक्षिणात्य पाठ तजी वधारे उक्तिप्रत्युक्तिवाळो प्राच्य पाठ अहिं अमे कबूल राख्यो छे; जेथी करीने आगळ पृ. ५९ पं. ६ नी उक्ति पण प्राच्य पाठ अनुसार **चंद्रगुप्त**ना म्होमां मूकवी पडी छे. आवीज रीते पृ. ६० पं. ८–१० मां पण वधारे उक्तिप्रत्युक्तिवाळो प्राच्य पाठ संग्रह्यो छे.

पृष्ठ—५९ पंक्ति—५.

आना पछी चारे दाक्षिणात्य वर्गनी पोथीमां तेमज बे B. N. संज्ञक प्राच्य-वर्गनी प्रतोमां बहु भागे नीचेना शब्दो वधारे जोवामां आवे छे:—'एते वयं देवस्य कार्ये अवहिताः स्म इति। प्रकाशम्। एतावदेतत्पत्रम्।' आ भाग अमने निरर्थकज नहि पण उलटो अर्थने हानि करनार भासे छे. **चाणक्य** सरखो गूढ खटपटी पुरुष एना आप्त प्रणिधि **सिद्धार्थक** पूर्वे तो शुं पण अंतरना मित्र क्षपणकवेषी **इंदुशर्मा** आगळ पण **भद्रभट** आदिना नाशी जवानो भेद जे बोलतो नथी ते ए परम रहस्य एक सामान्य राजलेखक पासे रहेती खुल्ली यादीमां कदीपण अंकित करे ए अमने असंगत अघटित अने असंभाव्य लागे छे. आथी अमे E. अने G. संज्ञानी पोथीने अनुसरी ए बहुसंमत उपपत्तिविरोधी अधिकांशनो अनादर कर्यो छे.

पृष्ठ—६३ पंक्ति—७–८.

अहिं मूळमां 'नवनवतिशतद्रव्यकोटीश्वराः' एवुं पद छे, ए जरा गुंचवण भरेलुं छे. जो 'कोटि' शब्द 'करोड' ए संख्यावाचक होय तो समास कांइक कढंगो भासे छे. तेम नहि ने जो ते समूहवाचकज होय तो 'नवनवतिशत' एटलुंज द्रव्य परिमाण **नंद**नी समृद्धिना प्रमाणमां स्वल्प जणाय छे. **कथासरित्सागर**मां **नंद**नी समृद्धिनुं परिमाण 'नवाधिकाया नवतेः कोटीनामधिपो हि सः' ए रीते आप्युं छे; ज्यां 'कोटि' शब्द संख्यावाचक समजाय छे. आथी उपरना पदमां पण ते संख्यावाचकज लेवो ठीक जणाय छे. एम भासे छे जे असल पाठ 'केनान्येनावलिप्ता नव नवनवतिद्रव्यकोटीश्वरास्ते' एवो हशे, जेमांनुं प्रथम 'नव' पद न समजायाथी क्षेपक लही ते बदल वृत्तनुं माप जाळववा पाछळथी 'नवनवति'

पूंठे 'शत' शब्द नांखी दीधो हशे. **नंद**ना संबंधमां 'नव' विशेषण मूकवाथी चतुर्थ चरणमांनुं 'पर्यायभूताः' पद सार्थक थाय छे. **कथासरित्सागरने** अनुगुण पाट जो नज लेवो होय तो कढंगा समासथी संतुष्ट रही 'शत' शब्दमां **चाणक्य**नी बडाईज प्रदर्शित समजी निर्वाह करवो रहेशे.

अंक ४ पृष्ठ—६७ पंक्ति—३.

मूलमां त्रीजा चरणमां 'उपग्रह' शब्द छे तेनो टीकाकार 'निरोध' पर्याय आपी अर्थ न्यूंथी नांखे छे. अमे 'अनुकूल' अर्थ लेई भावार्थ जाळवी भाषांतर कर्युं छे, जुओ **मेदिनी.**

पृष्ठ—६८ पंक्ति—२.

शब्दशः अर्थ तो 'वाग्देवीज डाबी आंखना फरकवाथी स्वयं प्रसक्त होई प्रतिपादन करे छे' एवो थाय. एना भावार्थने अवलंबी भाषांतर कर्युं छे. मूळमा 'प्रस्तावगता' पद छे जेनो टीकाकार 'संवादं गता' अने संपादक as contained in the foregoing conversation. एवो अर्थ आपे छे. ए बंने अर्थ अहिं सर्वांशे लागु न होतां अग्राह्य छे.

पृष्ठ—७० पंक्ति—१४.

अहिं 'आत्मगुणसंपन्न' पद छे. तेनो संपादके possessed of similar qualities, tastes, feelings &c. as one's self एवो अर्थ आप्यो छे. पण ते अर्थशास्त्रना संकेत प्रमाणे न होतां अग्राह्य छे. जुओ वळी आत्मसंपत्तिना उतारावाळुं अमारुं विवेचन.

पृष्ठ—७१ पंक्ति—१८.

अर्थशास्त्रमां प्रारब्धनिर्वहणात्मक व्यवसायने सत्त्व कहे छे. ए संकेतने अनुसरी 'सत्त्वभंग' पदनो अर्थ करवानो छे. टीकाकारना 'मनोभंग' पर्यायने अनुसरी संपादक giving offence अर्थ आपे छे॰ते बरोबर नथी. अमारा मतना समर्थनमां जुओ का. नी. सा. १. २६ टीका भाग; त्यम वळी क. स. सा. २. ४. ४४ नुं नीचे आपेलुं वचन.

प्रविवेश स तेनैव सह विन्ध्यमहाटवीम् ।
स्वप्रज्ञामिव सत्त्वाढ्यां स्वनीतिमिव दुर्जयाम् ॥

जुओ वळी **मेदिनी.**

पृष्ठ—७५ पंक्ति—१५.

मूळमां 'आयतिग्लानिभीतः' पद छे. तेनो अर्थ टीकाकार 'प्रतिज्ञातार्थनिर्वहण क्लेशासहिष्णुः' एवो करे छे, अने संपादक तेज उपरथी कदाच being afraid of inability in future एम आपे छे. अमे तो 'भावि नासिपासीथी बिहीतो' एवो अर्थ समजी जलदी बोध सारु उत्तरार्धनी वाक्यरचना पूर्वार्धना प्रक्रमने अनुसार करी छे.

पृष्ठ—७९ पंक्ति—१२.

संपादके अहिं आज्ञार्थ 'रुन्धन्तु' रूप राख्युं छे. पण पूर्व श्लोकमां भविष्य रूप होतां करी B. E. N(r) संज्ञानी प्रतोना 'रोत्स्यन्ति' पाठ स्वीकारी 'वेरशे' एवो अर्थ संगति जाळववा आप्यो छे.

पृष्ठ—८० पंक्ति—१२–१५.

अमे आ स्थळे नीचे प्रमाणे पाठ B. G. E. तथा M. R. वगेरे संज्ञी प्रतो उपरथी योजी भाषांतर कर्युं छे.

सावगा णिरुविदा मए आमज्झण्णादो णिवुत्तसत्तमकल्णा सोहणाविद्दा संपुण्णचन्दा पुण्णमासी । तुह्माणं उत्तलाए दिसाए दक्खिणं दिसं पत्थिदाणं अदीकखणे णकखत्ते ॥

आ पाठ बहु भागे आ प्रमाणे तो G अने E संज्ञक पोथीमांज जोवामां आवे छे. पूर्वत्राक्यमां B. संज्ञक प्रतमां 'णिवुत्तसत्तसकला' पाठ छे ते 'म'ने स्थाने 'स' वंचायाथी अने 'सोहणा' नो णकार पासे आव्ये पूर्व पदनो णकार छोडी देवायाथी लेखकना प्रमादथी उत्पन्न थयो जणाय छे; केमजे बीजी कोइ पोथीमां एवो पाठ नथी, अने वळी ज्योतिष परिभाषामां सकल (सं. शकल)नो 'करण' अर्थ थतो जाणवामां नथी. N. M. R. संज्ञक पोथियो 'सत्तम' ने बदले 'संपुण्ण' तथा 'समत्थ' अने 'कलणा' बदल 'कल्लाण' के 'कल्लाणा' वांची 'सोहणा' पदनो लोप करे छे. पण ए पाठे भ्रांतिथी ऊपज्यो भासे छे. एकां तरित पदमां 'संपुण्ण' शब्द छे तेथी N. संज्ञक पोथीमां 'सत्तम' ने बदले 'संपुण्ण' तथा M. R. संज्ञक पोथीमां सहज फेरफारथीज 'समत्थ' शब्द दाखल थया अने तेम थतां 'कलणा' अंशनो अर्थ जोइये तेवो बंध बेसतो न आव्ये. B. G. E. प्रतना 'सोहणा' पाठ साथे एकार्थीभावनो 'कल्लाण' के 'कल्लाणा' पाठ ऊपज्यो एम धराय छे. गमे तेम हो तोपण संपादके लीधेला पाठना अर्थनो निर्वाह क्लेश वगर थाय एम नथी त्यम वळी तेमां मुहूर्तविषे आपातरमणीयत्व नथी बलके उपर तरी आवतुं अशुभत्वज दीसी आवे

छे जे प्रकरणने केवळ अनिष्ट छे. अमे लीधेलो पाठ ज्योतिषनी परिभाषाने अनुसरतो होई ज्ञानित्वनुं अभिमान धरावता क्षपणकना म्होमां सार्थक थई शोभा आपे छे, तेनी साथे ते मुहूर्त विषे आपातरमणीय पण छे.

उत्तर वाक्यमां पण संपादके 'अ' अने 'दक्खिणे' बे स्वतंत्र पदने एक लेख्याथी भारे अनर्थ थयो छे. अहिं पण 'अदक्खिणे' एम एकपदात्मक पाठ लेवाथी प्रकरणने अनिष्ट अशुभत्व आवी पडे छे. **राक्षस**नी आना पछीनी 'भदन्त तिथिरेव तावन्न शुध्यति' ए उक्तिनी मतलब एवी छे जे ' भलेने चंद्र करण अने नक्षत्र अनुकूळ होय ! तो पण मूळमां तिथिज मुद्दे अनिष्ट छे.' आथी कर्णेने चंद्र करण अने नक्षत्र तो इष्ट जोइयेज. आ कारण सर B. E. N. G. संज्ञक प्रतोना पूर्व दिशाना पाठथी पुष्टि मळवाथी अमे 'अ' अने 'दक्खिणे' ए बे नोखां पद लेई भाषांतर कर्युं छे. टीकाकार जोके मुहूर्तविषयक अर्थमां 'अदक्खिणे' एक पद ले छे तथापि श्लेषबळे गूढ अर्थ उपजावतां 'अ' ने नोखो पाडी 'च' ना अवशेष रूपे लेतो होय एम 'इत्थं प्रस्थितानां च क्षत्रं न दक्षिणम्' ए निर्वचनथी जणाय छे.

पृष्ठ—८१ पंक्ति—३–४.

अहिं मूळनी पंक्तियो मापसर छपायली न होतां तेना उपर श्लोकसंख्यांक नथी. आ बे पंक्तिनी पछीनी आर्यानी पहेली पंक्तिमां मूळमां 'होइ' पद छे तेवुंज कोइ पद आ त्रुटित पद्यमांथी लुप्त थयुं जणाय छे. ऐ **वंग** प्रतने अनुसरी मूकिये तो आ बे पंक्तियो उद्गीतिना रूपमां बराबर गोठवाई जाय छे. आवश्यक फेरफार साथे ते अमे नीचे आपिये छिये.

एक्कगुणा होइ तिही चउग्गुणे होइ णक्खते ।
चउसत्तिगुणे लग्गे एसे जोइसिअतन्तसिद्धन्ते ॥

पंक्ति—१३.

जीवसिद्धिनी आ उक्तिमां मूळमां कदन्ते (अमे संपादकना 'कअन्तो' पाठने बदले पूर्वना 'भदन्ते' पाठ साथे प्रास लावा 'कदन्ते' वांचिये छिये) पद छे. तेनो टीकाकार अने संपादक 'ज्योतिष शास्त्रनो सिद्धान्त' अने 'यम' एवा बे अर्थ ले छे. परंतु ते क्लिष्ट होतां ए श्लेषक्लेश छांडी 'यम' एवो अर्थ लेई तदनुरोध भावार्थ आप्यो छे. समर्थनमां जुओ **मेदिनी**. मूळनुं 'भअवं' विशेषण 'यम' अर्थमांज 'कदन्ते' ने लगाडी शकाय; 'भगवान सिद्धान्त' एवो प्रयोग जाणवामां नथी.

अंक ५. पृष्ठ—८४ पंक्ति—७.

अहिं मूळ पृ. १८४ पं. ३ नो प्राकृतनो 'अ' जे संस्कृत निपात 'च' नुं प्रतिरूप छे ते शाब्दिकने लक्षमां लेवा योग्य छे. ए अहिं अवधारणार्थ होई गुजराती निपात 'ज' नुं पूर्वरूप छे.

पंक्ति—१४–१५.

संपादक अहि 'ण...... अणुकूलं भविस्सदि' एवो पाठ आपे छे. परंतु **सिद्धार्थक**नो मूळ प्रश्न 'कीदिसो अज्ज दिवसो' मुहूर्त विषे छे. त्यार पछीनी तेनी 'पत्थाणस्स जइ अणूकुलं भविस्सदि तदो गमिस्सं' ए उक्तिमां पण एनो एज प्रश्न शब्दांतरे उथलाववामां आव्यो छे; जे वात B. E. G. संज्ञक प्रतोना 'अणधा णिवत्तिस्सं' ए विशिष्ट पाठथी नक्की थाय छे. तेम छतां **जीवसिद्धि** तेने ऊपडतेकने निष्क्रमणनी मुश्केलीज कही बतावे ऐ सुसंगत नथी. **सिद्धार्थक**ने पकडावुं तो इष्टज छे. आथी अमे ते पाठ तजी देई B. E. N. G. संज्ञानी प्रतोने आधारे 'सावगा ण अणुऊलेण अणणुऊलेण वा गच्छीअदि' एवो पाठ उपजावी भाषांतर कर्युं छे.

पंक्ति—२१.

मूळमां अहिं 'गुल्माधिकारिक' शब्द छे. तेमांथी गुल्म अंशनो अर्थ संपादक a sort of village potice station एवो करे छे. पण अहिं सैन्यना मेलाणना संबंधमां ए लागु पडतो नथी. 'गुल्म' शब्दनो अर्थ 'शेरी, नाकुं, चकलुं, दरवाजो, शहेर, गाम, सीमाडो के सैन्य गमे तेना जापता सारुं राखेलुं के मूकेलुं थाणुं' एवो जणाय छे. जुओ मृ. अंक. ६. म. स्मृ. ७–१४. का. पृ. १३२ तथा २२२ (ज्यां अर्थ करवामां संस्कृत टीकाकार अने तेने लीधे इंग्रेजी संपादक तथा गुजराती भाषांतरकर्ता सउ भुलावो खाई चूक्या छे). जुओ वळी अमे लीधेला 'सैन्यरक्षक' ए अर्थना समर्थनमां **मेदिनी**नुं नीचे आपेलुं वाक्य.

गुल्मः सेनाघट्टभिदोः सैन्यरक्षकरुग्भिदोः ।

आवी रीते सैन्यरक्षक नियमवाना शिरस्तानी सात्रीतीमां जुओ म. स्मृ. ७. १९०.

गुल्मांश्च स्थापयेदाप्तान् कृतसंज्ञान् समन्ततः ।
स्थाने युद्धेच कुशलानभीरूनविकारिणः ॥

भाषांतर—चारे तर्फ नाके नाके ('समन्ततः स्थाने'. 'स्थाने' पद रा. झवेरीलाल 'कुशलान्' पद जोडे योजी 'घा झीली शके एवा' एम अर्थ करता जणाय छे;

पण ते अमने रुचिकर नथी) बदलाई न जाय एवा अने डरे नहि एवा लड-वामां कुशळ आप्त पुरुषोने सैन्यरक्षक तरीके अमुक संज्ञा आपी स्थापवा.

आज संबंधमां वळी जुओ का. नी. सा. १५. ६.

समे प्रदेशे विषमे च भूमेर्निम्ने स्थले वा सुमुखेन यायात् ।
अनातुरः सन्नभयो हि विद्वान् सन्नद्धगुल्मो विहितान्नपानः ॥

वळी जुओ **शुक्रनीति**नां नीचेनां वाक्यो अध्याय बीजामांथी लीधेलां:—

पञ्चानामथवा षण्णामधिपः पदगामिनाम् ।
योज्यः स पत्तिपालः स्यात्त्रिंशतां गौल्मिकः स्मृतः ॥
परिवृत्तिं यामिकानां करोति स च पत्तिपः ।
स्वावधानं यामिकानां विजानीयाच्च गुल्मपः ॥

पृष्ठ—८६ पंक्ति—४.

मूळमां अहिं 'शरीरं विक्रीय क्षणिकमपि लोभाद्धनवति' एवुं छे. आ पाठना विवेचनमां संपादक लखे छे जे '**अपि** शब्द निरर्थक छे, अने एकंदरे अहिं **क्षणिकधनलोभाद्धनवति** पाठ लेवो बहेतर छे.' पण 'अपि' वाळोज पाठ सारो छे एम अमारुं मानवुं छे. क्षणिक छतांए आ मनुष्यदेह मोक्षपदनुं साधन छे माटे ते वधारे किमतीछे, अर्थात् एने खसुस करीने मिथ्या आशातृष्णामां लुब्ध थई एळे न जवा देवो जोइये. तेम छतां ए धनना लोभे में मारो मनुष्यदेह डुबावी दीधो. आम आत्मनिंदा पूर्वक **भागुरायण**नुं बोलवुं छे. तेमां 'अपि' पद अर्थनी दृढता सारुं जरूरनुं छे.

पृष्ठ—९१ पंक्ति—२०.

अमे अहिं B. E. N. G. संज्ञक प्रतोनो पूर्व दिशानो 'वाचिकं चाप्ततमात्सिद्धार्थकाच्छ्रोतव्यमिति' एवो पाठ भाषांतर करतां स्वीकार्यो छे. संपादक अने टीकाकारनो पाठ 'वाचिकं चाप्ततमादस्माच्छ्रोतव्यमिति' एवो **सिद्धार्थक**ना नामनिर्देश रहित जोवामां आवे छे. परंतु ते पाठ बहु रीते बाधित छे. प्रथम तो **भागुरायण** पूछे 'भाइ! आ कोइ नवो अजाण्यो मनुष्य छे के कोइनी तेनातनो छे?' एम पूछे छे, ते उपरथी स्पष्टज छे जे ए **सिद्धार्थक**थी अजाण्यो छे; तेम छतां, आ लेखमां तेनुं नाम वंचायुं न होय, तो तेने पछीथी 'भाइ **सिद्धार्थक**! आ लेख कोनो छे' एवो नाम देईने प्रश्न केम करी शके? वळी बीजो बाध ए छे जे राजकाजकुशळ कायस्थ **शकटदास**, प्रथम अंकमां वांचिये छिये तेम, आवो लेख आंखो मींची एकदम लखी आपेज केम, जो तेने अविश्वासनी ऊर्मि शमावनार पोतानी साथे परम मित्रता दाखवता **सिद्धार्थक**नुं

नाम स्पष्ट उपात्त न होयतो ? त्रीजो बाध ए आवे छे जे प्रथम अंकना विवेचनमां 'केनापि कस्यापि स्वयं वाच्यम्' ए पाठमांना 'केनापि' अने 'स्वयम्' ए बे पदनी योजना संदिग्ध बने छे. अर्थात् आ बधो गोटाळो काढवा पूर्वापर संगति जाळववा संपादकनो पाठ परिहरवो आवश्यक छे. अमे लीधेला पाठने मूळ पृ. २१३ पं. ३ नो M. R. G. E. संज्ञक पोथियोनो 'सिद्धार्थकात्' पाठ परोक्ष टेको आपे छे.

पृष्ठ—९२ पंक्ति—८.

अमे अहिं B. E. संज्ञक प्रतनो 'तस्स ताडीअमाणस्स' पाठ भाषांतरमां कबूल राख्यो छे. संपादके 'ताडीअमाणस्स' पद रहित पाठ छाप्यो छे. परंतु चारेक उक्ति पछीनी भागुरायणनी 'भाइ ! एने वळी (पुनः) बांधोने बंबजावो' ए उक्तिमांना वळी (पुनः) पदना समर्थनमां 'ताडीअमाणस्य' पद जरूरनुं होवाथी सात पोथीना पाठनी विरुद्ध आ बे प्रतना पूर्व दिशानो पाठ अमे स्वीकार्यो छे.

पृष्ठ—९३ पंक्ति—२१.

अहिं मूळ श्लोकना पहेला चरणना उत्तरभागमां 'बिभ्रत् स्वपक्षे स्थितिम्' एवो B. E. N. M. संज्ञक प्रतोने अनुसरी पाठ लेई भाषांतर कर्युं छे. संपादकने 'सपक्षे' पद इष्ट छे. परंतु ते उपपत्ति तपासतां अग्राह्य छे. श्लोकना पूर्वोत्तर भाग बिंबप्रतिबिंब न्याये जोडायेला छे; तेमां 'साध्ये निश्चितम्' ए अंशनुं प्रतिबिंब 'यत्साध्यं स्वयमेव' समजिये, त्यम 'अन्वयेन घटितम्' अने 'व्यावृत्तं च विपक्षतः' ए बे एकत्र अंशनुं प्रतिबिंब 'तुल्यमुभयोः' समजिये, तो पछी उत्तरार्धना 'पक्षे विरुद्धं च यत्' ए प्रतिबिंबनुं बिंब 'बिभ्रत् स्वपक्षे स्थितिम्' ए पाठज संभवे छे ने घटे छे. वळी न्यायपरत्व अन्वयव्यतिरेकि लिंगनां पंच रूप पैकी 'सपक्षे सत्त्व' ते तो 'अन्वयेन घटितम्' ए अंशथी उपात्त थई चूक्युं छे; केमजे अन्वयव्याप्ति दृष्टांत वगर ग्राह्य नथी, अने अन्वयव्याप्तिनो दृष्टांत ते सपक्षज छे. कटकना संबंधमां पण 'सपक्षे समर्थन' ते पण तेथीज उक्त छे; केमजे अन्वय शब्द अनुसरणार्थ छे, अने अनुसरण ते सपक्षनुंज. आथी टीकाकार अने संपादकनो पाठ 'अन्वयेन घटितम्' ए अंशथी सपक्ष सूचवेलो अर्थ फरीथी 'बिभ्रत् स्वपक्षे स्थितिम्' एम वांची शब्दांतरे कही बतावतो होवाथी पुनरुक्तिग्रस्त छे. अमारा पाठथी ते दोषनो परिहार थाय छे एटलुंज नहि पण ते उपरांत न्यायपरत्वे 'पक्षधर्मत्व' लक्षण विशेषमां ऊपजी आवे छे.

कटकपरत्वे पण तेनी उपपत्ति, सपक्ष विपक्ष गणावतां अवशिष्ट रहेल स्वपक्षनी वात जीवाडे छे तेथी सिद्धज छे.

पृष्ठ—९५ पंक्ति—१२.

मूळमां चोथा चरणमां ' गतिः ' पाठ टीकाकारे अने संपादके लीधो छे; तेथी अधिकारीनी दशाने चिंतववा रूपी चेतनधर्म आरोपित करवो पडे छे. ए क्लेश B. E. N. G. A. संज्ञक पांच प्रतोना 'मतिः ' पाठथी दूर थाय छे. आथी अमे ए पूर्व दिशानो बहुसंमत पाठ अवलंबी भाषांतर कर्युं छे.

पृष्ठ—९८ पंक्ति—५.

आ उक्तिना स्वगत भागमां संपादके स्वीकारेला पाठ प्रमाणे अपूर्णता रहे छे. माटे A. P. संज्ञक पोथीमांनो 'भवत्वेवम्' अंश लेई अधूरो भाग पूर्ण करी भाषांतर कर्युं छे.

पृष्ठ—९९ पंक्ति—१४–१६.

अहिंनी मूळनी आखी उक्तिने E. G. M. R. संज्ञक चार पोथी स्वगत लेखे छे. पण ते आ पछीनी **मलयकेतुनी** उक्ति लक्षमां लेतां घटतुं नथी; केमजे ए उक्तिथी स्पष्ट समजाय छे जे **राक्षसे** तरत कंइक प्रगट उत्तर आप्यो छे. आथी एमनो पाठ ग्राह्य नथी. तेमज वळी, **राक्षसे** पहेलां नजरे जोई खरीदतां पण जे ओळख्यां न हतां ते आभूषणना संबंधमां ते हाल एकदम स्वगत पण ' व्यक्तमेवास्य भूषणानि ' एम कहेतो जणाय ए रुचिकर नथी, माटे A. P. संज्ञक पोथीमांथी स्वीकारेलो संपादकनो पाठ पण कंइक अग्राह्य छे. आथी अमे B. N. संज्ञक प्रतोनो पूर्व दिशानो पाठ अवलंबी भाषांतर कर्युं छे; जे पाठ नीचे प्रमाणे छे.

राक्ष० । स्वगतम् । कथं पर्वतेश्वरधृतपूर्वाणीत्याह । प्रकाशम् । व्यक्तमेतान्यपि तेन चाणक्यप्रयुक्तेन वणिग्जनेनास्मासु विक्रीतानि ।

पृष्ठ—१०१ पंक्ति—१८.

अहिं B. E. N. P. संज्ञक पोथीने अनुसरी मूळ श्लोकना त्रीजा चरणमां टीकाकार अने संपादके स्वीकारेला 'रिपौ' पाठने ठेकाणे 'रिपोः' पाठ वांची, तथा चोथा चरणमां तेमना 'प्रलयाय' पाठने बदले 'प्रणयाय' पाठ लेई अमे भाषांतर कर्युं छे. मूळना चोथा चरणमां ' मांसवद्विक्रेतुम् ' (=मांस पेठे वेचवा) एम कह्युं छे, तेथी महामांसविक्रयज अभिप्रत छे; अन्यथा मांसनो विक्रय आवा संबंधमां प्रसिद्ध नथी. महामांसविक्रय असाध्य ईप्सित वस्तुनी सिद्धि सारुं सुविदित छे. जुओ **मालतीमाधव, चंडकौशिक, कथासरित्सागर** इ. इ. ए घणुं करीने

स्मशानगत शबनुं नरमांस होय छे. कृष्ण चतुर्दशीनी रात्रिये भूतप्रेतादिसंकुल स्मशानमां जई शब हाथ करी तेनुं मांस प्रेतादिकने समर्पी आराधवामां महासाहस होतां करी ते इष्टसिद्धिप्रद कल्प्युं छे. जुओ **गउडवहो** ३२७; क. स. सा. ५. २. १८३. आ रीते मुएलाज माणसनुं मांस भूतप्रेतादिकने आपवामां आवतुं होतां करी 'प्रलयाय मांसवद्विक्रेतुम्' (=वध अर्थे मांसवत् वेचवा) ए पाठ केवळ असंगत छे. आथी उलटुं 'प्रणयाय' (=प्रसंनता सारुं–प्रसंन करवा) पाठ तो जेवो जोइये तेवो लागु पडतो छे. 'प्रणयाय' पाठ आ रीते ग्राह्य होतां 'रिपोः' पाठ स्वीकारवो इष्टापन्नज छे.

अंक ६ पृष्ठ—१०४ पंक्ति—९.

मूळना त्रीजा चरणमां 'जअणकज्जम्' पद छे. तेनुं व्याख्यान टीकाकार 'जयत्यनेनेति जयनं सैन्ययुद्धादि । करणे ल्युट् । जयनेन जयकारणेन सेनादिनैव यत्कार्यं तत्' ए प्रमाणे करे छे, ने संपादक ते अर्थ कबूल राखे छे, तथापि ते पोताना इंग्रजी टिपणमां लखे छे जे 'आ रीते अर्थ करवो ए क्लिष्ट छे, परंतु बीजी कोइ गति नथी माटे स्वीकारवो.' पण मूळ पृ. २३६ पं. ४ मां 'जअण' शब्द फरी आवे छे, त्यांनो अने अहिंनो प्रसंग एकज जणाय छे. माटे त्यां टीकाकार तेनो 'जय' अर्थ करे छे तेम अहिं पण 'जय' ज अर्थ लेवो उचित छे. जुओ **कर्पूरमंजरी** २. ४१ 'कन्दप्पो दीहदप्पी जुअजणजअणे पुण्णलक्खो विहादि.'

पृष्ठ—१०५ पंक्ति—२०.

अहिं संपादक 'मलअकेदुहदअभूमिम्' पाठ लेई 'दुरात्मा **मलयके**तुनुं राज्य' एम अर्थ करे छे. पण **मलय**भूमि तो **हिमालय**ना डुंगरी प्रदेशमां दूर रही ते विचारी, आगळ मूळ पृ. २३१ पं. ६ मां 'कडआदो' पाठ आनाज अनुसंधानमां वांचिये छिये ते ध्यानमां लेई, अमे अहिं 'हदअ'ने स्थाने B. N. संज्ञक प्रतोनो पूर्व दिशानो 'कडअ' पाठ भाषांतरमां स्वीकार्यो छे.

पंक्ति—२१.

अहिं मूळना 'भअविलोलसेस' अंश उपर टीका करतां संपादक, 'ए पाठ बंध बेसाडवो मुश्केल छे' एम कही '**सेस**ने स्थाने **असेस** हशे' एवी शंका उठावे छे. परंतु ए विद्वान मूळ पृ. २३१ पं. ६ ना व्याख्यानमां कहे छे तेम अहिं पण **विलोल**नो प्रयोग नाम तरीकेज छे; एटले ए शब्दसमुदायनो अर्थ अमे भाषांतरमां आप्यो छे तेम करवाथी शंकानुं कांइ कारण रहेतुं नथी.

पंक्ति—२२

मूळमां 'कुसलदाए' पद छे तेनी छाया संपादके 'कुसलतया' आपी छे; अर्थात् एओ तृतीयानो प्रयोग अहिं समजे छे. परंतु हेत्वर्थ चतुर्थीज अहिं छे एवुं संबंध उपरथी सहज जणाइ आवे छे. चतुर्थीनुं रूप पण प्राकृतमां ए शब्दनुं एनुं एज रहे. आथी अमे उपर भाषांतरमां चतुर्थीज लेखी छे.

पृष्ठ—१०६ पंक्ति—८.

अहिं मूळमां 'तदोपहुद' संपादक छापे छे, अने तेनी छाया 'ततःप्रभृति' आपे छे. परंतु 'ततःप्रभृति' ते संपादके छापेला प्राकृत पदनी छाया बने नहि, तेम छतांए ते कदी कबूल राखिये, तोपण ते अर्थ रहित अने असंगत छे. प्रसंग योजी जोतां अमने तो आ स्थळे 'तदोपहूद' के E. संज्ञक पोथी प्रमाणे 'तदोपभूद' पाठ उचित लागे छे; जेनी छाया 'ततोऽप्रभूत' कल्पी तेमांना 'अप्रभूत (प्राकृत–अपहूद) अंशने' 'सारसाधन समेतेन (प्रा. सारसाहण समेदेण)' साथे समस्त मानी अमे भाषांतर कर्युं छे. जो 'ततःप्रभृति'ज कविने इष्ट होत तो प्राकृतमां 'तदोपहुदि' आपत. वळी **सार** (= वीणी काढेला) ए शब्दे करीने **अप्रभूत** (प्रा. अपहूद) शब्दनीज सहज आकांक्षा रहे छे. आथी संपादकनो पाठनुं अग्राह्यज छे.

पंक्ति—१९.

अहिं मूळमां 'स्था' धातुनुं प्राकृत 'चिट्ठिअ' (सं. स्थित्वा) रूप छे ते शाब्दिकने लक्षमां लेवा योग्य छे. संबंध जोतां तेनो प्रयोग अहिं शुद्ध स्थित्यर्थ नथी परंतु कांक अस्तित्वपरत्व छे. **राजेन्द्रकर्णपूर**मां तो स्पष्ट अस्वित्वपरत्वज छे 'स्था' धातुनुं आवुं अर्थांतर प्राकृतमां थई, गुजरातीमां 'थवुं' क्रियापद तथा पंचमी विभक्तिनो विकारी 'थो–थी–थुं थको थकी थकुं' अथवा अविकारी 'थी' प्रत्यय व्युत्पन्न थाय छे.

पृष्ठ—१०८ पंक्ति—२५.

अहिं मूळनी प्रथम पंक्तिमां A. P. संज्ञक पोथीनो 'अताद्विधमृत्युयोगे' पाठ स्वीकारी भाषांतर कर्युं छे. जुओ समासना उत्तरभागमां आ 'योग' शब्दना प्रयोग बाबत मूळ पृ. १७२ पं. ७ नुं 'मार्गमात्रकथनव्यापारयोगोद्यमे' पद अने ते उपर **भट्टाचार्य तारानाथ**नी टीका.

बीजा चरणमां मूळमां अधिकृत्य पद छे तेनो संपादक 'referring to' एवो अर्थ आपे छे. पण ए अर्थ बराबर न होवाथी अमे 'आगळ करी'

एवो अर्थ आप्यो छे; जेना समर्थनमां जुओ **वीरचरित**ना बीजा अंकना विष्कंभकमांनुं 'तदैव हठाक्रान्त्या निभृतक्रुद्धा देवाः प्रसह्यैनमधिकुर्युः' ए वाक्य.

पृष्ठ—११३ पंक्ति—२५ तथा पृष्ठ—११४ पंक्ति—२४.

संपादक मूळनो अर्थ नीचे प्रमाणे आपे छे. **चंदनदास** एनो परम मित्र छे ए सांभळीने, अने एवा मित्रनो विनाश एना बळी मरवानुं कारण छे ए सांभळीने, जे योग्य प्रेम हुं **चंदनदास** प्रति धरावुं छुं तेना आवेशने लीधे मारुं मन कांपे छे.' आ रीते अर्थ करवामां 'अने' वाचक 'च' कार आदि कोइ संयोजक मूळमां जोइये ते एके पोथीमां नथी. तेने कदी अध्याहार कल्पिये तो पण उपर प्रमाणे अर्थ करतां **शैथिल्य** आवे छे. वळी 'एवा मित्रनो विनाश' एम 'तद्विनाशः' पदनो अर्थ करवो ते क्लिष्ट लागे छे. ए पदने बदले 'सुहृद्विनाशः' पाठ लेवो तेए बहु ठीक नथी; केमजे ते पाठ पण जरा अस्पष्ट छे. आथी अमे वैशद्य सारुं B. E. N. G. आदि संज्ञक प्रतो उपरथी 'चन्दनदासोस्य प्रियसुहृदिति तद्विनाशोस्य हुताभुजि प्रवेश हेतुरिति'— एवो पाठ योजी भाषांतर कर्युं छे. बंने 'इति' हेत्वर्थ छे. संपादकना पाठमां 'चन्दनदासस्य' छपायुं छे तथापि इंग्रजी टिप्पणमां एओ 'चन्दनदासोस्य' पाठ अवलंबी अर्थ आपे छे. एओ 'तद्विनाशोस्य' मांनो 'अस्य' छापता नथी तोपण व्याख्यानमां अध्याहार कल्पी अर्थ आपे छे; जे उपरथी ए पण तेमने इष्टज छे. ए पद A. P. E. संज्ञक पोथियोमां छे. चालता प्रसंगमां 'तद्' सर्वनाम **चंदनदास**ने माटे अने 'अदस्' सर्वनाम **विष्णुदास**ने माटे प्रयुक्त छे. आज मुद्दा उपर आ पछीना वाक्यमां 'व्यवसितस्य' पद पछी वैशद्य सारु R. संज्ञक पोथीना 'तस्य' पाठने बदले सुधारी अस्य पद वधारामां दाखल कर्युं छे.

पृष्ठ—११५ पंक्ति—७–८.

अहिं मूळना त्रीजा चरणनो संपादके अने टीकाकारे स्वीकारेलो पाठ व्याकरणदृष्टिये स्पष्ट दोषांकित होई अरुचिकर छे. टीकाकार अने संपादक एम कहे छे जे अनुप्रासना लोभे ए दोषमां कवि तणायो छे. आखुं नाटक तपासतां कवि एवो अनुप्रासनो लोभी होय एवुं जणातुं नथी. आथी एने माथे आ दोष ओढाडवो ए एने गेरइनसाफ आप्या जेवुं छे. आथी अमे प्रकरणना वैशद्य सारुं अने कविने इनसाफ आपवानी खातर B. E. N. संज्ञक प्रतो उपरथी 'प्रियं तं संत्यक्तुं व्यसनिनि वयस्ये व्यवसितः' एवो पाठ उपजावी भाषांतर कर्युं छे. 'अनर्थ पठे' बीजी प्रतोना उपरथी अमे गांठनुं उमेर्युं छे.

पंक्ति—१४–१८.

अहिं संपादके स्वीकारेला पाठमां बहु गोटाळो छे. **चंद्रगुप्ते विष्णुदासने** आपेलो जवाब, अने एना सांभळतां पोताना माणसोने **चंदनदासने** शूळिये चढाववा तेणे आपेलो हुकुम, ए बे बाबतनी उक्तियोनुं पार्थक्य जळवावुं जोइये, ते न थतां बहु गरबड थई गई छे. आथी करीने B. E. N. G. संज्ञक प्रतोने अनुसरी संपादके छापेला पाठमांथी 'त्ति बहुसो जाणिदं । तेण वि' एटलो भाग तजी देई अने 'जाचिदेण' पछी B. N. संज्ञक प्रतना अनुरोधे 'वि' पद अने 'समप्पिदो' पछी 'त्ति' पद उमेरी, त्यम वळी 'आणविदो' पदनी छाया 'आज्ञप्तः' लेई अमारे भाषांतर करवुं पड्युं छे.

पृष्ठ—११६ पंक्ति—२५.

संपादके 'आकृष्य खड्गं परिक्रामति' (=खड्ग खेंचीने परिक्रमण करे छे) एवो पाठ लीधो छे. परंतु खड्ग तो आगमचथीज खेंचेलुं हतुं. आथी करीने ए पुनरुक्तिग्रस्त पाठ तजी अमे अहिं B. E. N. G. संज्ञक प्रतो उपरथी 'आकृष्टखड्गम्' पाठ लीधो छे.

अंक ७ पृष्ठ—११९ पंक्ति—१९.

अहिं संपादक 'से सुहां गदिं' छापे छे पण प्रकृत पात्रना मुखमां **चंदनदासनी** शुभगतिनो उपन्यास घटतो नथी. आथी अहिं B. E N. G. संज्ञक प्रतोनो पूर्व दिशानो 'से असुहां गदिं' एवो पाठ लेवो पडे छे; संपादकना पाठमां पहेलां बे पद सहित मानिये तो ते पाठनी अमे लीधेला पाठ साथे एकता बनी आवे छे.

पृष्ठ—१२१ पंक्ति—१०–१२.

अमे B. E. N. G. आदि संज्ञक प्रतनो 'सग्गं गदा णं ते देवा णन्दा जे दुःखिअं परिअणं अणुकम्पन्ति' एवो पाठ लेई भाषांतर कर्युं छे. **चंदनदासनी** उक्तिनी मतलब ए छे जे 'शा माटे रडो छो? हवे कोण दुःखियानी दाझ खानार छे? **नंदरायजी** तो स्वर्गे सिधाव्या. तेम छतांए आ प्रसंगे तो रडवुं होयज नहि; केमजे मित्रकार्यथी मारुं मृत्यु थाय छे. एतो उलटुं खुशी थवा जेवुं छे.'

अहिं टीकाकार अने संपादकनो पाठ सुसंगत नथी. ए पाठमां 'गदाणं' एकपदात्मक छापेल छे तेनां 'गदा' अने 'णं' एवां बे पद करिये, अने 'देवा' पद पूठे 'जे' पद उमेरिये, तथा 'स्वर्गं गता ननु तावद्देवा ये दुःखितं परिजनमनुकम्पन्ते' एवी छाया लेइये, त्यम 'देवाः' पदे करीने नव **नंद** समजिये तो ते पाठ बंध बेसाडी शकाय, अने तेनी अमे स्वीकारेला पूर्व दिशाना पाठ साथे एकार्थता बनी आवे.

पंक्ति—१८.

अहिं पण B. E. N. G. संज्ञक प्रतोनो पूर्व दिशानो पाठ अमे स्वीकार्यो छे; केमजे **चंदनदास**नो पुत्र कांइ विकळ बनी आक्रंद करतो न हतो के तेनुं सांत्वन संभवे. एनी पात्रता आ पछीनी उक्तिथी जणाई आवशे.

पृष्ठ—१२२ पंक्ति—३.

मूळमां 'मृत्युलोकपदवी' पद वापर्युं छे; जेनो अर्थ 'यमराजाना राज्यना मार्गरूप' एवो थाय. अहिं ए रूपक बदली वधमाळाने जमपाशरूप वर्णवी छे. मूळ श्लोकनुं त्रीजुं चरण कांइक क्लिष्ट दीसे छे. अमे 'वधाय वः' अन्वित लेई ते बे पदनो 'युष्मत्कर्तृकाय वधाय' एम अर्थ योज्यो छे. टीकाकार आ प्रसंगमां 'कर्मणि षष्ठी' मानी व्याख्यान आपे छे. पण तेथी अर्थ क्लिष्ट अने असंगत बने छे.

पंक्ति—२३.

चोथा चरणमां मूळमां 'गतः शत्रुत्वम्' एवो पाठ संपादके लीधो छे; केमजे ए बहुसंमत छे. पण 'शत्रु' शब्दनो यौगिक अर्थ 'मोत आणनार, वध करनार' एवो थाय, ते अहिं प्रकरणमां अनिष्ट—बाधित छे. अहिं तो 'वधकर्ता' नहि पण 'वधपात्र—वध्य' अर्थ इष्ट छे. आ कारणसर अमे B. N. संज्ञक प्रतोनो 'गतो वध्यत्वम्' पाठ स्वीकार्यो छे. ए पाठथी 'पूजार्हत्व' (पूज्यत्व) अने 'वध्यत्व'नो विरोध सविशेष प्रगट थाय छे.

पृष्ठ १२३ पंक्ति—१७.

मूळ श्लोकना प्रथम चरणमां 'पटान्ते' पद शाब्दिके ध्यानमां लेवा जेवुं छे. जुओ द. कु. च. पृ. १४९ पं. १७ 'अत्र ते जनान्ते चिरं स्थितम्.'। मराठी सातमी विभक्तिना 'आंत' प्रत्ययनुं 'पटान्ते' आदिमांनो सप्तम्यर्थ 'अन्ते' अंश पूर्वरूप छे.

पृष्ठ १२४ पंक्ति—७.

अहिं संपादकना 'शास्त्राणाम्' पाठने बदले B. N. संज्ञक प्रतोनो 'विद्यानाम्' पाठ लेई भाषांतर कर्युं छे. विद्या ए अर्थशास्त्रनो सांकेतिक शब्द छे, माटे अमे ए पाठ स्वीकार्यो छे.

पृष्ठ. १२५ पंक्ति—१५-१६.

अमे अहिं संपादकनो दोषशंका उपजावतो पाठ तजी B. E. N. संज्ञक प्रतो प्रमाणे पाठ लेई भाषांतर कर्युं छे. आ उक्ति अमे पछीनी **चाणक्य**नी

उक्ति साथे संकळायली समजिये छिये; केमजे 'इति'नो अन्यथा अन्वय थवो मुश्केलछे.

पृष्ठ १२६ पंक्ति—४–५.

अहिं पण अमे B. E. N. G. संज्ञक प्रतोना पाठ लक्षमां राखी भाषांतर कर्युं छे. संपादकनो पाठ स्पष्ट नथी. त्यम वळी ते एओ विवेचनमां कहे छे तेम पुनरुक्तिग्रस्त छे.

पृष्ठ—१२९ पंक्ति—६–९.

अहिं अमे B. N. संज्ञक प्रतोना पाठने अवलंबीने भाषांतर कर्युं छे. संपादकनो पाठ असंगत छे. पूर्व वाक्यमां 'हाथीघोडा शिवाय सउने बंधनथी मुक्त करवा' कही, संपादक छापे छे तेम उत्तर वाक्यमां 'हवे अमारो (? आपणो ?) शो अर्थ छे' एवुं कहेवुं, अने वळी पाछो पूर्ववाक्यमांज कहेलो अर्थ श्लोकना पूर्वार्धमां पुनरुक्त करवो, ए केवळ असंबद्ध प्रलापज छे. कदाच मूळमां पूर्व वाक्यमां 'विना' पद छे तेने लीधे लेखकोए प्रमादथी के भ्रांतिथी के दृष्टिदोषथी श्लोकमां पण 'विना' पद 'सह'ने बदले घुसाडी दीधुं हशे.

संपादक अने टीकाकार **ढुंढिराज** तथा **तारानाथ** आ घडियेज **चाणक्य** शिखा पहेलवेलीज बांधतो होय एम अर्थ करता जणाय छे. परंतु ते आंतर प्रमाणथी विरुद्ध छे. जुओ ए संबंधी प्रथम अंकना प्रारंभमां अमारुं विवेचन.

पृष्ठ—१३० पंक्ति—३.

अहिं टीकाकार **ढुंढिराज** अने **तारानाथ** तेमज विद्वान संपादक **काशीनाथ 'अवंतिवर्मा'**ने बदले **'चंद्रगुप्त'** पाठ कबूल राखे छे. आ विषे पूर्वे प्रस्तावनामां कहेवामा आव्युं छे ते जोवुं.



मुद्राराक्षस नाटक.

परिशिष्ट १.

पृष्ठ—२ पंक्ति—१३-१४ तथा १८.

अहिं वांचनारने सारासारता विचारी ज्योतिषपरत्व अर्थनिर्णय करवो सुगम पडे एटला माटे मूळ साथे बेए टीकाकारनी टीकामांथी उतारा आपिये छिये:—

क्रूरग्रहः स केतुश्चन्द्रमसं पूर्णमण्डलमिदानीम् ।
अभिभवितुमिच्छति बलाद्रक्षत्येनं तु बुधयोगः ॥

क्रूरग्रह इति । स प्रसिद्धः क्रूरग्रहः केतुः राहुरित्यर्थः । उभयोरेकशरीरत्वेनाभेदव्यपदेशः* । चन्द्रमसं इन्दुं इदानीं अद्य पौर्णमास्यां पूर्णमण्डलं अभिभवितुं ग्रसितुं बलादिच्छति । परंतु बुधस्य ग्रहस्य योगः संबन्धः एनं चन्द्रमसं रक्षति । तथा च ज्योतिःशास्त्रे व्याससंहितायां गर्गवचनम् ।

ग्रहपञ्चकसंयोगं दृष्ट्वा न ग्रहणं वदेत् ।
यदि न स्याद्बुधस्तत्र युद्धं दृष्ट्वा ग्रहं वदेत् । इति ।

इति ढुण्ढिराजः† ।

. . . .

क्रूरग्रहः सकेतुश्चन्द्रमसंपूर्णमण्डलमिदानीम् ।
अभिभवितुमिच्छति बलाद्रक्षत्येनं तु बुधयोगः ॥

क्रूरग्रह इति । सकेतुः सपातः चन्द्रतुल्यकान्तिस्थः । सहोदरशब्दवत् सहशब्दादेशस्य सशब्दस्य समानार्थत्वम् । क्रूरग्रहः भूच्छायारूपतमोधिदेवो राहुः इदानीं संप्रति असंपूर्णमण्डलं अपरिपूर्णबिम्बं चन्द्रं बलात् हटात् प्रसभं इत्यर्थः।

---

* मूळ पृ. ८० पं. १८ मां आवेला 'केतु' शब्दनुं पण आ टीकाकार आवुंज कंइ व्याख्यान आपे छे; ते नीचे प्रमाणेः—'राहुकेत्वोः सर्पाकारं एकं शरीरं तत्र शिरो राहुः पुच्छं केतुः शिरसि उदिते पुच्छे अस्तमितं भवति पुच्छे उदिते शिरः अस्तं इति ज्योतिःशास्त्रसिद्धम् । उभयोः एकशरीरत्वाद् राहुः इति केतुः इति व्यपदेशः ।'

† आ टीकाकारने अनुसरवामां भाषांतरमां आपेला संगतिका वृत्त बदले नीचेनी आर्या वधारे अनुकूळ पडशेः—

पूरण मंडळ अत्र जे चंद्र, करे तेहने बळे ग्रहवा
दुर्ग्रह राक्षस राहु; पण बुधयोग नहि दे बनवा.

ग्रहणस्य प्रतिपत्पञ्चदश्योरन्तरालकाले एव चन्द्रबिम्बस्य पूर्णताया संभवेन इदानीं असंपूर्णमण्डलतया न तद्योग्यकालता। अतो बलादित्यनेन अयोग्यकालता द्योतितेति द्रष्टव्यम्। अभिभवितुं आक्रमितुं छादयितुं ग्रसितुं इति यावत्। इच्छति प्रवर्णाभवति। कूलं पिपतिषति इतिवत् अचेतनेपि भूमिच्छायारूपे तमः-पदार्थे इच्छति इति उक्तम्। सिद्धान्ते हि सूर्यकिरणा एव जलीयमण्डले चन्द्रे प्रतिबिम्बिताः तस्य भासकतया रात्रितमोनाशकाः। सलिलमये शशिनि रवेर्दीधितयः प्रतिमूर्च्छिताः इत्याद्युक्तेः। रवेः समानक्रांतिवृत्तस्थे चन्द्रे च सूर्याचन्द्रमसोः मध्यगतभूगोलच्छायया आच्छादनं तदेव ग्रहणम्। छाया च प्रकाशाभावरूपतया तमोरूपा तदधिष्ठातृदेवता च राहुग्रहः। अत एव राहुर्वै हस्ती भूत्वा चन्द्रमसं गृह्णाति इति श्रुतौ राहोः हस्तिरूपत्वकथनं तमसि नीलत्वारोपेण हस्तिसदृशनीलच्छायारूपी भूत्वेत्यर्थः सिद्धान्तसंमतः अवसेयः। भूमिच्छायया आच्छादनमपि पूर्णबिम्बस्यैव तच्च पर्वसंधिकाले एव नान्यदा इति सिद्धान्ते स्थितम्। इदानीं च पूर्णत्वाभावात् न ग्रहणसंभवः इति भावः। बुधयोगः बुधेन सह चन्द्रस्य योगः एकराश्यवस्थानरूपः सहवासः एनं चन्द्रं रक्षति ग्रहात् वारयति। बुधचन्द्रयोः एकराशिस्थत्वोक्त्यापि भङ्ग्या असंपूर्णबिम्बत्वं सूचितम्। सूर्याचन्द्रमसोः यः परः विप्रकर्षः सा पौर्णमासी इति श्रुत्या तयोरत्यन्त विप्रकर्षकाले एव पौर्णमास्याः संभवस्य दर्शिततया परमविप्रकर्षस्य च राशिषट्कान्तरे एव संभवेन बुधस्य रविराश्यपेक्षया द्वित्रराश्यन्तराले एव स्थितेः नियततया बुधयोगेन चन्द्रस्यापि द्वित्रराश्यन्तरे एव स्थितेः अवगमात् न परमविप्रकर्षः नातोपि संपूर्णमण्डलत्वं चन्द्रस्य इति न ग्रहणसंभवः इति भावः। एतेन चन्द्रं संपूर्णमण्डलमिति पाठः प्रामादिकः एव बुधयोगकाले चन्द्रस्य कदाचिदपि संपूर्णमण्डलत्वासंभवात्।

इति तारानाथः

मुद्राराक्षस नाटक.



परिशिष्ट २.

पृष्ठ—८० पंक्ति—१२–२० ई.

प्रस्तुत विषयने उपयोग जोग मुहूर्त संबंधी टूंकी हकीकत ज्योतिषशास्त्रमांथी संग्रही नीचे आपिये छिये; जेथी अर्थ ग्रहण करवामां मुश्केली नहि रहे.

ज्यारे चंद्रसूर्य समान अंश कळा विकळाना थाय छे त्यारे तेमनो योग थयो कहेवाय छे. आ बनाव अमावास्याए बने छे. योगकाळ एटले अमावास्या ए चांद्र मासनो अवधि छे; अर्थात् अमावास्या ऊतरतां नवा मासनी तिथियो अनुक्रमे बेसे ऊतरे छे. तिथिनो आधार चंद्र अने सूर्य बंने उपर छे. राशिचक्रमां चंद्रनी गति सूर्यनी दृश्य गति करतां त्वरित छे. आथी करीने, योगकाळ पछी सूर्य जे वखतमां अमुक अंश कळा ने विकळा चाले छे, तेज वखतमां चंद्र विशेष अंश कळा विकळा चाली नीकळे छे. आ जे चंद्रसूर्यनुं अंतर योगकाळ पछी पड्यां जाय छे तेने चंद्रसूर्यनी गतिना अंतरे भागी तिथि वर्तवामां आवे छे. अहोरात्रना किया भागमां चंद्र अमुक कळाए सर्वांशे पहोचशे ते तिथि उपरथी जणाय छे; केमजे तिथिना पूर्ण मानना अंतभागमांज चंद्र सर्वांशे अमुक कळा पामी बीजी कळा धारण करवी शरु करे छे. ज्यारे चंद्रसूर्य छ राशिने अंतरे सामसामा आवे छे, त्यारे प्रतियोग काळ थयो कहेवाय छे. ए प्रतियोगकाळनी तिथि ते पूर्णिमा. उत्तरोत्तर वृद्धि पामतो शुक्लपक्षनो चंद्र ते तिथिना अंतमां पूर्ण कळाए पहोचे छे. आ तिथिना अनुमति अने राका एवा बे प्रकार छे. जे दिवस के वारे पूर्णिमा बेशी चूकी छतां चंद्र सर्वांशे पूर्णता पाम्यो नथी होतो, ते दिवसे के वारे अनुमति पूर्णिमा छे एम कहेवाय छे; अने जे दिवस के वारे चंद्रबिंब सर्वांशे पूर्ण थाय छे, ते दिवसे के वारे राका पूर्णिमा लेखाय छे. अमावास्याना पण आज रीते सिनीवाली अने कुहु एवा बे भेद पडे छे.*

प्रत्येक तिथि जे अमुक घडी, पळ, विपळ एकंदर भोगवे छे तेना अर्धने करण कहे छे. ज्योतिषशास्त्रमां अग्यार करण गणाव्यां छे. तेमांनां बव, बालव

---

* जुओ नीचेनुं श्लोकार्ध.

'सा नष्टेन्दुः सिनीवाली सा दृष्टेन्दुकला कुहुः'।

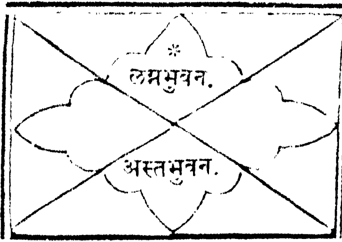
कौलव, तैतल, गर, वणिज, अने विष्टि ए सात करण शुक्ल प्रतिपदाना उत्तरार्धथी अनुक्रमे अर्धी अर्धी तिथि भोगवतां प्रवर्ते छे. शुक्ल चतुर्थीना अवसाने ए सप्तक पूरुं थाय छे के फरीने एना एज क्रमे तेओ बदलायां करे छे. आथा करीने कृष्ण चतुर्दशीना पूर्वार्धना अंत सुधीमां ए करणसप्तक आठवार फरीफरीने आवे छे. ए कारणसर ए सात करणोनी 'चर' संज्ञा थाय छे. कृष्ण चतुर्दशीना उत्तरार्धमां शकुनि, अमावास्याना पूर्वोत्तरभागमां अनुक्रमे नाग अने चतुष्पद, तथा शुक्ल प्रतिपदाना पूर्वार्धमां किंस्तुघ्न, ए चार करण आवे छे. आ करणो मासभरमां बीजी कोइए तिथिये आवृत्त थतां नथी तेथी 'स्थिर' कहेवाय छे. करणोनी गणत्री उपर प्रमाणे नियत होवाथी पूर्णिमांना पूर्वार्धमां चर करणसप्तकमांनुं सातमुं विष्टि किंवा भद्रा करणज आवे छे.

दैनंदिनगतिमां चंद्र जे तारानां झुमखांना चक्रमां थइने जतो जणाय छे ते चक्रना सत्ताविश भाग पाडी प्रत्येक भागने नक्षत्र संज्ञा आपी छे. फळ वर्तवा विषे ए नक्षत्रोमांथी कृत्तिकाथी अश्लेषा सुधीनां पूर्वद्वारिक, मघाथी विशाखा सुधीनां दक्षिणद्वारिक, अनुराधाथी श्रवण सुधीनां पश्चिमद्वारिक, अने धनिष्ठाथी भरणी सुधीनां उत्तरद्वारिक गण्यां छे.

अश्विनीथी आरंभी ए नक्षत्रोनी पुनः मेष आदि राशियोमां वहेंचण करवामां आवी छे. भचक्रना सत्ताविशमा भागनी जेम नक्षत्र संज्ञा थई छे, तेमज तेना बारमां भागनी राशि संज्ञा करी छे. आथी नक्षत्र सत्ताविशने राशि बार होतां करी एक एक राशि सवा बे नक्षत्र भोगवे छे. आ बार राशिना अमुक अमुक ग्रह स्वामी मान्या छे. सिंह राशिनो सूर्य, कर्कनो चंद्र, मेष अने वृश्चिकनो मंगळ, मिथुन अने कन्यानो बुध, धन अने मीननो गुरु, वृषभ अने तुलानो शुक्र, तथा मकर अने कुंभनो शनि स्वामी लेखाय छे.

सूर्य, चंद्र, तारा, वगेरे आकाशीय पदार्थो आपणे रोज पूर्वमां ऊगता अने पश्चिममां अथमता जोइये छिये. खगोळना आ दृश्य भ्रमणने लीधे दिवसभरमां राशिचक्रनी बारे राशियो अनुक्रमे पूर्व क्षितिजमां उदयस्थळ उपर आवी पश्चिममां आथमी जाय छे. अहोरात्रना जे भागमां जे राशि उदयस्थळ उपर होय छे ते राशि उपरथी ते समयना लग्न के मुहूर्तने संज्ञा मळे छे. आ रीते मेष आदि बार राशि ते ते वखते उदयस्थळ उपर आवतां ते ते वखतनां मेष लग्न आदि बार लग्न उत्पन्न थाय छे. ते मेष लग्न आदि लग्नना अनुक्रमे चर स्थिर अने द्विस्वभाव एवा त्रण वर्ग फळ वर्तवा सारुं पाडवामां आव्या छे.

जे वखतनुं लग्न के मुहूर्त जोवुं होय ते वखते उदय स्थळ उपर जे राशि होय तेनो अंक पासेनी आकृतिना सचिन्ह आसनमां मूके छे; अने पछी डाबा हाथ तर्फ अनुक्रमे जोडजोडना आसनमां ते पछी-नी राशिना अंक मूकता जाय छे. आ को-ठाना प्रत्येक आसनने भुवन के घर कहे छे. ए बार भुवन पैकी सचिन्ह भुवनने लग्न भु-वन कहे छे; केमजे लग्न के मुहूर्तने जे राशि उपरथी संज्ञा मळी होय छे ते रा-शिनो अंक हमेश एज भुवनमां मूकाय छे. ए उदित भुवनने नामे पण ओळ-खाय छे; केमजे ते भुवनमां जे राशिनो अंक मूक्यो होय छे ते राशि मुहूर्तसमये उदय स्थळ उपर होय छे. उदित भुवनथी सातमुं भुवन अस्त भुवन कहेवाय छे; केमजे ते भुवनमां जे अंक भर्यो होय छे ते अंकनी राशि मुहूर्तसमये पश्चिम क्षितिजमां अस्त स्थळे होय छे.



जे दिननुं मुहूर्त जोवुं होय ते दिने जे ग्रहो जे राशिमां होय छे ते ग्रहो ते राशिना अंक जे भुवनमां भर्या होय छे तेमां उपरना कोठामां लखवामां आवे छे. आ रीते कोठो पुराई रह्या पछी ग्रहोनुं बळाबळ तपासी लग्न श्रेष्ठ के नेष्ट छे ते नि-र्धारवामां आवे छे.

प्रस्तुत विषयमां **जीवसिद्धि** अमात्य **राक्षसने** कहे छे जे "बपोर सुधीमां भद्राकरण निवृत्त थया पछीनो राका पूर्णिमानो दिवस चोक्खो छे. तमारे उत्तरथी दक्षिण दिशाए जवुं छे, ने नक्षत्र पण तमारे फावतुं दक्षिणद्वारिक छे. वळी मध्यान्होत्तर प्रस्थानकाळ आवे छे ते पण दक्षिणदिशाए प्रयाणने जेवो जोइये तेवो अनुकूळ छे. माटे तमारे सूर्य अस्ताभिमुख छतां बुधनुं लग्न साधी-ने जवुं. जुओ, ए मुहूर्ते तमारे संपूर्ण चंद्र छे ते लग्न भुवनमां छे. ए सौम्य ग्रह केन्द्रनो होई परम कल्याणकारी छे. वळी अस्त भुवनमां केतु छे तेए टी-कज छे; केमजे ए भुवनमां नेष्ट तो मात्र सूर्य, मंगळ, शुक्र, शनि, अने राहुज लेख्या छे."

आ मुहूर्तमां संपूर्ण चंद्र लग्न भुवनमां पड्यो जणाव्यो छे, अने लग्न बुधनुं कह्युं छे. हवे बुध मिथुन अने कन्यानो स्वामी छे. आमांनी प्रथम जे मिथुन राशि, ते मृगशिरना छेल्ला बे पाद, आर्द्राना चारे पाद अने पुनर्वसुना पहेला त्रण पादनी बनेली छे. परंतु मृगशिर, आर्द्रा अने पुनर्वसु ए त्रणे नक्ष त्र पूर्वद्वारिक छे. आथी मिथुन लग्ननो अहिं संभव नथी. माटे कन्या लग्नज

अहिं अभिप्रेत जणाय छे. कन्या राशि उत्तरा फाल्गुनीना छेल्ला त्रण पाद, हस्ताना चारे पाद, अने चित्राना पहेला बे पादनी बनेली छे; जे उपरथी गणत्री करतां सहज चैत्री पूर्णिमानुं मुहूर्त आप्युं होय एम जणाय छे.

विष्टि अथवा भद्रा करण प्रयाणमां तजवुं कह्युं छे; माटे ते करण ऊतरी गया पछीना समयनुं मुहूर्त आप्युं छे. दक्षिण दिशाए दिवस वळते जवुं कह्युं छे; तेथी मध्यान्होत्तर काळ बताव्यो छे. अपूर्ण चंद्रने पापग्रहमां लेख्यो छे; आ बाध संपूर्ण चंद्रवाळुं लग्न कही परिहर्यो छे. वळी प्रमाणमां परिघदंडनुं उल्लंघन निषिद्ध छे; आटला माटे नक्षत्र खास दक्षिणद्वारिक जणाव्युं छे, जेथी उत्तरथी दक्षिण जतां ते उल्लंघवानो प्रसंग आवतो नथी. त्यम वळी अस्त भुवनमां सूर्य, मंगळ, शुक्र, शनि ने राहु ए पांच नेष्ट कह्या छे; माटे ए पांचथी व्यतिरिक्त केतु ते भुवनमां पड्यो जणाव्यो छे. आ रीते ते ते शंका पोतेज दूर करी मुहूर्तनी श्रेष्ठता **जिवसिद्धिए** बतावी छे.

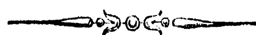
परंतु वस्तुतः मुहूर्त आपातरमणीयज छे. प्रथम तो पूर्णिमा ए तिथिज प्रयाणमां निषिद्ध छे.* अमात्य **राक्षसना** मनमां पण तिथि विषे वहेम आवे छेज. वळी दक्षिणद्वारिक नक्षत्रवाळुं जे कन्यालग्न आप्युं, ते स्वतः द्विस्वभाव छे; जेथी कार्यनी सिद्धि संदेहग्रस्त बने छे. त्यम वळी मुहूर्त समये कन्यानो चंद्र छे तेथी सूर्य तेनाथी छ राशिने अंतरे मीननो आव्यो आथी करीने ते अस्तभुवनमां बताव्यो छे तेथी करीने राहु चंद्रसाथे उदित भुवनमां पडी ग्रहणयोग उपजावी नेष्ट फळ आपनार थाय छे. इ.

---

* जुओ नीचेनो श्लोक.

षष्ठ्यष्टमी द्वादशीषु न गच्छेत्रिदिनस्पृशि ।
पूर्णिमाप्रतिपद्दर्शरिक्तावमदिनेषु च ॥

मुद्राराक्षस नाटक.



परिशिष्ट ३.

पृष्ठ—९३ पंक्ति—२०–२५ थी पृष्ठ–९४ पंक्ति—२–३

आ बे हरिगीतनो गम्यमान अर्थ न्यायशास्त्रना अनुमान खंडने लगतो छे, ते समजवामां ए प्रकरणना ज्ञाननी जरूर होवाथी न्यायनी परिभाषानुं उपयोगजोग व्याख्यान अहिं टूंकामां आपिये छिये.

रसोडामां अने बीजे स्थळे ज्यां धुमाडो जोइये छिये, त्यां आपणे अग्नि पण देखिये छिये. ते उपरथी 'ज्यां धुमाडो होय त्यां अग्नि होय' एवो साहचर्यनियम आपणे मनमां घडिये छिये. पछी आपणे पर्वत उपर धुमाडो जोइये छिये, त्यारे ए साहचर्यनियम संभारि 'आ पर्वत उपर अग्नि छे' एवुं अनुमान करिये छिये. अहिं 'पर्वत' ए **पक्ष** छे, जेना विषे 'अग्नि छे' ए सिद्ध करवानुं छे. **पक्ष**भूत 'पर्वत' विषे 'अग्नि छे' ए निश्चित नथी पण नक्की करवानुं छे, तेथी 'अग्नि' ते **साध्य** लेखाय छे. 'अग्नि'नी सिद्धता आपणे 'धुमाडो छे' ते उपरथी करिये छिये, माटे 'धुमाडो' ए **साधन, हेतु,** के **लिंग** कहेवाय छे. 'ज्यां धुमाडो होय त्यां अग्नि होय' एवो साहचर्यनियम, ते **व्याप्ति** कहेवाय छे. ए **व्याप्ति**ना बे प्रकार छे; **अन्वयव्याप्ति** अने **व्यतिरेकव्याप्ति.** जेमां **हेतु** व्याप्य रूपे अने **साध्य** व्यापक रूपे प्रदर्शित होय तेने **अन्वयव्याप्ति** कहे छे; उदाहरण–'ज्यां धुमाडो होय त्यां अग्नि होय, जेमके रसोडामां.' जेमां **साध्य**नो अभाव व्याप्य रूपे अने **हेतु**नो अभाव व्यापक रूपे वर्णलो होय तेने **व्यतिरेकव्याप्ति** कहे छे; उदाहरण–'ज्यां अग्नि न होय त्यां धुमाडो न होय, जेमके घरमां'. **व्याप्ति** भेदे करीने **साधन, हेतु** के **लिंग** पण त्रिविध भिन्न छे; **केवलान्वयि, केवलव्यतिरेकि,** अने **अन्वयव्यतिरेकि.** ज्यां मात्र **अन्वयव्याप्ति**ज छे ते **हेतु केवलान्वयी;** उदाहरण'–घट अभिधेय छे, केमजे ते प्रमेय छे' अहिं 'जे प्रमेय छे ते अभिधेय छे, जेमके पट' ए **अन्वयव्याप्ति**ज बनी आवे छे; परंतु **व्यतिरेकव्याप्ति** नथी बनती, शाथीजे, 'जे अभिधेय नथी ते प्रमेय नथी' एम कहिये, तो तेनो दृष्टांत नथी, केमजे विश्वमां सर्व कांइ प्रमेय अने अभिधेय कोटिमांज आवी जाय छे. ज्यां मात्र **व्यतिरेकव्याप्ति**ज छे ते **हेतु**ने **केवलव्यतिरेकी** कहे छे; उदाहरण–'पृथ्वी बीजां चार महाभूतथी भिन्न छे, केमजे

तेमां गंध छे. ' अहिं ' जे बीजां चार महाभूतथी भिन्न नथी तेमां गंध नथी, जेमके जळमां,' ए **व्यतिरेकव्याप्तिज** बनी आवे छे; परंतु **अन्वयव्याप्ति नथी** बनती शाथी जे, 'जेमां गंध छे ते बीजां चार महाभूतथी भिन्न छे' एम कहिये, तो तेनो दृष्टांत नथी, केमजे विश्वमां गंधवद्वस्तु पृथ्वी कोटिमांज आवी जाय छे. ज्यां **अन्वयव्याप्ति** अने **व्यतिरेकव्याप्ति** बेए छे ते **हेतु अन्वयव्यतिरेकी**; उदाहरण'–आ पर्वत उपर अग्नि छे, केमजे त्यां धुमाडो छे;' अहिं, 'ज्यां धुमाडो छे त्यां अग्नि छे, जेमके रसोडामां ', ए **अन्वयव्याप्ति** तेमज, ' ज्यां अग्नि नथी त्यां धुमाडो नथी, जेमके पाणीना धरामां ' ए **व्यतिरेकव्याप्ति,** बंने बनी आवे छे. अहिं रसोडुं आदि दृष्टांत, ज्यां अग्नि आदि **साध्यनी** स्थिति अनुभव-प्रत्यक्षादिथी निश्चित छे, ते **सपक्ष** लेखाय छे; अने पाणीनो धरो आदि दृष्टांत, ज्यां अग्नि आदि **साध्यनो** अभावज छे, ते **विपक्ष** कहेवाय छे.

छेल्लो **अन्वयव्यतिरेकी हेतु** जे कह्यो ते पांच लक्षणे पूर्ण होय तोज **साध्य** सिद्ध करवा समर्थ थाय छे. ए पांच लक्षण नीचे प्रमाणे छे; [1]**पक्षधर्मता,** [2]**सपक्षे सत्व,** [3]**विपक्षथी व्यावृत्तत्व,** [4]**अबाधितविषयत्व,** अने [5]**असत्प्रतिपक्षत्व.** पर्वत उपर धुमाडो जोई त्यां अग्नि छे एवुं अनुमान करिये छिये, ते उपरथी स्पष्टज छे के जे धूम आदि **हेतुथी** अग्नि आदि **साध्य** सिद्ध करवानुं होय ते **हेतु** प्रथम पर्वत आदि **पक्षमां** विद्यमान होवो आवश्यक छे. **हेतुना** आ स्वरूपने **पक्षधर्मत्व** कहे छे. वळी रसोडुं आदि स्थळमां धूम जोइये छिये त्यां अग्नि बळतो जोईनेज अग्निनो धूम साथे नित्य संबंध मन साथे घडिये छिये, आथी धूम आदि **हेतु** रसोडुं आदि **सपक्षमां** विद्यमान होवो जोइये ए जणाई आवे छे. **हेतुना** आ स्वरूपने **सपक्षे सत्व** कहे छे. त्यम वळी पाणीनो धरो आदि स्थळमां धूम नथी जोता त्यां अग्नि पण बळतो न जोईने धूमना अभावनो अग्निना अभावसाथे नित्य संबंध मन साथे घडिये छिये, आथी धूम आदि **हेतु** पाणीनो धरो आदि **विपक्षमां** अविद्यमान होवो विवक्षित छे ए जणाशे. **हेतुना** ए स्वरूपने **विपक्षथी व्यावृत्तत्व** कहे छे. आपणे जे **साध्यनी** सिद्धता प्रकृत **हेतुथी** करवा चाहता हइये तेज **साध्यनो** अभाव बीजा कोइ प्रमाणथी सिद्ध नज होवो जोइये. **हेतुना** आ स्वरूपने **अबाधितविषयत्व** कहे छे. वळी जे **साध्यनी** सिद्धता प्रकृत **हेतुथी** करवा चाहता हइये तेज **साध्यनो** अभाव अन्य कोइ **हेतुथी** सिद्ध नज होवो जोइये. **हेतुना** ए स्वरूपने **असत्प्रतिपक्षत्व** कहे छे.

प्रकृत **हेतु** विषे निर्दिष्ट पांच रूप पैकी कोइ पण न्यून होय छे त्यारे ते ते

हत्वाभास ऊपजे छे. **हेत्वाभास** पांच छे; **अनैकांतिक, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध,** अने **बाधित.** ज्यां **हेतु**नो व्यभिचार जोवामां आवे ते **अनैकांतिक.** एना त्रण प्रकार छे; **साधारण, असाधारण,** अने **अनुपसंहारी.** ज्यां **हेतु** एकसरखी रीते **सपक्ष विपक्ष** बंनेमां विद्यमान जोवामां आवे ते **साधारण**; उदाहरण–'आ पर्वत उपर धुमाडो छे, केमजे त्यां अग्नि छे' अहिं **हेतु**स्थानीय अग्नि **सपक्ष**भूत रसोडामां अने **विपक्ष**भूत धगधगता लोढाना गोळामां उभयथा जोवामां आवे छे. **सद्हेतु** तो मात्र **सपक्ष**मांज विद्यमान होय; ते **विपक्ष**मां तो नज होय. ज्यां **हेतु** एकसरखी रीते सर्व **सपक्ष विपक्ष**मां विद्यमान न होय ने मात्र **पक्ष**मांज होय ते **असाधारण;** उदाहरण–'शब्द नित्य छे, केमजे तेमां शब्दत्व छे' अहिं **हेतु**भूत शब्दत्व **सपक्ष** गगनादिकमां अने **विपक्ष** घटपटादिकमां एकसरखी रीते जोवामां आवतुं नथी. **सद्हेतु** तो मात्र **विपक्ष**थीज व्यावृत्त होय; ते **सपक्ष**मां तो विद्यमानज होय. ज्यां **हेतु**नी **पक्ष** कोटिमां सर्व कांइ आवी जवाथी **अन्वयव्याप्ति** अने **व्यतिरेकव्याप्ति**ना दृष्टांतज नथी ते **अनुपसंहारी**; उदाहरण–'सर्व अनित्य छे, केमजे प्रमेय छे' अहिं **अन्वय व्यतिरेक**ना दृष्टांत बनी शके एम नथी, एटले **सपक्षविपक्ष** विद्यमान नथी; तेथी **सपक्षे सत्त्व** अने **विपक्ष**थी **व्यावृत्तत्त्व** ए बे **सद्हेतु**नां लक्षण 'मूलं नास्ति कुतः शाखाः' ए न्याये गलित छे. ज्यां **हेतु साध्य**ना अभावथी व्याप्त होय ते **विरुद्ध**; उदाहरण–'शब्द नित्य छे, केमजे ते कृतक छे.' अहिं **हेतु**स्थानीय कृतकत्व **साध्य**स्थानीय नित्यत्वना अभावरूप अनित्यत्वथी व्याप्त छे; अर्थात् **सपक्षे सत्त्व** अने **विपक्ष**थी **व्यावृत्तत्त्व** ए उभय लक्षणथी भ्रष्ट थई **हेतु** अहिं **सपक्ष**मां विद्यमान नथीज पण उलटो **विपक्ष**मां जोवामां आवे छे. ज्यां **साध्य**नो अभाव अन्य कोइ **हेतु**थी सिद्ध होय, ते **सत्प्रतिपक्ष**; उदाहरण–'शब्द नित्य छे, केमजे ते श्रवणग्राह्य छे जेमके शब्दत्व' अहिं, 'शब्द अनित्य छे, केमजे ते कार्य छे जेमके घट', ए वाक्यगत कार्यत्वरूप **हेत्वंतर**थी मूळ उदाहरणना **साध्य**स्थानीय नित्यत्वनो अभाव सिद्ध थाय छे. आ प्रसंगमां **सद्हेतुनुं असत्प्रतिपक्षत्व** लक्षण लोपाय छे. ज्यां **हेतु व्याप्ति**विशिष्ट **पक्षधर्मत्व**थी आडोउलटो जतो होय ते **असिद्ध.** एना त्रण भेद छे; **आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध** अने **व्याप्यत्वासिद्ध.** ज्यां **हेतु**नो आश्रयस्थानीय **पक्ष**ज असत् छे, ते **आश्रयासिद्ध**; उदाहरण–'गगनकुसुम सुवासित छे, केमजे ते कुसुम छे जेमके स्थळकुसुम'. अहिं **पक्ष**भूत गगनकुसुम वस्तुतः असत् छे. ज्यां **हेतु** स्वरूपेज **पक्ष**मां असत् छे, अर्थात् **हेतु**ना स्वरूपनो अभाव **पक्ष**मां सत्—विद्यमान छे, ते **स्वरूपा-**

सिद्ध; उदाहरण 'शब्द ए गुण छे, केमजे ते चक्षुर्ग्राह्य छे जेमके रूप.' अहिं शब्दमां चक्षुर्ग्राह्यत्व स्वरूपेज असत् छे. ज्यां **साध्य**विषे **हेतु**ना व्याप्यत्वनो अवच्छेदक अंश **हेतु**मां असत् छे ते **व्याप्यत्वासिद्ध;** उदाहरण—'आ पर्वत उपर अग्नि छे, केमजे त्यां सुवर्णमय धुमाडो छे' अहिं अग्नि ए व्यापक अने सुवर्णमय धुमाडो ए तेनो व्याप्य छे, अने सुवर्णमयत्व ते अग्निविषे धुमाडाना व्याप्यपणानुं अवच्छेदक छे. ए सुवर्णमयत्व धुमाडामां वस्तुतः असत् छे. आ त्रणे भेदमां **हेतु**नी आश्रयगत, स्वरूपगत, के अंगगत असिद्धताने लीधे **सद्हेतुनुं** लक्षण जे **पक्षधर्मत्व** ते लोपाय छे. ज्यां **साध्य**नो सभाव बीजा कोइ प्रमाणथी सिद्ध छे ते **बाधित;** उदाहरण—'अग्नि अनुष्ण छे, केमजे ते पदार्थ छे जेमके जळ.' अहिं अनुष्णत्वनो अभाव जे उष्णता ते **पक्ष**भूत अग्नि विषे स्पर्श प्रत्यक्षथी सिद्ध छे. अहिं **सद्हेतुनुं अबाधितविषयत्व** लक्षण लोपाय छे.

प्रस्तुत विषयमां **अन्वयव्यतिरेकी हेतु** निर्देश्य छे. उपर जे पंचरूप अने पंच **हेत्वाभास**नुं व्याख्यान आप्युं छे ते वांच्या पछी भाषांतरमांना हरिगीतनो गम्यमान न्यायपरत्व अर्थ जे अमे गद्यरूपे नीचे आपिये छिये ते सहज ध्यानमां आवशे.

जे **हेतु साध्य**नी सिद्धिनिमित्ते सउ प्रकारे बराबर निश्चित छे एटले जे **हेतु**नी सत्ता प्रमाणांतरे के **हेत्वंतरे** व्याहत नथी—अर्थात् जे **हेतु अबाधितविषयत्व** अने **असत्प्रतिपक्षत्व** ए बे लक्षणे युक्त छे, तेमज जे सर्वदा **सपक्ष** वडे समर्थित छे तथा **विपक्ष**थी कदी दूषित नथी— अर्थात् जे वळी **सपक्षे सत्त्व** अने **विपक्ष**थी **व्यावृत्तत्व** ए बे लक्षणे युक्त छे, अनेवळी जे **पक्ष**मां सत्-विद्यमान छे—अर्थात् जे वळी **पक्षधर्मत्व** लक्षण युक्त छे; तेवा समर्थ **हेतु**थी सदा स्थिर जयज मळे—अर्थात् निश्चय **साध्य**नी सिद्धि बनी आवे.

पण जे **हेतु साध्य**नी सिद्धि निमित्ते संदिग्ध होय एटले जे **हेतु**नी सत्ता **प्रमाणां**तरे के **हेत्वंतरे** व्याहत होय—अर्थात् जे **हेतु अबाधितविषयत्व** अने **असत्प्रतिपक्षत्व** ए बे लक्षणथी रहित होई **बाधित** अने **सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास** उपजावतो होय, तेमज जे **सपक्ष, विपक्ष** उभय विषे एकसरखो अतिचारी के प्रतिकूळचारी होय—अर्थात् **सपक्षे सत्त्व** अने **विपक्ष**थी **व्यावृत्तत्व** ए बे लक्षणथी भ्रष्ट थई त्रिविध **अनैकांतिक** अने **विरुद्ध हेत्वाभास** उपजावतो होय, अने वळी जे **पक्ष**मां सदा असत् अविद्यमान होय—अर्थात् **पक्षधर्मत्व** लक्षणे हीन बनी त्रिविध **असिद्ध हेत्वाभास** उपजावतो होय; तेवा लक्षणहीन **हेतु**थी हारज थाय.

शुद्धिवृद्धि.

प्रस्तावना.

पृष्ठ.	पंक्ति.	जूनो पाठ.	नवो पाठ.
४	११	अंतर	आंतर
	२३	उत्तरापथ पासीनुं	उत्तरापथवासीनुं
५	३	उत्तरापक्षना	उत्तरापथना
७	९	राजा--	राजानी
	१२	ने	०
१०	२८	नाटकना	नाटक
१६	२६	बौधोनुं	बौद्धोनुं
१८	११	अडग	अडग तथा उच्च
२१	२७	ध्धुवो	ध्रुवो
	२९	पु. आ.	०
२२	८	नैर्ऋत	वायव्य
२८	११	मित्र	सहायक
३१	१९	गलयकेतु	मलयकेतु
३५	१६	फरमावतां	फरमावातां
३८	१८	थयुं हतुं '	थयुं हतुं? '
	२२	छवटे	छेवटे
	२३	आटकाववा	अटकाववा
	३१	सांभळतां	सांभळतां कौटिल्य

मूळ.

पृष्ठ.	पंक्ति.	जूनो पाठ.	नवो पाठ.
*१	१५	वरसतो अगनि	ज्वलनज झरती
†२	६	वावनारना	कृषिकारतणा
	२१	सकळ कार्यमां	कार्यमां अपि
४	२५	कोपाग्निकेरी	कोपाग्निकेरी

---

* ज्वलन=अग्नि, देवता. † कृषिकार=खेती करनार, वावनार.

पृष्ट.	पंक्ति.	जूनो पाठ.	नवो पाठ.
५	२२	हुं—हुं—जेनो	ए ते मारा विषे बनेज केम !—जेनो
६	२२	सघज	भली विध.
७	२—३	शानो **नंद**वंश नींदी नांख्यो?	शानुं **नंद**कुळ निर्मूळ करी दीधुं?
१०	१८	अणराग कमळ	द्वेष कमळ दृढ.
१५	६	**चाणक्य**	**चाणक्ये**
१९	२	अजाण आदमिये	अनार्ये
	२३	काळ सर्प	कृष्णसर्प
	२४	खराबी करी	करी (एटलुं कहेतां सलज्ज जणाई)
		चंद्रगुप्तने	**चंद्रगुप्तनी**
	२५	खराब	खराबी
२१	१२	शुं छे ए?	शुं छे ए वळी?
२३	२४	दाम	दान
२६	११	वेठी	वेटी
	२३	मित्तौ	भित्तौ
२७	७	न ज्ञाने	ना ज्ञाने
	२०	मुत साथ	साथ साथ
३४	१९	ठरावेला सर्वविदित	बहार पाडेला
३५	५	पोतानी धीमी चाल छोडी	शिघ्र बेकेद बनी
	६	एकाएक दोडी	गत्यंतर पामी
३६	२०	नहि गयो होय?	गयो नहि?
४०	१६	**सिद्धार्थक**	**शकटदास**
४१	६	अर्थ न स्वामीतणो	प्रभुनो अर्थ न रजे
	७	सर्व राजभक्तोना	स्वामिभक्त सरवना
४७	२५	ए सदैव	एमां सदैव
४९	२६	असंग	प्रसंन
५४	८	लीजिये आ	०
५७	२१	तेनुं न	तेनुं. न

पृष्ठ.	पंक्ति.	जूनो पाठ.	नवो पाठ.
५८	९	चलन वलन	चलनवलने
	१४	बोलो.	कहो.
	२१	वांचतां	वांचे छे.
५९	२१	मूक्यो; पछी	मूक्यो हतो; तेथी
	२३	बचाव्या '	बचाव्या हता '
६४	१३	गोटे गोटे	गोटेगोट
६८	६	जा	आव
	१३	नेकी	नकी
	१८	अल्पभाग्य जनने	निश्चय अधन्यने
	२३	पितुःश्री	पितुश्री
७०	२५	ह्रीः	ह्रीः
७३	२०—२१	**चंद्रगुप्त**	**चंद्रगुप्ते**
८०	१६	सवैयो ग्रीसा	रुचिरा वृत्त
	१८	होतां	बनतां
	२९	ज्ञार	ज्ञार
८१	३	नक्षत्रगुणज	गुण भगणतणां
८६	२८	**नंद** अनौरस	**नंदनो** अनौरस
८८	५	पितुःश्रीनां	पितुश्रीनो
९०	१९	स्वामिभक्ति पोषक हे	पोषक हे स्वामिभक्ति
९३	१४	कुमारश्रीने	कुमारश्रीनी
१०२	१४	आर्या	उपगीति
	१५	**चंदगुप्त चाणक्य**	**कौटिल्य वृषल**
१०४	९	जमवत	जमवंत
	१९	मुखसमृद्धि	मुखसंपत
१०५	१२	खुब	खुश
१२१	२७	भद्गुरे	भङ्गुरे
१२२	१०	वेंटियुं,	वेंठियुं
१२४	९	एम	अम
	१४	मुज बुद्धिए	बुद्धिए मुज
१२६	२	अमात्य	०
	३	**राक्षस**	अमात्य **राक्षस**

टीका.

पृष्ठ.	पंक्ति.	जूनो पाठ.	नवो पाठ.
२	७	प्रशंमात	प्रशंसात:
२	२८	मकेतु	०
५	१७	तेणे हतो	०
७	३३	रासेकने सालिंगन	रसिकने आलिंगन
		चामरच्छव देइ	चामरच्छटा
८	३१	प्रख्यापन	प्रख्यापनर्थी
१९	७	चाणक्यना अनुसरी	०
२०	५	भगवानने	भगवाने
	८	भगवानने	भगवानना
२२	३	जीवसिद्धि	जीवसिद्धी
२३	२	लेखातर्गत	लेखांतर्गत
	१५	जणस्य	जणस्स
	२१	साह्ययो:	शाठ्ययो:
२५	२२	असभ्यतानी शंकार्थी	०
२६	१८	निगृहीत:	निगृहीतवान्
२८	२१	मत्सर्य	मात्सर्य
३१	८	' अनुकूल '	' अनुकूलन '
३४	९	अणुकुलं	अणुकूलं
	१८	potice	police
३५	३१	तेने	तेना
३६	२७	सपक्ष	०
	२८	अर्थ	सपक्ष संबंधी अर्थ
		स्वपक्षे	सपक्षे
३७	६	दशाने	दशा विषे
३८	६	मांसवद्दिक्रेतुम्	मांसवद्विक्रेतुम्
३९	१७	पाठनु	पाठ
४०	२१	बैशद्य सारुं	वेशद्य सारुं
४७	४	आथा	आर्थी

पृष्ठ. पंक्ति.	जूनो पाठ.	नवो पाठ.
५० २१	व्याप्ति भेदे	व्याप्तिभेदे
५३ ९	सभाव	अभाव

आ उपरांत सरतचूकथी बीजी पण जे भूलो रही गई होय ते सुज्ञ वांचनारे सुधारी लेवी. वळी मूळ पृष्ठ ३ पंक्ति १३–१४ तथा १८ मां आपेला संगतिका वृत्त बदले नीचेनी आर्या वांचवी:–

पूरणमंडळ अव जे चंद्र, करे तेहने बळे ग्रहवा
दुर्ग्रह राक्षस राहु;
पण बुधयोग नहि दे बनवा.

त्यम मूळ पृष्ठ ६ पंक्ति १९–२० बदले नीचेनी पंक्तियो गोठववी:–

*हृद्रोगवत निर्मळ महार्थी नंदकुळ करी दीध छे;
ने सरवरे नलिनी पठे थिर **मौर्य**मां श्री कीध छे;

त्यमज मूळ पृष्ठ ५८ पंक्ति १३ ना वाक्य बदल नीचे आपेली उक्तियो योजवी:–

चंद्रगुप्त–वळी बीजुं पण प्रयोजन जे होय ते हुं सांभळवा इच्छुं छुं.

चाणक्य–ते पण हुं कहुं छुं.

त्यम वळी मूळ पृष्ठ ७१ पंक्ति १७–१९ नी गीति बदल नीचेनी आर्या स्वीकारवी:–

नृपति समिप नकी राखे चोरवी कंइ सत्त्वभंगना भयथी;
भाखे स्वैरालापे स्वजन समिप कंइक मन मूकी. *

---

३ मंडळ=[१] बिंब; [२] राजमंडळ. ४ चंद्र=[१] चंद्रमा; [२] **चंद्रगुप्त**. ५ ग्रहवा=[१] ग्रहण करवा; [२] पकडवा. ६ दुर्ग्रह=[१] दुष्ट–क्रूर ग्रह; [२] दृढ आग्रहवाळो. ७ राक्षस राहु–[१] दैत्य राहु; [२] राहु तुल्य **चंद्र** साथे शत्रुता राखतो अमात्य **राक्षस** ८ बुध=[१] बुध नामनो ग्रह; [२] बुद्धिमान **चाणक्य**.

* हृदयना रोगनी पेठे–भीतरना बगाडनी पेठे.

હવે પછી

આજ પદ્ધતિ ઉપર મહાકવિ **શૂદ્રક** વિરચિત **મૃચ્છકટિક** તથા મહાકવિ **જયદેવ** વિરચિત **ગીતગોવિંદ** એ બે સત્કાવ્યોનાં ભાષાંતર સમયાંતર પ્રકટ કરવામાં આવશે.